अनहोनी

[राष्ट्रीय भावनाओं से ओतप्रोत सामाजिक उपन्यास]

लेखक

आर. वी. शर्मा

अनुराग प्रकाशन अजमेर

१

शिव भगवानजी के मन्दिर में घंटिया झनझना उठीं। इस प्रकार एक बड़ी सी भीड़ मन्दिर के बगीचे में हो जाती है। शिवजी की आरती समाप्त हो गई, सब लोग बूढे, बच्चे, औरतें, गरीब, अमीर धीरे-धीरे अपने-अपने घरों को वापिस जाने लगे। यही एक जगह है जहाँ पर सभी आ सकते हैं। जाति, भेदभाव आदि कुछ भी नहीं देखा जाता। शिव भगवानजी की मूर्ति के समक्ष नतमस्तक होकर हर कोई कुछ भी माँग सकता है। यह भगवान का दरबार है। हर एक इन्सान अपना-अपना भाग्य आज़माने के लिये कुछ न कुछ माँगने को आ ही जाता है। उन सबकी मनोकामना पूरी होती है या नहीं—कौन जाने। सब लोग चले गये। मन्दिर में रह गया सिर्फ पुजारी। धीरे-धीरे अँधेरा होने लगा। सूरजदेव पहाड़ों की ओट में लुप्त हो गया पक्षीगण अपने-अपने घोंसलों में जा छिपे—दिन ढल गया—संध्या हो गई।

इतने में एक मोटरगाड़ी मन्दिर से कुछ ही दूर आकर खड़ी हो गई। मोटर गाड़ी के रुकने से जमीन की धूल उड़ने लगी, गाड़ी धूल के बादलों में समा गई। जब धूल लुप्त हुई तब एक झटके के साथ मोटर का दरवाजा खुला तथा दो आकृतियां बाहर निकलीं। एक मर्द था जिसका कद औसत, आँखें गुलाबी, धोती पहिने हुए। दूसरी आकृति एक औरत की—बहुत ही सुन्दर, उसने अपनी साड़ी के आंचल से चेहरे को इस प्रकार ढक कर रखा था जैसे श्वेत बदलियां शुक्ल पक्ष के चन्द्रमा को ढक लेती हैं। दोनों एक दूसरे का हाथ थामे धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगे। दोनों ने मन्दिर में प्रवेश किया तथा एक बार फिर

मन्दिर की घंटियाँ झनझना उठीं, इसके साथ ही दोनों के सिर शिव भगवानजी की मूर्ति के समक्ष कुछ माँगने के लिये झुक गए। एक अमीर, करोड़ों का मालिक जिसके सहारे लाखों भूखे अपनी भूख मिटाते हैं, अपने तन को कड़ाके की सर्दी तथा सूरज की तेज गर्मी से बचाते हैं। वह भी अपनी धर्मपत्नी सहित फकीर बनकर भगवान शिवजी के चरणों पर सिर झुका कर कुछ और माँगने के लिए हर रोज चला आता है। और धन माँगने आता होता, व्यापार में लाभ हो - उसके लिये प्रार्थना करता होता, परन्तु इनमें से किसी के लिये भी नहीं। भगवान ने उसे धन के भण्डार दिये हैं, अच्छा खासा कारोबार चलता है। उसकी सच्ची लगन और महनत से देश को करोड़ों का लाभ होता है। लाखों तन ढ़कते हैं, भूखों की भूख मिटाई जाती है। अपाहिजों के लिये खास प्रबन्ध है, गरीब विधवाओं के लिये आश्रम है, गुप्तदान दिया जाता है, गरीब छात्रों को खास मदद दी जाती है। यह है शहर का सबसे बड़ा धनवान, करोड़ों का मालिक सेठ दीनदयाल (भगवान का फरिश्ता) इन्सान के रूप में देवता। इसको भगवान ने सब कुछ दिया है, एक सीता जैसी सती, गुणवन्ती पत्नी, कुल मिलाकर सब कुछ है। सिर्फ एक ही कमी है संतान की जिसकी पूर्ति के लिये हर रोज अपनी धर्मपत्नी के साथ शिव भगवान के मन्दिर में प्रार्थना करने आते हैं।

मन्दिर में पूर्ण शान्ति छाई हुई थी। इस शान्ति को मन्दिर के पुजारीजी ने भंग किया–'सेठजी आज आपने आने में विलम्ब कर दिया। क्या कोई खास काम था ?'

ऐसा कुछ भी नहीं स्वामीजी, यूँही कुछ देरी हो गई, हम दोनों अति शर्मिन्दा हैं, आपसे तथा भगवान से माफ़ी माँगते हैं। ऐसा कहकर दोनों पति-पत्नी ने अपने सिर झुकाए— स्वामीजी, हम आपसे माफी माँगते हैं। आप हमें आशीवाद दीजिये।

हमेशा प्रसन्न रहो, फलो-फूलो, स्वामीजी ने आशीर्वाद देने के लिये स्वयं का हाथ उन दोनों के मस्तक पर रखा।

स्वामीजी आपके आशीर्वाद तथा भगवान की कृपा से हमारे पास सब कुछ है। यह धरती ने कहा (सेठ दीनदयाल की पत्नी) सिर्फ एक ही कमी है– सन्तान की। ये खुद तो बाहर काम से चले जाते हैं। बाकी मैं दीवारों से टकराती रहती हूँ, घर खाने को दौड़ता है, समय ही नहीं कटता। कभी-कभी तो रोने लगती हूँ। आप कोई ऐसा उपाय बताइये जिससे मैं हमेशा प्रसन्न रहूँ, यह मेरा सूनापन दूर हो जाए।

भगवान यह भी सुन लेगा परन्तु फिर भी एक उपाय आपको बताता हूँ, पर पता नहीं आपको पसन्द आए कि नहीं।

आप तो हमारे पूजनीय स्वामीजी हैं आप जो कुछ कहेंगे अच्छा ही कहेंगे धरती ने कहा।

अगर आपको मेरी बात अच्छी लगती है तो अवश्य कहूँगा। मुस्कराते हुए स्वामीजी बोले—वैसे तो आपका नाम धरती ही है सबकी धरती मां, भारत के सभी बच्चे आप जैसी गुणवन्ती स्त्री की औलाद है, परन्तु फिर भी अगर आपको एक ही औलाद चाहिये जिससे आप प्रसन्न रहें, आप उसे प्यार से बेटा कह कर पुकारें, उत्तर में वह आपको माँ कहे तो इसका सिर्फ एक ही उपाय है कि आप किसी भी एक गुणवान सुन्दर बच्चे को गोद लेलें—ऐसा कहकर वे शान्त हो गए।

यह सुनकर धरती अति प्रसन्न हुई और हाथ जोड़कर बोली—स्वामीजी आपने तो बहुत अच्छा उपाय बताया है। क्यों जी ! आप को उपाय कैसा लगा ? धरती ने अपने पति की ओर देखते हुए कहा जो कि पता नहीं क्या आसमान की ओर मुँह करके देख रहे थे।

तुम्हें जैसा लगे करो। दूसरा स्वामीजी की हर एक बात हमें अच्छी लगती है।

अपने पति से ऐसा सुनकर धरती बहुत प्रसन्न हुई तथा हाथ जोड़ कर बोली—स्वामीजी, हम आपके कहने के अनुसार कल ही एक

बच्चा गोद ले लेंगे। अब आप आशीर्वाद दीजिए ताकि आपके बतलाए हुए मार्ग पर हम सफल रहें। ऐसा कहकर दोनों पति-पत्नी ने स्वामीजी को प्रणाम किया।

सदा प्रसन्न रहो, भगवान तुम दोनों को औलाद का सुख प्रदान करे!

मन्दिर से लौटते समय दोनों में बातचीत नहीं हुई। शायद दोनो बच्चे को गोद लेने के विषय पर एक बार सोचना चाहते थे। आखिर में धरती ने कहा—आप इतना गंभीर होकर क्या सोच रहे हैं? क्या आपको बच्चा गोद लेना पसन्द नहीं?

'बात तो कुछ ऐसी ही है'—सेठ दीनदयाल बोले।

ऐसी भी कौनसी बात है जो आप बताते नहीं।

दीनदयाल ने अपने मुँह में सिगरेट डाल कर, लाइटर से जलाली तथा एक लम्बा सा कश लेकर गाड़ी को बाईं ओर मोड़ते हुए कहा—धरती, ऐसा कुछ भी नहीं, तुम्हारी खुशी मेरी सबसे बड़ी खुशी है, परन्तु फिर भी मुझे कुछ अच्छा सा नहीं लगा कि कोई बच्चा गोद लिया जाय। वैसे सभी बच्चे भगवान के रूप हैं, परन्तु अपना बच्चा अपना ही होता है। फिर भी अगर तुम्हें खुशी होती है तो हम भी खुश होंगे।

आप भी कैसी बातें करते हैं? भला जो बात आपको पसन्द नहीं तथा आप सिर्फ मेरा दिल रखने के लिये मान जायं तो मैं भी ऐसा काम नहीं कर सकती जिसमें आपकी दिलचस्पी न हो। अगर आप मुझे सुखी देखकर सुखी रहते हैं तो मैं भी आपको खुश देखकर बहुत खुश होती हूँ। जिस कार्य में मेरे भगवान राज़ी, उसमें उनकी दासी। ऐसा कहकर धरती ने स्वयं का सर अपने पति के कन्धे पर रख दिया जो कि सामने रास्ते पर एक गिरती हुई औरत को देख चुका था जहां पर वह औरत अपने-आप गिर चुकी थी, वहां पर गाड़ी को पूरे ब्रेक के साथ रोक दिया, एक बड़े से झटके के साथ

गाड़ी रुक गई। अचानक गाड़ी के रुकने से एक बार तो धरती घबरा ही गई, "क्या हुआ जो गाड़ी एक दम ही रोक दी ?"

दीनदयाल ने धरती की बात को सुनी अनसुनी करदी और बोला—

धरती, नीचे आ जाओ यहां रास्ते में औरत गिरी हुई है।

ऐसा सुनकर बेचारी धरती घबराती हुई अपने पति के साथ गाड़ी से बाहर आई।

जब दोनों उस औरत के पास आए तो उसे बेहोश देखकर, धरती के मुख से तो चीख निकल गई, फिर खुद को सम्भाल कर अपने पति से कहा— इस औरत को जल्दी से गाड़ी में बिठाकर ले चलिये। यह अभी ही माँ बनने वाली है। डॉक्टर को भी चलकर फोन करते हैं।

ऐसी बात अपनी पत्नी से सुन कर बेचारा सेठजी घबरा गया।

अपने पति को इस प्रकार शान्त खड़ा देखकर धरती बोली, आप क्या देख रहे हैं ? यह समय सोचने या देखने का नहीं, दो इन्सानों की जिन्दगी का सवाल है, एक तो ऐसा इन्सान जिस नन्ही सी जान ने अभी तक दुनिया ही नहीं देखी।

फिर दोनों ने उस बेहोश अनजान औरत को गाड़ी के पीछे की सीट पर सुला दिया। धरती भी पीछे ही बैठी, ताकि कुछ ऐसी वैसी बात हो तो देख सके।

सेठजी ड्राइविंग सीट पर बैठ गए, स्टीयरिंग को हाथ में संभालकर ऐक्सीलेटर दबा दिया। पल भर में गाड़ी हवा से बातें करने लगी तथा इसके साथ ही सेठ दीनदयाल का दिल बड़ी तेजी से धड़कने लगा।

कहिये डॉक्टर साहब, क्या हुआ ? बड़े उतावले पन से डॉक्टर घोष से धरती ने पूछा।

लड़का हुआ है—डॉक्टर ने उत्तर दिया।

अपनी पत्नी को इतना प्रसन्न होता देखकर सेठजी धरती की मौन भाषा समझ गए फिर वह भी पीछे क्यों हटते स्वंय भी खुश होकर मुस्कराने लगे।

अपने पति को मुस्कराता हुआ देखकर धरती ने समझा जो बात उसके मन में है वही बात उसके पति के मन में भी है, फिर स्वामीजी के कहे शब्द उसके कानों में गूंजे–बच्चे भगवान के रूप होते हैं आप एक बच्चा गोद ले लीजिये।

पति-पत्नी को इस प्रकार मौन खड़ा देखकर डॉक्टर ने पुनः कहा—औरत अब शायद बच नहीं सकती, वह आपको बुला रही है। शायद आपसे कुछ कहना चाहती है। ऐसा कहकर डॉक्टर सेठजी को एक तरफ ले गए।

धरती शीघ्र उस कमरे की ओर दौड़ी जहां पर अजनबी औरत ने बच्चे को जन्म दिया था। धरती ने कमरे में प्रवेश किया—उस औरत पर नजर पड़ते ही घबरा उठी–औरत अंतिम घड़ियाँ देख रही थी।

औरत ने धरती को उँगली के इशारे से अपनी ओर बुलाकर बच्चे की ओर इशारा किया जो कि अपने बाएँ हाथ के अंगूठे को मुंह में दबाए चूस रहा था।

बहिन घबराओ नहीं, भगवान सब ठीक करेगा—धरती ने आश्वासन दिया।

औरत के होंठ धीरे-धीरे कुछ कहने को हिले, बुझे हुए शब्दों में कहने लगी–बहिन मैं खुदा के दबार में जा रही हूं। मेरा नाम सलमा है। इस बच्चे का खयाल रखना वरना मुझे खुदा के दरबार में भी चैन नहीं मिलेगा। अगर इसे कुछ हो गया तो......।

सलमा नाम सुनकर धरती चौंक पड़ी—आप मुसलमान हैं। आपके पति का क्या नाम है? वे कहां पर हैं? आप बताइये ताकि हम उन्हें यहां पर बुला लें—धरती यह सब एक ही साँस में कह गई।

मेरा कोई पति नहीं । मेरे पति खुदा परवरदिगार हैं जिनके पास मैं जा रही हूं । जाति से तो मैं मुसलमान हूं, परन्तु हूं एक इन्सान । इसी भारत की पवित्र भूमि पर मेरा जन्म हुआ, भारत का ही नमक खाकर बड़ी हुई और अब आपके सामने, मौत की सेज पर पड़ी हूँ— अपने कर्मों के कारण, परन्तु फिर भी बहुत खुश हूँ कि मेरी मौत भी भारत की ही पवित्र भूमि पर हो रही है और वह भी आप जैसे फरिश्तों के घर में । ऐसा कहकर सलमा ने धीरे-धीरे धरती के हाथ को थाम कर अपने बच्चे के सर पर रखा जोकि उसके ही बाजू में पड़ा था और कहा— बहिन, इस नन्ही सी जान की हिफाजत करना, उसे अपने पास रखकर ऐसा उपदेश देना कि वह नमक हलाल हो सके, अपने भारत की आन पर मर मिटे । सलमा की साँसे बड़ी जोरों से चलने लगीं, एक हिचकी उसके मुख से निकली, उसका हाथ धरती के हाथ से छूट गया तथा सिर एक ओर लुढ़क गया ।

सलमा से हाथ छूटते ही धरती का हाथ बच्चे के सिर पर आ गया । वह घूर-घूर कर अनजान सा धरती की ओर देख रहा था । वह तो बच्चा था उसे क्या पता कि उसकी माँ कब की मर चुकी है । इतने में बच्चे ने रोना शुरू कर दिया. जिसकी आवाज सुनकर सेठजी और डॉक्टर दोनों कमरे की ओर लपके ।

अन्दर कमरे का दृश्य देखकर सेठजी दरवाजे पर ही ठिठक गए । वे देख रहे थे कि बच्चा किस प्रकार शान्त होकर धरती से खेल रहा है । फिर उसकी दृष्टि पलंग पर उस औरत. की ओर गई जो कि इन्सान का चोला छोड़कर खुदा के पास जा चुकी थी ।

पुलिस कमिश्नर मिस्टर चौधरी सेठ दीनदयाल से कह रहे थे— ऐसा कैसे हो सकता है ? तुम एक मुसलमान के बच्चे को गोद नहीं ले सकते । इतनी बड़ी दुनिया में क्या तुम्हें यही लड़का पसन्द आया है ? ठीक है, मैं भाभी धरती की भावनाओं को समझता हूँ और कद्र भी करता हूँ । परन्तु भावनाओं के वशीभूत होकर क्या आप इतनी बड़ी जायदाद का वारिस एक मुसलमान के बच्चे को बनाएँगे ।

अगर तुम ऐसा करोगे तो यह सरासर गलत है। तुम इसे हा क्य अपना बच्चा अपनाना चाहते हो, मुझे तो कुछ भी समझ में नहीं आता। कोई दूसरा बच्चा ले सकते हो, मैं दिला दूँगा। तुम इस बच्चे को अनाथालय में भेज दो।

मिस्टर चौधरी, तुम मेरे दोस्त ही नहीं भाई की तरह हो—सेठ दीनदयाल ने कहा। तुम तो मुझे बचपन से ही जानते हो, मैंने कभी भी तुम्हारी कही हुई बात नहीं टाली, परन्तु इस बार मजबूर होकर मैं तुमसे विनती करता हूँ कि तुम भी धरती की खुशी में हाथ बँटाओ। जिस प्रकार मैं भी मजबूर होकर उसका कहना मान रहा हूँ। चाहे तुम्हें यह बात पसन्द हो या नहीं फिर भी तुम्हें माननी पड़ेगी मेरे लिये नहीं धरती के लिये। तुम तो धरती का स्वभाव जानते ही हो, वह जिसको वचन देती है उसे पूरा करके ही छोड़ती है, उसने उस मरती हुई औरत को वचन दिया था कि वह स्वयं उसका पालन पोषण करेगी। इतने में सेठजी की नजर दरवाजे पर खड़ी धरती पर पड़ी जो पता नहीं कितनी देर से बच्चे को गोद में उठाये हुए उन दोनों की बातें सुन रही थी। अब चौधरी धरती को इस प्रकार खड़ा देख चुका था।

पूरे वातावरण में शान्ति छा गई। सिर्फ तीनों की तेज साँसों की ध्वनि और कभी-कभी बच्चे की पतली आवाज सुनाई पड़ती। करीब पाँच मिनट तक सभी एक दूसरे का मुँह ताकते रहे। शायद किसी की भी हिम्मत नहीं हो रही थी कि कुछ कहे। तीनों स्वयं को मुजरिम समझ रहे थे। आखिर मिस्टर चौधरी ने मौन भंग करते हुए कहा—भाभीजी आप खड़ी क्यों है ? क्या कुछ कहना चाहती हैं ?

मैं कुछ कहने नहीं अपना फैसला सुनाने आई हूँ। मैं किसी भी मूल्य पर इस बात पर इस बच्चे को छोड़ नहीं सकती। चाहे कुछ भी हो जाय मैं उस मरी हुई आत्मा को वचन दे चुकी हूँ, झूठी

शान-शौकत की आड़ लेकर मैं उस आत्मा से खेलना नहीं चाहती। बच्चा किसी भी जाति का हो मुझे इससे कोई मतलब नहीं। जाति-पाँति का भेद-भाव हम जैसे झूठे कपटी लोग ही जानते हैं न कि यह बच्चा। इसका पालन-पोषण हमारे घर में ही होगा तो वह स्वयं ही हमारे जैसा बन जायगा। इसे क्या मालूम कि इसका जन्म एक मुसलमान औरत की कोख से हुआ है। वह तो मुझे ही माँ समझेगा। देवरजी, मैं आप से एक सवाल करती हूँ—समझ लीजिए इस बच्चे का जन्म अपनी माँ के ही घर होता है और इसका पालन-पोषण भी वहीं होता है, लेकिन वह अपनी मेहनत और योग्यता से भारत का नेता बन जाता है जैसे कि हमारा भारत प्रजातंत्र राज्य है। उस समय सभी लोग इसकी इज्जत करेंगे, सलामी भरेंगे, इसे अपने देश का रखवाला समझेंगे, लेकिन नेता के मन में क्या भावना है कोई नहीं जान सकता। यह तो वक्त ही बतायेगा। क्या उस समय आप जवाब दे सकेंगे ? ये सभी बातें तो बाद की ही हैं। फिर भी यह बच्चा हिन्दुओं के वातावरण में रहेगा, इसका नाम भी हिन्दुओं जैसा ही होगा। मैं इसे गीता, महाभारत, रामायण का उपदेश दूंगी फिर आप ही बताइये इस बच्चे को रखने में आपको क्या आपत्ति हो रही है ? मैं इसे अपना बच्चा समझ कर ही रखूंगी। ऐसा कहकर धरती दरवाजे के बाहर चली गई और वे दोनों एक दूसरे का मुँह ताकते रहे।

लड़का पलता रहा। उसका नाम राकेश रखा गया। धरती ने बच्चे का पालन पोषण करने में जरा भी गुंजाइश नहीं रखी। घर में एक अच्छी सी नर्स रखी गई। धरती राकेश को अपना जन्मा हुआ बच्चा ही समझने लगी। दूसरे शब्दों में राकेश को अपने सगे बेटे से भी बढ़कर समझने लगी। राकेश की जिन्दगी राजकुमारों की तरह बीतने लगी। धरती ने अपनी सारी खुशियां, ममता, सुख राकेश पर न्योछावर कर दिये। राकेश को कुछ होता तो वह स्वयं भी चिन्तित हो उठती। अब सेठ दीनदयाल भी प्रसन्न था जबकि

धरती भी प्रसन्न थी। धरती तो बच्चे के प्यार में अपने पति को भी जैसे भूल बैठी थी। वह तो हमेशा राकेश से ही बातें किया करती। उसने राकेश के पीछे स्वयं के चैन और रातों की नींदें गंवा दीं। इसके बावजूद भी वह बहुत प्रसन्न थी। खुद को वह भाग्यवान समझने लगी।

इस प्रकार तीन महीने बीत गये। मिस्टर चौधरी भी कभी-कभी राकेश का हाल-चाल पूछने आ जाया करते। एक दिन अचानक धरती के पेट में दर्द होने लगा, सभी चिन्तित हो उठे। सेठ दीनदयाल ने अपने फैमली डॉक्टर मिस्टर घोष को बुलाया कि वह धरती को देखे कि उसे इतनी जोर की पीड़ा क्यों हो रही है। स्टेथस्कोप से जाँच करने के पश्चात जब मिस्टर घोष ने सेठ दीनदयाल को बुलाकर कुछ कहा तो सेठजी की खुशी का पार न रहा, वे खुशी के मारे पागल हो उठे। उसने खुशी में उसी समय १००० रुपये का चैक काटकर घोष के हवाले कर दिया तथा दौड़ता हुआ धरती के कमरे में आया और उससे लिपट गया। इस प्रकार अपने पति को खुश होता देखकर बेचारी धरती समझ न सकी कि मामला क्या है? परन्तु जब पूछने पर सेठजी ने धरती को बताया कि वह माँ बनने वाली है तो एक बार वह भी चकरा गई तथा शर्म से अपने मुख को हथेलियों से ढक दिया। दीनदयाल ने अपने हाथों से उसकी ठोड़ी को ऊपर उठाया तो धरती शर्म से दोहरी हो गई। अपना सर अपने पति की चौड़ी छाती पर रखकर कहा—आपने देखा न! यह सब कृपा राकेश की वजह से हुई है। राकेश हमारे लिये भाग्यवान बनकर आया है। अब तो मेरा राकेश पर और भी ज्यादा मोह हो गया है। राकेश बड़ा भाग्यवान है। उसने अपने भाग्य का हिस्सा हमें भी दे दिया है जिसके लिये हम हमेशा तड़पते रहे।

दूसरे दिन जब यह समाचार कमिश्नर चौधरी को मालूम हुआ तो वह दौड़ता हुआ दीनदयाल के घर आया—जिस समय मिस्टर चौधरी दीनदयाल के घर पहुँचा उस वक्त दोनों पति-पत्नी आपस में किसी

बात पर वाद-विवाद कर रहे थे जिसके कारण उन दोनों की नजर मि० चौधरी पर नहीं पड़ी कि वह कमरे में आ चुका है। उन्हें यह तब ही मालूम पड़ा जब उन दोनों के कानों से चौधरी की आवाज टकराई—मुबारक हो भाई साहब को और भाभी को—अपने आने वाले मेहमान की खुशी में। धरती तो शर्म से गड़ गई और अपने हाथों में लिये स्वेटर को बुनने लगी।

बाकी सेठ दीनदयाल ने कहा—आइये कमिश्नर साहब, आपका बहुत-बहुत शुक्रिया कि आप हमें मुबारकबाद देने आये हैं। बताइये, कैसी खिदमत की जाय।

हम तो आज भाभीजी के हाथों बनी चाय पीना चाहते हैं। सोफे पर बैठते हुए—राकेश कहां है ?

झूले में सो रहा है। मैं अभी चाय बनाकर आती हूँ—धरती बोली। जैसे ही धरती आगे बढ़ी कि चौधरी की आवाज उसके कानों में पहुँची—भाभीजी, चाय संभल कर बनाना, कहीं खुशी में शक्कर की जगह नमक न ले लाओ।

मि० चौधरी की मजाक सुनकर बेचारी धरती के गाल शर्म से सुर्ख हो गये। साड़ी का आँचल संभालती जल्दी कमरे के बाहर चली गई और चाय बनाने लगी।

कमरे में रह गए सेठजी और कमिश्नर। दोनों ने एक दूसरे के हालचाल पूछे।

दीनदयाल, अब तो घर में अपना बच्चा आ रहा है फिर दूसरों के बच्चों को रखने से क्या लाभ ?

चौधरी, मैं कुछ समझा नहीं, सिगरेट को बुझाते हुए दीनदयाल ने कहा।

अपना बच्चा तो अब आने वाला है। अपना खून अपना होता है। गैरों से कितना भी स्नेह क्यों न जताया जाय गैर-गैर ही होते हैं। इसलिये मैं चाहता हूँ कि राकेश किसी और को दे दिया जाए।

यह तुम क्या कह रहे हो चौधरी ? पहिले तो ऐसा हो भी सकता था, परन्तु अब ऐसा करना नामुमकिन है ।

कौनसा ऐसा पहाड़ टूट पड़ा है जो ऐसा हो नहीं सकता—दबाव डालते हुए चौधरी बोले ।

यह बात शायद तुम्हारी समझ में अभी तक नहीं आई है । अब जो बच्चा हमारे घर आ रहा है उसका कारण धरती राकेश का होना ही समझती है । वह समझती है कि राकेश हमारे घर में भाग्यवान बनकर आया है, उसके ही कारण आज उसकी गोद हरी-भरी है ।

तुम दोनों के अपने-अपने विचार हैं। मेरे विचार के अनुसार जो कुछ भी हुआ है वह होना ही था। बाकी तुम कहते हो कि राकेश भाग्यवान है, उसके ही आने से हुआ है, मैं इसे मानने से इन्कार करता हूँ। यह सिर्फ तुम दोनों का कहना है, अन्धविश्वास है, फिर भी जो कुछ हुआ है, अच्छा ही हुआ है, मैं बहुत खुश हूँ कि अपना बच्चा तो आ रहा है ।

चौधरी कह ही रहे थे कि इतने में धरती नौकर के बजाय स्वयं ट्रॉली चलाकर ले आई जिसमें चाय के अलावा कुछ खाने का सामान भी था ।

भाभी, क्या घर में नौकर चाकर नहीं है जो आपने तकलीफ की । फिर दीनदयाल की तरफ डांटते हुए कहा, तुम उल्लू की तरह किधर देख रहे हो, भाभी का हाथ तो बटाओ । और हां, भाभी को आज से काम करना बन्द करा दो । क्यों भाभी, हमने ठीक कहा न—मुस्कराते हुए चौधरी ने कहा ।

ऐसा सुनकर वेचारी धरती शरमा गई और शरमाते हुए उत्तर दिया—देवरजी मैं घर में काम कहाँ किया करती हूँ जो आप बार-बार मजाक कर रहे हैं। मुझे ऐसे मजाक बिलकुल पसन्द नहीं, ऐसा कहकर वह चाय बनाने लगी ।

अच्छा भाई, हमें क्या मालूम कि हमारी भाभीजी हकीकत को भी मज़ाक समझती हैं ।

चौधरी से ऐसा सुनकर दीनदयाल खिलखिला कर हंस पड़े तथा धरती एक बार फिर शर्मा गई।

तीनों ने साथ-साथ नाश्ता किया। इधर-उधर की बातों के पश्चात चौधरी ने जाने के लिये इजाजत मांगी।

दरवाजे तक दोनों पति-पत्नी चौधरी को विदा करने के लिये आए।

कमिश्नर साहब फिर कब तशरीफ लाएंगे? दीनदयाल ने कहा।

जब भाभी बुलाएंगी तब खुशी मनाने के लिए पूरे अपने स्टाफ के साथ आऊंगा— ऐसा कहकर मुस्कराते हुए चौधरी ने तिरछी नजरों से धरती की ओर देखा जो कि शर्मा गई थी। धरती ने सोचा देवरजी आज मजाक के मूड में है कहीं फिर कुछ और न कह दें इसलिये वह वहां से बिना कुछ बोले ही चली गई और वे दोनों हा-हा करके हंस पड़े।

चौधरी ने अपनी गाड़ी का इंजन स्टार्ट किया और दीनदयाल से हाथ मिलाकर अपने बंगले की ओर चल पड़ा।

हास्पिटल में बहुत भीड़ जमा थी। सेठ दीनदयाल मिस्टर चौधरी के साथ बातें कर रहे थे। नौकर चाकर इधर-उधर भाग रहे थे। कमिश्नर ने सेठजी से कहा—घबराने की कोई बात नहीं। मिस्टर घोष एक सफल डॉक्टर हैं। इतने में आपरेशन थियेटर से मिस्टर घोष आते दिखाई पड़ा जो कि नेपकिन से हाथ पोंछ रहे थे। आते ही सेठजी को मुबारकबाद दी और कहा—आपरेशन सफल हुआ, लड़की हुई है। भाभीजी बिल्कुल ठीक हैं। वह आपको बुला रही हैं।

डॉक्टर से ऐसा समाचार सुनकर दीनदयाल मिस्टर चौधरी के गले में बाहें डालकर झूल पड़े। वे खुशी के मारे पागल हुए जा रहे थे। दीनदयाल को खुशी में देखकर चौधरी ने कहा—अबे ओ बुद्धू! अन्दर जाओ, भाभीजी तुम्हारा इन्तजार कर रही होंगी, और हां! मुझे भी अन्दर बुलाना ताकि बच्ची को देख सकूं, जिसे देखने के लिये मेरा

मन मचल रहा है। कमिश्नर साहब भी बहुत खुश हो रहे थे। अमा यार तुम भी हमारे साथ आओ। दोनों अन्दर चले गये।

दोनों दोस्तों को अन्दर आता देखकर धरती मुस्करा पड़ी। अपने पति से कहा--जल्दी गाड़ी भेज कर राकेश को ले आइये। उसे देखने को मेरा जी मचल रहा है।

सेठजी खुद ही राकेश को अपनी गोद में उठा लाए। अपने पति की गोद में पहली बार राकेश को देखकर धरती ने भगवान का शुक्र अदा किया। दोनों बच्चों को धरती ने अपने दोनों बगल में सुलाया। बच्चों को देखकर धरती पुलकित हो रही थी। इतने में राकेश ने रोना शुरू कर दिया। धरती समझ गई कि उसे भूख लगी है। आज पहली बार राकेश को अपने स्तनों से दूध पिलाना था। धरती ने अपने पति तथा मि० चौधरी को बाहर जाने को कहा। जब दोनों चले गये तब धरती ने पहली ही बार राकेश को अपना दूध पिलाना शुरू किया। राकेश दूध पीता रहा और धरती राकेश को दूध पीता देखकर अत्यन्त प्रसन्न होने लगी। राकेश दूध पी ही रहा था कि बच्ची ने रोना शुरू कर दिया। बच्ची को रोता देख धरती के मुख से हंसी छूट पड़ी और हंसते हुए कहा – मेरी बच्ची, मत रो, तेरी भी बारी आती है, पहले अपने भैया को दूध पीने दे, फिर तू जी भर कर पीना। राकेश ने दूध पीना बन्द कर दिया, वह सो चुका था। राकेश को धरती ने दाईं ओर सुला दिया और बच्ची को दूध पिलाने लगी।

धरती अस्पताल से वापस अपने घर में आ गई। बच्ची का नाम हेमकला रखा गया। दोनों बच्चे पलते रहे। धरती बहुत खुश थी। भगवान ने उसे दो मुस्कुराते फूल दिये हैं जिन्हें देखकर धरती फूली नहीं समाती। सेठ दीनदयाल भी बहुत प्रसन्न थे। कमिश्नर साहब मिस्टर चौधरीजी कभी-कभी हेमकला को देखने आया करते। उनकी दिलचस्पी राकेश में कम और हेमकला में ज्यादा थी। वह हेमकला को प्यार से हेमा कहकर प्यार करते। इस प्रकार सब घर के लोग नौकर-चाकर स्वयं धरती तथा सेठजी भी बच्ची को प्यार से हेमा

ही कहते। सेठ दीनदयाल राकेश को भी बहुत प्यार करने लगे परन्तु फिर भी इतना नहीं जितना हेमा को करते थे। राकेश हेमा से ग्यारह महीने बड़ा था जिससे दोनों एक ही समान लगते थे जैसे कि दोनों बच्चों का जन्म एक ही समय हुआ हो।

समय बीतता रहा। घड़ी की सुइयां घूमती रहीं। मिनट घंटों में बदलते रहे, घंटे दिन-रात में और दिन-रात मिलकर सप्ताह में बदल गए। इस प्रकार चार सप्ताह मिलकर महीने बन गए, महीने वर्षों में आ गये। अब पूरे १२ साल बीत गये। दोनों भाई-बहन को स्कूल में भेज दिया गया। धरती अब बहुत खुश थी। भगवान ने उसे सब कुछ दिया है। एक चरित्रवान, खूबसूरत, करोड़ों की जायदाद का मालिक पति, इन सबके साथ दो मुस्कराते हुए फूल जो कि साथ-साथ स्कूल गये हुये थे। धरती दरवाजे पर खड़ी अपने बच्चों का इन्तजार कर रही थी। इतने में मोटरगाड़ी के हॉर्न की आवाज धरती के कानों में पड़ी। वह समझ गई कि बच्चे आ गए। गाड़ी पास ही रुक गई। ड्राइवर ने दरवाजा खोला। दोनों बच्चे दौड़ते हुए अपनी माँ से लिपट गये। धरती बड़े स्नेह से दोनों बच्चों के सिर पर हाथ रख-कर बालों से खेलने लगी। इतने में सेठजी भी आते दिखाई पड़े। अपने पति को आज पहली बार जल्दी आता देखकर वह समझ न सकी फिर जब धरती ने अपने पति की आँखों में देखा तो घबरा गई। गुस्से के मारे उनकी आँखों से अंगारे बरस रहे थे। वह समझ गई कि राकेश ने रोज की तरह आज भी स्कूल में शरारत की है। सेठ दीनदयालजी दरवाजे में प्रवेश करके, बिना किसी से बोले अपने कमरे में चले गए।

ऐसा देखकर धरती घबरा उठी। उसने समझा कुछ जरूर हो गया है। धरती ने एक बार हेमा से पूछा—बेटी, सच बताना, क्या आज भी राकेश ने स्कूल में कोई शरारत की? परन्तु हेमा ने कुछ भी उत्तर नहीं दिया। वह राकेश की तरफ घूर कर देखने लगी जो उसे इशारे से धमका रहा था। हेमा डर गई। हेमा को घबराता

हुआ देखकर धरती ने कहा—बेटी, क्या बात है जो तुम बताने में डर रही हो ? ऐसा कहकर जब धरती ने राकेश की तरफ देखा तो समझ गई। राकेश का कान पकड़ कर कहा—शैतान ! अपनी बहिन को इशारों से धमकाता है। फिर हेमा की तरफ घूमकर कहा—हेमा, सच-सच बताओ, क्या बात हुई है ? अगर तुम नहीं बताओगी तो तुम्हारे पापा बहुत नाराज होंगे। तुम डरो नहीं, मैं राकेश को आज ठीक करूँगी।

हेमा ने कहा—मां अगर मैं बताऊँगी तो राकेश मुझे कल स्कूल में मारेगा।

हेमा ने डरते-डरते कहा—मां हमारे साथ एक गरीब लड़का है जिसका नाम अमर है, पढ़ता है। उसके पास किताब नहीं थी। मैंने उसे सिर्फ पढ़ने के लिये अपनी किताब दी और फिर शान्ति और सीता के साथ खेलने चली गई। जब राकेश ने मेरी किताब अमर के हाथ में देखी तो उसको चोर कहने लगा। अमर ने राकेश को कहा कि उसे मैंने किताब दी है। परन्तु राकेश नहीं माना उसने अमर को एक मुक्का मार दिया और दोनों लड़ने लगे। इतने में मैं आ आई और मैंने कहा कि मैंने ही अमर को किताब दी है तो राकेश मुझ से भी लड़ने लगा और बोला—इस फकीर के साथ बात मत किया करो। मैंने कहा—करूँगी, जरूर करूँगी तो मुझे चाँटा मार दिया। तब अमर ने कहा—राकेश अपनी बहिन को मारता है। गुस्से में राकेश ने अपना डंडा अमर के सर पर दे मारा।

डंडे की बात सुनकर धरती कांप गई। क्या खून भी निकला था ?

हां मां खून भी निकला था—हेमा ने कहा।

ये सब बातें सेठजी दरवाजे पर कब से खड़े सुन रहे थे। वे गरज कर बोले—धरती, तुम्हारी अन्धी ममता ने राकेश को बिगाड़ दिया है। आज बचपन में ही वह लोगों को डंडा मारने से नहीं चूकता तो बड़ा होकर बन्दूक चलायेगा। बन्दूक शब्द सुनकर धरती एक बार फिर कांप उठी। फिर सेठजी ने कहा—आज मेरे पास मास्टर जी आये थे।

उन्होंने ये सारी बातें मुझे बताईं। उन्होंने यह भी बताया कि राकेश दूसरे गंदे बच्चों के साथ जुआ भी खेलता है।

जुआ खेलता है ! नहीं, राकेश ऐसा नहीं कर सकता—धरती ने कहा—आप झूठ बोल रहे हैं।

मैं तुम्हें समझाने की कोशिश कर रहा हूँ—सेठजी ने धरती से कहा—तुम्हारे इस लाड़ प्यार ने इसे बिगाड़ दिया है। इसका इशारा सेठ ने राकेश की तरफ किया था जो कि अब रोने ही वाला था। धरती इसको (राकेश को) सम्भाल कर रखो वरना तुम्हें पछताना पड़ेगा, ऐसा कहकर सेठजी दरवाजे के बाहर निकल गये तथा अपनी गाड़ी स्टार्ट करके चले गये।

आज पहली ही बार धरती ने राकेश को धमकाया, क्रोध में उसे एक चाँटा भी मार दिया। गुस्से में धरती ने चाँटा राकेश के गाल पर मार तो दिया, परन्तु उसकी चोट हथौड़े के समान धरती के दिल में हुई। स्वयं पर उसे बहुत क्रोध आया कि जिन हाथों से राकेश को पाल-पोस कर इतना बड़ा किया है, आज उन्हीं हाथों से उसने राकेश के कोमल गाल पर चाँटा मारा है। ऐसा सोच कर धरती स्वयं भी रो पड़ी, राकेश के साथ, जो चाँटा लगाने से पहिले ही रो रहा था, धरती का कलेजा रो उठा तथा बढ़कर राकेश को अपने सीने से लगा लिया। फिर दोनों फूट-फूट कर रो पड़े। अपनी मां तथा भाई को इस प्रकार रोता देखकर बेचारी हेमा भी रो पड़ी। हेमा भी राकेश को बहुत प्यार करती थी। उसे सिर्फ राकेश की शरारतों तथा गंदे लड़कों के साथ दोस्ती रखने का गिला था, बाकी हेमा राकेश को बहुत प्यार करती थी। जब रक्षा-बंधन आता तो उसे चैन ही नहीं मिलता, जब तक वह अपने नन्हे हाथों से राकेश को राखी न बाँध देती। राकेश राखी बँधाने के बाद हेमा को कुछ देना चाहता परन्तु हेमा हमेशा कुछ भी लेने से इन्कार कर देती। वह कहती—भैया मुझे कुछ भी नहीं चाहिये, तुम सिर्फ अपनी बहन की रक्षा करना।

कल रक्षा-बन्धन है तथा हेमा राकेश को फिर रक्षा बाँधेगी।

हेमा को रोता देखकर धरती ने हेमा को भी प्यार किया और कहा—बेटी, अपने भाई की शिकायत नहीं करनी चाहिए।

हेमा ने कहा—मां, मैंने कब राकेश की शिकायत की थी। आपने ही तो पूछा था, वरना मैं कभी भी नहीं बताती। मुझे राकेश से कोई गिला नहीं है। मैं सिर्फ चाहती हूँ कि यह गंदे लड़कों के साथ कभी न घूमे और न ही कभी जुआ खेले।

धरती ने राकेश को प्यार करते हुए कहा—हां बेटे, हेमा सच कहती है, बुरे लड़कों की संगत छोड़ दो।

राकेश ने कहा—अच्छा मां, आज से मैं किसी भी लड़के से स्कूल में बात नहीं करूंगा और न ही जुआ खेलूंगा। मैं हेमा की बात मानता हूँ, परन्तु हेमा को भी मेरी बात माननी पड़ेगी।

हेमा ने उछल कर फट से कहा—भैया मैं कसम खाती हूँ कि तुम जो बात कहोगे मुझे मंजूर है।

तो सुनो, आज से तुम अमर के साथ कभी भी नहीं बोलोगी। उसको किताब भी नहीं दोगी, उसके साथ कभी भी नहीं घूमोगी। क्यों, यह शर्त मंजूर है?

बेचारी हेमा क्या कहती, उसके मुख से एक भी शब्द नहीं निकला, वह कैसे यह शर्त मंजूर कर सकती है। अमर ही सारे स्कूल में उसे अच्छा लगता है। अमर उसका सच्चा सखा है। अमर कितना होशियार है। अमर ही उसे लिखाई-पढ़ाई में मदद करता है। रिस्सेस में दोनों ही पेड़ के पीछे बैठकर मीठी-मीठी बातें किया करते हैं। अगर अमर उससे किताब मांगेगा तो वह ना कैसे कह सकेगी, उसका दिल नहीं टूट जायगा? वह जितना अपने भाई राकेश को प्यार करती है, उतना अपने सखा अमर को भी। नहीं उसे राकेश की शर्त माननी पड़ेगी, वरना वह गन्दे लड़कों के साथ जुआ खेलेगा। उसे अमर का साथ अपने भाई की जिद के खातिर छोड़ना होगा।

हेमा को चुप होता देखकर राकेश ने कहा—हेमा मैं समझता हूँ,

तुम्हें मेरी शर्त मंजूर नहीं। ठीक है, तो मैं भी ऐसी बात मानने को तैयार नहीं।

मां, देखो हेमा मेरी शर्त नहीं मानना चाहती। हेमा की और देखते हुए राकेश ने कहा।

नहीं बेटे, हेमा तुम्हारी बहिन है, वह अपने भाई के लिये एक अमर तो क्या दस अमर का साथ भी छोड़ देगी। फिर हेमा की तरफ धरती ने देखकर कहा—जो स्तब्ध होकर कमरे के फर्श की तरफ देख रही थी—क्यों हेमा, तुमने राकेश के सवाल का जवाब नहीं दिया ?

बेचारी हेमा क्या जबाब देती। एक तरफ था राकेश, उसका भाई दूसरी ओर था अमर, उसका प्यारा सखा। आखिरकार भाई का प्यार जीत गिया। अमर, तो उसका कोई भी नहीं लगता, सिर्फ स्कूल में साथ पढ़ते हैं, बातचीत तक ही साथ है। राकेश तो उसका भाई है। उसे राकेश की बात माननी पड़ी। फिर पता नहीं भाई के प्यार के सामने शायद एक मामूली सखा का प्यार सस्ता पड़ गया था। अपने भाई को सही रास्ते पर लाने के लिये उसे अपने पवित्र दोस्ती की कुरबानी करनी पड़ी। एक बार हेमा ने यह बात फिर सोची। उसके दिल ने उसे कहा—हेमा तुम अगर अमर को कभी भी भूल नहीं सकती, फिर भी भाई के खातिर तुम्हें कुरबानी करनी पड़ेगी। एक बार फिर अमर का भोला चेहरा हेमा के सामने आ गया और उसका नन्हा सा दिल अन्दर ही अन्दर रो पड़ा, जिसे न तो राकेश देख सका और न ही धरती। धरती अपने दोनों बच्चों को साथ लेकर कमरे में चली गई।

दूसरे दिन जब दोनों भाई बहिन स्कूल में जा रहे थे रास्ते में उन्होंने अमर को देखा जिसके सर पर पट्टी बँधी हुई थी, शायद कल के डंडे की चोट के कारण। अमर के सर पर पट्टी बँधी देखकर बेचारी हेमा मन ही मन रो पड़ी। पता नहीं क्यों अमर के सर की चोट हेमा को अपने दिल की चोट लगी। अपने प्यारे सखा का चेहरा मुरझाया

हुआ देखकर हेमा विचलित हो उठी। अब तक अमर ने हेमा को आते हुआ नहीं देखा था, हेमा राकेश के साथ आज पैदल ही आ रही थी। हेमा का हाथ पकड़ कर राकेश ने कहा–हेमा जल्दी चलो स्कूल का समय हो गया है।

दोनों भाई बहिन तेज कदम बढ़ाने लगे। बेचारी हेमा से तो चला ही नहीं जा रहा था। उसके पैरों ने जैसे चलने से जवाब ही दे दिया हो, परन्तु उसे चलना ही पड़ा क्योंकि राकेश कुछ आगे बढ़ चला था। इस प्रकार हेमा और राकेश, अमर से आगे निकल गए। अमर की नजर हेमा पर पड़ी। अमर ने हेमा को आवाज दी––हेमा आ आ·········, परन्तु हेमा ने मुड़कर नहीं देखा। अमर ने सोचा शायद उसकी आवाज हेमा तक नहीं पहुँची है। फिर तीन-चार बार हेमा, हेमा कहकर पुकारा परन्तु हेमा अबकी बार भी न तो रुकी न मुड़कर ही देखा। बेचारी करती भी क्या। राकेश उसे कह रहा था—अगर वह अमर को आवाज देगी या बात करेगी तो वह उसे अकेला छोड़कर चला जायगा। फिर राकेश ने हेमा को उसकी शर्त याद दिलाई जिससे हेमा घबरा उठी। बेचारी क्या करती, उसने एक बार भी अमर की तरफ मुड़ कर नहीं देखा।

अमर अब हेमा के पास दौड़ता हुआ आ रहा था। अमर के पांवों की पदचाप उसे साफ सुनाई पड़ रही थी, परन्तु भाई के व्यवहार के कारण उसे अपने प्यारे सखा का गंगाजल जैसा पवित्र दिल दुखाना पड़ा, इतने में अमर भी वहां पहुँच गया। हेमा का हाथ पकड़कर बोला, क्यों हेमा, बहरी हो गई हो जो सुनाई नहीं पड़ता। बेचारी हेमा क्या जबाब देती, राकेश जो उसके सामने खड़ा था। फिर अमर ने अपना वाक्य दोहराया—क्या हो गया है हेमा ! जो तुम जबाब ही नहीं देती।

इसका जवाब मैं देता हूँ। यह राकेश था जो जलती हुई आँखों से अमर की तरफ देख रहा था।

मैं तुमसे सवाल नहीं कर रहा हूँ, मैं हेमा से पूछ रहा हूँ।

सवाल के बच्चे, यहां से जल्दी नौ दो ग्यारह हो जाओ, वरना ठीक नहीं होगा।

राकेश....हेमा के मुँह से सिर्फ इतना ही निकला कि राकेश फिर से बोल उठा—अमर के बच्चे तुम चले जाओ। तुम जैसे कंगालों से हेमा बात करना अपनी तौहीन समझती है।

हेमा, अपने भाई को कहो कि अपनी गन्दी जबान को रोके। मैं तुम्हारे ही मुँह से ये सब बातें सुनना चाहता हूँ कि क्या तुम मुझसे दोस्ती रखना नहीं चाहतीं, मुझसे बात तक नहीं करोगी।

अब भी हेमा चुप रही उसने कोई भी उत्तर नहीं दिया तथा एक टक नीचे देखने लगी।

अबे उल्लू, हेमा जवाब नहीं देती, इसका मतलब भी नहीं समझता।

हेमा अमर को कह दो कि जो कुछ मैं कह रहा हूँ, सच कह रहा हूँ—उसकी ओर देखते हुए राकेश ने कहा।

अमर बेचारा शान्त सा खड़ा हेमा के लबों की तरफ देखने लगा जो कि अभी फैसला करने वाले थे। अमर को हेमा पर पूरा भरोसा था कि वह ना कह देगी, राकेश को खरी खोटी सुनायेगी, परन्तु जब हेमा ने कहा—अमर! राकेश ने जो कुछ कहा है, सच कहा है। इतना सुनते ही अमर के मुख से निकलने वाली चीख मुख में ही दब कर रह गई। उसके पैरों से जैसे जमीन खिसकने लगी हो। आँखों के सामने अँधेरा छाने लगा। वह जैसे बेहोश हो चुका था। उसे अपने कानों पर विश्वास ही नहीं हो रहा था कि हेमा उसके लिये ऐसा कह सकती है। वह निस्तब्ध सा पता नहीं कब तक खड़ा रहा। इतने में उसके कानों में मोटर के हॉर्न की आवाज पड़ी जिसे मोटर ड्राइवर बार-बार बजा रहा था। अमर होश में आ चुका था। अब न तो उसके सामने हेमा थी न राकेश, वे तो कब के जा चुके थे। अमर डगमगाते हुए कदम, बुझा-बुझा दिल लेकर स्कूल के बजाय घर की ओर चल पड़ा।

सीता अपने बच्चे को जल्दी आता देखकर कुछ भी न समझ सकी। वह दरवाजे के पास आकर अमर को देखने लगी जो कि अब आ चुका था। अपने बच्चे का मुरझाया हुआ चेहरा देखकर ममता की देवी घबरा गई और पूछा बेटे क्या हुआ है जो चेहरा उतरा हुआ है? क्या तबियत ठीक नहीं है? स्कूल क्यों नहीं गये—ऐसा कहकर सीता ने अपनी बाँहों में लेकर पूछा—बेटे, बता क्या बात है जो तू चुप-चुप सा खड़ा है? जब सीता ने अमर का चेहरा अपने हाथों में लेकर ऊपर उठाया तो विचलित हो उठी। अमर की आँखों से अश्रुधारा बह चली थी। अपने बच्चे को इस प्रकार रोता देखकर सीता ने पुनः पूछा—मेरे लाल! क्या तुम्हें किसी ने कुछ कहा है, तुम इतना क्यों रो रहे हो? मुझे बताओ, मैं उसे ठीक करूँगी। आखिरकार मेरे बच्चे ने ऐसा कौनसा बुरा काम किया है जो उसे रोना पड़ा, मेरे लाल मुझे बताओ। अब की बार अमर फूट-फूट कर रो पड़ा। अमर को इस प्रकार फूट-फूट कर रोता देखकर सीता भी रो पड़ी। बेटे, हम गरीब जरूर हैं, इसका मतलब यह नहीं कि हम जुल्म सहते रहें। अपनी मेहनत का खाते-पीते हैं, किसी से कुछ लेते नहीं, बेटे सच-सच बताओ क्या बात है? तुम्हें किसने कुछ कहा है, मैं उससे न्याय मागूंगी।

मां, कुछ नहीं हुआ। अबकी बार अमर बोल ही पड़ा। तुम खामख्वाह दुखी हो रही हो।

बेटा, दुखी कैसे नहीं होऊंगी। मेरे कलेजे का टुकड़ा दिल ही दिल में आंसू बहाता रहे और मैं देखती रहूँ, नहीं ऐसा नहीं हो सकता।

अमर अपनी प्यारी माँ को क्या जवाब दे कि उसकी हेमा ने आज उसको ठुकरा दिया, उसकी बेइज्जती की, अपने भाई के सामने। आखिरकार उसने अपने भाई का ही पक्ष लिया। जबकि दोष भी उसका ही था। वह अमर को डरा धमका सकती थी, उसे मार भी सकती थी, परन्तु फिर भी अमर उसे कुछ न कहता, पर ऐसा दुर्व्यव-हार कभी न करती। उसे ठुकराती नहीं, उसके पवित्र प्यार का

अपमान न करती। फिर अमर का नन्हा सा दिल कठोर हो गया। उसने अमर को आवाज दी—अमर तू दुखी क्यों हो रहा है ? आखिरकार वह तुम्हारी क्या लगती है। अगर वह तेरे बिना रह सकती है तो तू क्यों उसके लिये मरता है। तुम हेमा को भूल जाओ, भूल जाओ, भूल जाओ, भूल जाओ....। ठीक है, मैं आज से उसका चेहरा तक नहीं देखूंगा। इस प्रकार अमर के दिल में उठता हुआ तूफान अब शान्त हो चुका था। उसने हंसकर कहा—माँ, तुम तो खामख्वाह दुखी होती हो, कोई भी बात नहीं। फिर भी मैं तुमसे एक बात कहना चाहता हूँ, अगर मानो तो कहूँ।

तुम अमर सच कह रहे हो कि तुम्हें किसी ने कुछ नहीं कहा।

हां माँ, मैं बिलकुल सच कह रहा हूँ। मुझे कुछ भी नहीं हुआ। देखो न कितना हँस रहा हूँ। ऐसा कहकर वह बड़ी जोर से कहकहे लगाने लगा।

अमर को हँसता देखकर सीता ने कहा अच्छा अच्छा अब शान्त हो जा और बता कि तू कौनसी बात कहना चाहता है, जिसके कारण पहले तो खुद भी रोया और मुझे भी रुलाया और अब खुद भी हँस रहा है, मुझे भी हँसा रहा है।

मां यह जिन्दगी ही कुछ ऐसी है—पल भर में रोना और पल भर में हंसना। अच्छा सुनो माँ, तुम कहा करती हो कि पिताजी बहुत बहादुर थे, उन्होने अपने देश के लिये सब कुछ कुर्बान कर दिया इसके साथ-साथ देश की सेवा में वे स्वयं भी कुर्बान हो गये।

अपने पति की बात सुनकर सीता एक बार दुखी हो उठी फिर स्वयं को सम्भाल कर बोली—हां—हां कहो, क्या कहना चाहते हो ? पहेलियां मत बुझाओ।

माँ मैं भी पिताजी की तरह होनहार देशभक्त बनना चाहता हूँ। वह दिन आयेगा जब तुम्हारे आशीर्वाद से मैं तुम्हारे सारे दुखी दिन दूर कर दूंगा और हां, मैं स्कूल बदलना चाहता हूँ। अब वह असलियत

पर आ गया। माँ, इस स्कूल में तो मास्टरों को पढ़ाना ही नहीं आता सिर्फ सारा दिन बातें ही करते रहते हैं।

अपने बच्चे से ऐसी बात सुनकर सीता खिलखिला कर हंस पड़ी। पगले इस छोटी सी बात के लिये तुमने स्वयं को भी परेशान किया और मुझे भी। तुम्हें जैसा अच्छा लगे करो। सीता को तो यह बात मामूली लगी क्योंकि उसे हकीकत मालूम न थी कि अमर स्कूल क्यों छोड़ना चाहता है ?

अब दोनों माँ-बेटे हंस रहे थे। सबसे ज्यादा हंस रहा था अमर, जिसकी हंसी में दुःख भरा था।

हेमा राकेश के साथ स्कूल तो पहुँची परन्तु उसका मन पढ़ने में नहीं लग रहा था। उसका ध्यान तो स्कूल की गेट पर था कि अमर अभी ही आ जायगा। जब वह आयेगा तो पता नहीं मेरी तरफ देखेगा भी या नहीं। इस प्रकार हेमा का मन पढ़ने में नहीं लग रहा था। दो घंटे बीत गए, परन्तु अमर नहीं आया। आयेगा भी कैसे ! उसने अपने भाई के सामने बेइज्जती जो की। ऐसा सोचकर हेमा का सर दर्द के मारे फटने लगा। उसका मन स्कूल में नहीं लग रहा था। इसीलिये मास्टरजी से घर जाने की आज्ञा मांगी और राकेश से कहा—राकेश मैं घर जा रही हूँ। मेरी तबीयत ठीक नहीं है। तुम स्कूल की छुट्टी के बाद आना। ऐसा कहकर हेमा ने अपना बस्ता उठाया और चल पड़ी, अपने घर की ओर।

स्कूल की घंटी बजी, छुट्टी हो गई—सभी बच्चे अपने-अपने घरों को जाने लगे परन्तु कुछ बदमाश बच्चे रुक गये।

एक ने कहा—राकेश, क्या बात है, चुपचाप खड़े हो ? क्या आज खेल नहीं खेलना है ?

क्या बात करते हो यार, आज का सुहावना वातावरण देखकर तो मन मूड में है। आज बहुत खेलेंगे, परन्तु इधर नहीं, उस टीले के पीछे जहां खेत है, वहीं बैठकर ताश खेलेंगे और सिगरेट भी पियेंगे।

वाह आज तो तुम बहुत प्रसन्न हो रहे हो। क्या बात है ? दूसरे लड़के ने कहा।

खुश भी कैसे नहीं होऊँगा बरखुर्दार—राकेश ने कहा। आज तो तबीयत पता नहीं क्या-क्या चाह रही है। खैर सुनो आज की खुश-खबरी। आज सुबह ही उस फटीचर को ऐसे मजे चखाए हैं कि बेटे को नानी याद आ गई होगी। इसलिये आज स्कूल में ही नहीं आया।

राकेश, तुम किस फटीचर की बात कर रहे हो ? कहीं अमर के लिये तो नहीं—श्याम ने कहा।

वाह वाह ! बेटे, खूब पहचाना, तुम बड़े होकर मेरा नाम रोशन करोगे। बड़े होनहार हो। क्या नजर रखते हो। खुदा की कसम तुम्हें चूमने को जी चाहता है। अच्छा तो यह लो सिगरेट। मनाओ इस खुशी में जश्न। ऐसा कहकर राकेश ने अपने सभी साथियों को एक-एक सिगरेट दी और चल पड़े उस टीले की ओर जुआ खेलने। सभी लड़के एक साथ धुआँ उड़ाने लगे।

——

२

आपको कितनी बार कह चुकी हूँ कि इतना काम मत किया करो। जब देखो काम ही काम--ऑफिस में काम, घर में काम। देखिये रात के दस बज चुके हैं, परन्तु अभी तक काम कर रहे हो। आपको इतना काम नहीं करना चाहिए। कहीं आपकी सेहत न बिगड़ जाय। क्या आपको कुछ सुनाई नहीं पड़ता ? मैं बके जा रही हूँ और आप महाशय लिखते ही जा रहे हैं। मैं आपसे फिर कहती हूँ, अब आप जवान नहीं, बूढ़े हो चुके हैं, आपको इतना काम नहीं करना चाहिए।

प्लीज धरती, तुम चली जाओ। मुझे एक घंटा और डायरी लिखनी पड़ेगी।

अच्छा तो आप डायरी लिख रहे हैं, भला इसके लिखने से क्या लाभ, जो हमेशा रात को लिखा करते हो ? धरती ने अपने पति दीनदयाल से कहा।

धरती तुम्हें इस डायरी का क्या मालूम कि यह मेरे जीवन में कितना बड़ा महत्व रखती है। मैं अपनी इस डायरी को अपनी जान से भी ज्यादा चाहता हूँ। इस डायरी में तुम्हारी और मेरे जीवन की पूरी कहानी लिखी हुई है कि किस प्रकार तुम्हारी मेरी शादी हुई, किस प्रकार राकेश और हेमा हमारे घर में आए। शुरू से लेकर आज तक जबकि हमारे दोनों बच्चे जवान हो चुके हैं और हम दोनों बूढ़े हो गये।

यह सब इस डायरी में लिखा है। आप इस डायरी में सब कुछ लिख तो लेते हैं कभी आगे का भी कुछ सोचा है कि लड़की बड़ी हो चुकी है, उसके लिये भी कुछ सोचना है।

धरती से यह बात सुनकर सेठ दीनदयाल खिलखिलाकर हंस पड़े। अपने पति को इस प्रकार हँसता हुआ देखकर धरती गुस्सा हो उठी और तुनक कर बोली—इसमें हँसने की कौनसी बात है जो आप हँस रहे हैं ? क्या मैंने कोई मजाक की बात कही है ?

सेठजी एक बार फिर हँस पड़े और धरती से कहा—बात मजाक की ही तो थी। ऐसा कहकर फिर हँसने लगे।

ऐसी कौनसी बात मैंने कही जो हँसी के मारे लोट पोट हो रहे हो ? धरती ने नाराज होकर पूछा।

धरती तुम खामख्वाह बुरा मान गईं। मैंने तो कुछ भी नहीं कहा। सुनो, सर खुजलाते हुए कहा—हेमा मेरे हिस्से की है उसका बुरा भला मैं खुद सोचूंगा, बाकी तुम अपने लफंगे व लाडले का सोचो जो कि गलत रास्तों पर बढ़ रहा है। इतनी रात हो चुकी है, पर उसका कुछ पता नहीं, अब तक घर में नहीं आया है। क्या शरीफ लड़के इतनी रात तक गुम रहा करते हैं ? धरती, तुम हेमा का सोचना छोड़कर, राकेश के विषय में सोचो।

अपने पति के मुँह से राकेश के बारे में ऐसी बात सुनकर धरती गुस्सा हो उठी और कहा—आप तो बचपन से ही राकेश के दुश्मन हैं। अगर मैं उसकी देखभाल नहीं करती तो पता नहीं उसका क्या होता। आप को शर्म आनी चाहिये जो आप जवान बेटे के लिये इतनी गन्दी भावनाएं रखते हो। जवान है, जवानी में अकसर लड़के ऐसे हुआ ही करते हैं। जब इसके सर पर घर के कारोबार का भार पड़ेगा तो स्वयं ही ठीक हो जाएगा। मैं तो चाहती हूँ कि राकेश के बी. ए. करने के बाद आप पूरा कारोबार उसके हाथ में दे दीजिये। फिर देखिये कि आप भी किस प्रकार उसके पीछे फिरते हैं। मेरा राकेश तो बड़ा होनहार है। आप क्या जानें, वह तो लाखों में एक है।

बन्द करो यह अपनी ऊटपटांग बातें, डाँटते हुए दीनदयाल बोले। मैं इतना बेवकूफ नहीं जो अपने ही पाँवों पर अपनी ही कुल्हाड़ी मारूँ।

कहती हो मेरा राकेश तो लाखों में एक है—मुँह बिगाड़ते हुए बोले, तुम क्या जानो वह तो नादान लाखों में एक बड़ा बदमाश है जो तुम्हारे लाड़-प्यार का नाजायज फायदा उठा रहा है। मैं तो इस नादान की हरकतें उसके बचपन से ही देखता आ रहा हूं। तुम समझती हो कि मैं इस अहसान फरामोश अनाथ के हाथों में अपना बड़ा कारोबार सौंप दूँगा। इस कमीने को मैं अच्छी तरह से जानता हूँ। सेठजी का धीरे-धीरे क्रोध बढ़ने लगा और चिल्ला कर कहा धरती तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है जो उस नादान ......

चुप हो जाओ भगवान के लिये, बीच में ही अपने कानों पर हाथ रखकर बड़े जोर से चिल्लाकर धरती ने कहा। भगवान के लिये ऐसी गन्दी बातें अपने मुख से मत निकालो। राकेश कैसा भी है, अब वह अपना ही बच्चा है। मैं आपसे हाथ जोड़कर कहती हूँ कि आइन्दा ऐसे शब्द कभी भी नहीं कहियेगा। ऐसा कहना आपको शोभा नहीं देता। धरती हाँफती हुई यह सब कह रही थी। आप क्रोध में पता नहीं क्या-क्या कह जाते हैं। मुझे डर लगता है कहीं राकेश ने यह सब सुन न लिया हो।

तो ठीक है अब से मैं कुछ भी नहीं कहूँगा—एक शर्त पर कि तुम भी आइन्दा के लिये राकेश की कोई भी सिफारिश नहीं लाओगी। और सुनो, आज मैं तुम्हें अपना फैसला सुनाता हूँ। मेरी पूरी जायदाद का वारिस है हेमा और उसका वर, जिससे उसकी शादी होगी। मैं पूरा अपने कारोबार का बोझ हेमा के पति के कंधों पर डालूँगा बशर्ते कि वह होनहार हो। मुझे पूरा भरोसा है कि उसका पति होनहार, शरीफ आदमी होगा क्योंकि मैं लड़का ही ऐसा ढूँढूँगा ताकि मेरे सपने सच हो सकें और राकेश को कुछ हिस्सा जरूर दूँगा जिससे वह खुद की जिन्दगी अच्छी तरह चला सके। यह भी राकेश पर निर्भर है कि अपने हिस्से से कोई छोटा-मोटा कारोबार चलाकर सुखी रहे, परन्तु इतना मैं समझता हूँ कि वह अपनी गन्दी आदतों और बुराइयों के कारण कुछ भी नहीं कर पाएगा।

तुम अब जा सकती हो, ऐसा कहकर दीनदयाल फिर डायरी लिखने के लिये बैठ गए।

धरती जैसे ही अपने पति के कमरे से बाहर आने लगी वैसे ही एक छाया जो पता नहीं कब से छिप कर उन दोनों की बातें सुन रही थी, नीचे दरवाजे की ओट में बैठ गई—खुद को छिपाने के लिये ताकि धरती उसे इस प्रकार खड़ा हुआ देख न सके।

धरती सीधी अपने कमरे में प्रविष्ट हुई तथा अन्दर से किवाड़ बन्द कर दिये। उसी वक्त वह छाया छिपती हुई बाजू वाले कमरे में प्रविष्ट हो गई, यह राकेश था। उसने अपने कमरे के किवाड़ अन्दर से बन्द कर दिये। अपने बाप के मुख से अपने लिये अनाथ शब्द सुनकर राकेश सोचने लगा कि पिताजी ने मेरे लिये अनाथ शब्द का प्रयोग क्यों किया और ऐसा सुनकर माँ इतनी किस लिये घबरा गई। वह सोच रहा था कि आखिरकार किस कारण पिताजी अपनी जायदाद का वारिस उसे नहीं बनाना चाहते हैं जबकि वही उनका एक बेटा है, उनकी हर चीज का हकदार। बेटा चाहे कितना ही नीच क्यों न हो अपने माँ-बाप की जायदाद का वारिस वही होता है। फिर पिताजी क्यों अपनी पूरी जायदाद हेमा को और मुझे कुछ हिस्सा देना चाहते हैं। एक बार फिर 'अनाथ' शब्द उसे याद आया। वह सोचने के लिये मजबूर हो गया कि पिताजी ने उसके लिये अनाथ क्यों कहा? वे कुछ और कह सकते थे। उसने बहुत सोचा, परन्तु किसी भी नतीजे पर नहीं पहुँच सका। अब की बार हेमा का चेहरा उसकी आँखों के सामने आया और दीनदयाल की कही हुई दूसरी बात उसे याद आई—मैं अपनी पूरी जायदाद हेमा और उसके पति के नाम करूँगा। यह सारी दौलत हेमा की है। वह फिर सोचने लगा कि अगर हेमा की शादी हो गई तो वह खुद फकीर हो जाएगा। वह कहीं का भी नहीं रहेगा। पूरी जायदाद तो हेमा को मिलेगी—बाकी उसे क्या खाक मिलेगा। वह गुलाम हो जाएगा, अपने जीजा का गुलाम, उसकी जिन्दगी बरबाद हो जाएगी।

उसके ऊपर इतना कर्जा है कि वह चुका भी नहीं सकेगा। ऐसा सोचकर उसे हेमा से जलन होने लगी। वह सोचने लगा, अगर हेमा नहीं जन्मी होती, वह सिर्फ अकेला ही होता तो कुछ भी करता, कहीं भी जाता, परन्तु और कोई उसके दरमियान नहीं आता, वही पूरी जायदाद का वारिस बनता। वह ऐसा विचार ही रहा था कि उसे अपने पिता की डायरी का खयाल आया। राकेश ने सोचा कि डायरी को एक बार पढ़ना ही चाहिये क्योंकि पिताजी ने स्वयं की जिन्दगी के विषय में सब कुछ लिखा है। हो सकता है कुछ हाथ लग जाए। डायरी और हेमा, हेमा और डायरी अब ये दोनों उसके लिये परेशानियाँ बन गईं। राकेश पलंग पर लेट गया और इस प्रकार सोचते-सोचते उसकी आँख लग गई।

क्लास में राकेश बैठा इधर-उधर देख रहा था। उसके दिमाग में उसके पिता के कहे शब्द बार-बार चक्कर काट रहे थे, परन्तु वह किसी भी नतीजे पर नहीं पहुँच सका कि आखिरकार उसके पिता ने उसके लिए अनाथ क्यों कहा। फिर उसे हेमा का खयाल आया कि पिताजी हेमा को कितना चाहते हैं। उसकी हर बात मानते हैं, उसे प्यार करते हैं, उसके साथ-साथ पूरी जायदाद भी उसी के नाम होगी। उसे तो कुछ भी नहीं मिलेगा। वह बरबाद हो जायगा, उसकी फूलों जैसी जिंदगी में काँटों के सिवाय और कुछ भी नहीं होगा। ऐसा विचार आते ही उसे हेमा से नफरत होने लगी। उसने मन में सोचा अगर हेमा को पिताजी की नजरों से गिरा दिया जाय तो फिर कुछ काम बन सकता है। वह सोचने लगा कि ऐसा कौनसा उपाय सोचा जाय जिससे हेमा के कारण उसके खानदान की बेइज्जती हो, जो कि पिताजी बरदाश्त नहीं कर सकते। ऐसा सोचते-सोचते वह ऊबने लगा। वह अब क्लास में बैठना नहीं चाहता था, अब उसका मन गम को दूर करने के लिये कुछ चाहने लगा। सोचकर उसने दांई तरफ बैंच पर बैठे ऐक लड़के की तरफ देखकर आँख दबा दी तथा उसके जवाब में उस लड़के ने भी आँख दबा दी।

लड़के को राकेश ने आँख दबाकर सन्देश दिया । उसने उस सन्देश को अपने तीसरे साथी तक पहुँचाने के लिये पीछे की तरफ मुड़कर देखा । तीसरे लड़के की नजर पड़ते ही दूसरे लड़के ने आँख दबा दी । तथा जवाब में तीसरे लड़के ने भी आँख दबाई । इस प्रकार तीसरे ने चौथे को और चौथे ने पांचवे को अपनी अपनी-आँखों से इशारा किया । यह इन पाँचों साथियों का एक दूसरे को सिगनल था । जब कभी उन को क्लास से भागना पड़ता तो इसी प्रकार एक दूसरे को आँखों से इशारा करके चेतावनी देते कि एक-एक करके बाहर आ जाओ ।

पहले राकेश कोई बहाना बनाकर क्लास के बाहर आया, फिर दूसरा, फिर तीसरा । इस प्रकार दस मिनट के अन्दर पांचों साथी आपस में आकर मिले । ये पांचों कॉलेज के नामी गुंडे-बदमाश समझे जाते थे । एक ही दर्जे में दो-दो साल से पढ़ रहे थे और शायद अब तीसरे साल भी उन सब को उसी दर्जे में साथ-साथ पढ़ना पड़ेगा । यह सब सिर्फ इसलिये कि पांचों की हरकतें जैसे दो साल पहिले थीं वैसी अब भी हैं, दूसरे शब्दों में पहले दो सालों से भी बढ़कर । हर एक ने इन दो सालों में गुण्डागर्दी में काफी उन्नति की है । इन पाँचों का सरदार है राकेश और बाकी चारों साथी उसे राकी कहकर पुकारते हैं ।

राकेश ने कहा—दोस्तों आज मेरा मूड बिल्कुल ठीक नहीं, इसलिये मैं चाहता हूँ कि कहीं चलकर मूड ऑन कर दिया जाय । अब तुम सभी एक साथ अनुमति दो कि कहां चलना चाहिए ।

तब एक बोला—राकी, चलना कहां है, उसी जगह जहां हमेशा जाया करते हैं । निशात के सिवाय ऐसी कोई भी जगह नहीं है जहां आनन्द मिल सके । राकेश का निशात जाने का ख्याल था । पांचों ने अनुमति दे दी । सब राकेश की गाड़ी में आकर बैठ गये । राकेश गाड़ी ड्राइव करने लगा ।

निशात, शहर का मशहूर होटल, जहां पर शराब और कबाब के साथ-साथ शबाब के शौकीन हस्तियों को उनकी चाहना के अनुसार

शबाब भी पेश किया जाता है। जैसा दाम वैसा ही माल। निशात नाम से तो होटल है पर हकीकत में है व्यभिचार का अड्डा। यहाँ पर रात को शहर की बड़ी-बड़ी हस्तियाँ, जिन्हें यहाँ का समाज नेता समझ कर सम्मान से सर झुकाता है, वे अपनी रातें गरम करने के लिये नंगे पावों दौड़ पड़ते हैं, स्वयं को शराब की बोतल में डुबोने के लिये, अपनी वहशत मिटाने के लिये बड़े-बड़े अमीर सेठ साहूकार जिन्हें लोग सखी हातिम, खुदा के फरिश्ते समझ कर पूजा करते हैं वे स्वयं यहां पर किसी के पहलू में बैठकर भक्त बन जाते हैं। दिन रात निशात में जुआ चलता है। शराब से भरी सैंकड़ों बोतलें कुछ ही पल में खाली हो जाती हैं। हजारों, लाखों में जुआ चलता है। गिलास पर गिलास भरे जाते हैं। जाम से जाम टकराते हैं। भरे हुए गिलास एक दम खाली हो जाते हैं और फिर भर जाते हैं। इस होटल में सब जा सकते हैं, परन्तु खास लोगों के लिये खास प्रबन्ध है, जहाँ पर सिर्फ शहर की बड़ी-बड़ी हस्तियाँ जा सकती हैं।

राकेश और उसके चारों साथी इस होटल के परमानेन्ट मेम्बर हैं और इनकी गणना खास लोगों में की जाती है। पाँचों दोस्त यहाँ पर लाखों में खेलते हैं और अपने माँ बाप के नाम पर कीचड़ उछालते हैं।

पाँचों दोस्त मेनगेट को पार करके हाल में प्रवेश कर गए, जहाँ पर अन्य कई लोग बैठे हुए थे। होटल के मैनेजर की पाँचों पर नजर पड़ते ही वह क्रोधित हो उठा। वह कुछ कहने ही वाला था कि उसके हाथ की पाँचों उँगलियों ने उसके मुँह पर ऐसा दबाव डाला कि मुँह से कुछ निकलने से पहिले ही आवाज मुँह के अन्दर ही दब कर रह गई। मैनेजर उन पाँचों पर बहुत जलता था क्योंकि उन सब पर होटल का बहुत कर्जा था, परन्तु देने की बात कोई भी नहीं करता बल्कि पाँचों लेते ही जा रहे थे।

मैनेजर उन पाँचों को एक दूसरे कमरे में ले गया तथा एक बड़ी सी अलमारी के करीब खड़ा होकर अँगुली से लगे हुए बटन को दबा दिया। बटन के दबते ही अलमारी एक ओर खिसक गई और एक

सँकड़ी मगर लम्बी सी गली नजर आई। गली थी तो अँधेरे में घिरी हुई परन्तु मरकरी बल्बों ने उसे चमका दिया था। गली के फर्श पर कीमती कालीन बिछा हुआ था। पाँचों गली में प्रविष्ट हुए और अपने-अपने कदम आगे को बढ़ाने लगे।

गली पार करते ही उनका स्वागत एक सुन्दर चैनी लड़की ने किया जिसके हाथों में दशमलव जीरो पाँच का रिवाल्वर था। लड़की ने आगे बढ़कर पाँचों को आइडेन्टीफिकेशन कार्ड दिखाने के लिये कहा जो कि खास मेम्बरों को दिये जाते थे। सब ने अपना-अपना कार्ड दिखाया। आइडेन्टीफिकेशन कार्ड देखने के पश्चात् उस चैनी लड़की ने रिवाल्वर अपनी पैन्ट के हवाले करके सामने की दीवार का बटन दबा दिया। इसके साथ एक दम वह दीवार दो भागों में बँट गई और एक बड़ा सा हॉल नजर आया। उस हॉल से आती हुई मधुर संगीत की लहर उनके कानों से टकराई। यह लुभावना मधुर संगीत उस हॉल से आ रहा था। हॉल की दीवारें साऊँडप्रूफ होने के कारण संगीत की आवाज बाहर सुनाई नहीं पड़ती थी।

पांचों ने उस हॉल में प्रवेश किया। हॉल में कई जगह कुर्सियाँ पड़ी थीं जिन पर शहर के बड़े-बड़े लोग अपने होश हवाश खोए हुए बैठे थे। आर्केस्ट्रा की धुन के साथ एक अर्धनग्न चैनी लड़की डान्स कर रही थी। वह बार-बार अपने हाथ में एक शराब की बोतल लिये डान्स करती, उन टेबलों के करीब जाती जहाँ पर लोग जुआ खेल रहे थे। वह अपने हाथ से शराब की बोतल को उल्टा करके टेबिल पर पड़े खाली गिलास भर देती। जाम से जाम टकराते और उस संगीत के साथी कभी-कभी कहकहे भी गूँज उठते। पूरे वातावरण में शैतानियत भरी पड़ी थी। किसी का भी दिमाग अपने बस में नहीं था, वह तो बोतल के रंगीन पानी में डूब चुका था। उसकी जगह लेली थी शैतानियत ने जो कि इन्सानियत को शराब के भरे गिलास में गोते खाता देखकर अट्टहास कर रहा था। बोतलों के खुलने की आवाज और गिलासों के टकराने की झनझनाहटों ने वातावरण को

और भी चमका दिया था जिससे वहाँ पर बैठे हुए उन शरीफजादों का दिल बार-बार मचलने लगता—साकी के अर्धनग्न शरीर की सुन्दरता देख कर। साकी पर नज़र पड़ते ही सब के दिल में छिपा हुआ शैतान जाग उठता—सुन्दरता को अपने आगोश में लेने के लिये।

राकेश आगे था और उसके बाकी चारों साथी पीछे। एक टेबिल के पास से गुजरते किसी ने राकेश का हाथ पकड़ लिया और कहा—राकी उस्ताद, ऐसी भी क्या नाराज़गी है जो हमसे बिना बोले जा रहे हो, ज़रा इस ओर भी तो देखो, हम तुम्हारे ही इन्तज़ार में कब से बैठे हुए हैं।

राकेश ने पीछे मुड़कर उस बुलाने वाले की ओर घूमकर देखा और कह उठा— मदन, तुम यहाँ कैसे ? और अपना हाथ बढ़ा दिया।

दोस्त, कुदरत का चक्कर ही कुछ ऐसा है, कल कहीं थे और आज कहीं है।

इस प्रकार एक दूसरे से गले मिलकर हाल-चाल पूछने लगे।

वे दोनों इधर-उधर की बातें करने में व्यस्त थे। और बाकी राकेश के चारों साथी अलग-अलग बैठकर किसी एक के साथ जुआ खेलने लगे। मदन ने सिगरेट को ऐशट्रे में फैंकते हुए उस चैनी लड़की को इशारा करके बुलाया।

यैस मि० मदन ! उस लड़की ने आकर बड़े अदब के साथ कहा।

एक बोतल V A T 69, एक सोडे की बोतल और दो खाली गिलास लेकर आओ। और हाँ, कुछ खाने का सामान भी।

चैनी लड़की आर्डर लेकर चली गई। जाते समय उसने एक बार मुड़कर राकेश की ओर देखा। राकेश की नज़र उस पर पड़ते ही वह मुस्करा पड़ी—राकेश फिर बातों में व्यस्त हो गया।

मदन कह रहा था। राकी दोस्त, आज तुम्हें एक ऐसी खुशखबरी सुनाता हूँ कि बस सुनते ही खुशी के मारे उछल पड़ोगे।

वाह ! ऐसी भी कौन सी खुशखबरी है। जल्दी सुनाओ, हमारा दिल मचल रहा है—अपने सीने पर फिल्मी अन्दाज से हाथ रखते हुए राकेश बोला।

सुनो राकी, आज से निशात को तुम अपना ही होटल समझना, मुस्कराते हुए मदन बोला।

क्या मतलब ! अचम्भा प्रकट करते हुए राकेश बीच में ही बोल पड़ा।

अरे यार बात तो सुनो, हाँ तो मैं कह रहा था कि आज से निशात तुम्हारा ही है।

राकेश बड़े ध्यान से सुन रहा था।

तुम अपनी मर्जी से जो कुछ चाहो कर सकते हो, जब चाहो, आ सकते हो, जा सकते हो। तुम्हारे लिये इस होटल में अब कोई पाबन्दी नहीं है। मदन, मैं कुछ समझा नहीं, आखिरकार तुम कहना क्या चाहते हो, उतावलेपन से राकेश ने पूछा।

वाह यार, तुम भी कमाल के जानवर हो। हमने अभी तक कुछ बताया ही नहीं तो समझने या न समझने का सवाल ही नहीं उठता—ऐसा कह कर मदन ने अपनी जेब से 555 सिगरेट का पैकिट निकाल कर राकेश के आगे कर दिया। एक सिगरेट राकेश ने निकाली और एक खुद ने। दोनों सिगरेटों को लाइटर से जलाकर एक लम्बा सा कश मदन ने लिया और मुँह का धुँआ उस चैनी लड़की के चेहरे पर छोड़ दिया जो कि उस के आर्डर के अनुसार सब सामान ले आई और अब टेबिल पर रख रही थी। मुँह पर धुँआ पड़ते ही चैनी लड़की मुस्करा पड़ी।

राकेश, मदन की हर एक हरकत को बड़े गौर से देख रहा था। उसने अपने मन में सोचा कि वह मदन को पहली ही बार निशात में देख रहा है, परन्तु ऐसा लगता है कि जैसे पूरा निशात ही उसका हो। मदन ने जिस ढंग से उसे कहा कि वह बिना किसी चिन्ता के निशात में आ सकता है और किस प्रकार सिगरेट का धुँआ उस चैनी के

मुँह पर छोड़ा और वह मुस्करा पड़ी, ये सारी मदन की हरकतें राकेश को समझ में नहीं आ रही थीं।

राकेश को इस प्रकार अचम्भे में पड़ा देख कर मदन खिल खिलाकर हँस पड़ा और हँसते हुए कहा—राकेश, तुम मुझे यहाँ पर देख कर अचम्भे में पड़ गए होगे। सुनो, तुम्हारा दोस्त निशात का मैनेजर हो गया है। मेरी ड्यूटी रात को लगती है। मदन से ऐसी बात सुनकर आश्चर्य के मारे राकेश की आँखे फट गई।

राकेश को इस प्रकार शान्त बैठा देख कर मदन बोला—राकी दोस्त, तुम्हें शायद विश्वास नहीं हो रहा है।

"माई डीयर मदन"—ऐसा कह कर राकेश ने अपनी बाँहें मदन के गले में डालकर हँसते हुए कहा, दोस्त, तुम यहाँ के मैनेजर बन गए, हमारी चिन्ताएँ दूर हो गईं। कुछ समय पहले मैं जितना दुखी था अब तुम्हारी यह खुशखबरी सुनकर उससे कई गुना खुश हो रहा हूँ। अब मेरी सारी परेशानियां दूर हो गई हैं।

राकी अब तुम्हारा दोस्त निशात का मैनेजर है। तुम अब जरा भी फिक्र नहीं करना। मुझे सब कुछ मालूम है।

"तुम्हें क्या मालूम है ?" राकेश ने पूछा।

आज निशात के मालिक ने मुझे एक फाइल दी थी जिसमें सब मेम्बरों के खंदों का हिसाब लिखा था। तुम्हारा नाम भी था, तुम्हारे नाम पर २०००० रुपये लिखे हुए थे जो तुमने कुछ जुए के लिये उधार लिये थे और कुछ शराब, वगैरह का हिसाब है। परन्तु राकी तुम चिन्ता मत करना। अब मैं हूँ, इसलिये तुम्हें फिक्र करने की कोई आवश्यकता नहीं, पैसे मिल ही जाएंगे। अगर पैसों की और जरूरत हो तो बिना किसी घबराहट के ले लेना।

२०००० रुपयों का नाम सुनकर राकेश चिंतित हो उठा। वह सोचने लगा कि इतनी बड़ी रकम वह कैसे चुका सकेगा।

राकेश को इस प्रकार चिंतित देखकर मदन बोला—अमा यार, तुम जवान हो या हैवान ? २०००० रुपयों का नाम सुन कर खुदा के पास

जाने के लिये तैयार हो गए। दोस्त यह उमर चिन्ता करने की नहीं एश करने के लिये है। तुम बेकार में घबरा रहे हो। तुम सोचते हो कि २०००० रुपये कैसे चुकाओगे। तो सुनो तुम से कोई भी एक कौड़ी तक नहीं माँगेगा। जब जी में आये पैसे दे देना—जुआ खेलते रहो। अगर पैसों की जरूरत पड़े तो मांग लेना। किसी दिन अवश्य जीत ही जाओगे और जब बहुत पैसे हो जायं तो वापस कर देना। याद रखो, इस होटल का मैनेजर मैं नहीं तुम हो। ऐसा कहकर मदन ने दोनों गिलासों में शराब उडेली और एक गिलास राकेश की और सरका दिया दूसरा स्वयं ने लिया। दोनों शराब धीरे-धीरे सिप करने लगे।

शराब पीते हुए राकेश बोला–मदन, यह क्या गोरख धंधा है ? यह सब कैसे हो गया ? मैं पूरे विस्तार से सुनना चाहता हूँ।

गिलास को टेबिल पर रखते हुए मदन ने कहा—यार, छोड़ो ऐसी बातों को, खामख्वाह मेरा मूड बिगड़ जाएगा। एक ठंडी साँस लेकर फिर बोला—राकी दोस्त, यह मेरी अच्छी किस्मत है जो तुम मुझे यहां पर देख रहे हो वरना मेरे गले में तुम फाँसी का फँदा देखते। मेरे हाथों किसी का खून हो जाता और उस घमंडी लड़की को ऐसा सबक सिखाता कि कमबख्त किसी को भी अपना मुँह दिखाने लायक नहीं होती, परन्तु ऐसी नौबत नहीं आई। शायद उनका भाग्य कुछ अच्छा था और मैं सोचता हूँ जो कुछ भी हुआ, अच्छा ही हुआ—मेरी जिंदगी जो बदल गई। फिर भी मैंने कसम खाई है कि उस शैतान लड़की का घमण्ड चूर करके ही रहूँगा। उससे बदला अवश्य लूंगा ताकि उसके दिमाग में खूबसूरती का जो गर्व है वह टूट जाए, वह कहीं की भी नहीं रहे, उसकी जिन्दगी बरबाद करके ही रहूँगा—इतना कहकर मदन ने अपनी कहानी राकेश को बतानी शुरू की।

हमारे कॉलेज में एक लड़की पढ़ती है। दूसरे शब्दों में लड़की नहीं कयामत है। कॉलेज के सभी मनचले छात्र उसे ब्यूटी क्विन कहते हैं। वह हकीकत में है भी राजकुमारी जैसी। खुदा नूर ने उस

कमबख्त को ऐसी झील जैसी गहरी आँखे दी हैं कि हर एक नौजवान का जी चाहेगा उसमें डूबने के लिये। जिस दिन आँखों में काजल डालकर आती है उस दिन समझो जिधर भी उसकी आँखे घूमीं उधर खैर नहीं। बेचारे हम जैसे मनचले नौजवानों के दिल पर खंजर की चोट की तरह ऐसा वार होता है कि बस दिल थाम कर रह जाते हैं, मुँह से ठंडी-ठंडी आहें निकलती हैं, कॉलेज के सभी छात्र उस पर दीवाने हैं। हमारे जैसे फक्कड़ तो आहें भर कर दिखाते हैं और शरीफ जादे जो मुँह से कुछ कह नहीं सकते, वे दिल ही दिल में सुलगते रहते हैं, अपने मन में उसके नाम की माला जपते हैं।

ऐसा कहकर मदन ने पैकिट से एक सिगरेट निकाली, होठों में दबाकर जैसे ही जलाना चाहा था कि 'क्लिक' शब्द के साथ उसकी सिगरेट अपने आप ही जल उठी। सिगरेट जलाने वाले पर नजर पड़ते ही मदन होठों में ही मुस्करा पड़ा, यह वही चैनी लड़की थी जो अब अपनी मदहोश आँखों से राकेश को घूरे जा रही थी। राकेश भी उसकी ओर देख रहा था। इस चैनी लड़की का इस प्रकार राकेश की ओर घूर-घूर कर देखना मदन को कुछ अच्छा नहीं लगा। उसने पैनी नजरों से उसकी ओर इस प्रकार देखा कि वह घबरा गई और 'सौरी' कहकर चली गई और राकेश खिलखिला कर हँस पड़ा।

मदन ने सिगरेट का एक लम्बा सा कश लिया। धूआं छत की ओर छोड़ते हुए फिर कहना शुरू किया—

कॉलेज का प्रत्येक लड़का उसकी ओर सहानुभूति दिखाने के लिये मरने तक को तैयार रहता है, परन्तु वह इतनी तेज है कि किसी को भी लिफ्ट नहीं देती। एक बार तो उसने एक लड़के के गाल पर बड़ी जोर से चाँटा रशीद कर दिया, वह बेचारा स्वयं का गाल सहलाता ही रह गया और वह अपनी कार लेकर इस प्रकार चली गई कि जैसे कुछ हुआ ही नहीं हो। वह लड़का बहुत प्रसन्न था। वह खुद को भाग्यशाली समझता है। वह कहता है कि उसने

उसके कोमल हाथ का अन्दाजा लगा लिया है। वह अब उस दिन को याद करके ठंडी-ठंडी आहें भरता है। एक हाथ अपने सीने और दूसरा हाथ गाल पर रखकर कहा करता है कि उसका हाथ क्या था जैसे कमल का फूल। काश ! वह अपना हाथ हमेशा मेरे गाल पर रखा करे, धीरे से नहीं तो जोर से ही सही।

ऐसा सुनकर राकेश खिलखिला कर हंस पड़ा और कहा, फिर······

उसके मोती जैसे दाँतों को देखने के लिये जो कि पंखुड़ियों के समान उसके गुलाबी होठों के भीतर छिपे हुए रहते हैं, कई लड़के बहुत सी हरकतें किया करते हैं, सिर्फ इसलिये कि वह उनको अपने मुँह से खरी खोटी सुना दे, उन्हें गालियां दे ताकि उसके खुलते हुए गुलाबी लबों के भीतर उन मोती जैसे दाँतों को देख सकें, कोयल जैसी मधुर आवाज सुन सकें, परन्तु ऐसा सौभाग्य भी उन मजनुओं की औलादों को नसीब नहीं होता वे बेचारे उसके सामने जाने से भी कतराते हैं।

जब कभी रास्ते में किसी भी लड़के का उससे सामना हो जाता है तो बेचारे को जैसे लकवे की बिमारी ही लग जाती है। उसके हाथ पांव कांपने लगते हैं। मुँह से आवाज निकलना बंद हो जाता है। कोई भी लड़का उसके करीब जाने की हिम्मत नहीं करता, इसलिये सभी छात्र पीछे खड़े होकर आहें भरते हैं, उसकी मोर जैसी चाल को एक टक देखते रहते हैं। कोई कहता है, इसकी चोटी क्या है जैसे जीता जागता नाग, काश वह नाग उसके गले से लिपट जाए और अपने मोती जैसे दाँतों से काटता रहे, अपने जहर का असर दिखाए ताकि वह हँसता-हँसता उसकी गोद में दम लेले।

कोई लौंडा कहता है,--हाय·······इस की कमर है या घघरीया। काश ! खुदा मुझे औरत बनाता, और मैं उसकी खास दासी बन कर उसके अंग-अंग से वाकिफ होता। धीरे-धीरे उसकी कमर को सहलाता। वह होती मेरी राजकुमारी और मैं उसकी कनीज। राजकुमारी के हर इशारे पर मर मिटता।

इस प्रकार सब लड़के अपने-अपने विचार प्रकट करते हैं और उनके दिल में उठता हुआ तूफान दिल में ही दब कर रह जाता है। परन्तु वह निर्दयी अपने चाहने वालों की ओर मुड़कर भी नहीं देखती। बड़ी जालिम है, अपने साथ ऐसा खंजर रखती है कि बिना वार किये सबके दिलों पर गहरी चोट महसूस होती है। उसका पूरा बदन संगमरमर की तरह तराशा हुआ है, परन्तु उस पर कई तीखे हथियार बने हुए हैं। उसका सबसे तेज हथियार है उसकी हिरण जैसी लम्बी और झील की तरह गहरी आँखें। अचानक किसी की भी आँखें उसकी आँखों से टकराती हैं तो बेचारा उसके एक ही वार से उस पर मर मिटता है।

मैं भी उनमें से एक हूँ। मैं भी एक बार उस ज़ालिम पर मर मिटा। उसके पीछे दीवाना हो गया। दिन रात उसके ही ख्यालों में खोया रहता। उसकी झील जैसी आँखों में समा जाना चाहता था। कॉलेज की जब छुट्टी होती मैं उसके पीछे लग जाता। इस प्रकार एक महीना गुजर गया, परन्तु उसकी ओर से मैंने कोई हरकत नहीं देखी। मेरा दिल मचलने लगा। वह बे काबू हो उठा। एक दिन मैंने एक प्रेम-पत्र लिखकर उसकी किताब में डाल दिया। दूसरे दिन कॉलेज के प्रोफेसर ने मुझे बुलाया और कहा कि मुझे रेस्टीकेट किया जाता है। मैंने प्रोफेसर से माफी मांगी और हाथ जोड़ कर कहा कि मैं आइन्दा कभी भी ऐसी हरकत नहीं करूँगा। कमबख्त ने मेरे वाला प्रेम-पत्र प्रोफेसर को दे दिया था और पता नहीं क्या-क्या मेरे खिलाफ उसे बताया कि प्रोफेसर आग बबुला हो उठे थे। मैं रोने जैसा मुँह बनाकर उसके पैरों पर गिर गया और मांफी मांगी तब कहीं जाकर वे कुछ ठंडे हुए। उन्होंने मुझे कहा कि अगर वह मुझे माफ कर दे तो मुझे फिर से कॉलेज में ऐड्मिशन दिया जा सकता है। मैं सीधा जाकर उससे मिला और विनती की कि अगर वह मुझे माफ कर देगी तो मुझे फिर से ऐड्मिशन दिया जाएगा। मगर उसके बेरहम दिल में मेरे लिये ज़रा भी रहम न था। उसने अपनी

सहेलियों के साथ मिलकर जो मेरी बेइज्जती की कि अब भी जब वह दृश्य मेरी आँखों के सामने आता है तो दिल में इन्तकाम की आग भभक उठती है। उसने मुझे ज़लील करते हुए कहा, "तुम जैसे लफंगों और आवारा लड़कों के लिये यह सबसे बड़ा सबक है ताकि भविष्य में कोई और लड़का ऐसी जुर्रत न कर सके। अपनी ऐसी बेइज़्जती देखकर मुझसे भी रहा नहीं गया और चिल्लाकर कहा, "नादान लड़की तुम शायद मुझे नहीं पहचानती। तुमने खामखाह मुझसे दुश्मनी मोल ली है। बदजबान लड़की, तुमसे ऐसा बदला लूँगा कि जिन्दगी भर तड़पती रहोगी, तुम्हारा यह घमण्ड चूर करके ही रहूँगा ताकि भविष्य मे तुम जैसी लड़कियों के लिये एक मिसाल रह जाए और किसी भी लड़के से टकराने की जुर्रत न कर सके।

उस दिन से मुझे कॉलेज छोड़ना पड़ा। उसके दूसरे दिन मेरी मुलाकात शेख साहब से हो गई। मुलाकात इस प्रकार हुई कि शेख साहब किसी काम से बाजार गये हुए थे। वे अपनी गाड़ी एक जगह खड़ी करके जैसे ही फुटपाथ पार कर रहे थे कि अचानक एक ट्रक बड़ी तेजी से दौड़ता हुआ आ रहा था। इसका पता शेख साहब को नहीं था। उन्हें पता तब चला जब मैं उन्हें अपने हाथों से खींचकर बड़ी फुर्ती से एक ओर ले गया। अगर उस वक्त मैं नहीं होता और उन्हें देख नहीं लेता तो वे क्षण भर में उस ट्रक के नीचे आ जाते। उसी समय ट्रक ड्राइवर को गिरफ्तार कर लिया गया और फिर यह मालूम हुआ कि ट्रक ड्राइवर शराब पिये हुए था। अपनी जिन्दगी की परवाह न करके मैंने शेख साहब की जिन्दगी बचा ली। अगर मैं जरा भी चूक जाता और फुरती नहीं दिखाता तो उन्हें बचाते-बचाते मैं भी उनके साथ ट्रक के नीचे आ जाता।

मेरी फुर्ती और हिम्मत देखकर शेख साहब बहुत खुश हुए और जब मैंने उनको मेरा नाम मदन बताया तो वे और भी प्रभावित हुए। मेरी पीठ थपथपाते हुए मुझे इनाम देने के लिये बहुत आग्रह किया। मैंने उन्हें अपनी सारी हकीकत सुनाई। उन्होंने कहा अगर मैं पढ़ना

चाहूँ तो वे मुझे कॉलेज में फिर से ऐड्मिशन दिला सकते हैं, परन्तु मैं अब कॉलेज जाना नहीं चाहता था। मैंने उन्हें अपनी नौकरी के लिये प्रार्थना की कि अगर वे कुछ कर सकें……। उनकी ही सिफारिश से आज तुम मुझे यहां देख रहे हो। निशात होटल उनके ही किसी दोस्त की है। शेख साहब मुझे बहुत चाहते हैं। वे कहते हैं कि उन्हें मेरे जैसे दिलेर नौजवानों की आवश्यता है जो कि देश की सेवा कर सकें।

दोनों ने करीब-करीब पूरी बोतल खत्म कर ली थी। बाकी जो कुछ बोतल में था मदन ने राकेश के गिलास में डाल दी।

गिलास को अपने होठों से लगाते हुए राकेश ने कहा—जो कुछ हुआ अच्छा ही हुआ। इसमें भी तुम्हारी भलाई ही थी जो कॉलेज से रेस्टीकेट होते समय खुदा ने तुम्हारे दुखों को भी उसी दिन से रेस्टीकेट कर दिया जिसके कारण आज तुम यहाँ पर हो। अच्छा मदन, उस लड़की का नाम तो बताओ जिसने तुम्हें एक ही बार में घायल कर दिया। ऐसा कह कर राकेश ने शराब की एक घूंट अपने गले से उतार दी और मदन की ओर देखने लगा अपने सवाल का जवाब सुनने।

राकी दोस्त ! मैं उस लड़की का नाम तो बताना नहीं चाहता था क्योंकि मुझे उससे बदला जो लेना है। मैं चाहता हूँ कि मेरा नाम न आजाए, परन्तु दोस्त तुम पर हमारा पूरा भरोसा है। जब तुम्हें पूरी हकीकत बताई है तो नाम भी बताएंगे। उसका नाम है "हेमा"।

मदन ने यह वाक्य पूरा ही नहीं किया था कि राकेश के हाथ से शराब का गिलास नीचे फर्श पर गिर पड़ा और टूट गया। राकेश इस प्रकार घबरा गया जैसे कोई नींद में बुरा सपना देखने से घबरा जाता है, परन्तु यह सपना न हो कर सच्ची हकीकत थी।

राकेश में इस प्रकार अचानक परिवर्तन देखकर मदन ने पूछा, राकेश क्या बात हैं जो तुम इस प्रकार चौंक पड़े ? गिलास कैसे गिर गया, यह सब कैसे हो गया ? क्या तुम्हारी तबीयत बिगड़ गई है।

ठीक है समझ गया, आज तुमने हद से ज्यादा पी ली है इसलिये नशे में हो गये हो। कोई बात नहीं यह रूमाल लो, अपने मुँह का पसीना पोंछो। ऐसा कहकर मदन ने खुद का रूमाल राकेश को देने के लिये बढ़ाया। राकेश ने चुपचाप उसके हाथ से रूमाल ले लिया और पसीना पोंछने लगा जो घबराहट के कारण उसके ललाट पर बूँदों के समान जम गया था। पसीना पोंछने के बाद एक दम राकेश उठ खड़ा हुआ और मदन से बिना कुछ बोले आगे गेट की ओर बढ़ने लगा।

इस प्रकार राकेश का जाना मदन को ठीक नहीं लगा। उसकी बाँह पकड़ कर बोला—राकी, तुम अकेले मत जाओ, देखो तुम्हारे सभी दोस्त जा चुके हैं। तुम्हारा इस प्रकार अकेला जाना ठीक नहीं। तुम नशे में हो अगर गाड़ी का ऐक्सिडेंट वगैर कर दिया तो बहुत बुरा होगा, तुम कुछ वक्त के लिये आराम करो, फिर मैं खुद तुम्हें घर तक पहुँचा आऊँगा।

परन्तु राकेश ने जैसे कुछ सुना ही नहीं। मदन की ओर एक बार तीखी नज़रों से देखकर, अपनी बांह एक झटके के साथ छुड़ा कर चल पड़ा। राकेश को अब की बार रोकना मदन को ठीक नहीं लगा। राकेश चला गया और मदन आकर वापस अपनी सीट पर बैठ गया।

मदन अपनी सीट पर बैठ चुका था। एक सिगरेट होठों में लगाकर जैसे ही जलाने लगा कि किसी ने आकर उससे कहा "बॉस ने आपको याद किया है।"

मदन एकदम अपनी सीट से उछल कर खड़ा हो गया और चल पड़ा। हॉल पार करके एक कमरे में प्रविष्ट हुआ और बाईं तरफ की दीवार पर लगे एक बटन को अपनी उंगली से दबा दिया। बटन के दबते ही फर्श की जमीन दो भागों में बंट गई और एक सीढ़ी दिखाई पड़ी। मदन धीरे-धीरे सीढ़ी उतरने लगा। साढ़ी उतरते समय एक आवाज ने उसे चौंका दिया। यह आवाज उसके बॉस की थी जो कह रहा था—"मदन जरा सम्भल कर सीढ़ी से उतरना, कहीं

तुम्हारा पैर न फिसल जाए। सीढ़ी के बैक साइड में खाई है जिसमें कई बड़े-बड़े मगर हैं। यह सिर्फ मैं तुम्हें इसलिये चेतावनी देता हूँ कि मैं तुम्हें सबसे ज्यादा चाहता हूँ। मैं नहीं चाहता कि तुम्हें कुछ हो जाए वरना इस सीढ़ी से कईयों के पैर फिसल चुके हैं और नतीजा मैंने अपनी आंखों से देखा है कि किस तरह उन सब को मगरों ने अपना आहार बना लिया। तुमने एक बार स्वयं की जिन्दगी खतरे में डालकर हमारी जान बचाई, वरना उस ट्रक के नीचे मेरी जीवन-लीला एक ही पल में समाप्त हो जाती। तुमने मेरी जान बचाई इसलिये मैं भी तुम्हारी जान की कद्र करता हूँ, वरना मेरे पास इन्सान की जिन्दगी का कोई महत्व नहीं। शाबाश पैर सम्भाल कर उतरना तुम अभी नये हो। देखो मदन, तुम्हारा बायाँ पैर अब की बार ठीक नहीं पड़ा। आइन्दा सोच समझ कर बड़ी सावधानी से आगे बढ़ना वरना नतीजा तुम स्वयं जानते हो।

इस सीढ़ी को पार करने के लिए सतर्क होना बहुत आवश्यक है। थोड़ी सी असावधानी जिन्दगी की आखरी भूल है। अगर कोई थोड़ी ही सी सावधानी बरते तो इस सीढ़ी को पार करना बहुत आसान है।

यह आवाज उस सीढ़ी के चारों ओर से आ रही थी। अब वह आवाज बन्द हो गई। आवाज इस प्रकार आ रही थी जैसे कि आकाशवाणी हो रही हो। मदन सीढ़ी उतर कर अब फर्श पर आ गया और आगे बढ़ने लगा। वह अब एक लम्बी सी गली से गुजर रहा था। गली पार करते ही उसे एक कमरा नजर आया। कमरा बिल्कुल बन्द था, उसके सामने खड़े होकर उसने तीन बार सर झुकाकर कहा "चीनपा, चीनपा, चीनपा" इस प्रकार तीन बार कहने से कुछ ही पल में धड़ धड़ धड़ की आवाज के साथ उस कमरे का दरवाजा खुला, दरवाजे से खूंख्वार भारी भरकम शरीर वाला एक आदमी निकला, जिसका सिर गंजा, बड़ी-बड़ी मूँछें, आँखें लाल और डरावनी, करीब सात फिट लम्बा, तगड़ा था। उस हाथी जैसे

आदमी ने कहा "आप अन्दर चले जाइये, बॉस आपका इन्तजार कर रहे हैं। ऐसा कह कर वह खूंख्वार आदमी एक ओर हट गया और मदन अन्दर प्रवेश कर गया।

शेख, तीन फिट चौड़ी और पांच फिट ऊँची कुर्सी पर बैठा हुआ था। उस कुर्सी के चारों तरफ कुछ ही दूरी पर कई यन्त्र फिट किये हुए थे। एक यन्त्र उस जगह ऐसा फिट किया हुआ था जिसके द्वारा शेख, मदन के आने की हर मूवमेन्ट देख रहा था कि वह उस खतरनाक सीढ़ी से किस प्रकार उतर रहा है और उसके साथ-साथ वे मदन को चेतावनी भी देते जा रहे थे कि वह सम्भलकर कदम बढ़ाए।

शेख के आगे सर झुकाकर मदन सीधा खड़ा होकर आदेश का इन्तजार करने लगा।

उस साइन्टिफिक कमरे में करीब पांच मिनट तक शान्ति रही, फिर शेख (बॉस) बोले, मदन, मैं सब कुछ सुन और देख रहा था। मुझे बहुत खुशी हुई कि तुमने राकेश के साथ सिर्फ तुम्हारे ही मतलब की बातें की। मुझे तुम पर पूरा भरोसा है कि तुम हमारी गेंग में सिर्फ बहादुर ही नहीं बल्कि बुद्धिमान भी हो। सिर्फ इन्हीं दो गुणों को देखकर हमने तुम्हें अपना खास नियुक्त किया है। वरना मेरे यहां पहुँचने की जुर्रत तो क्या कोई भी गेंग का व्यक्ति सोचने की भी जुर्रत नहीं कर सकता। एक बार, कुछ व्यक्तियों ने हमारे साथ गद्दारी करनी चाही। जानते हो, उनको क्या मिला ! सिर्फ मौतें, उन सबको उस खतरनाक सीढ़ी से गिराकर मगरों का आहार बना दिया गया।

तुमने अपनी जान पर खेलकर हमारी जान बचाई, इसलिये हमने तुम्हें अपना खास नियुक्त किया है। हमें तुम पर पूरा विश्वास है कि तुम कभी भी हमारे कानूनों का उल्लंघन नही करोगे।

बॉस, आप मुझ पर यकीन करिये, मैं अपनी जान पर खेल जाऊँगा, परन्तु आपके आदेशों का कभी उल्लंघन नहीं करूँगा। ऐसा कहकर

मदन एक बार फिर अपना सर बॉस के आगे झुका कर सीधा खड़ा हो गया।

हम तुम पर बहुत खुश हैं। हमें सिर्फ उस दिन का इन्तजार है जब हम अपने उद्देश्य में सफल होंगे। उसके बाद हम तुम्हें मुँह माँगा इनाम देंगे। तुम्हारी जिन्दगी बदल जाएगी। दुनिया की सारी खुशियाँ तुम्हारे सामने रखी जाएंगी। मदन चुपचाप सुनता जा रहा था।

अब सुनो मदन, तुम राकेश पर कड़ी नजर रखो। उसके हर मूवमेन्ट को गौर से देखो। तुमने जिस लड़की की बात राकेश को सुनाई वह उसकी बहन है।

ऐसा सुनकर मदन बौखला उठा और अचरज प्रकट करते हुए कहा—क्या हेमा राकेश की बहिन है?

हां! हेमा राकेश की ही बहिन है, परन्तु घबराने की कोई आवश्यकता नहीं। कल से तुम हेमा की बात राकेश से कभी भी मत करना। तुम्हारी जैसी दोस्ती अब है राकेश से, वैसी ही रहे। तुम सिर्फ राकेश के पीछे रहो। उसके ऊपर कड़ी नजर रखो कि वह कहां जाता है क्या करता है। उसकी ही मदद से हम अपने उद्देश्य में सफल हो सकते हैं। तुम मेरे कहने का मतलब समझ गयें होंगे। राकेश की आदतें बढ़ा दो उसे जितना कर्जा चाहे देते जाओ।

बॉस, क्या आज की बात के बाद भी राकेश मुझसे दोस्ती रखना पसन्द करेगा?

मेरे अनुमान के अनुसार वह तुमसे अवश्य मिलता रहेगा, बाकी हो सकता है कुछ फर्क पड़े। फिर भी देखो परिस्थितियाँ कैसी रहती हैं, उनके अनुसार ही तुम्हें करना होगा। अच्छा अब तुम जा सकते हो।

मदन ने फिर अपना सिर झुकाया और लौट पड़ा।

राकेश की गाड़ी बड़ी तेज भागी जा रही थी, उससे भी तेज चल रहा था उसका दिमाग। मदन की बताई हुई कहानी ने उसे सोचने को मजबूर कर दिया था। वह सोच रहा था कि मदन बड़ा

खतरनाक आदमी है। वह उसे अच्छी तरह जानता है। वह जिससे भी बदला लेना चाहता है उससे लेकर ही रहता है और अब शायद हेमा से भी बदला लेकर ही रहेगा। हेमा का ख्याल आते ही उसे पिताजी के कहे हुए शब्दों का ध्यान आ गया। "पिताजी !" पिताजी मुझसे बेहद नफरत करते हैं। वे मुझे कुछ भी नहीं देंगे। सारी जायदाद तो हेमा को ही मिलेगी फिर मैं बरबाद हो जाऊँगा। मेरे ऊपर इतना कर्जा है कि उतार ही नहीं सकूंगा। हेमा की शादी हो जाएगी, सब कुछ उसे ही मिलेगा। पिताजी, माताजी का क्या भरोसा, कभी भी चल बसें और वह बेमौत मारा जाएगा। ऐसे विचार आने से उसे फिर हेमा से घृणा होने लगी। वही तो मेरे रास्ते में काँटे की तरह पड़ी है। क्यों न रास्ते से हटाया जाए। मदन को जो जी में आए करे, मैं बीच में नहीं आऊँगा। हेमा को पिताजी के नजरों से गिराने का और अच्छा अवसर क्या हो सकता है। उसे जिस दिन का इन्तजार था अब उसके पूरे होने में देर नहीं। जिस काम की उसे चिन्ता थी वह तो अपने आप ही हल हो रहा है। अब सिर्फ यह देखना है कि मदन किस प्रकार का बदला लेता है और फिर परिस्थितियों के अनुसार मैं भी अपना काम शुरू कर दूंगा। हेमा पिताजी के नजरों से गिर जाएगी और मेरी जिन्दगी चमक उठेगी।

——

३

"शास्त्री अस्पताल" लाखों रुपयों की लागत से बनाया हुआ, शहर की बड़ी-बड़ी हस्तियों ने हजारों रुपये देकर इस अस्पताल की नींव डाली है। अस्पताल का उद्देश्य है अपाहिजों की सेवा करना। उनको मुफ्त दवा दी जाएगी। उनके स्वास्थ्य की रक्षा के लिये बड़े-बड़े डॉक्टर नियुक्त किये गए हैं। आज इस अस्पताल का उद्‌घाटन है। अस्पताल को बड़े शानदार ढंग से सजाया गया है। चारों तरफ मरकरी बल्बों की लाइनें लगी हुई हैं। अस्पताल के मेन गेट पर छोटे-छोटे चमकते हुए रंगीन बल्बों से बड़े सुन्दर अक्षरों में लिखा हुआ है—"शास्त्री अस्पताल"। मेन गेट के भीतर बड़े से मैदान में करीब पाँच फिट लम्बा संगमरमर का बनाया हुआ शास्त्रीजी का पुतला रखा हुआ है। पुतले से थोड़ा पीछे, करीब पाँच फिट दूरी पर सात सनमाइका की कुर्सियाँ और मेजें रखी हुई हैं। छः कुर्सियों के बीच सातवीं के सामने पड़ी मेज पर दो गुलाब के गमले रखे हुए हैं। एक प्लेट में चाँदी की बनी हुई कैंची उद्‌घाटन के समय रिबन काटने के लिये रखी है। यह कुर्सी सभापति की है जहाँ पर वे बिराजेंगे। उनके सामने दो साइडों में बीच का रास्ता छोड़कर कई कुर्सियाँ रखी हुई हैं, उन लोगों के लिये जिन्होंने अस्पताल बनाने में पूरा-पूरा सहयोग दिया है और दूसरे शहर के बड़े-बड़े लोग जिनको इस शुभ अवसर पर आमंत्रित किया गया है।

प्रोग्राम सायं छः बजे रखा गया है। अब पाँच बज चुके हैं, लोगों का धीरे-धीरे आना शुरू हो गया है। शहर के बड़े-बड़े लोग, अपनी-अपनी सवारियाँ लेकर आ पहुँचे। दोनों साइड की कुर्सियाँ

भर चुकी हैं। सामने की छः कुर्सियों पर शहर के बड़े-बड़े लोग जिनमें से दो नेता बैठे हुए हैं। सिर्फ बीच की सातवीं कुर्सी खाली है जिसके लिये सभापति महोदय का इन्तजार किया जा रहा है।

वहाँ पर उपस्थित लोग आपस में इधर-उधर की बातें कर रहे थे, इतने में लाउड स्पीकर पर किसी ने अनौन्स किया—शेख साहब, जो कि इस उत्सव के सभापति महोदय हैं, उनकी गाड़ी कम्पाउन्ड के बाहर पहुँच चुकी है और आप शीघ्र ही कुर्सी पर बिराज कर इस महान उत्सव को सुशोभित करेंगे। हम सबका अहोभाग्य है कि शेख साहब ने इन पुण्य अवसर पर पधार कर हम सब पर अहसान किया है। हम सब मिलकर इन्हें धन्यवाद देते हैं। शेख साहब ने अस्पताल के बनाने में इतना सहयोग दिया है कि शायद ही किसी और ने दिया हो। इतने में शेख साहब भी पहुँच गए और वहाँ पर बैठे हुए सभी लोग खड़े हो गए, उनका स्वागत किया। शेख साहब ने आगे बढ़कर सबको हाथ जोड़ कर कहा, "सज्जनों, मुझे कुछ विलम्ब हो गया, इसलिये आप सबसे माफी चाहता हूँ।" ऐसा कहकर वे अपनी कुर्सी पर बिराजित हुए। उनके साथ दूसरे खड़े हुए लोग भी अपनी-अपनी कुर्सियों पर बैठ गए।

लाउड स्पीकर से अनौन्स होना, जो कुछ समय के लिये शेख साहब के आने के कारण बन्द हो गया था, फिर शुरू हुआ—शेख साहब हमारे एक सच्चे देशभक्त नागरिक हैं। उन्होंने देश की जो सेवाएं की हैं और कर रहे है और उनसे सरकार और जनता को जो लाभ हुआ है उनके लिये हम सब उन्हें धन्यवाद देते हैं। शेख साहब इन्सान के रूप में खुदा के फरिश्ते हैं। उन्होंने गरीब, अपाहिजों के लिये जो-जो कार्य किये हैं वे सराहनीय हैं। अन्त में हम शेख साहब से विनती करते हैं कि आप अपने करकमलों द्वारा इस रिबन को काटकर दूसरे शब्दों में गरीबों के दुःखों को काटकर जिनके लिये इस अस्पताल का निर्माण हुआ है, इस उत्सव को

सुशोभित करें। ऐसा कहने के पश्चात पूरा वातावरण तालियों की गड़गड़ाहट से गूँज उठा।

शेख साहब अपनी कुर्सी से उठकर धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगे और उनके पीछे बाकी ६ आदमी भी चलने लगे। दूसरे सब लोग खड़े हो गये। शेख साहब ने आगे बढ़कर शास्त्रीजी के पुतले के चारों ओर लगी रिबन को एक ओर से कैंची द्वारा काट दिया और इसके साथ ही तालियों की गड़गड़ाहट एक बार फिर गूँज उठी। सब लोग वापस आकर अपनी-अपनी कुर्सियों पर बैठ गये।

करीब पाँच मिनट तक पूर्ण शान्ति रही। शेख साहब अपनी कुर्सी से खड़े हुए और कहना शुरू किया—साथियों, आप सब ने मुझ नाचीज को इस पुण्य अवसर के लायक समझकर जो इज्जत दी उसके लिये मैं आपको धन्यवाद देता हूँ। ऐसा कहकर शेख साहब ने हाथ जोड़कर सबको प्रणाम किया और फिर कहने लगे—इस अस्पताल का उद्देश्य है गरीब, अपाहिज भारतवासियों की सेवा करना जो कि पता नहीं कितने रोगों से पीड़ित रहते हैं, परन्तु गरीब होने के कारण वे बेचारे अपना इलाज नहीं करा सकते। नतीजा यह निकलता है कि बेचारे अपने छोटे-छोटे बच्चों को छोड़कर खुदा के दरबार में वक्त से पहले ही जा पहुँचते हैं और उनके पीछे उनकी औलादें, भूख के मारे तड़पती रहती हैं और अपने पेट के खातिर गंदे-गंदे काम करती हैं। अस्पताल के निर्माण में जिन-जिन महानुभावों ने सहयोग दिया है उन सबको मैं हाथ जोड़कर धन्यवाद देता हूँ और प्रार्थना करता हूँ कि आइन्दा भी इस प्रकार के कार्यों में सहायता करते रहें। ऐसा करने से सरकार का कुछ भार कम हो सकता है। जनता का कर्तव्य है कि अपनी भारत सरकार का पूरा-पूरा साथ दें ताकि हमारा देश आगे बढ़ सके, पड़ोसी देश जो हमारे शत्रु हैं, हमारे देश पर आँखें गाड़े हुए हैं, उन सबको मुँहतोड़ जवाब देने में समर्थ रहें।

शेख साहब कह ही रहे थे कि इतने में किसी ने उनको आकर कहा—आपका फोन है। शेख साहब ने वहाँ पर उपस्थित लोगों को हाथ जोड़कर कहा—मैं आप सबसे सिर्फ पाँच मिनट जाने की आज्ञा चाहता हूँ। ऐसा कहकर वे चले गये।

फोन को उठाकर कहा—यैस, शेख स्पीकिंग!

दूसरी ओर से आवाज आई—बॉस, मैं मदन बोल रहा हूँ।

हां कहो, क्या बात है?

बॉस, कमरेड चीनली का अरजेन्ट मेसेज आया है। अगर आप कहें तो सुनादूँ—मदन ने कहा।

क्या संदेश कोडवर्ड में है? शेख ने पूछा।

हां, बॉस!

ठीक है, सुनाने की कोई आवश्यकता नहीं। मैं स्वयं आकर देख लूँगा।

आप किस वक्त आ रहे हैं? मदन ने पूछा।

बस करीब आधे घंटे में पहुँच जाऊँगा। ऐसा कहकर शेख ने फोन क्रेडिल पर रख दिया। दूसरी ओर से भी संबंध कट हो गया।

साथियों मुझे बड़ा खेद हो रहा है कि आप लोगों की सेवा करने का और समय नहीं ले सका। बात दरअसल यह है कि अभी जो फोन आया था वह मेरे फैमली डॉक्टर का था। वे कह रहे थे कि मेरी लड़की की तबीयत कुछ बिगड़ गई है। इसलिये मैं आप सबसे प्रार्थना करता हूँ कि मुझे जाने की इजाजत दें।

ऐसा सुनकर वहाँ पर बैठे सभी लोगों के चेहरे गंभीर हो गए। झूठी शान दिखाने के लिये एक दूसरे का मुँह देखने लगे। कुछ लोग कह रहे थे भगवान ऐसे फरिश्तों की इसी प्रकार परीक्षा लिया करते हैं। बेचारे शेख साहब कितने नेक इन्सान हैं। अपनी बच्ची की बीमारी की बात सुनकर भी दिल का दर्द दिल में ही दबाए खड़े हैं और हम सबसे जाने की आज्ञा चाहते हैं। तब एक नेता ने कहा—शेख साहब आप इस समारोह की फिक्र न करें सब ठीक हो जाएगा। आप पहले अपने घर जाकर देखिये खैरियत तो है।

शेख वहां से चलकर बाहर आ गए व अपनी गाड़ी में बैठकर गाड़ी स्टार्ट करदी । अपने आने की सूचना ट्रांसमीटर द्वारा मदन को दी और एक सिगरेट जलाकर गाड़ी की रफ्तार तेज कर दी ।

उस साइन्टिफिक कमरे में शेख अपनी कुर्सी पर बैठे हुए थे । उनके सामने मदन और तीन चार और लोग खड़े थे । शेख ने कहा कमरे की सारी बत्तियां बुझा दो । उसके आदेश के अनुसार सारी बत्तियां बुझा दी गईं । मदन ने एक मशीन का बटन दबा दिया । बटन के दबते ही उस मशीन से किरणें निकलने लगीं जो सीधी सामने टंगे स्क्रीन पर पड़ रही थीं जिससे उस स्क्रीन पर कई चिन्ह दिखाई पड़ने लगे । यह कोड संदेश था । कमरे की फिर बत्तियाँ जला दी गईं । शेख ने मदन की तरफ मुड़कर कहा—संदेश के अनुसार आज कामरेड चीनली रात के ठीक तीन बजे अपने हैलीकोप्टर द्वारा क्रोकोडायल स्टेशन पहुँच रहे हैं । मदन तुम तैयार रहना, एक गाड़ी में मैं हूँगा व दूसरी गाड़ी में तुम इन सबके साथ—वहाँ पर खड़े आदमियों पर इशारा करते हुए शेख ने कहा । हम सब यहां से रात के ठीक एक बजे रवाना होंगे और करीब डेढ घंटे के अन्दर क्रोकोड्रायल स्टेशन पहुँच जाएँगे । आज पहली ही बार तुम कामरेड को देखोगे । कामरेड अपने साथ चीन के नये आविष्कार किये हुए हथियार वगैरह ला रहे हैं ।

मदन, बताओ राकेश के क्या हालचाल हैं । तुम उससे मिले ? एक सिगरेट सुलगाते हुए शेख ने पूछा ।

यस बॉस, वह कल निशात में आया था । उस समय मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ जब उसने अपना हाथ मेरे कंधे पर रखकर—बड़े ही प्यार से पूछा—मदन कैसे हो ? बॉस, मुझे उम्मीद ही नहीं थी कि वह फिर कभी मुझसे मिलेगा, परन्तु मामला तो बिल्कुल उल्टा हुआ । वह तो पहले से भी ज्यादा प्यार दिखा रहा था ।

क्या कह रहा था वह ? सिगरेट के धुँए को छोड़ते हुए शेख ने सवाल किया ।

मेरे कंधे पर हाथ रखने के बाद वह तुरन्त ही बोला—मदन, आज ऐसे ही खड़े हो, क्या पीने पिलाने की नीयत नहीं? तब मैं भी पीछे हटने वाला नहीं था और उसे अपनी बाँहों में लेकर कहा—क्या कहते हो ? यह होटल ही तुम्हारा है, पूछने की कोई जरूरत नहीं। मैं तो पहिले ही तुमसे कह चुका हूँ कि जब जी में आए एक क्या दस बोतलें मंगवाकर पीलो। ऐसा कहने के पश्चात् आपका दिया हुआ चैक बुक उसे दे दिया और कहा—इन सब पर दस्तखत किये हुए हैं। जितना भी पैसा चाहो, इन पर लिखकर हमारे कैशियर से ले लेना। सिर्फ एक बात का ख्याल रखना कि जितने भी पैसे लो उसके पश्चात रजिस्टर पर अपना हस्ताक्षर करना कभी भी नहीं भूलना, वरना गड़बड़ हो जाएगी।

वेरी गुड, बहुत अच्छा हुआ—सिगरेट को ऐश ट्रे में डालते हुए शेख ने कहा—फिर राकेश कुछ बोला ? क्या तुमने उसके चेहरे पर कोई परिवर्तन देखा ?

नो बॉस, वह तो बहुत खुश हो रहा था। मेरा हाथ पकड़कर उसने कहा—तुम गैर होकर भी मेरा कितना ख्याल रखते हो, परन्तु बहुत से अपने हैं तो भी हमें अनाथ समझते हैं।

तब मैंने पूछा—राकी, यह तुम क्या कह रहे हो ? तुम्हें कौन अनाथ समझता है ? परन्तु उसने कोई उत्तर नहीं दिया। बॉस, दाल में कुछ काला नजर आता है। ऐसी-वैसी अवश्य कोई बात है जिसके कारण वह ऐसी बातें करता है वरना अपनी बहन के विषय में इतनी बुरी बात सुनकर कोई भी सहन नहीं कर सकता, परन्तु राकेश में जरा भी परिवर्तन नहीं आया है। जैसा पहले था वैसा ही अब भी है। इतना कहकर मदन चुप हो गया।

ठीक है, वक्त सब कुछ बता देगा। तुम सिर्फ राकेश पर कड़ी नजर रखा करो। उसकी आदतें बढ़ा दो और हां, लिली को समझा दो कि वह अपने जाल में उसे फँसाने की कोशिश करे।

बॉस, यह काम तो मैंने कल ही कर दिया था। डांस के बाद लिली उसें अपने कमरे में ले गई थी। वहां पर लिली ने कमबख्त को बहुत शराब पिलाई। नशे में पता नहीं उसे क्या सूझा कि लिली को नेकलेस देने का वादा कर दिया और जाते समय अपने कैशियर से ५०००, रुपये ले गया। मैं जितना समझता हूँ, इन रुपयों से शायद लिली के लिये नेकलेस वगैरह लाएगा।

मदन से ऐसा सुनकर शेख खिलखिला कर हँस पड़ा और हँसते हुए ही बोला—यहाँ पर बेवकूफों की कमी नहीं, एक ढूँढो तो दस मिलते हैं। हमारे पैसे हमें ही देकर खुद पर कर्जा बढ़ा रहा है। खूब, बहुत खूब, हम भी तो यही चाहते थे। जिस कार्य को करने में हमने समझा कुछ देर लगेगी वह तो खुद ही हो रहा है। कामरेड कहते हैं कि यहाँ के लोग बेवकूफ ज्यादा और अक्लमंद कम हैं। उनको थोड़ा सा लालच देकर जल्दी बहकाया जा सकता है। वे स्वार्थ के लिये बड़ी से बड़ी देश की हानि करने में नहीं चूकते। हमारे आदमी यहाँ के कोने-कोने में मौजूद हैं। बहुत से तो यहाँ की बड़ी-बड़ी हस्तियों में गिने जाते हैं, ऊँचे-ऊँचे पदों पर नियुक्त हैं।

तुम मेरे कहने का मतलब समझ गए होगे। तुम अब इन सबको लेजाकर जाने की तैयारी करो। ठीक रात के एक बजे अंधेरे में हमारी कारें कामरेड को लेने के लिये रवाना होंगी।

मदन सर झुकाकर चला गया।

शाम हो गई। अंधरे ने उसे अपनी काली चादर से लपेटने की कोशिश की, परन्तु म्यूनीसिपैलिटी के जगमगाते हुए पोस्ट लेम्पों और मरकरी बल्बों ने उसे अपनी छाया के नीचे फिर से जगमगा दिया। अंधेरे और रोशनी ने मिलकर वातावरण को एक अजीब रंग में रंग दिया था। चारों ओर सुनसान लग रहा था। इतने में लोगों का कुछ समूह आता हुआ दिखाई पड़ा। शायद सिनेमा का आखिरी शो समाप्त हो गया था। सब लोग अपने-अपने घरों में जा पहुँचे और फिर शान्ति छा गई। सब सड़कें सुनसान लग रही थीं। किसी की भी

आवाज सुनाई नहीं पड़ती थी। सिर्फ शहर के कुछ आवारा कुत्तों के भौंकने का शोर गूंज उठता और फिर बन्द हो जाता। सड़क के दोनों साइडों की दुकानें वगैरह बन्द थीं, उनके ऊपर बने हुए मकानों में अंधेरा छाया हुआ था। सब निद्रा देवी की गोद में पड़े थे। लाइट के खम्भे एक ही लाइन में इस प्रकार खड़े थे जैसे उन्हें किसी के स्वागत का इन्तजार हो। वातावरण में पूर्ण शान्ति थी। गोरखे चौकीदार के सीटी बजाने की आवाज और "जागते रहो" शब्द कभी-कभी सुनाई पड़ता और फिर बन्द हो जाता। इतने में दो कारें हवा से बातें करती उन सुनसान सड़कों पर दौड़ पड़ीं! इतने सुनसान और शान्त वातावरण में भी उन कारों के जाने की आवाज सुनाई नहीं पड़ती थी। वे ऐसी लगती थीं जैसे कि हवा में उड़ रही हों। कारों में वायरलैस (बे आवाज) की मशीनें फिट की हुई थीं ताकि उनके चलने का शोरगुल न हो जिससे कोई जान भी न सके कि कारें जा रही हैं।

मदन तुम अपनी कार को बाँई ओर मोड़ कर रफ्तार तेज करदो— ऐसा कहकर शेख ने अपनी रिस्टवाच में देखा। एक बजकर बीस मिनट हुए थे।

मदन ने स्वयं की कार को बाँई और मोड़कर रफ्तार और तेज कर दी।

अब दोनों कारें एक दूसरे की साइड में चल रही थीं। दोनों कारों की स्पीड ६० की थी।

कारें बाजार छोड़कर अब अमीर लोगों की कॉलोनी से गुजर रही थीं। सिगरेट को अपने होठों पर रखकर उसे लाइटर से जलाते हुए शेख ने मदन को संबोधित करके कहा—मदन, तुम अपनी कार को मेरी कार के पीछे कर दो। अब गरीब लोगों की बस्ती आने वाली है वहाँ का रोड टेढ़ा-मेढ़ा है, वहाँ से करीब एक मील चलने के पश्चात् भयानक जंगल आएगा। रास्ता बड़ा खतरनाक और ऊबड़-खाबड़ है, तुम्हें संभल कर चलना पड़ेगा।

मदन ने महसूस किया कि रास्ता खतरनाक ही नहीं भयानक भी है। उसे कई रास्ते पार करने पड़े जहाँ पर बड़े-बड़े घने पेड़ों के सिवाय कँटीली झाड़ियाँ भी थीं जिन्हें पार करने में मदन को वास्तव में बहुत ही कठिनाई महसूस हुई, परन्तु वह खुद एक निपुण कार चालक (ड्राइवर) था। उसने बड़ी सतर्कता दिखाई—उन रास्तों को पार करने में वरना दूसरा कोई नया ड्राइवर, किसी बड़े खड्डे में गिरकर समाप्त हो जाता।

करीब एक घंटे की यात्रा के बाद एक भयानक जंगल का सामना करना पड़ा। उस जंगल में हजारों की तादाद में बड़े-बड़े पेड़ थे जिनके बीच में कई कच्चे रास्ते बने हुए थे। दोनों कारें धूल उड़ाती उन कच्चे रास्तों पर दौड़ने लगीं। जंगल करीब दस स्कावयर माइल में था। दोनों कारें एक जगह पर रुक गईं। शेख ने स्वयं की कार पेड़ों के झुंड में रखदी और मदन को भी ऐसा करने को कहा।

सब लोग कारों के दरवाजे खोलकर बाहर आ गए। शेख और मदन साथ-साथ चल रहे थे। बाकी लोग अपने-अपने हाथों में राइफलें थामे बड़ी सतर्कता से धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगे। वे कभी-कभी इधर-उधर भी देख लेते—यह देखने के लिये कि कहीं कोई जंगली जानवर तो नहीं। अब सब लोग आकर एक बड़े से मैदान में खड़े हो गए।

मदन, यही हमारा क्रोकोडायल स्टेशन है। चीन और पाकिस्तान से जो भी हथियार हमारे जासूस वगैरह लाते हैं उन सबको हैलीकॉप्टर द्वारा लाकर यहीं पर उतारा जाता है और रात के ही अँधेरे में उनको अपनी-अपनी सुरक्षित जगहों पर पहुँचाया जाता है। इस स्टेशन के इर्द-गिर्द कई बड़ी-बड़ी सुरंगे बनी हुई हैं, वे भी मैं तुम्हें अभी दिखाऊँगा। इन सुरंगों में, हमारे कई सशस्त्र लोग मौजूद हैं। यह एक ऐसी जगह है जहाँ पर कोई भी नहीं पहुँच सकता। अगर किसी ने भी यहाँ तक पहुँचने की हिम्मत की तो वह रास्ते में ही अपनेआप खत्म हो जाएगा या फिर कर दिया जाएगा। इस पूरे भयानक जंगल में हमारा राज्य है। यहाँ पर हमारे कई स्टेशन बने

हुए हैं जहाँ पर हमारे कई साथी मौजूद है। मैं अब तुम्हें हर एक से वाकिफ कराऊँगा।

शेख मदन को समझा ही रहे थे कि इतने में आकाश पर घड़-घड़ की आवाज गूँज उठी। मदन, यह आवाज सुन रहे हो ? आकाश की ओर देखते हुए शेख बोला।

यस बॉस—ऐसा कहकर मदन भी आकाश की ओर देखने लगा।

यह आवाज सर कामरेड के हैलीकॉप्टर की है। वे पहुँच चुके हैं—इतना कहकर शेख ने आकाश की ओर एक फायर कर दिया और उसकी आवाज से पूरा जंगल जैसे काँप उठा। उस भयानक ध्वनि के साथ एक लाल तारे के समान कोई चीज आकाश में फूट पड़ी और कुछ समय के लिये पूरा जंगल रोशन हो गया। यह रेड सिगनल था हैलीकाप्टर को सूचित करने का जिसका अर्थ था कि शेख अपने साथियों सहित क्रोकोडायल स्टेशन पहुँच चुका है।

हेलीकॉप्टर अब करीब पहुँच चुका था और धीरे-धीरे लेंड करने लगा। करीब पाँच मिनट के पश्चात् हैलीकॉप्टर जमीन पर आ गया।

शेख मदन के साथ आगे बढ़ा। कामरेड हैलीकॉप्टर से बाहर आ गये। वहाँ पहुँचते ही शेख ने एक बड़ा सैल्यूट मारा और अपना हाथ आगे बढ़ाया। दोनों ने एक दूसरे का बड़े स्नेह के साथ स्वागत किया।

सर, यह मदन है—मदन के कंधे पर हाथ रखते हुए शेख बोले। हमारा सबसे बहादुर, बुद्धिमान साथी। आप इसकी बहादुरी और वफादारी देखकर अति प्रसन्न होंगे।

अपने बारे में इस प्रकार सुनकर मदन ने बड़े अदब के साथ अपना सर कामरेड के आगे झुकाया।

नौजवान हम तुम्हारी बहादुरी और वफादारी की कद्र करेंगे। इसके बदले तुम्हें मुँहमाँगा इनाम दिया जाएगा, अगर ऐसा साबित करके दिखाओ।

अब तीनों साथ-साथ आगे बढ़े। एक सुरंग के सामने रुककर शेख ने एक बटन को दबा दिया। बटन के दबते ही सुरंग के सामने वाला एक बड़ा पत्थर गोल घूम गया और प्रवेश मार्ग बन गया।

तीनों अन्दर प्रविष्ट हुए और बाकी लोग बाहर खड़े रहे। सुरंग के अन्दर कई लोग मौजूद थे जो कि अपने-अपने कामों में व्यस्त थे। वहाँ पर मशीनों के चलने का बहुत शोरगुल था, परन्तु उन तीनों के आने से सब बन्द हो गया। सब लोग इज्जत के साथ अपने-अपने सर कामरेड के आगे झुका कर खड़े हो गए। वे तब तक ऐसे खड़े थे जब तक कामरेड वहाँ से गये नहीं।

एक तरफ इशारा करके शेख ने कहा—सर ये लोग हथगोले बनाते हैं और दूसरी ओर इशारा करते हुए कहा—ये लोग टामीगनें और बन्दूकें बनाते हैं।

वेरीगुड—कहते हुए कामरेड ने पूछा—मि० शेख जो लोग हमने ट्रेनिंग देने के लिए भेजे थे उनका कैसा काम है? ऐसा कहकर वह मदन की ओर देखने लगा जो कि एक अजनबी की तरह इधर-उधर देख रहा था।

सर वे भी यहीं पर हैं और हमारे आदमियों को ट्रेनिंग देते हैं। काम बड़े जोरों से चल रहा है। उम्मीद है कि हम जल्दी ही अपने उद्देश्य में सफल हो जाएंगे।

वेरी गुड, वेरी गुड, हमें आपसे यही उम्मीद थी। मदन उन दोनों की बातें सुन कर मन ही मन में प्रसन्न हो रहा था। वह सोच रहा था कि वह संसार के शक्तिशाली लोगों के साथ है। अब वह खुद भी कोई मामूली आदमी नहीं। जब ये लोग अपने उद्देश्य में सफल हो जाएंगे तो उसकी जिन्दगी भी सफल हो जाएगी। उसे पूरा विश्वास था कि वे अवश्य सफल होंगे।

आइये सर—ऐसा कहकर वे आगे बढ़े और तीनों एक बड़े हॉल में प्रवेश कर गए। वहाँ का दृश्य देखकर मदन की आँखें आश्चर्य के मारे फट गईं। उस हॉल में हजारों बन्दूकें, बम, राकेट, स्टेनगन्स और

इनके अलावा और भी बहुत से शस्त्र रखे हुए थे। वह फिर सोचने लगा कि उसने कल्पना भी नहीं की थी कि उसका बॉस याने शेख इतना शक्तिवान हो सकता है। मदन ने हिम्मत करके कहा-बॉस, अगर इजाजात हो तो मैं आपसे कुछ कहूँ। ऐसा कहकर वह कामरेड की ओर देखने लगा। कामरेड ने इशारे से शेख को "हाँ" कहा।

हाँ-हाँ कहो, क्या कहना चाहते हो ?

हिचकिचाते हुए मदन बोला—बॉस, अपने पास कितनी शक्ति है ? फिर आप क्यों देरी कर रहे हैं ?

कामरेड का आदेश है कि हमें उनकी इच्छा और सलाह के अनुसार ही चलना है। यह जितनी भी शक्ति हमारे पास है वह इनकी ही है। हम सब इनके साथी हैं। ये जो कुछ भी कर रहे हैं वह खुद के लिये नहीं, हमारे ही लिये है। हमारे कई आदमी कराँची में ट्रेनिंग ले रहे हैं। वहाँ पर चीन के बड़े-बड़े फौजी अफसर गये हुए हैं—सिर्फ इसी काम के लिये। हमारे पास इतनी शक्ति है कि हम जो चाहें आज ही कर सकते हैं, परन्तु हमारा उद्देश्य पूरा नहीं होगा। हमें एक फाइल की आवश्यकता है जिसमें यहाँ की गुप्त और आवश्यक बातें लिखी हुई हैं। उस फाइल के प्राप्त होते ही हम आक्रमण कर देंगे।

बॉस, तो उस फाइल को प्राप्त करने में इतनी देरी क्यों हुई है ? क्या उसको प्राप्त करना इतना कठिन है ?

हाँ, उस फाइल को प्राप्त करना कठिन ही नहीं बल्कि कुछ असम्भव सा लगता है। इस फाइल की बहुत सी डुपलीकेट कापियाँ हैं और उनमें से एक डुपलीकेट कापी यहाँ के कमिश्नर मि० चौधरी के पास भी है। उसने उस फाइल को ऐसी जगह पर रखा है कि कोई भी ढूँढ नहीं सकता। उसके बंगले पर शस्त्रों सहित बहुत सी पुलिस रहती है—सिर्फ फाइल की हिफाजत के लिये।

एक बार तुमने हम से पूछा था कि राकेश को किस उद्देश्य को लेकर फँसाया जा रहा है। उस वक्त हमने तुम्हें नहीं बताया था,

परन्तु अब जब तुम पर पूरा भरोसा हो गया है तो अवश्य बताएँगे। उस फाइल को अगर कोई प्राप्त कर सकता है तो वह राकेश ही है।

राकेश कर सकता है ! वो कैसे बॉस ? अचम्भे में पड़कर मदन ने पूछा।

तुम्हें अचरज हो रहा है कि जहाँ पर हमारी इतनी शक्ति नहीं पहुँच सकती वहाँ पर कल का छोकरा राकेश कैसे पहुँच सकता है। सुनो, कमिश्नर मि० चौधरी सेठ दीनदयाल का पक्का दोस्त है, दूसरे शब्दों में दोस्त ही नहीं सगे भाई से भी बढ़कर। उन दोनों का आपस में घर का रिश्ता है। एक दूसरे के घर आते ही रहते हैं। तुम अब समझ गए होगे कि इस काम के लिये मैंने राकेश को ही क्यों चुना है।

यस बॉस, समझ गया। राकेश सेठ दीनदयाल का बेटा है और मैंने कई बार राकेश को कमिश्नर मि० चौधरी के बँगले से आते देखा भी है। बॉस, आप किसी भी बात का फिक्र न करें, मैं करके शीघ्र ही राकेश को अपने जाल में फँसाने की कोशिश करूँगा।

४

अमर''''ओ अमर, सुनता है कि मैं आऊँ। इतना बड़ा हो गया है''''
अक्ल जरा भी नहीं।

ओ माँ, प्लीज, मुझे तंग मत करो—ब्रुश को पानी में डुबोते हुए अमर बोला।

मैं तुम्हें तंग करती हूँ, वो भला कैसे, मैं भी तो सुनू—ऐसा कहकर सीता अमर के कमरे में प्रविष्ट हो गई।

माँ—सीता का कंधा अपने हाथों से पकड़ते हुए अमर बोला—आज मुझे यह अधूरा चित्र पूरा करना है, देखो न कैसा सुन्दर है, एक चित्र की ओर इशारा करते हुए कहा।

तुम तो सारा दिन चित्र बनाने में व्यस्त रहते हो, फिर भला घर का बाहरी काम-काज कौन करेगा। मेरे में तो अब दम नहीं रहा।

माँ, तुम घबराती क्यों हो, तुम्हें बहू लाकर दूँगा। बस फिर तुम हमेशा आराम करना, वह तुम्हारी सेवा करेगी, मैं तो करता ही हूँ।

रोज की तरह आज भी अमर से ऐसी बात सुनकर सीता हँस पड़ी और हँसती हुई बोली, शरीर कहीं का, रोज बहू की बात करता रहता है, बताओ उसे कब ला रहे हो।

माँ, थोड़ा सा इन्तजार करो, सब ठीक हो जायगा। तब तक इन चित्रों को देखो। ये सारे चित्र तुम्हारी बहू के ही तो हैं।

पागल कहीं का।

माँ, आज तुम मुझे पागल कह रही हो। भले कहो, ये बेजान चित्र हैं। जब यह खुद घर में आजाएगी तब मेरी इस प्रकार इन्सल्ट वगैरह मत करना हाँ, वरना वह क्या समझेगी। ऐसा कहकर अमर अपना सर खुजालने लगा।

अमर का कान पकड़ते हुए सीता बोली—शैतान कहीं का, बचपन से एक ही चेहरे के चित्र बनाता आ रहा है—अलग-अलग भाव दिखा कर। कुछ गड़बड़ अवश्य है। बता यह लड़की कौन है? सीता ने अमर के कान को दबाया।

ओ माँ, कान तो छोड़ो।

नहीं छोड़ूंगी, पहले बताओ यह लड़की कौन है? आज तो तुझ से पूछ कर ही रहूँगी।

माँ, प्लीज छोड़ दो कान, क्यों खामाख्वाह मुझे शर्मिंदा करने पर तुली हो। मैं तुम्हें क्या बताऊँ, कैसे बताऊँ?

सीता ने अमर का कान छोड़ दिया और प्यार से कहा—बेटे इसमें शर्माने की क्या बात है, मैं तो पगले तुम्हारी माँ हूँ, ऐसी बातें मुझ नहीं बताओगे तो और किसे बताओगे। इतना कहकर वह अमर की बगल में बैठ गई और प्यार से अपना हाथ उसके सर पर घुमाते हुए कहा—बेटे, घबराओ नहीं। सारी बात मुझे बताओ, मैं सच्ची-सच्ची हकीकत सुनना चाहती हूँ, फिर देखो कि मैं क्या कर दिखाती हूँ। मैं उसी लड़की को बहू बनाऊँगी जो तुम्हें पसन्द होगी। क्या वह लड़की भी तुमसे उतना ही प्यार करती है जितना तुम करते हो।

माँ, वह तो मुझे जानती तक नहीं कि मैं कौन हूँ? आज तक उसने मुझे कभी भी नहीं देखा। सिर्फ मैं ही उसे जानता हूँ, अब से नहीं बरसों से।

क्या बकते हो—सीता गुस्सा हो उठी। जब वह तुम्हें जानती ही नहीं तो फिर उसके बारे में खुद का दिमाग क्यों खराब कर रहे हो?

ऐसे तो पागल ही किया करते हैं । और दूसरा, यह कि किसी पराई लड़की के विषय में ऐसा सोचना और चित्र बनाना पाप है । मुझे तो समझ में ही नहीं आता कि तुम्हें क्या हो गया है । ऐसा कहकर उसने अपने सर पर दुःख के मारे हाथ रख दिया ।

ओ माँ, तुम्हें क्या बताऊँ, तुम नहीं समझोगी ।

ऐसी भी कौन सी बात है जो मैं नहीं समझ सकती ।

ऐसा नहीं माँ कि वह मुझे जानती नहीं । वह मुझे जानती भी है और नहीं भी ।

मुझे तो समझ में नहीं आता कि आखिर बात क्या है ? तुम क्या कहना चाहते हो साफ-साफ क्यों नहीं बताते ? पहेलियाँ क्यों बुझा रहे हो ?

मां तुम जरा भी चिन्ता मत करो । मैं तुम्हें करके दिखाऊँगा कि वह किस प्रकार तुम्हारी बहू बन कर इस घर में आती है । वह मुझे आजकल नहीं जानती तो क्या हुआ, पहिले तो जानती थी और हाँ, मुझे बहुत ही चाहती थी ।

अमर आज तुम मुझसे मार खाकर ही रहोगे—इतना कह कर सीता ने स्वयं का हाथ ऊपर उठाया और कहा साफ-साफ कहो वह लड़की कौन है ? वरना चाँटा रसीद कर दूँगी ।

अरे अरे, यह क्या करती हो माँ, चाँटे से तो गाल पर दर्द होता है—ऐसा कहकर मुस्कराता हुआ अमर कुछ पीछे हट गया और फिर कहा—कैसे बताऊँ माँ, मुझे शर्म लगती है । दूसरा यह एक पुरानी कहानी है । अब तो उम्मीदें रखकर ही बैठा हूँ कि क्या होता है ।

ऐसा सुनकर सीता गम्भीर हो गई और बोली अमर बेटे, तुम्हारे मन में जो बात है मुझे बताओ, छिपाओ नहीं । ऐसी बातें दिल में दबाकर नहीं रखनी चाहियें । अगर एसी वैसी बात है और तुम मुझे बताओगे नहीं तो तुम्हारे इस दुःख के कारण मैं भी अपने दिल ही दिल में गलती रहूँगी । मैं समझती हूँ तुम मन से तो दुखी हो, मगर बाहर हँस रहे हो ।

माँ, ऐसा मत कहो। इस संसार में तुम्हारे सिवा और कौन है मेरा, मैं तुम्हें सब कुछ बताता हूँ।

माँ, तुम्हें याद होगा कि बचपन में मैं एक बार स्कूल से रोता हुआ आया था और जब तुमने वजह पूछी तो मैंने कहा था कि मैं वह स्कूल छोड़ना चाहता हूँ क्योंकि वहाँ के मास्टर अच्छी तरह पढ़ाते नहीं।

हां-हां मुझे याद है····आगे कहो।

मां वह बात मनगढ़ंत थी, मैंने झूठ बोला था। दरअसल बात कुछ और ही थी।

क्या कहते हो अमर, तुम्हें हकीकत छुपाने की क्या आवश्यकता थी जो झूठ बोला।

उफ माँ, तुम सुनती तो जाओ।

हां कहो, सीता उसकी ओर एक टक देख कर सुनने लगी। उसे बात सुनने की बड़ी उत्सुकता हो रही थी।

अमर कह रहा था—बचपन में मेरे साथ एक लड़की पढ़ा करती थी जिसका नाम हेमा था। हम एक दूसरे को बहुत चाहते थे। वह हमेशा स्कूल के कामों में मुझे सहायता किया करती। वैसे तो स्कूल में बहुत से लड़के-लड़कियाँ पढ़ा करते थे, परन्तु हम दोनों किसी से भी बात नहीं किया करते। स्कूल के खेल के घंटे में जाकर एक पेड़ की छांह के नीचे बैठकर बातें किया करते। जैसे कि वह अमीर थी, हमेशा अपने घर से मेरे लिये खाने के लिये कुछ न कुछ अवश्य लाती और हम दोनों मिलकर साथ-साथ खाते और खेलते। हेमा का बड़ा भाई भी हमारे साथ उसी क्लास में पढ़ता था। उसका नाम राकेश था। वह चाहता था कि हेमा मुझसे बात नहीं किया करे, परन्तु उसने कभी भी राकेश का कहना नहीं माना। उसी दिन इस बात पर राकेश का मुझसे झगड़ा हो गया। तुमको याद होगा कि उस दिन जब मैं घर में आया था तो मेरे सर में चोट थी। वह चोट राकेश के डंडा मारने के कारण लगी थी, परन्तु मैंने तुमसे झूठ बोला

कि मैं गिर गया। दूसरे दिन जब मैंने हेमा से बात की तो उसने मुझसे बात करने से इन्कार कर दिया और कहा कि वह मुझसे बात नहीं करना चाहती और मैं भी उससे बात नहीं करूं। बस उसी समय मैंने कसम खाई कि हेमा का मुँह तक नहीं देखूंगा। इसलिए स्कूल भी मैंने बदल दिया, ताकि उसका चेहरा तक नहीं देख सकूं, परन्तु बाद में मुझे मालूम पड़ा कि उसका कोई दोष नहीं था, क्योंकि उनके नौकर ने मुझे बताया कि घर में बहुत झगड़ा हुआ है। हेमा को सबने डाँटा कि वह मुझसे बात नहीं किया करे। राकेश ने अपनी माँ के सामने हेमा को कसम दिलाई कि वह मुझसे कभी भी बातचीत नहीं करेगी। यह सारी हकीकत जानने के बाद मैंने महसूस किया कि इसमें हेमा का कोई दोष नहीं। उसे मजबूर कर दिया गया था, वरना वह मुझसे अवश्य बात करती। वह मुझे इतना चाहती थी कि मेरे बिना शायद चैन से रह भी नहीं सके। मैंने अपनी गलती महसूस की। नफरत की आग जो मेरे सीने में हेमा के प्रति उत्पन्न हुई थी वह शीतल पड़ गई। मेरा गुस्सा काफूर हो गया। मैं पछताने लगा, परन्तु जो होना था सो हो चुका, मैंने स्कूल बदल दिया था और उसके सामने भी नहीं जा सकता था। इसलिये कि कहीं राकेश को शंका न हो जाए और हेमा पर फिर मुसीबत न आए। मैं हेमा को छिप-छिप कर देखने लगा। इस प्रकार कुछ साल बीत गए, मैंने हाई स्कूल जोइन कर लिया। मेरा ड्राइंग में बहुत शौक था और इस प्रकार मैंने हेमा के चित्र बनाने शुरू कर दिये। उसे जहाँ कहीं जिस ड्रेस में देखता छिप कर उसका चित्र बना लेता। इस प्रकार चित्र बनाते-बनाते मैं एक खासा निपुण चित्रकार बन गया। हेमा के कई चित्र मैंने बना लिये, ऐसा कह कर अमर ने चित्र-एलबम खोला और एक चित्र पर अपनी अंगुली रख कर कहा—देखो माँ, यह हेमा के उस समय का चित्र है जब वह मैट्रिक में पढ़ती थी, उस दिन वह स्कूल से आ रही थी, उसके हाथों में किताबें थीं, वह बहुत अच्छी लग रही थी। जैसे कि उसके कई चित्र मैंने बनाए थे इसलिये इतना अभ्यास हो गया था कि सिर्फ थोड़ी सी कल्पना से ही मैं उसके चेहरे

का बहुत ही सुन्दर चित्र बना लेता था। उस दिन भी उसे किताबें लाता हुआ देखकर यह चित्र बनाया। देखो माँ, इस चित्र में किस प्रकार हाथों में किताबें लिये खड़ी है। एक बार उसे साइकिल चलाता हुआ देखा, वह चित्र यह है। अमर ने दूसरा पन्ना पलटा जिसमें हेमा साइकिल चला रही थी।

इसी प्रकार अमर एक-एक पन्ना पलटता रहा और सीता चित्रों को बड़े चाव से देखती गई और पूछती भी जाती कि यह चित्र किस-किस समय का है। समय गुजरता गया, समय के अनुसार मैं हेमा के चित्र बनाता गया। कई चित्र मैंने बना डाले। मैंने कालेज जोइन कर लिया ऐसा कहकर उसने अगला पेज बदला और बोला—देखो माँ, इस चित्र में हेमा अपनी सहेलियों के साथ एक सुन्दर बगीचे में बैठी हुई है। उस दिन वह अपनी सहेलियों के संग पिकनिक पर गई हुई थी। मुझे कहीं से पता चल गया और उन सब का पीछा करता मैं वहाँ पर पहुँच गया जहाँ पर वे सब गई हुई थीं। उस वक्त मुझे चित्र बनाने का चांस नहीं मिल रहा था, क्योंकि हेमा अपनी दूसरी सहेलियों के साथ इधर-उधर भाग रही थी। जिधर वे सब जातीं मैं भी छिपता-छिपता पेड़ों की आड़ लेता हुआ वहीं पहुँच जाता, इस ख्याल से कि कहीं वे बैठ जायं तो मैं हेमा का चित्र बनाऊँ, परन्तु वे कम्बख्त बैठती ही नहीं, शायद खड़े होने की कसम खा ली थी, कभी इधर भागती तो कभी उधर दौड़ जातीं। कभी-कभी तो दौड़ती हुई बहुत दूर चली जातीं और फिर चली आतीं। मैं बहुत तंग हो गया। जब कभी पेन्सिल सम्भाल कर चित्र बनाना शुरू ही करता कि दूसरी सहेलियाँ उसे पकड़ कर कहीं और ले जातीं। इस प्रकार उनके पीछे छिप-छिप कर भागने से मैं परेशान हो गया। फिर पता नहीं उन सबको क्या सूझा कि सबने तेज भागना शुरू कर दिया, ये सब भागती-भागती मुझसे बहुत दूर हो गईं। मैंने समझा बेड़ा ही गर्क ! शायद वापिस जा रही हैं, परन्तु ऐसा नहीं हुआ, वे सब एक जगह जा कर बैठ गईं। वहाँ पर उनके खाने का सामान वगैरह रखा हुआ था। वे सब करीब

आधे घंटे तक चुपचाप बैठकर खाने लगीं और मैं उन सबके बीच में बैठी हेमा का चित्र बनाने लगा। मैंने पूरा चित्र बना लिया, परन्तु वे सब फिर भी बैठी रहीं। मैंने वहाँ पर ज्यादा टाइम इस प्रकार रुकना ठीक नहीं समझा और वापस चला आया। देखो माँ, यह वही चित्र है। किस प्रकार हेमा अपनी सहेलियों के साथ बैठी हुई है।

अमर ने बात खत्म कर ली थी, परन्तु सीता अब भी एकटक घूर-घूर कर अमर के चेहरे की ओर निहारे जा रही थी। उसे अमर की इस बात पर अति अचम्भा हो रहा था।

अपनी ओर माँ को इस प्रकार घूरता हुआ देख कर अमर बड़े जोरों से खिलखिलाकर हँस पड़ा। सीता के दोनों कंधों को अपने हाथों से हिलाता हुआ वह बोला, "माँ कहाँ खो गईं, क्या अपनी बहू की कल्पना कर रही हो।"

सीता का खयाल टूट गया और सम्भल कर बोली, "अमर यह बात हँसने की नहीं जो तुम इस प्रकार हँस रहो हो।"

"माँ ....हँसू नहीं तो क्या रोऊँ ?" अमर अब भी मुस्करा रहा था।

"नहीं अमर, ऐसा नहीं। तुमने जो कुछ किया है वो ठीक नहीं किया, मुझे बिल्कुल खुशी नहीं हुई।" सीता गम्भीर हो गई। "तुम्हें सोच समझ कर कदम उठाना चाहिए था। हेमा अमीर घराने की लड़की है। जिसके घर वाले बचपन में ही नहीं चाहते थे कि वह तुम से बात तक करे, अब तो वह सयानी हो चुकी है। यह सब कैसे हो सकता है ? तुम्हारे सोचने से तो काम नहीं बन सकता। यह कोई छोटी बात नहीं जिसे हँसी में ही उड़ा दिया जाय। अमर, तुमने यह क्या कर दिया, बेटे मुझे तो समझ में ही नहीं आता कि अब क्या करना चाहिये ?"

"मां, घबराती काहे को हो, मैं पहले ही तुमसे, कह चुका हूँ कि चिन्ता करने की कोई आवश्यकता नहीं। बचपन की बात और थी उस वक्त वह बच्ची थी, नासमझ थी, उसके दिल में मेरे प्रति प्यार

तो था, परन्तु वे जज्बात नहीं थे कि वह अपने माँ-बाप को समझा सके। अब तो वह बच्ची नहीं रही, वह खुद सयानी है। स्वयं का भला-बुरा समझ सकती है। इसलिए किसी के डराने या धमकाने से वह चुप नहीं रह सकती। अगर वह चाहे तो सब कुछ कर सकती है। उसके ऊपर ही अब निर्भर है कि मेरा प्यार कबूल करे या नहीं। मुझे पूरा भरोसा है, जब उसे मालूम होगा कि मैं अमर हूँ तो ऐसा जानकर वह इतनी प्रसन्न होगी जिसकी कोई सीमा नहीं । वह मेरी किसी भी इच्छा को नहीं ठुकरायेगी।

अमर, यह तो तुम सोचते हो। तुम्हारे सोचने से तो सब कुछ नहीं हो सकता । हेमा बचपन में तुम्हें जानती थी, अब नहीं जानती। तुम बचपन के प्यार को इतना गहरा ले गये हो, यह तुमने ठीक नहीं किया। तुम दोनों की दोस्ती बचपन में ही तोड़ दी गई। वह तुम्हें बचपन में चाहती थी, परन्तु अब दोनों को बिछुड़े कई वर्ष हो गये हैं। अब वह बड़ी हो गई है, उसने तुम्हें कभी नहीं देखा, तुम्हें जानती तक नहीं, तब तुम कैसे कह सकते हो कि हेमा अब भी तुम्हें चाहती होगी या उसे मालूम पड़ने पर कि तुम अमर हो—उसका बचपन का साथी—तो चाहने लगेगी, ऐसा नहीं। बचपन की बातों के विषय में सोचना छोड़ दो। सीता अति गम्भीर हो उठी थी। बचपन का साथ सिर्फ एक स्वप्न था जिसकी स्मृतियां अब खत्म हो चुकी हैं। उसके दिल में क्या है तुम कैसे जान सकते हो।

मैं उसे जानने की कोशिश करूँगा। फिर से बचपन का प्यार उसके दिल में जागृत करूंगा। माँ, बचपन से लेकर आज तक जब कि मैं बड़ा हो गया हूँ सिर्फ हेमा और तुम्हारा सहारा लेकर। तुम दोनों के सिवाय मैं जिन्दा होकर भी जिन्दा नहीं हूँ। फिर माँ, तुम ही बताओ मैं उस सहारे को बीच में ही कैसे छोड़ सकता हूँ।

अमर से ऐसी बात सुनकर सीता दुखी हो उठी और बोली—मेरे लाल, यह सब तो ठीक है, परन्तु तुम हेमा को इतना चाहते हो तो अब तक उसके सामने क्यों नहीं गये? छिप-छिप कर

देखने से क्या फायदा । हो सकता है उसके मां-बाप ने उसके लिये कोई और लड़का पहले ही चुन लिया हो क्यों कि वह अब सयानी हो गई है । अपनी लड़की का ख्याल हर माँ-बाप को होता है ।

माँ, इस बात की मुझे जरा भी फिक्र नहीं और न ही तुम्हें करनी चाहिये । सच है कि मैं हेमा से आज तक नहीं मिला —वह सिर्फ इसलिये कि मैं कुछ बन जाऊँ और अब इसमें देरी नहीं । बी. एससी. का फाइनल साल है, परीक्षा हो जाय फिर देखो मैं क्या करता हूँ । अब छोड़ो इन बातों को (अमर हँस रहा था) और सुनो, परसों मैं कॉलेज के छात्रों के साथ काश्मीर जा रहा हूँ । काश्मीर में आल इण्डिया टूर्नामेंट हो रहे हैं । माँ सिर्फ आशीर्वाद दो कि अपने कॉलेज का नाम रोशन करके वापस आऊँ । बाकी तुम हेमा के लिये चिन्ता करना छोड़ दो । मैं तो तुम्हें यह सारी बातें बताना नहीं चाहता था, परन्तु तुम हमेशा हर बात को बताने के लिये मजबूर कर देती हो । मैं जानता था कि तुम इस मामूली सी बात का भी राई का पहाड़ बना लोगी और दिन रात उसे ही लेकर सोचती रहोगी ।

पागल कहीं के, तुम्हें यह बात मामूली लग रही है ? मुझे तो डर लग रहा कि पता नहीं क्या होगा ।

ओ माँ प्लीज, अब ऐसी बात मत करो । तुम्हें बहू चाहिए ना ?वो भी हेमा ही । ठीक है, आजाएगी, तब तक के लिये समझो कि अपने मायके है । अब अपनी बहू की चिन्ता छोड़कर मेरे पेट की चिन्ता करो (अपने पेट पर हाथ फेरते हुए) बड़े जोरों की भूख लग रही है । और हाँ, मेरे कपड़े वगैरह तैयार रखना, परसों जाना है । ऐसा कह कर मुस्कराता हुआ अमर फिर चित्र बनाने में व्यस्त हो गया ।

सीता सीधी दूसरे कमरे में आ गई और दीवार पर टंगे हुए एक चित्र के पास आकर खड़ी हो गई । यह चित्र उसके स्वर्गवासी पति का है । उसे कहने लगी—सुनी आपने अमर की बातें ? बड़ा शैतान हो गया है, पता नहीं क्या-क्या करता रहता है । आप तो मुझे छोड़कर चले गये, अब तो सिर्फ अमर का ही सहारा है । उसके लिये ही जी

रही हुँ वरना कब की आकर आपसे मिली होती । आप अमर को आशीर्वाद दीजिये कि जिस बात के पीछे बचपन से लगा हुआ है वह पूर्ण हो । एक बार फिर चित्र को नमस्कार करके सीता रसोई घर में चली गई ।

अमर इस चित्र को बड़ी चाहना और सावधानी से बना रहा था । उसने अब तक कई चित्र बना डाले हैं, परन्तु आज जैसा चित्र उसने कभी भी नहीं बनाया । आज के चित्र में कुदरत की सुन्दरता छिपी हुई है जिसे वह अपनी कला द्वारा प्रकट करना चाहता है । चित्र बनाते-बनाते उसे चार रोज़ पहले की सुहावनी शाम याद आ गई । उस शाम को उसका मन कुछ उदास हो उठा था । उदासी को दूर करने के लिये ड्राइंग की कापी उठाई, एक पैन्सिल ली और चल पड़ा समुद्र के पास उस बगीचे में कुछ प्राकृतिक चित्र बनाने के लिये । जब कभी वह बेचैन हो जाता तो चला जाता उस बगीचे में । बगीचे की गेट में प्रवेश करते ही वह ठिठक गया । जिस स्थान पर उसे बैठकर समुद्र की सुहावनी शाम का चित्र बनाना था उसी जगह पर अमर ने हेमा को बैठी हुई देखा । हेमा एक चट्टान पर शान्त बैठी समुद्र से दूर उन पहाड़ों में लुप्त होते हुए सूरज को एकटक निहारे जा रही थी । बहुत ही लुभावनी शाम थी । सूरज की लालिमा पूरे आकाश में छाई हुई थी जिससे शान्त खड़े बादलों का रंग कई रंगों में परिणित हो गया था । रंगीन बादलों की परछाइयों से समुद्र का जल भी रंगीन हो उठा था । इसके साथ-साथ समुद्र की लहरों के टकराने से उस शान्त वातावरण में एक अजीब संगीत गूँज उठता । सूरज की लम्बी-लम्बी किरणें इस प्रकार फैली हुई थी जैसे कि आकाश को अपनी लम्बी-लम्बी बाँहों में समेटना चाहती हो । इतने सुहावने वातावरण में हेमा अपने खयालों में खोई हुई इस प्रकार शान्त बैठी थी कि ऐसा लगता था कि बगीचे की सुन्दरता बढ़ाने के लिये एक सफेद संगमरमर की प्रतिमा तराश कर रखी गयी हो । हेमा वास्तव में एक सुन्दर प्रतिमा लग रही थी । उसके बदन पर लहराती

सफेद साड़ी ने उसके खूबसूरत चेहरे को और भी खिला दिया था। कुल मिलाकर दृश्य बहुत सुन्दर था।

अमर ने महसूस किया कि वह हेमा को भिन्न-भिन्न अदाओं में देख चुका है और उसके चित्र भी बनाए हैं, परन्तु आज की हेमा हेमा न होकर साक्षात सफेद संगमरमर की बनी हुई सुन्दर देवी है।

सूरज की लालिमा का प्रभाव पूरे वातावरण में था। हर एक चीज़ गुलाबी प्रतीत हो रही थी। हेमा जिस चट्टान पर बैठी हुई थी उसके इर्द-गिर्द कई रंगबिरंगे फूल खिले हुए थे, परन्तु इन सबसे ज्यादा खूबसूरत अमर को हेमा लगी। सूरज की लालिमा ने उसकी गुलाबी चेहरे को और भी गुलाबी बना दिया था। उसके कानों में पहने हुए बड़े-बड़े हीरों के झुमके ऐसे चमक रहे थे जैसे इन्द्र धनुष के सातों रंग उन हीरों में समा गये हों। अमर को हेमा बहुत अच्छी लग रही थी। उसने कभी भी कल्पना नहीं की थी कि उसकी हेमा इतनी सुन्दर हो सकती है। हेमा कवि की कल्पना से भी ज्यादा बढ़कर सुन्दर है। अमर हेमा को घूर-घूर कर देखे जा रहा था। हेमा की लम्बी-लम्बी हिरण जैसी आँखों में काजल की काली लकीरें देख कर वह सोचने लगा कि वह हेमा को देख रहा है या इन्द्र की परी मेनका को—शायद मेनका भी इतनी सुन्दर नहीं होगी। अमर हेमा की सुन्दरता में मदहोश हो गया। वह इस समुद्र से भी गहरी, हिरण से भी लम्बी, इन आँखों में समा जाना चाहता था। वह सुध-बुध भूल गया। उसे खयाल ही नहीं रहा कि वह कहां खड़ा है। वह तो हेमा की सुन्दर छवि में खो गया था। अचानक उसके खयाल टूटे, वह होश में आ गया। उसने अपने हाथ में पैन्सिल और कापी देखी। उसके हाथ में पड़ी पैन्सिल सफेद कागज पर लकीरें खींचने लगी। अमर हेमा की तस्वीर बनाने लगा। चित्र में उस चट्टान पर बैठी हेमा के अलावा उसे पहाड़ों में डूबता हुआ, सूरज, समुद्र, आकाश इत्यादि सब कुछ दिखाया था। उसका हाथ बड़ी तेजी से चलने लगा कि कहीं हेमा उठ न जाए।

चित्र पूरा बन गया। अब सिर्फ रंग, शेड वगैरह भरना था। हेमा अब भी उस पहाड़ के पीछे डूबते हुए सूरज को देखे जा रही थी जो अब डूबने ही वाला था। कुछ ही पल में सूरज पहाड़ों के पीछे लुप्त हो गया। धीरे-धीरे अँधेरा होने लगा। हेमा उठ खड़ी हुई, अमर उसके पीछे-पीछे चलने लगा। वह बगीचे से बाहर आकर अपनी गाड़ी में बैठ गई जिसे वह कुछ समय पहले खड़ी कर गई थी। कुछ ही पल में कार आवाज करती दोड़ चली और अमर उस जाती हुई कार को देखने लगा—तब तक, जब तक कि कार उसकी आँखों से ओझल न हो गई। हेमा चली गई।

इतने में दीवार पर टंगी घड़ी ने टन-टन की आवाज की और इसके साथ अमर के खयाल टूट गए, उसकी नज़र सीधी घड़ी पर गई। उसने सोचा खयालों ही खयालों में पूरा एक घंटा गुजर गया और चित्र में उसने अभी तक रंग नहीं भरा। काश्मीर जाने से पहले उसे यह चित्र पूरा करना था। उसने बड़ी तेजी, किन्तु सावधानी से चित्र में रंग भरना शुरू कर दिया।

——

५

मां, मैं कॉलेज जा रहा हूँ तुम बजार से सब चीजें खरीद कर लाना ताकि काश्मीर में किसी भी चीज़ के लिये परेशानी न हो और हां, सब सस्ते दाम वाली लाना। तुम खुद के लिये भी खरीदना ऐसा नहीं कि सिर्फ मेरे लिये ही लेकर आओ और खुद के लिये राम का नाम।

अमर से ऐसा सुनकर सीता खिलखिला कर हँस पड़ी और बोली शरीर कहीं का कहीं राम का नाम भी बज़ार में बिकता रहता है। वह तो हमेशा दिल के अंदर ही रहता है। वह न तो खरीदा जाता है और न बेचा ही जाता है। दूसरी बात यह कि मुझे किसी भी वस्तु की आवश्यकता नहीं। अगर पड़ी तो अवश्य ले लूँगी, तुम फिक्र मत करो।

नहीं मां, खुद के लिये शाल तो अवश्य ही लाना। देखो न, बहुत पुरानी हो गई है। मेरे लिये अगर कोई वस्तु कम आई तो कोई बात नहीं, परन्तु इस पुरानी शाल को तो तुम्हें त्यागना ही पड़ेगा और उसकी जगह नयी शाल लेगी। अच्छा मैं अब जाता हूँ—ऐसा कहकर अमर चला गया। सीता मुस्करा पड़ी—पगला कहीं का स्वयं का खयाल तो करता नहीं सिर्फ मेरे लिये ही सोचता रहता है।

सीता ने कुछ पैसे लिये, घर को ताला लगाकर चल पड़ी—बाजार की ओर। सीता ने बहुत सी वस्तुएँ खरीदीं—अमर के लिये, और स्वयं के लिये एक शाला। इन सब चीजों को खरीदने में उसे पूरा एक घंटा लगा। उसे अब घर का खयाल आया। घर में उसे बहुत से काम करने थे, अमर के काश्मीर जाने के लिये उसे बिस्तर वगैरह भी

तैयार करने थे। ऐसा सोचकर उसने अपने कदम तेजी से आगे बढ़ाने शुरू कर दिये। सीता अपने ही विचारों में खोई बेसुध होकर जा रही थी कि एक मोटर गाड़ी जो कि सामने से आ रही थी फुलब्रेक के साथ एक ही झटके से रुक गई और सीता को मामूली सा झटका लगा जिससे उसके हाथ की थैली एक ओर गिर गई और उसमें पड़ा सामान इधर-उधर बिखर गया। गाड़ी चलाने वाले ने बड़े होशियारी से ब्रेक लगाकर कार रोक दी थी, जिससे सीता को चोट तो नहीं आई पर वह एक तरफ गिर पड़ी। कार के इस प्रकार रुकने और सीता के गिरने से राहगीर सभी रुक गए और वहां पर आकर खड़े हो गए। कार चलाने वाले को वे बुरा-भला कहने लगे जो कि एक जवान व खूबसूरत लड़की थी। वह लड़की बहुत घबरा गई। बेचारी करती भी क्या! वहां पर खड़े इतने सारे लोगों को क्या जवाब देती! लोग तो धड़ाधड़ उसे गालियाँ देते जा रहे थे। वे कह रहे थे—कैसी लड़की है, घमण्ड में चूर होकर गाड़ी चलाती है, देखती भी नहीं कि कोई आ रहा है या नहीं। उन सब पर जरा भी ध्यान न देकर सीता को उठाने के लिए वह आगे बढ़ी परन्तु तब तक सीता अपनेआप खड़ी हो गई और इधर उधर बिखरा हुआ सामान एकत्रित करने लगी। वह लड़की अब और कुछ तो नहीं कर सकी, स्वयं भी बिखरा हुआ सामान उठाने में लग गई। वह बेचारी करती भी क्या। वहां पर खड़े हुए लोग उसके लिये क्या-क्या ऊटपटांग बकते जा रहे थे। सामान एकत्रित करके जैसे ही सीता ने उठने की कोशिश की तो धक्का लगने के कारण उसने अपने घुटने में थोड़ा दर्द महसूस किया जिसे लड़की समझ गई और आगे बढ़कर सीता को उठने में सहारा दिया। सीता अब खड़ी हो गई और जब उसकी नजर उस लड़की पर पड़ी तो देखती ही रह गई। सीता उसे पहचानने की कोशिश करने लगी। उसने इस लड़की को अवश्य कहीं देखा है, वो भी करीब से। इतने में उसे अमर के बनाए हुए चित्रों का ख्याल आ गया। वह सोचने

लगी—हूब हू इस लड़की की शक्ल उन चित्रों से मिलती है। कहीं यह हेमा तो नहीं है। इस प्रकार वह घूर-घूर कर देखने लगी उसकी ओर। उसे अब पूरा यकीन हो गया कि यह हेमा ही है।

अपनी ओर सीता को इस प्रकार घूरता हुआ देखकर हेमा घबरा गई। उसने सोचा अब पता नहीं क्या होगा। घबराहट के कारण उसके ललाट पर पसीने की बूँदें जम गईं। सीता अब भी हेमा को एकटक देखे जा रही थी और लोग अँटशँट बकते जा रहे थे।

बेचारी हेमा क्या कहती। वह तो कांप रही थी। आखिर कार हाथ जोड़ कर हिचकिचाते हुए हेमा बोली "मांजी, माफ करना कॉलेज में देरी हो रही थी इसलिये गाड़ी को तेज चलाना पड़ा, मुझे भी मालूम नहीं कि यह सब अचानक कैसे हो गया। मैं अति शर्मिंदा हूँ। इतना कह कर वह चुपचाप स्तब्ध होकर सीता के सामने खड़ी हो गई।

सीता ने जैसे कुछ सुना ही नहीं। वह तो हेमा को देखे जा रही थी। उसने महसूस किया कि उसकी होने वाली बहू हकीकत से भी बढ़कर कई गुना सुन्दर है।

तमाशा देखने के लिये अब भी सभी लोग खड़े थे। वे देखना चाहते थे कि औरत किस प्रकार लड़की को फटकारती है।

हेमा ने समझा कि औरत (सीता) ने उसे माफ नहीं किया है वरना अब वह तक जवाब दे देती और शायद अब वह खरी-खोटी सुनाएगी। ऐसा सोचकर वह सिहर गई, घबराहट के मारे हेमा इधर-उधर देखने लगी।

सीता समझ गई कि हेमा घबरा गई है। वहां पर खड़े हुए लोगों से कहा—आप लोग यहाँ पर क्यों खड़े हैं? कोई खास बात तो नहीं है, कभी-कभी अचानक ऐसे हो ही जाता है। आप सब यहां से जा सकते हैं।

लोगों ने समझा था कि औरत (सीता) लड़की (हेमा) को धमकाएगी, फटकारेगी, परन्तु यह तो उल्टा ही हुआ—उल्टे उन सब

को डांट पड़ी । इस प्रकार वहां पर खड़े लोग सब अपना मुँह लेकर जाने लगे, सिर्फ कुछ गुण्डे लोग अब भी वहाँ पर खड़े रहे । उनमें से किसी एक ने कहा "माँजी, फिर भी इस लड़की को ध्यान से गाड़ी चलानी चाहिए थी । अगर आप को कुछ हो जाता तो···· ······ । ऐसा कह कर उसने दूसरे गुण्डे की ओर देखा जिसने हां में सिर हिला दिया और बोला--कैसी लड़की है ! अपनी खूबसूरती के घमण्ड में आंखें आसमान पर गाड़े चलती है ।

सीता ने उन की बातें जैसे सुनी ही नहीं और हेमा से बोली, "बेटी कोई बात नहीं तुम्हारा इसमें कोई दोष नहीं है ।"

सीता से ऐसा सुनकर हेमा बहुत प्रसन्न हुई और बोली—माँजी··· । उसे धन्यवाद देने के लिये जैसे शब्द ही नहीं मिल रहे थे आपने मुझे माफ कर दिया—हेमा अति खुश हो रही थी—आइये माँजी मैं आपको घर तक पहुँचा दूँ बड़े अदब के साथ हेमा ने आग्रह किया ।

सीता भी यही चाहती थी, परन्तु बोली—नहीं बेटी, मैं खुद ही चली जाऊँगी, तुम भले जाओ तुम्हें देरी तो पहिले से ही हो चुकी है ।

नहीं मांजी, अब मैं कॉलेज नहीं जाऊँगी । लेट तो वैसे भी हो गई हूँ अब जाने से क्या, आप मेरे साथ चलेंगे तो मुझे बहुत खुशी होगी । अगर आपने इन्कार कर दिया तो मैं समझूँगी कि आपने मुझे अभी तक माफ नहीं किया ।

नहीं बेटी, ऐसा कुछ भी नहीं । माफ करने का सवाल ही नहीं उठता जबकि तुम्हारा कोई दोष नहीं ।

तो फिर आइये—हेमा बीच में ही बोल पड़ी और बड़ी इज्जत के साथ सीता का हाथ थाम कर कार का दरवाजा खोल दिया और कहा, बैठीये माँजी । सीता बैठ गई और हेमा उसके ही बगल वाली ड्राईविंग सीट पर ।

हेमा ने वहां पर खड़े उन गुण्डों पर एक तीखी नजर डाली और गाड़ी स्टार्ट कर दी । गाड़ी भीड़ को चीरती हुई आगे निकल गई ।

गुण्डे और दूसरे तमाशबीन उस जाती हुई कार को देखते ही रह गए जो अब उनकी आँखों से ओझल हो चुकी थी।

मांजी, आप रास्ता बताती जाइये। सीता जिस ओर कहती, हेमा उसी ओर गाड़ी मोड़ लेती।

हेमा चुपचाप गाड़ी चलाती रही। उसका ध्यान रोड पर था और सीता उसे एकटक देखे जा रही थी—कितनी सुन्दर! जितनी तारीफ अमर ने की थी उससे भी बढ़कर। पर यह हेमा है या और कोई शक्ल-सूरत तो बिल्कुल वही है। इस प्रकार सीता मन ही मन में सोच रही थी। बेटी, तुम्हारा नाम तो पूछना मैं भूल ही गई, क्या नाम है?

हेमा,

हेमा नाम सुनकर अब सीता को पूर्ण विश्वास हो गया। उसे ऐसा लगा जैसे कि एक बड़ा सा बोझ उसके सिर से उतर गया हो। उसकी परेशानी दूर हो गई। वह मन ही मन प्रसन्न होने लगी। अगर बस चलता तो प्यार से उसे अपनी बांहों में ले लेती। बड़ा सुन्दर नाम है--जितनी तुम सुन्दर हो उतना ही तुम्हारा नाम भी।

अपनी तारीफ सुनकर हेमा शर्मा गई। उसके गाल सुर्ख हो गये तथा मुस्कराते हुए कहा मांजी, अच्छे लोगों को हर चीज अच्छी ही लगती है।

कौन सी क्लास में पढ़ती हो?

बी. ए. फाइनल में।

सीता सवाल पूछती जाती और इसके साथ-साथ रास्ता भी दिखाती जाती और हेमा बड़े सरल ढंग से उत्तर देती।

आप के घर में कौन-कौन है माँजी।

एक मैं और दूसरा मेरा बेटा।

बस सिर्फ आप दो जने? आपका बेटा क्या काम करता है?

कोई काम नहीं करता।

कोई काम नहीं करता! क्या छोटा है?

नहीं पूरे बाइस साल का है।

बाइस साल का है और कुछ नहीं करता ! ऐसा क्यों ? आश्चर्य प्रकट करते हेमा ने पूछा ।

ऐसा सुनकर सीता खिलखिला कर हँस पड़ी और हँसते हुए ही बोली--पढ़ता है, बी. ए. फाइनल में ।

ओह—हेमा भी हँस पड़ी और बोली माँजी, मैंने समझा कि वह शायद पढ़ता भी नहीं जैसे कि पहले आपने कहा कि कुछ नहीं करता।

अरे-अरे ! हेमा बेटी, गाड़ी को पीछे तो ले चलो । बातों ही बातों में मकान तो पीछे रह गया ।

हेमा ने गाड़ी पीछे मोड़ ली ।

हां, अब यहां पर रोक दो । सामने वाला हमारा मकान है ।

दोनों गाड़ी से उतरे । सीता ने चाबी से ताला खोलकर दरवाजा खोल दिया और अन्दर प्रविष्ट हुई । हेमा बाहर ही खड़ी रही ।

बेटी, अन्दर आ जाओ । शर्माओ नहीं, इसे अपना ही घर समझो ।

हेमा सकुचाती हुई धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगी । हेमा ने महसूस किया कि ये लोग गरीब होते हुए भी अपने घर को कितना अच्छा सजा कर रखा है । कमरे की स्वच्छता देखकर वह दंग रह गई । साफ दीवारें, फर्श चमक रहा था, पूरे कमरे में एक भी मक्खी नहीं । जलती हुई अगरबत्ती की भीनी-भीनी सुगन्ध से उसे अति आनन्द मिल रहा था । वह इधर-उधर देख कर पूरे कमरे का जैसे निरीक्षण कर रही हो ।

बेटी, बैठ जाओ—एक कुर्सी की ओर इशारा करते हुए बड़े स्नेह से सीता ने कहा—इसे अपना ही घर समझो ।

अच्छा माँजी, अब आज्ञा दीजिये मैं चलूँ—हाथ बाँध कर हेमा ने इजाजत के लिए कहा ।

ऐसा कैसे हो सकता है बेटी, कुछ जल-पान तो करती जाओ । मैं तुम्हें ऐसे थोड़ेही जाने दूँगी ।

माँजी, फिर कभी सही--मुस्कराते हुए बोली ।

फिर कभी क्या, अब तो हर रोज तुम्हें यहाँ आना होगा। बैठ जाओ बेटी—हेमा के सर पर हाथ रखते हुए कहा।

माँजी, मैं कुछ भी नहीं ले सकूँगी, घर से खाकर ही निकली थी फिर भी अगर आप चाहती हैं तो एक कप चाय से ज्यादा नहीं।

अच्छा-अच्छा, तुम जैसा चाहोगी वही होगा, परन्तु तुम बैठ तो जाओ—ऐसा कह कर सीता खिलखिला कर हँस पड़ी।

हेमा भी हँस पड़ी और करीब रखी एक कुर्सी पर बैठ गई।

मैं अभी ही चाय बना कर लाई–सीता जाने ही लगी थी कि हेमा बोल पड़ी, "माँजी, जब हम छोटे हैं तो फिर आप काम क्यों करें। आप मुझे दूध वगैरह दीजिये मैं स्वयं चाय बनाऊँगी।"

हेमा की ऐसी मीठी-मीठी भोली बातें सुनकर सीता फुलकित हो उठी। हेमा के चेहरे को अपने हाथों में लेकर बड़े प्यार से कहा, "पगली कहीं की, तुम भला चाय क्यों बनाओगी।"

माँजी, आपने ही तो कहा था कि मैं इसे अपना ही घर समझूँ–फिर अपने घर का काम करने में क्या हर्ज है।

वो तो है ही। यह तुम्हारा अपना घर ही है, परन्तु हर काम, हर बात का भी कोई समय होता है। समय के अनुसार सब शोभा देता है। जब समय आएगा तब की बात तब—इतना कहकर सीता मुस्करा पड़ी।

वो कैसे माँजी ? बड़े भोलेपन से हेमा ने पूछा।

अच्छा अब बातें कम। तुम बैठ जाओ, मैं अभी आई। सीता चली गई चाय बनाने।

हेमा कुर्सी पर बैठ गई और फिर उठ खड़ी हुई। समय बिताने के लिये कमरे का निरीक्षण करने लगी। इस प्रकार चलते-चलते वह दूसरे कमरे में आ गई। वह कमरा पहले वाले कमरे से भी अच्छा सजाया हुआ था। कितने भले और अच्छे लोग हैं। गरीब हुए तो क्या, जरूर किसी बड़े खानदान से ताल्लुक रखते होंगे। उस कमरे की हर वस्तु को बड़ी चाहना से देखे जा रही थी। हर चीज़ में उसे

अलग-अलग खूबी नजार आई। उसकी दृष्टि एक कोने में रखी मेज पर पड़ी। वह उसके करीब आ गई। मेज पर कई रंग के ट्यूब, पैंसिल वगैरह वगैरह पड़े थे। वह सोचने लगी —ये सारी चीजें यहाँ पर कैसे ? ये सब तो एक चित्रकार के यहाँ होनी चाहिये। तो क्या इसका बेटा चित्रकार भी है। अगर है तो यहाँ पर एक भी चित्र क्यों नहीं ? अवश्य कहीं पर रखे हुए होंगे। इस प्रकार :देखते-देखते वह एक अलमारी के पास आ गई। उसे खोल कर देखा तो कई पुस्तकें पड़ी हुई थीं। वह उन पुस्तकों को उलट-पुलट कर देखने लगी। एक बड़ी सी पुस्तक उसके हाथ में आ गई जिसके ऊपर लिखा था "चित्र-अलबम"। इस अलबम को पाकर हेमा अति प्रसन्न हुई। जिस चीज़ की उसे आवश्यकता थी, वह मिल गई तथा समय बिताने के लिये उस अलबम को लेकर पहले वाले कमरे में वापस आ गई। कुर्सी पर बैठकर अलबम का एक पन्ना उलट दिया। एक चित्र पर नज़र पड़ते ही वह चकरा गई, वह समझ नहीं सकी कि यह सपना है या हकीकत। हेमा का सर चकराने लगा, यह कैसे हो सकता है। सपना भी तो नहीं। ये सारी एक्-सीडेंट की बातें, फिर उसके साथ इस घर में आना यह सब हकीकत नहीं तो और क्या। उसका दिल बड़े जोरों से धड़कने लगा। घबराहट के कारण वह पसीने से तर हो गई। आँखें फाड़-फाड़ कर उस चित्र को देखने लगी। वह समझ नहीं सकी कि उसके बचपन का चित्र कैसे बनाया गया है जबकि वह इन लोगों को जानती तक नहीं। यहाँ पर वह पहले कभी नहीं आई। आज पहली ही बार इस औरत से मिली है फिर यह सब कैसे हुआ है !

हेमा ने दूसरा कागज पलटा। ये क्या ! इस दूसरे चित्र को देखकर वह और भी डर गई। डर के मारे उसके मुख से चीख निकलने ही वाली थी कि वह सम्भल गई और स्वयं पर संयम रखा। उसे अच्छी तरह याद है ऐसा फ्राक उसके पास था जो इस चित्र में दिखाया गया है। इस प्रकार वह पन्ने पलटती गई। सब चित्र उसके खुद के ही थे। हेमा ने कई चित्र देख डाले। इस चित्र को देखकर वह अचम्भे

में पड़ गई कि इसे किस प्रकार बनाया गया है। अगले महीने वह अपनी सहेलियों के साथ पिकनिक पर गई हुई थी और ठीक इसी जगह पर बैठकर उन सबने नाश्ता वगैरह किया था। तो क्या मेरा पीछा किया गया कि मैं किस समय कहाँ जाती हूँ। अगर किया गया है तो किस उद्देश्य को लेकर जो बचपन से लेकर अब तक की मेरी तस्वीरें बनाई गई हैं। वह कुछ भी समझ नहीं सकी। हेमा की हिम्मत टूट गई—अगला पन्ना पलटने की। वह सब जान गई थी कि पूरे ऐलबम में उसकी ही तस्वीरें बनी हुई हैं। उसके पाँव लड़खड़ाने लगे, उसके हाथ काँप रहे थे, वह डरने लगी, फिर एक बार साहस करके आखिरी पन्ना भी पलट दिया। इस चित्र को तो देखकर हेमा चकित हो गई। वह एकटक उस चित्र को देखने लगी। परसों ही वह बगीचे में गई थी और इसी चट्टान पर बैठकर समुद्र की लहरें देखने लगी। वह उस चित्र को देखने लगी कि जिस प्रकार वह वहां बैठी थी उसी प्रकार इस चित्र में भी। वही चट्टान, वही पहाड़ों के पीछे डूबता हुआ सूरज, वही फूल, वह पागलों की तरह एक-एक चीज़ को देखने लगी। हेमा का दिल धक-धक करने लगा। उसके जैसे होश हवाश खो गए हों, पसीने से जैसे नहाई हुई हो। अब भी उस आखिरी चित्र को वह देखे जा रही थी। पसीने की बूँदें उसके ललाट से गिरकर उस चित्र पर पड़ रही थीं।

ये लोग कौन हो सकते हैं ? मेरे इतने सारे चित्र बचपन से लेकर आज तक क्यों बनाए हैं ? कैसे बनाए हैं ? इस प्रकार उसका दिमाग बड़े जोरों से चलने लगा। परन्तु वह किसी भी नतीजे पर नहीं पहुँच सकी। उसे मालूम भी नहीं पड़ा कि सीता कब से चाय लेकर आ गई है। वह तो अपने खयालों में खोई हुई थी। उसके हाथ-पाँव काँप रहे थे। अलबम उसके हाथों से नीचे फर्श पर गिर पड़ा। उसे हिम्मत ही नहीं हो रही थी कि उस अलबम को उठा ले। वह तो उस गिरे हुए अलबम को घूर-घूर कर देखे जा रही थी। हेमा खड़ी हो गई, परन्तु खड़े रहने में असमर्थ रही। उसके पाँव लड़खड़ा गए

जिससे बाएँ पाँव की तरफ साइड में झुक गई और बैलेन्स खो जाने के कारण गिरने ही वाली थी कि सीता ने जो कब से उसकी हर हरकत देख रही थी आगे बढ़कर उसे अपनी बाँहों में थाम लिया। अगर सीता फुर्ती से ऐसा नहीं करती तो हेमा अवश्य ही नीचे फर्श पर गिर जाती।

हेमा बेटी, यह अचानक तुम्हें क्या हो गया जो इतनी घबरा गई हो।

सीता की आवाज़ सुनकर हेमा शीघ्र ही होश में आ गई और उसने स्वयं को सीता की बाँहों में पाया जो कि प्यार से उसे थामे हुए खड़ी थी।

सीता ने हेमा को पंलग पर बिठा दिया और पूछा—क्या बात है बेटी, जो घबरा गई हो ?

हेमा के मुख से एक भी शब्द नहीं निकला। सिर्फ उसने घूर कर जमीन पर पड़े हुए उस एलबम को देखा।

सीता समझ गई, यह सारी परेशानी एलबम के कारण हुई है। सीता ने झुककर एलबम को नीचे से उठा लिया।

अब एलबम सीता के हाथों में था और हेमा उसके हाथों में देखने लगी। हेमा अब भी घबरा रही थी।

हेमा को इस प्रकार घूरता हुआ देखकर सीता मुस्करा पड़ी और बोली—बेटी घबराने की कोई बात नहीं। तुम खामख्वाह परेशान हो रही हो। ऐसा कह कर सीता ने एक चाय का कप उठा कर हेमा की ओर बढ़ा दिया। बेटी, इसे पी लो, ताकि तुम्हारी घबराहट कुछ दूर हो जाए फिर मैं तुम्हें सब कुछ बताती हूँ।

हेमा ने चुपचाप चाय की प्याली सीता के हाथों से ले ली और एक ही घूंट में पी गई। चाय ने कुछ असर दिखाया। उसकी घबराहट वास्तव में दूर होती गई। वह अब होश में आ गई।

सीता हेमा के बगल में बैठ गई और अपनी साड़ी के आँचल

से चेहरे का पसीना पोंछने लगी जो कि घबराहट के कारण आ गया था।

'माँजी'—बहुत ही बारीक, घबराई हुई आवाज में हेमा बोली।

हाँ कहो बेटी! हेमा के सर पर हाथ रखते हुए स्नेह के साथ सीता बोली।

ये सारे मेरे चित्र किसने बनाए हैं? वह एलबम की ओर देखते हुए बोली।

बेटी घबराओ नहीं मैं सारी बात तुम्हें बताती हूँ। सीता ने कहना शुरू किया।

बेटी, पहले तो मुझे भी मालूम न था कि ये सारे चित्र मेरा बेटा क्यों बना रहा है, वो भी एक ही सूरत की लड़की के। मुझे कुछ शक हुआ। कल ही मैंने अपने बेटे से सवाल किया कि ये चित्र क्यों बनाए हैं। पहले तो वह बता ही नहीं रहा था, परन्तु मैंने उसे बहुत मजबूर किया तब वह बोला मैं इस लड़की से प्यार करता हूँ।

ऐसा सुन कर हेमा काँप गई—नहीं यह झूठ है।

बेटी, तुम पूरी बात तो सुन लो।

हेमा शान्त हो गई परन्तु वह हाँफ रही थी।

तब मैंने अपने बेटे से पूछा—क्या वह लड़की भी तुम से प्यार करती है? वह बोला—वह तो मुझे जानती तक नहीं उसने मुझे कभी नहीं देखा।

ऐसा सुनकर मैं आग बबुला हो उठी और उसे डाँटते हुए कहा—पागल, जब वह लड़की तुम्हें जानती नहीं तो फिर किस आधार पर तुम उससे प्यार करते हो। बेवकूफ, पागल, नादान पता नहीं मैंने उसे कितनी बार इस प्रकार कोसा। मैं उसे इस प्रकार बुरा-भला कहती, डाँटती जाती और वह कमबख्त फिर भी खिलखिला कर हँसता जा रहा था।

क्या········ हँसता जा रहा था? चकित होकर हेमा ने पूछा।

हाँ बेटी, बड़ा ढीठ है, पता नहीं क्या-क्या करता रहता है ।

फिर आपने क्या किया ? बड़े भोलेपन से हेमा ने पूछा ।

मैं तब उसे मारने के लिये आगे बढ़ी ही थी कि वह प्यार से मुझ से लिपट गया और जोरों से हँसते हुए कहा—"मां, ऐसा नहीं—हेमा तो मुझे बचपन में जानती थी, अब नहीं । मैं छिप-छिप कर बचपन से ही उसके चित्र बनाता आया हूँ ।"

तो क्या वह मेरा नाम भी जानता है ?

हाँ बेटी, नाम तो क्या तुम्हारे विषय में सब कुछ जानता है । क्या तुम्हें कुछ याद है किसी ऐसे लड़के के बारे में जिसे तुम बचपन से जानती हो ?

हेमा की घबराहट दूर हो चुकी थी और अब वह इस बात को सुनने में दिलचस्पी लेने लगी । कैसा लड़का है ! जिसे वह जानती तक नहीं, उसे कभी नहीं देखा तो वह उसे प्यार कैसे करता है । हेमा सोचने लगी कि बचपन में ऐसा कौनसा लड़का था जिसे वह जानती हो, परन्तु उसे याद नहीं आया । माँजी, मुझे तो कुछ भी याद नहीं कि मैं बचपन में कभी आप के बेटे को जानती थी ।

ऐसा कैसे हो सकता है बेटी, क्या जो उसने मुझे कहानी सुनाई वह झूठी थी ?

आप को उसने कैसी कहनी सुनाई ? हेमा की दिलचस्पी बढ़ती जा रही थी ।

बेटी उसने बताया कि तुम बचपन में उसे बहुत चाहती थी । उसके बिना एक पल भी अलग रहना तुम्हारे लिये असम्भव सा था । खैर, जो भी हुआ । जब उसने बताया कि वह हेमा को प्यार करता है । मैंने उससे कहा "यह तुम्हारा कैसा प्यार ! जब हेमा तुम्हें जानती नहीं । तुमने उसके चित्र क्यों बनाए हैं । किसी अनजान लड़की के विषय में इस प्रकार सोचना बुरा हैं । मैं तो उसके पागलपन से घबरा गई थी । वह तो बचपन से लेकर अब तक किसी के बारे में सोचता आ है और उसे कुछ भी मालूम नहीं ।

बेटी, इस दुनिया में मेरा और कोई भी नहीं, इसी एक बेटे के सहारे जी रही हूँ । माँ की अंधी ममता ! उसकी बातें सुनकर मैं भी घबराने लगी थी—उसके इस पागलपन पर । मैंने उसे समझाया कि अगर बचपन में ऐसा कुछ हुआ है तो वह भूल जाए । बचपन की बातें बचपन में ही समाप्त हो गईं । इस प्रकार उसके साथ मैंने बहुत माथापच्ची की, उसे प्यार से समझाया, उसे डाँटा, धमकाया, परन्तु उसने जैसे कुछ सुना ही नहीं हो और बोला, "माँ मैं न तो तुम्हें छोड़ सकता हूँ और न ही हेमा को ।"

क्या····मुझे वो····क्यों—आश्चर्य के मारे हेमा के मुख से चीख निकल गई । उसका गला सूख गया ।

हाँ बेटी, परन्तु तुम घबराओ नहीं । तुम्हें जैसा अच्छा लगे वही करना, वह तो पागल है । पागलों की बातों का बुरा नहीं माना करते । मैंने उससे पूछा था, कि वह कब तक ऐसा करता रहेगा तो वह बोला—माँ तुम चिन्ता मत करो । मुझे वक्त का इन्तजार है, सब ठीक हो जाएगा । हेमा मेरे सिवाय किसी और से शादी नहीं कर सकती ।

नामुमकिन—हेमा ने चिल्ला कर कहा—जब मैं जानती ही नहीं तो इस प्रकार उसे बकने का क्या हक है—वह क्रोध के मारे लाल-पीली हो गई—उसने चित्र क्यों बनाए हैं, माँजी आपके बेटे ने यह सब ठीक नहीं किया है ।

हाँ बेटी, मैं सब समझती हूँ । मैंने उसे बहुत समझाया, परन्तु न मालूम उसे क्या हो गया है कि मेरी भी बात नहीं मानता । सीता अति गम्भीर हो गई । एक ही बेटा था, वह भी ऐसा निकला । बेटी, मैं तुमसे उसकी तरफ से माफी माँगती हूँ । जो हकीकत थी, मैंने तुम्हें सुनाई । ऐसा बेटा होने से पहले मैं मर ही जाती तो अच्छा होता ।

माँजी, ऐसा मत कहिये, इसमें आप का क्या दोष । पता नहीं क्रोध में मैं आपको क्या-क्या कह गई । आप मुझे माफ कर दो । दोष

तो आपके बेटे का है और मैंने ऊटपटाँग बातें आप से कह डालीं । मैं अति शर्मिंदा हूँ । हेमा का गुस्सा उतर गया था ।

बेटी, यह तो तुम्हारा बड़प्पन है । माफी तो हमें माँगनी चाहिये । सीता दुखी हो गई ।

माँजी, देखिये न, जब मैं आपके बेटे को जानती ही नहीं फिर क्या यह ठीक है कि किसी पराई लड़की के छिप-छिप कर चित्र बनाएं । मुझें तो अब हँसी आ रही है । आपका बेटा क्या कहता है कि मैं उसे बचपन में जानती थी, परन्तु मुझे तो कुछ भी याद नहीं । अगर मान लिया जाय कि मैं उसे जानती थी तो भी क्या फर्क पड़ता है । फिर भी आपको और क्या-क्या उसने बताया था ? हाँ, आपने कहा कि उसने आपको एक कहानी बताई थी । वही कहानी मुझे बताइये ।

बेटी, अब कहानी बताने की कोई आवश्यकता नहीं । मैं अपने बेटे को समझाने की कोशिश करूँगी कि वह पागलपन छोड़ दे ।

नहीं माँजी, जब आप ने इतना सब बताया है तो कहानी भी बताइये, आपके बेटे से मुझे अब जरा भी गिला नहीं । सिर्फ आप उसे समझा दीजिये कि वह मेरे विषय में सोचना छोड़ दे । बाकी आप वह कहानी अवश्य बताइये, प्लीज······ ···· ।

हेमा के आग्रह करने पर सीता ने कहानी बतानी आरम्भ की । कहानी बताते समय सीता ने अमर का नाम नहीं लिया । कहानी में सिर्फ हेमा, राकेश और एक लड़के को लेकर उसने बताया कि किस प्रकार लड़का और हेमा बचपन में एक दूसरे से प्यार करते थे, और किस प्रकार राकेश ने लड़के से झगड़ा किया और अपने भाई राकेश और माँ-बाप के कहने पर हेमा ने लड़के से मिलना बन्द कर दिया । उसने अपने भाई का पक्ष लिया । इस रुसवाई से लड़के के दिल पर अति आघात पहुँचा, और उसने स्कूल बदल दिया । उसे हेमा से नफरत हो गई कि जिसे वह इतना चाहता था, अपनी जान से भी बढ़कर उसने ही अपने भाई का पक्ष लिया जबकि दोष भी राकेश का ही था, उसने उसकी बेइज्जती की । उसे बुरा-भला कह सकती थी, पर

ऐसा दुर्व्यवहार न करती। इस प्रकार प्यार नफरत में बदल गया। वह हेमा का चेहरा तक नहीं देखना चाहता था, परन्तु एक दिन हेमा के नौकर ने लड़के को बताया कि घर में अति झगड़ा हुआ, हेमा को मजबूर कर दिया गया कि वह लड़के से नहीं मिला करे, उससे बात तक नहीं करे। इतना कहकर कुछ वक्त के लिये सीता चुप हो गई।

माँजी फिर क्या हुआ? बड़े उतावलेपन से हेमा ने पूछा। हेमा कहानी सुनती जा रही थी कि वह उस लड़के को बचपन से तो क्या कई जन्मों से जानती है। वह बचपन में उससे कितना प्यार करती थी, परन्तु वह इतनी खुदगर्ज थी कि उसे भूल बैठी, परन्तु वह अभी तक उससे प्यार करता है। हेमा को खुद से नफरत होने लगी।

सीता कहे जा रही थी—जब लड़के को मालूम हुआ कि हेमा ने मजबूर होकर उससे मिलना बन्द किया है तो वह अति दुखी हुआ। उसे पछतावा होने लगा कि जल्दबाजी में उसने स्कूल क्यों बदल लिया, उसे खुद पर गुस्सा होने लगा। उसके दिल में छिपा हुआ प्यार फिर से जागृत हो उठा, परन्तु जो होना था, वह हो गया। वह हेमा से मिलना चाहता था, क्योंकि उसके बिना वह सूना-सूना महसूस करने लगा, उसे ऐसा लगा जैसे कि एक अति मूल्यवान चीज गुम हो गई हो, परन्तु यह सोचकर वह उससे नहीं मिला कि कहीं घर में उसे फिर डाँट न पड़े। इसलिये वह हेमा को छिप-छिप कर देखने लगा। उसके चित्र बनाने शुरू किये और आज तक भी उसे छिप-छिप कर देखता आ रहा है। उसके चित्रों से बातें करके मन बहलाता है।

सीता ने कहानी समाप्त कर दी और बोली, यही है उस पागल की कहानी। बेटी, बुरा मत मानना, मैं उसे समझा दूंगी। ऐसा कहकर जब सीता ने हेमा के चेहरे की ओर देखा तो देखती ही रह गई। हेमा की आँखों से अश्रुधारा बह चली थी।

यह क्या बेटी! तुम रो रही हो?

हेमा अब फूट-फूट कर रो पड़ी और सीता के गले से लिपट गई। माँ जी मुझे माफ कर दो। मैं बड़ी खुदगर्ज निकली। जिसे मैं बचपन में इतना चाहती थी उसे भूल बैठी, और वह देवता अभी तक मेरे खातिर खुद को मिटाने तक तैयार है। माँ जी आप अमर की माताजी हैं, मैं सब जान गई हूँ, हेमा अभी तक रोए जा रही थी।

बेटी, इसमें रोने की क्या बात है! अपने साड़ी के आंचल से उसके आँसुओं को पूछते हुए कहा। यह भी अच्छा हुआ तुम्हें अमर का नाम तो याद है।

माँजी, मैं उसे कैसे भूल सकती हूँ। बचपन में उससे बिछुड़ते समय जो दर्द मेरे दिल में हुआ था वह मुझे साफ मालूम है, परन्तु में कितनी नीच निकली जो बाद में उसे भूल बैठी। माँजी मुझे माफ कर दो। यह सच है कि मैं अमर को भूल गई थी, परन्तु उसके लिये मेरे दिल में अभी भी अपार स्नेह भरा पड़ा है।

बेटी, जो हुआ अच्छा ही हुआ। शायद इसमें भी कोई भलाई हो। इसमें तुम्हारा कोई दोष नहीं। ऐसा होना ही था। होनी को कौन मिटा सकता है।

माँजी, एक बात मेरे समझ में नहीं आती कि अब तक वह मुझ से क्यों नहीं मिला। अगर मिला होता तो ऐसी नौबत नहीं आती।

बेटी, यही सवाल मैंने भी उससे किया। परन्तु उसने समझा कि तुम बड़े घर की बेटी हो, कुछ बन जाने के बाद तुमसे मिलना चाहता था।

माँजी यह भी कोई बात है। पैसा पैसा होता है और प्यार प्यार। पैसे का प्यार से क्या मिलाप। पैसे से तो हर चीज खरीदी और बेची जा सकती है, परन्तु प्यार ऐसी बहुमूल्य चीज है जिसे किसी भी कीमत पर न तो खरीदी जा सकता है और न ही बेचा जा सकता है। क्या अमर मुझे इतना गिरा हुआ समझता था कि मैं पैसे की आड़ लेकर उसके प्यार को ठुकरा दूंगी। नहीं माँ, ऐसा नहीं— मुझे प्यार देकर तो उसने मुझ पर इतना अहसान किया है कि अगर

मैं अपने लाखों करोड़ों रुपये उसके ऊपर न्यौछावर कर दूँ फिर भी कुछ नहीं ।

खैर छोड़ो इन बातों को । जो हुआ उसे अब भूल जाओ बेटी । भगवान का यही शुक्र है कि बिछुड़े हुए फिर से मिल गए ।

अच्छा माँजी, अमर कहाँ गया हुआ है ? अमर को देखने के लिये उसका दिल मचल रहा था ।

बेटी, वह कॉलेज गया हुआ है और कल काश्मीर जा रहा है—कॉलेज के छात्रों के साथ ।

अमर भी काश्मीर जा रहा है, यह बहुत अच्छा हुआ । वह बहुत खुशहो रही थी । माँजी, मैं भी तो काश्मीर जा रही हूँ—कॉलेज की ओर से ।

अच्छा तो बेटी, तुम भी जा रही हो ।

मांजी, अब तो बड़ा मजा आएगा—बच्चों की तरह इठलाते हुए हेमा बोली ।

मांजी, अब मैं जाना चाहती हूँ । अमर से काश्मीर में ही मिलूंगी । वहां पर उसे बहुत छकाऊँगी । अब तक वह मेरा पीछा करता आ रहा है, कल से मैं उसका पीछा करूँगी ।

माँजी, मैं अमर को कैसे पहचानूँगी ? मैंने तो उसे कभी नहीं देखा । अब तो उसकी शक्ल-सूरत ही बदल गई होगी । कैसा लगता है मां जी, बहुत बड़ा हो गया होगा ।

बेटी, शक्ल सूरत बिलकुल नहीं बदली । जैसा बचपन में था, वैसा ही अब भी है । फर्क सिर्फ इतना है कि बड़ा हो गया है । तुम उसे देखते ही पहचान जाओगी । बचपन की मासूमीयत अब भी उसके चेहरे पर है । वही रंग, वही बातें, वही हरकतें—तुम शीघ्र ही उसे पहचान जाओगी । फिर भी मैं तुम्हें उसका एक फोटो देती हूँ । सीता अमर का एक फोटो ले आई ।

फोटो देखते ही हेमा पहचान गई । अमर की सूरत बिलकुल बचपन जैसी ही थी । हेमा ने फोटो अपने पर्स में रख लिया । माँजी,

यह एलबम भी आप मुझे दे दीजिए। अगर पूछे तो कह देना कि उसके कॉलेज की लड़की ले गई है। आप उन्हें कुछ भी नहीं बताइयेगा कि मैं यहाँ पर आई थी। वहाँ पर ही मैं उसे एलबम दूँगी। सीता के पाँवों को छूकर कहा—"माँ जी आज्ञा दीजिये, मैं जाऊँ।"

बेटी, बैठो तो सही, अब तो यह भी तुम्हारा अपना घर है। हम तो अब बूढ़े हो गये हैं। जल्दी आकर इस घर को रोशन कर दो-हेमा के सर पर प्यार से हाथ रखते हुए कहा।

हेमा शर्मा गई और बोली—माँजी, वो तो ठीक है फिर भी.......
अच्छा मैं जाऊँ।

सीता हेमा को कार तक छोड़ने गई। माँजी, आप अमर को कुछ भी नहीं बताइयेगा।

सीता मुस्करापड़ी।

६

मां, देखो न गाड़ी जाने में सिर्फ आधा घंटा रह गया है और मैं यहाँ पर ऐलबम ढूँढते-ढूढते थक गया हूँ। कमबख्त मिलता ही नहीं, पता नहीं मैंने कहाँ रख दिया है। तुम भी आओ और ढूँढने में मदद कराओ।

सीता अमर के कमरे में आ गई और बोली— क्या भूल गए? तुमने जो मंगाया था।

क्या कह रही हो माँ, मैं भला क्यों मंगाता—बौखलाते हुए बोला।

मुझे क्या मालूम एक लड़की आई थी और बोली कि वह तुम्हारे ही साथ पढ़ती है और तुमने उसे एलबम लाने को कहा है।

माँ, यह सब क्या है? मुझे तो कुछ भी समझ में नहीं आता। मैं किसी भी लड़की को नहीं जानता। कौन थी वह?

मुझे क्या मालूम।

ओह! मर गया-अपने सर पर हाथ रखते हुए कहा-अब मैं क्या करूँ। यह सब क्या हो गया। मां, तुम्हें तो मालूम है कि एलबम मेरे जीवन में कितना महत्त्व रखता है। अगर वह गुम हो गया तो मैं मर ही जाऊँगा। सच बताओ माँ, कहीं मज़ाक तो नहीं कर रही हो? मायूस होकर अमर ने पूछा। अगर कहीं छिपा कर रखा हो तो दे दो। मैं तुम्हारे हाथ जोड़ता हूँ। प्लीज, रहम करो।

मैं भला तुम से क्यों मज़ाक करने लगी। सच कह रही हूँ वह लड़की ले गई है।

माँ, ऐसी कौनसी कमबख्त आई थी? मुझे तो कुछ भी समझ में नहीं आता। कमबख्त बड़ी बेशर्म है। माँ, तुम्हें तो देना नहीं चाहिये

था तुम नहीं जानती उन्हें। हमारे कॉलेज की हर लड़की बेशर्म है। हमेशा किसी न किसी लड़के से मज़ाक करती रहती है। उनमें से किसी को भी नाक नहीं। एक दूसरे से बढ़कर शैतान हैं। अब मैं किस-किस को कहां-कहाँ ढूँढूंगा ? किससे पूछूंगा कि कौन ले गई है ? निर्लज्जें जानती भी होंगी तो बताएँगी नहीं।

अमर से ऐसी बातें सुनकर सीता के मुख से हँसी का फव्वारा छूट गया।

माँ, तुम्हें क्या है, बुरा तो हमारा ही हाल होगा—वह पागलों की तरह इधर-उधर देखने लगा।

सीता फिर खिलखिला कर हँस पड़ी और हँसते हुए बोली तुम फिर उनसे क्यो बातें करते हो। अगर कॉलेज में शान्त रहा करते तो किसी भी लड़की की इस प्रकार मजाक करने की हिम्मत नहीं होती। तुम भी मजाक करते होगे, इसलिये इन्होंने भी कर लिया।

माँ, तुम कॉलेज की लड़कियों को नहीं जानती। पक्की चुड़ैलें हैं। कमबख्तों से बात नहीं करो, उन्हें लिफ्ट नहीं दो फिर भी आकर अपने-आप बोलेंगी, बेशर्म जो ठहरीं।

दोनों माँ-बेटे आपस में इस प्रकार बोल ही रहे थे कि इतने में अमर के कॉलेज के छात्र आ गये।

अमर, वाह यार। तुमने तो कमाल ही कर दी। अब तक यहीं खड़े हो। (उनमें से किसी एक ने कहा)। गाड़ी के छूटने में सिर्फ पचीस ही मिनट हैं। प्रिंसीपल साहब तुम्हारी राह देख रहे हैं। उन्होंने ही हमें भेजा है, जल्दी चलो। टैक्सी लेकर आए हैं, बाहर खड़ी है। तुम्हारा सामान वगैरह कहाँ है। ठीक है, ये सब है ना—फर्श पर पड़े सामान की ओर इशारा करते हुए कहा। हम यह सब ले जाकर टैक्सी में रखते हैं। तुम शीघ्र ही आना—इस प्रकार सभी छात्रों ने फर्श पर पड़ा सामान उठाना शुरू किया, किसी ने पेटी उठाई, किसी ने बिस्तर।

अमर, जल्दी आना बाहर टैक्सी में हम तुम्हारी राह देख रहे हैं।

जाते समय उसी लड़के ने कहा।

माँ, अब क्या होगा ! छोटा सा मुँह करके अमर ने कहा।

अमर, तुम्हारा मुझ पर तो पूरा विश्वास है ना—सीता ने कहा।

माँ, तुम पर इतना विश्वास है कि जितना मुझे खुद पर भी नहीं है।

तो सुन, तू बिना किसी चिन्ता के जा। एलबम मैंने दिया है ना, ठीक है। मुझ पर भरोसा रख। मैं तुझे वापस लाकर दूँगी।

अच्छा माँ........। ऐसा कहकर उसने अपनी माँ के पाँव छूए और चला गया।

स्टेशन पर बहुत भीड़ थी। ऐसा लगता था जैसे कि मेला हो। शहर के कॉलेजों के कई छात्र-छात्राएँ आपस में हँस-हँस कर बातें कर रहे थे। काश्मीर देखने के लिए सब के दिलों में उमंग थी। उमंग भी क्यों न हो, इस जन्नत के नजारे को देखने के लिये सभी की तमन्ना होती है। हेमा प्लेटफार्म पर अपनी सहेलियों के साथ व्याकुल सी खड़ी इधर-उधर देख रही थी। उसकी नज़रें स्टेशन के चारों ओर घूमने लगीं। किसी को देखने के लिये और सभी उसकी सहेलियाँ आपस में हँस-हँस कर बातें कर रही थीं, परन्तु हेमा को उनकी बातें में जरा भी दिलचस्पी नहीं थी। उसका ध्यान तो किसी और में लगा हुआ था। अमर अब तक क्यों नहीं आया। हो सकता है अपने दोस्तों के साथ दूसरे प्लेटफार्म पर खड़ा हो। इस प्रकार सोच कर उसका मन उदास हो गया। वह अब अपनी सहेलियों से पीछा छुड़ाना चाहती थी। उनके साथ उसे ऊब होने लगी।

हेमा को इस प्रकार खोया हुआ देख कर वहाँ पर खड़ी एक लड़की ने पूछा—हेमा, तुम इस प्रकार खामोश क्यों खड़ी हो ? क्या किसी का इन्तजार है ?तब दूसरी लड़की ने चुटकी मारी—हेमा भला किसी का इन्तजार क्यों करने लगी ? इन्तजार क्यों नहीं कर सकती, क्या उसके सीने में दिल नहीं ? यह तीसरी लड़की ने हेमा को चिढ़ाने के

लिये कहा जिसे सुन कर और सभी लड़कियाँ खिलखिला कर हँस पड़ीं और एक साथ ही हँसती हुए बोलीं—दिल तो था, परन्तु शायद चोरी हो गया है और अब उस चोर को ढूँढने के लिये, इधर-उधर देख रही है। ऐसा कह कर एक बार फिर सभी हँस पड़ीं परन्तु हेमा को उनकी किसी भी बात से लगाव नहीं था। उसका पूरा ध्यान तो अमर की ओर था। वह अपनी सहेलियों से पीछा छुड़ाना चाहती थी, इसलिये कोई बहाना करके वहाँ से चली गई। ब्रिज पार करके वह दूसरे प्लेटफार्म पर आ गई और पागलों की तरह इधर-उधर देखने लगी। इस प्रकार देखने से एक-दो बार किसी से टकरा भी गई। अमर उसे कहीं भी दिखाई नहीं पड़ा। हेमा बेचैन हो गई। उसने स्टेशन के सभी प्लेटफार्म देख डाले। अमर अब तक क्यों नहीं आया। कहीं ऐसा तो नहीं कि उसने कश्मीर जाने का प्रोग्राम कैन्सिल कर दिया हो। इस प्रकार कई ख्याल उसके दिमाग में आने लगे, परन्तु वह किसी भी नतीजे पर नहीं पहुँची। अगर-अमर काश्मीर नहीं गया तो मैं भी नहीं जाऊँगी। ऐसा विचार करके वह जाकर वेटिंग हॉल में जा बैठी और अपने पर्स से अमर का फोटो निकाल कर देखने लगी। उसका जीवन-साथी कितना खूबसूरत है, वह अमर के तेजस्वी लम्बी आँखों को देखने लगी। अमर फोटो में मुस्करा रहा था हेमा को ऐसा लगा जैसे कि वह खुद ही उसके सामने खड़ा मुस्करा रहा हो। हेमा अमर की तस्वीर से बातें करने लगी—"मैं तुम्हारे दर्शन करने के लिये तड़प रही हूँ और तुम इतने निर्दयी हो कि आते ही नहीं। चोर कहीं के, चुपके-चुपके हमारा दिल कब का चुरा लिया, हमें मालूम तक नहीं····अमर इतना मत तड़पाओ। मैंने तुम्हें देखा तो नहीं है, परन्तु सच कहती हूँ सिर्फ बातों ही बातों में एक ही दिन में मैं तुम्हारे पीछे दीवानी हो गई हूँ और जब तुमसे मिलूँगी, मालूम नहीं तब मेरी क्या दशा होगी कहीं पागल न हो जाऊँ। ऐ ! सुनते हो या नहीं, मैं तुम्हारे वियोग में तड़प रही हूँ और तुम इस प्रकार मुस्करा रहे हो। प्लीज, आ जाओ ···पुजारिन अपने देवता के दर्शन करने के लिये कब से राह देख रही है।

हेमा ने फोटो अपने पर्स में डाल दिया और वेटिंग हॉल से बाहर आ गई।

हेमा ने अमर को छकाने का पूरा प्रोग्राम बना लिया था, परन्तु वह अभी तक नहीं आया। गाड़ी छूटने में सिर्फ पन्द्रह मिनट थे। उसकी नजरें बड़ी तेजी से इधर-उधर घूमने लगीं। इतने में एक टैक्सी आकर स्टेशन के बाहर रुक गई। टैक्सी की ओर देखकर वह सोचने लगी—कहीं इस में तो नहीं। वह टैक्सी की ओर अपनी उदास नजरों से एक टक देखने लगी, यह उम्मीद रख कर कि कहीं अमर भी इसमें न हो। एक-एक छात्र टैक्सी से बाहर आता गया और इसके साथ हेमा का चेहरा उतरता गया। अब एक लड़का जो आखिरी था अपने हाथ में एयर बैग लिये टैक्सी से बाहर आया, उसे देखते ही हेमा का दिल खुशी के मारे बल्लियों उछलने लगा। अमर को आज पहली ही बार हेमा ने देखा।

अमर टेरीकॉट की काली पेन्ट पर सफेद रंग की शर्ट पहिने हुए था जो कि उसके गोरे बदन पर बहुत जंच रही थी। उसके गोरे ललाट पर बिखरे हुए बालों की लटें हवा में लहरा रही थीं जिसे देखकर हेमा उस पर मुग्ध हो गई। उसे अमर उसकी कल्पना से भी कई गुना बढ़कर अच्छा लगा। अमर की खूबसूरती देखकर हेमा ने सोचा कि वह किसी भी बात में उससे कम नहीं।

हेमा को अब अपना प्रोग्राम याद आया जिसे वह घर से ही सोच कर आई थी। अमर को छकाने का उसने पूरा निश्चय कर लिया था। सोच कर वह आगे बढ़ी। सामने से अमर आ रहा था। वह साइड लेकर एक ओर खड़ी हो गई। अमर अपनी ही धुन में हाथ में एयर बैग लटकाए हुआ आ रहा था। वह हेमा से कुछ ही दूरी पर था कि हेमा ने भी अपने कदम जल्दी-जल्दी आगे बढ़ाने शुरू किये। जैसे ही अमर हेमा की बगल से गुजरा कि हेमा आगे को बढ़ी। उसने एक ही कदम आगे बढ़ाया था कि अमर जाकर हेमा से टकराया और हेमा गिरने जैसी ऐक्टिंग करके नीचे बैठ गई। इस

आकस्मिक टकराव से बेचारा अमर बौखला गया और जब उसने पीछे मुड़कर देखा कि उसका टकराव एक लड़की से हुआ है जो कि उसकी ओर पीठ करके नीचे जमीन पर अपने पैर को सहला रही है तो उसका जैसे दम ही निकल गया। वह अति घबरा उठा और उसके मुख से निकला—बाप रे! अब क्या होगा। वह धीरे-धीरे आगे बढ़ा, उस लड़की से क्षमा माँगने के लिये और जब उसके सामने आया तो चेहरे पर नज़र पड़ते ही उसके मुँह से निकला, 'तुम'।

क्या मतलब? क्या दिखाई नहीं देता? बनावटी क्रोध दिखाते हुए हेमा बोली।

वह बेचारा क्या जवाब देता। हेमा को देखकर अमर और भी चकरा गया। उसे विश्वास ही नहीं हो रहा था कि वह हेमा है।

अमर को अपनी ओर इस प्रकार घूरता हुआ देखकर हेमा बोली 'ऐ मिस्टर, इस प्रकार पागलों की तरह घूर-घूर कर क्या देख रहे हो?

जी कुछ नहीं, बौखलाते हुए वह बोला।

क्या मतलब, अपने पैर को सहलाते हुए वह बोली।

जी—

ये जी-जी क्या लगा रखी है। शर्म नहीं आती एक लड़की गिर गई है और आप हैं कि बस यूँ ही खड़े हैं। हमें उठने में मदद तो करिये। एक तो धक्का देकर गिरा दिया है दूसरा······। ऐसा कह कर हेमा ने अपना हाथ आगे बढ़ाया।

अमर सोचने लगा कि हेमा तो उसे जानती ही नहीं, वह तो उसकी नज़रों में एक अजनबी है। क्या वह इतनी फारवर्ड है कि मुझ से कहती है कि मैं उसे अपना हाथ देकर उठाऊँ। इसे हो क्या गया है! वह कई बार हेमा को देख चुका है। हर बार उसने उसे शान्त स्वभाव की पाया, परन्तु अब की हेमा को देख कर वह चकरा गया। पहिले की हेमा और आज की हेमा में उसे दिन-रात

जैसा अन्तर लगा। तो क्या वह इतनी माडर्न है कि किसी भी गैर के हाथ में स्वयं का हाथ देने में नहीं झिझकती।

अमर को इस प्रकार शान्त खड़ा देख कर हेमा समझ गई कि वह अवश्य उसे गलत ही समझ रहा है और वह स्वयं भी ऐसा ही चाहती थी ताकि उसे अच्छी तरह बोर कर सके। ऐ मिस्टर! क्यों, क्या हुआ? क्या कभी खूबसूरत लड़की नहीं देखी? इस प्रकार पागलों की तरह घूरे जा रहे हो। हमें अपना हाथ देकर उठाइयेना 'प्लीज'—वह अमर की ओर देखने लगी।

बिना कुछ बोले अमर ने स्वयं का हाथ आगे को बढ़ा दिया।

थैंक यू—हेमा उठ खड़ी हुई—वेरी गुड बॉय। इतना कह कर वह आगे बढ़ी। जाते हुए कभी-कभी मुड़कर अमर की ओर मुस्कराते हुए देख लेती और अमर मन ही मन में चिढ़ जाता, हेमा की ऐसी हरकतें देखकर।

प्लेटफार्म पर अपने मित्रों के साथ खड़ा वह इधर-उधर देख रहा था।

उसका पूरा ध्यान हेमा की ओर था। वह हेमा को ही ढूँढ रहा था। अचानक उसकी नज़रें हेमा से टकराईं जो कि एक ओर खड़ी कब से अमर की ओर एकटक देखे जा रही थी। अमर को हेमा का इस प्रकार एकटक देखना अच्छा नहीं लगा। क्रोध के मारे उसने अपना चेहरा पीछे की ओर मोड़ लिया और हेमा खिल-खिला कर हँस पड़ी। यह हँसी की आवाज अमर ने भी सुनी और मन ही मन वह क्रोधित हो उठा। हेमा की इन बेढंगी हरकतों पर वह बहुत जल रहा था।

हेमा सारी हरकतें बड़ी सतर्कता से कर रही थी ताकि और कोई देख न सके। वह सिर्फ अमर को ही दिखाना चाहती थी, परन्तु अमर समझ रहा था कि हेमा इतनी बेशर्म है कि वहाँ पर खड़े हुए लोगों का भी उसे ख्याल नहीं होता। अमर एक जगह पर जाकर

अकेला खड़ा हो गया, समय बिताने के लिये। हेमा तो यही चाहती थी और वह भी आगे बढ़ी। हेमा को अपनी ओर आता हुआ देख कर अमर बहुत ही बिगड़ गया और सोचा, आने दो, कमबख्त को मजा चखाता हूँ, निर्लज कहीं की। वह उसे खरी-खोटी सुनाने के लिये तैयार हो गया।

हैलो मिस्टर! आप अकेले ही यहाँ पर खड़े हैं? क्या किसी गर्ल फ्रैंड का इन्तजार हो रहा है? यूअर नेम प्लीज? यह सब हेमा एक ही साँस में कह गई और अमर की और देखकर मुस्करा पड़ी।

"अमर" (अमर ने तीखी नज़र हेमा पर डालते हुए उखड़े हुए शब्दों में नाम बता दिया।)

बहुत अच्छा नाम है—वह मचलते हुए बोली।

अमर ने सोचा कि उसका नाम सुनकर अवश्य हेमा पर कुछ प्रभाव पड़ेगा, परन्तु ऐसा कुछ भी उसने नहीं देखा। हेमा शायद उसे भूल चुकी है।

मेरा नाम हेमकला है, परन्तु सब प्यार में हेमा ही कहा करते हैं।

कहते होंगे।

क्या मतलब?

अजीब बला हो? क्या तुम्हें हर बात का मतलब बताना पड़ेगा? इतनी फारवर्ड हो और इतना भी नहीं समझती—यह सब अमर ने मुँह बिगाड़ते हुए कहा।

मैं तो सिर्फ इतना समझती हूँ कि आप जरूर हमसे नाराज हैं।

जी नहीं? मैं आपसे बहुत खुश हूँ—इन शब्दों पर जोर देते हुए कहा।

इतने में गाड़ी ने सीटी मारी और हेमा 'टाटा' कहती हुई जाने लगी।

पागल कहीं की।

अमर के मुँह से अपने बारे में 'पागल' शब्द सुनकर हेमा मन ही मन में मुस्करा पड़ी। "हाँ पागल तो हूँ, परन्तु तुम्हारे पीछे", ऐसा सोचकर वह शर्मा गई।

गाड़ी एक घंटे के पश्चात् अगले स्टेशन पर रुकी । अमर ने प्यास महसूस की । सामने ही पानीघर था । पानी पीने के लिये अमर डिब्बे से उतरा ।

वह पानी पी ही रहा था कि एक सुरीली आवाज ने उसे चौंका दिया । वह आवाज को पहचान गया । हेमा उससे कह रही थी—"मिस्टर अमर, पानी जल्दी पिजिये, हमें भी बड़ी जोरों की प्यास लगी है, प्यास के मारे गला सूखा जा रहा है' । बेचारे अमर ने थोड़ा सा ही पानी पिया और नल से पीछे हट गया । हेमा आगे बढ़ी और पानी पीने लगी । पानी पीते हुए उसने देख लिया कि अमर जा रहा है । पानी पीते ही हेमा ने आवाज दी, "मिस्टर अमर, ठहर जाइये । मैं पानी पीकर आती हूँ ।"

अमर के आगे बढ़ते हुए कदम उसी जगह रुक गये । वह मन ही मन में कुढ़ रहा था ।

हेमा ने पानी पी लिया और आगे बढ़ी जहाँ वह खड़ा था । अपनी बाँह से मुँह को पोंछते हुए अदा के साथ बोली, "मिस्टर अमर, क्या बात है जो आप हमसे खिचे-खिचे रहते हैं ? क्या हमसे कोई खता हो गई है ?

जी नहीं, खता तो हमसे हुई । पता नहीं कैसी मनहूस घड़ी थी जो आप से टकरा गए वरना ऐसी नौबत नहीं आती—यह सब अमर एक ही सांस में कह गया और अब अपने दोनों हाथों को मसल रहा था ।

छोड़िये भी ''''''आप कैसी बातें कर रहे हैं । क्या हमें बोर करने की कसम खा रखी है ।

अमर दिल ही दिल में जल रहा था । कमबख्त ने खुद तो मुझे बोर किया है और कह रही है मुझे । बेशर्म, निर्लज, जरा भी शर्म नहीं । मैं तुम्हें देवी समझता था, परन्तु निकली पूरी डाइन ।

आप इस प्रकार खड़े-खड़े क्या सोच रहे हैं । कहीं हमें तो नहीं

कोसा जा रहा है ? ऐसा कहकर हेमा खिलखिला कर हँस पड़ी और अमर झेंप गया। वह तो उसे कोस ही रहा था। अपनी झेंप मिटाते हुए बोला—यह आप क्या कह रही हैं, मैं भला क्यों आपको कोसने लगा जबकि मेरा आपसे कोई ताल्लुक नहीं। छोटी सी तो पहचान है।

अमर से ऐसा सुनकर वह जोरों से हँस पड़ी। अमर शान्त खड़ा उसकी ओर देखने लगा। हँसते हुए बोली—आप तो खामखाह हमसे खफा हो रहे हैं, हम तो आप से दोस्ती का हाथ बढ़ाना चाहते हैं और एक आप हैं कि हमें बोर करने पर तुले हुए हैं।

मुझसे दोस्ती और आपकी—एक झूठी हँसी हँसते हुए वह बोला—अजीब बात है। क्या आपको दोस्तों की कमी है सो मेरे गले ही पड़ना चाहती हैं।

वो तो सब ठीक है, परन्तु एक और दोस्त बढ़ाने में क्या हर्ज है। जितने ज्यादा दोस्त उतना और मजा। हमारी तो होबी ही है यार-दोस्त बढ़ाने की। और आप जैसा दोस्त तो हमें दीया लेकर ढूँढने पर भी नहीं मिलेगा।

अजीब लड़की हो, एक लड़की एक लड़के से कैसे दोस्ती कर सकती है ?

इसमें हर्ज ही क्या है ? दुनिया बहुत आगे बढ़ चुकी है और शायद आप अभी तक नींद में सोये हुए पुराने जमाने के ख्वाब देख रहे हैं। आप के ऐसे अनकल्चरल ख्याल सुनकर तो मुझे हँसी आ रही है। आप कॉलेज के स्टूडेंट हैं या किसी गुरुकुल काँगड़ी के विद्यार्थी। इतना कह कर हेमा फिर खिलखिला कर हँस पड़ी।

अमर तिलमिला उठा। हेमा की इस खिलखिलाहट मैं उसे जहर की बू आने लगी और बड़े रूखेपन से मुँह टेढ़ा करके कहा—मेम साहब, मैं जैसा भी हूँ अच्छा हूँ। आप सिर्फ इतना बताइये कि आप मेरा पीछा छोड़ेंगी भी या नहीं ?

अभी तक तो हमने ऐसा सोचा भी नहीं है—हेमा मुस्करा रही थी।

तो ठीक है मैं चला, नमस्ते !

अरे अरे······यह अचानक आपको क्या हो गया—अमर की बांह पकड़ते हुए हेमा बोली—आप बड़े ढीठ हैं। भला यह भी कोई बात होती है ! क्या किसी लड़की का इस प्रकार अपमान करना आप को शोभा देता है। (अमर मन ही मन में जल-भुन रहा था) आपको ऐसा नहीं करना चाहिये। मैं आप को अच्छी तरह जान गई हूँ। मन में तो आप मुझसे दोस्ती रखना चाहते हैं परन्तु ऊपर से मुझे दिखाने के लिये रौब जता रहे हैं।

मिस, आपको शायद गलतफहमी की बीमारी है—जोर देते हुए अमर बोला।

हेमा तो अमर को बोर करने पर तुली हुई थी। बोली—छोड़िये भी इन उल्टी-सीधी बातों को। मेरा तो मूड चाय पीने का हो रहा है।

तो फिर जाइये ना, यहाँ पर आप खड़ी-खड़ी क्यों बोर कर रही हैं। अगर गाड़ी छूट गई तो आप चाय नहीं पी सकेंगी।

आप रहते कहाँ हैं कि यह भी मालूम नहीं कि गाड़ी यहाँ पर एक घंटा रुकेगी और दो जनों को चाय पीने में सिर्फ पाँच ही मिनट लगेंगे।

दूसरा कौन है आप के साथ ! आश्चर्य प्रकट करते अमर बोला।

वैसे तो हम आपस में बहुत जने हैं, परन्तु इस वक्त सिर्फ आप ही हैं। ऐसा कहकर वह अमर के चेहरे की ओर देखने लगी।

क्या ······मैं ?

जी हाँ, आइये सामने के टी स्टाल पर चल कर चाय पीते हैं।

जी नहीं, मैं आपके साथ नहीं चल सकता।

वो भला क्यों ?

मेरी मर्जी। क्या जबरदस्ती है ?

आप भी लड़कियों की तरह बहुत नखरे करते हैं।

जी नहीं, मैं इतना निर्लज्ज नहीं।

कौन पागला कहता है कि आप निर्लज्ज हैं, आप तो एक आदर्श भारतीय विद्यार्थी हैं।

अमर दिल ही दिल में चिढ़ रहा था, परन्तु क्या करता। मजबूर होकर उसे हेमा के साथ जाना पड़ा।

दोनों चाय पी रहे थे। चाय पीते-पीते कभी-कभी अनायास ही दोनों की नजरें आपस में टकरा जातीं जिससे हेमा तो मुस्करा पड़ती, परन्तु अमर नज़रें दूसरी ओर फेर लेता। हेमा ये सारी हरकतें अपनी सहेलियों से छिप-छिपकर कर रही थी। अमर ने अपनी जेब से पैसे निकाले, परन्तु तब तक हेमा चाय वाले को पैसे दे चुकी थी। और दोनों आगे बढ़े। दोनों चुपचाप चल रहे थे।

मिस्टर अमर, अब तो हम दोनों आपस में काफी हिलमिल गए। अब आप को मुझसे दोस्ती रखने में कोई ऐतराज तो नहीं ?

जी नहीं, आप जैसी दोस्ती तो किस्मत वालों को ही हासिल होती होगी और शायद मैं भी उन में से एक हूँ। आप का साथ पाकर मुझे बेहद खुशी हुई है।

मिस्टर अमर, प्लीज आप कभी भी हमसे इस प्रकार उखड़ी-उखड़ी बातें नहीं किया करें। आप शायद दिल से खुश नहीं है।

जी नहीं, मैं बिल्कुल खुश हूँ। मैं भला आप से क्यों नाराज हूँगा। देखिये न मैं हँस रहा हूँ। ऐसा कहकर अमर ही ही ही .... करके झूठी हँसी हँसने लगा और हेमा के मुंह से हँसी छूट पड़ी। हँसते हुए बोली—तो ठीक है अब आप वायदा करिये कि आप हर स्टेशन पर हमसे मिलते रहेंगे।

अमर दिल ही दिल में खून का घूँट पी गया और बोला—जी हाँ, मैं वायदा करता हूँ कि हर स्टेशन पर आपसे अवश्य मिलता रहूँगा।

आप सच कह रहे हैं ?

जी हाँ, बिल्कुल सच बक रहा हूँ।

क्या·········

जी नहीं, फरमा रहा हूँ।

हेमा की हँसी फूट पड़ी और अमर फक हो गया! वह मन ही मन में हेमा को बुरा-भला कह रहा था।

ट्रेन छुक-छुक करती बड़ी तेज रफ्तार से आगे बढ़ रही थी और बाकी पेड़-पौधे, भयानक जंगल, पहाड़ आदि पीछे छूटते जा रहे थे। अंधेरा हो गया, आकाश में चाँद तारे जगमगाने लगे। पूरी रात हो गई। डिब्बे के सभी यात्री सो चुके थे, जाग रहा था सिर्फ अमर, वह सिगरेट पर सिगरेट फूँकता जा रहा था। वह सोच रहा था कि हेमा ऐसी हो सकती है यह उसने सपने में भी नहीं सोचा था। वह कब से हेमा से मिलने के लिये सोच रहा था, परन्तु हिम्मत ने साथ नहीं दिया और हेमा ऐसी है कि बिना किसी संकोच के उसने दोस्ती का हाथ बढ़ा दिया (अमर हेमा को गलत समझ रहा था)। पहले की हेमा और इस हेमा में उसे दिन-रात का अन्तर नजर आया। बचपन की हेमा और उसके एलबम वाली हेमा तो एक स्वच्छ स्वभाव की भारतीय नारी है, परन्तु इस हेमा में ऐसा कुछ भी नहीं। इसमें तो पश्चिमी सभ्यता कूट-कूट कर भरी पड़ी है। कितनी मुँहखुली है—सबसे बिना किसी संकोच से बात कर लेती है, सबके साथ हिलमिल सकती है। उसने मुझे दोस्त बनाया है। इस प्रकार और भी कई दोस्त उसने बनाए होंगे। ऐसे खयाल आते ही अमर दुखी हो उठा। हेमा का कैरेक्टर कैसा हो सकता है—वह पूरी तरह नहीं समझ सका। उसने महसूस किया कि अब हेमा उसे नहीं मिल सकेगी। वह किस तरह अपने बचपन का प्यार उसे याद दिलाए, हो सकता है उसे कुछ भी याद न हो। उसने तो अपनी माँ को बहुत कुछ कहा था कि वह हेमा को उसकी बहू बनाएगा, परन्तु अब माँ को क्या जवाब देगा। उफ·······एक ठंडी आह अमर के मुख से निकली। हो सकता है हेमा के विषय में ऐसी बातें सुनकर माँ

चिन्तित हो उठे। अमर बहुत दुखी हो उठा उसने अपने मुँह पर दोनों हाथ रख दिये।

अमर, तुम इतने कमजोर हो सकते हो, मैंने कल्पना भी नहीं की थी। दिल ने उसे आवाज दी—तुमने तो अपनी माँ को बहुत से ख्वाब दिखाए थे। क्या वे सब झूठे हो जायेंगे ? ऐसी बातें सुनकर माँ घबरा जाएगी। खुद के लिये न सही अपनी माँ के खातिर कैसे भी हो सके हर हालत में तुम्हें हेमा को पाना होगा, हेमा अभी तक नासमझ है। बड़े घरों की लड़कियाँ तो चंचल हुआ ही करती हैं। जब तुम हेमा को इतना जानते ही नहीं तो उसके विपक्ष में इस प्रकार कैसे सोच सकते हो। हेमा ने तो तुम्हारे लिये रास्ता साफ कर दिया है। पहले तो तुम हेमा से बात तक करने में डरते थे, काँपते थे और इसलिये उससे मिल नहीं सके, परन्तु अब तो हेमा ने स्वयं तुम्हारे आगे दोस्ती का हाथ बढ़ाया है।

मैं क्या करूँ ? अमर ने अपनी दिल से कहा—हेमा की बेढंगी हरकतें देखकर मेरा साहस टूट गया है। मुझे क्या करना चाहिये, मैं कुछ भी समझ नहीं सकता।

तुम अपने आप समझ जाओगे। हिम्मत से काम लो। बचपन से लेकर आज तक तुमने हेमा का नाम लेकर दिन गुजारे हैं तो क्या अब खुद को मझधार में ही छोड़ दोगे—एक कायर साहिल की तरह। क्यों खुद को धोखा देकर जलती भट्टी में कूदना चाहते हो। घबराओ, नहीं सब ठीक हो जाएगा—अगर हेमा तुम्हारी हो गई। अगर यह सुनहरा अवसर तुमने गंवा दिया तो जिन्दगी भर तड़पते रहोगे जलते रहोगे, तुम्हारी जिन्दगी में खामोश आंसूओं के सिवाय और कुछ भी नहीं होगा। बताओ, क्या तुम हेमा को प्यार नहीं करते ? जवाब दो ...... ।

करता हूँ, बहुत करता हूँ। अपनी आत्मा से कौन प्यार नहीं करता।

फिर क्यों खुद को बली चढ़ाने पर तुले हुए हो ?

ऐसे खयालात आते-आते अमर का सर दर्द के मारे फटने लगा। उसने सोने की कोशिश की और शीघ्र ही निद्रा देवी ने उसे अपने आगोश में ले लिया। अमर खर्राटे भरने लगा।

अमर क्या रात को घोड़े बेचकर सोए थे ? कितनी आवाजें मारी पर तेरे कान पर जूँ तक नहीं रेंगी। अपनी आँखों को मलते हुए अमर बोला—यार रात को सर में जोरों का दर्द था, बड़ी देर से सोया। अच्छा बताओ कितना समय हुआ ? जम्हाई लेते हुए अमर ने पूछा।

नौ बजे हैं।

नौ बज गये······बाप रे ··········

अमर हड़बड़ा कर उठ खड़ा हुआ।

प्रिंसीपल साहब तुम्हारे बारे में पूछ रहे थे।

फिर तुमने क्या जवाब दिया ? सर को खुजलाते हुए अमर ने कहा।

मैंने कहा कि सोया पड़ा है और तब मुझे तुम्हें उठाने के लिये भेजा। और कुछ तो नहीं बोले-तौलिये को अपने कंधे पर रखते हुए वह बोला।

नहीं।

ठीक है—ऐसा कह कर वह गाड़ी से नीचे उतर आया। मुँह-हाथ धोने के लिये अमर प्लेटफार्म पर खड़ा हो गया। उसकी नजरें हेमा को ढूंढने के लिये इधर-उधर घूमने लगी। अचानक उसकी नजर एक स्थान पर रुक गई जहाँ पर हेमा अपनी सहेलियों के साथ खड़ी चाय पी रही थी।

दोनों की नजरें टकराईं। अमर ने मुस्करा कर विश किया। अमर को इस प्रकार मुस्कराता हुआ देखकर हेमा समझ गई कि आज अमर अच्छे मूड में है। अमर सीधा एक नल के पास आया और मुँह-हाथ धोने लगा। हेमा अपनी सहेलियों से पीछा छुड़ाकर सीधी नल के पास आ गई जहाँ अमर मुँह-हाथ धो रहा था।

गुडमोर्निंग !

वेरी गुडमर्निंग–अमर ने मुस्करा कर उत्तर दिया, कैसी हैं आप ?

अच्छी हूँ, आप कैसे हैं ?

रात को तो ठीक नहीं था, परन्तु अब बिल्कुल ठीक हूँ—मुस्कराते हुए बोला ।

क्या हुआ था आप को ? अब सहानुभूति दिखाते हुए हेमा ने पूछा ।

जी कुछ नहीं, यूँ ही सर में थोड़ा सा दर्द था ।

मैं समझती हूँ, आप को कोई परेशानी है जिसके लिये ज्यादा सोचने के कारण सर में दर्द पड़ा होगा । क्या आप हमें बता सकते हैं कि कौनसी परेशानी है आपको ?

आप ठीक कह रही हैं मिस हेमा, वास्तव में मैं परेशान ही था, परन्तु अब नहीं हूँ, और न ही कभी होऊँगा ।

बहुत अच्छा हुआ, आपकी परेशानी तो दूर हो गई ।

जी ऐसा नहीं कि परेशानी अपने आप दूर हो गई । मैंने उसे जबरदस्ती उठाकर दूर फैंक दिया, कमबख्त खामखाह मुझे बोर कर रही थी । खैर, छोड़िये इन बातों को, चलिये एक-एक कप चाय का हो जाए ।

नो मिस्टर अमर, मैं चाय नहीं पी सकती, आपने तो देखा ही था कि मैं अभी अपनी सहेलियों के साथ चाय पी रही थी—हेमा ने यह सब यूँ ही इन्कार कर दिया ।

तो क्या हुआ, सफर में तो चाय खूब ही पीनी चाहिये, थकावट जो दूर होती है, चलिये । ऐसा कहकर अमर ने हेमा का हाथ थाम लिया और आगे बढ़ा ।

यह आप क्या कर रहे हैं ! अगर किसी ने देख लिया तो, वैसे तो यह मामूली बात है, परन्तु फिर भी ···

आइ एम सोरी (अमर कुछ गम्भीर हो गया वह सोचने लगा कि यह हरकत हेमा को मामूली बात लगती है !)

आप शायद फिर परेशान हो गये हैं, क्या बात है कि आप एकदम परेशान हो उठते हैं ।

जी नहीं, ऐसा कुछ भी नहीं—अपनी झेंप मिटाते हुए बोला—चलिये ।

हेमा समझ गई कि अमर रात को सोया नहीं है । सारी रात उसके विषय में ही सोचता रहा और रात ही रात में मुझसे रिश्ता बढ़ाने का फैसला कर लिया है जिसके कारण आज अच्छे मूड में है । उसने अमर की बातों से ही अन्दाजा लगा लिया कि अब वह उसकी हरकतों से शायद परेशान नहीं होगा । उसने महसूस किया कि अमर उसे कितना चाहता है, हर हालत में मुझे पाने के लिये तैयार है ।

अमर को छकाने में उसे बहुत आनन्द आ रहा था । दोनों चाय पी रहे थे । कभी-कभी कनखियों से एक दूसरे को देख लेते और दोनों के मुख पर मुस्कान आ जाती ।

चाय पीते हुए अमर सोच रहा था कि हेमा को कैसे मालूम हो जाता है कि मैं परेशान हूँ या दुखी हूँ । कम्बखत है बड़ी होशियार, किसी के मन का सही अन्दाजा कैसे लगा लेती है ।

इतने में गाड़ी ने सीटी मारी और दोनों ने जल्दी-जल्दी चाय समाप्त की ! चाय वाले को पैसे अमर ने दिये । आइये अब चलें गाड़ी छूटने वाली है । अब अगले स्टेशन पर मिलेंगे—ऐसा कह कर अमर मुस्करा पड़ा और उत्तर में हेमा भी मुस्कराई । दोनों जाकर अपने-अपने डिब्बे में बैठ गये ।

इस प्रकार दोनों हर अगले स्टेशन पर एक दूसरे से मिलते रहे । अमर के साथ सफर करने में हेमा ने अति आनन्द महसूस किया । उसका अमर में मोह हो गया था । वह चाहती कि गाड़ी हर पाँच मिनट के बाद रुक जाए ताकि अमर से मिल सके । काश ! दोनों साथ-साथ एक ही डिब्बे में बैठे होते और आपस में मीठी-मीठी बातें

करते । अमर को तंग करने में उसे बहुत मजा आ रहा था। जब भी वह किसी स्टेशन पर अमर से मिलती तो अवश्य ही उल्टी सीधी बातें करती ताकि अमर को गुस्सा लगे, परन्तु अब ऐसा कुछ भी नहीं हुआ। वह अमर को तंग करने के लिये बहुत सी हरकतें करती, परन्तु अमर पर जरा भी प्रभाव नहीं पड़ता। वह अब पक्का ढीठ बन गया था। हेमा की किसी भी बात का बुरा नहीं मानता बल्कि खिलखिला कर हँस पड़ता। हेमा को पाने के लिये उसमें निश्चय कर लिया था। अब हेमा के साथ अमर को भी आनन्द आ रहा था। जब हेमा मेरे प्यार में गिरफ्तार हो जाएगी तो अवश्य ही अपने आप सारी हरकतें भूल जाएगी। जब भी वह किसी स्टेशन पर हेमा से मिलता तो उससे बहुत अच्छे ढंग से पेश आता। वह सोचने सगा कि काश्मीर से लौटते समय उसकी सबसे बड़ी विजय होगी—हेमा का प्यार। वह हेमा को ले जाकर माँ के पास खड़ी कर देगा और कहेगा—"माँ, लो आ गई तुम्हारी बहू, अब इसे सम्भालो।"

———

७

अमर अपने कमरे में बैठा लकड़ी जला कर हाथ सेक रहा था। बाहर कड़ाके की सर्दी पड़ रही थी। उसने कमरे की सारी खिड़कियाँ और किवाड़ बन्द करके आग जला ली जिससे कमरा काफी गरम हो चुका था। वह हेमा के विषय में ही सोच रहा था। काश्मीर में आए उन्हें पूरा एक सप्ताह हो गया है। इन सातों दिनों में हेमा उसके काफी करीब आ चुकी है। पहले दोनों एक दूसरे को 'आप' कहा करते थे, परन्तु अब 'तुम' कह कर बातें करते हैं। कॉलेज की ओर से अब तक जितनी भी कान्टेस्ट हुईं दोनों ने मिलकर एक दूसरे का बहुत साथ दिया। करीब-करीब दोनों प्रथम रहे। उसने पैकेट से एक सिगरेट निकाली और उसे होठों में रख कर जलती हुई आग से एक कागज के टुकड़े द्वारा जला दिया। वह टाँगें फैला कर ईजी चेयर पर लेट गया और सिगरेट पीने लगा। सिगरेट का एक लम्बा सा कश लेकर धुँए को धीरे-धीरे छोड़ने लगा। मुख से निकलता धुँआ छल्ले बनाता छत की ओर उड़ने लगा और अमर उन गोल-गोल छल्लों को एकटक देख रहा था। उन उड़ते हुए छल्लों को देखते-देखते कल का दृश्य उसकी आँखों के सामने आ गया। "उस दिन घूम-घाम कर दोनों थके-टूटे एक बड़ी शानदार होटल में पहुँचे। अमर ने हेमा की परीक्षा लेनी चाही। उसने समझा कि हेमा है तो फार्वर्ड लड़की, फिर क्यों न वाइन (शराब) आफर करके परखा जाए। दोनों जाकर एक खाली टेबुल के आगे पड़ी दो कुर्सियों पर आमने सामने बैठ गए।

साहब, आपके के लिये ? एक बैरे ने आकर बड़े अदब के साथ अमर से पूछा।

दो सिंगल पेग स्कॉच

बैरा आर्डर लेकर चला गया।

अमर ने अनजान बनते एक सिगरेट जलाई और बोला—कितनी सर्दी है। इतना कहकर उसने हेमा की ओर देखा जिसकी आँखों से क्रोध के मारे जैसे शोले बरस रहे थे। हेमा उठ खड़ी हुई और बोली—मैं जा रही हूँ।

क्यों·······यह अचानक तुम्हें क्या हो गया ?

मुझे मालूम न था कि तुम ऐसे हो सकते हो।

मैं कुछ समझा नहीं–अनजान बनते अमर बोला।

आप समझेंगे भी कैसे ! आर्डर जो आपने दिया है। अमर, मैं सोच भी नहीं सकती थी कि तुम ऐसी चीजें सेवन करते हो। सच कहते हैं, अच्छाई या बुराई किसी के चेहरे पर नहीं लिखी होती।

अच्छा तो रानी साहिबा की आँखों से अँगारे इसी लिये बरस रहे हैं। मैंने तो तुम्हारे ही लिये इसका आर्डर दिया था। सोचा था तुम हद से ज्यादा माडर्न हो इसलिये हो सकता है शायद इन चीज़ों का सेवन करती हो, वरना मुझे तो इन चीज़ों से बेहद घिन है। आज तक इस चीज़ को छूना तो क्या इसके बारे में कभी खयाल तक मुझे नहीं आया कि दुनिया में ये चीज़े भी हैं। आर्डर तो एक ही पेग का देना चाहता था—सिर्फ तुम्हारे लिये, परन्तु फिर खयाल आया कि कहीं तुम्हें बुरा न लगे इसलिये मजबूर होकर दो पैगों का आर्डर दिया। इतना कहकर अमर चुप हो गया और जब हेमा की ओर देखा तो देखता ही रह गया, उसकी आँखों से आँसू बह रहे थे।

हेमा, तुम रो रही हो !

अमर, यह सब कहकर तुमने मेरे दिल को छलनी कर दिया है। कितना दुख तुमने मुझे पहुँचाया है। हेमा की आँखों से अभी तक आँसू बह रहे थे जिन्हें वह अपने रुमाल से पोंछती जा रही थी। तुम मेरे बारे में इतने गंदे विचार रखते हो····तुम्हें ऐसा नहीं कहना चाहिये। तुम समझते हो कि मैं इतनी गिरी हुई लड़की हूँ। नहीं अमर

ऐसा नहीं, तुमने मुझे पहचानने में भूल की है—हेमा अति गम्भीर होकर कह रही थी—अगर मैं ऐसी लड़की होती तो यहाँ पर मेरे कॉलेज के और भी कई लड़के हैं। मैं उन सबके साथ घूम फिर सकती थी, परन्तु ऐसा नहीं है। तुम तो खुद जानते हो कि मैं हमेशा तुम्हारे संग ही रहा करती हूँ, सिर्फ इसलिये कि तुम मुझे एक शरीफ लड़के नज़र आते हो। तुम समझते हो कि मैं तुम्हारे साथ इतना हिल-मिल गई तो दूसरों के साथ भी ऐसे ही रहूँगी, परन्तु ऐसा नहीं, तुम्हारे साथ दोस्ती तो एक इत्तफाक था।

आई एम सोरी हेमा, प्लीज़, माफ कर दो। मैं अपनी बातों पर अति शर्मिन्दा हूँ।

इतने में बैरा स्कॉच के दो पेग लेकर आ गया।

तुम इन्हें वापस लेकर जाओ और इनके बदले दो कॉफी के कप ले आओ।

अच्छा साहब, बैरा चला गया।

अमर ने मुस्करा कर हेमा की ओर देखा और हेमा भी मुस्करा पड़ी।

बैठ जाओ हेमा।

हेमा मुस्कराती फिर कुर्सी पर बैठ गई।

बैरा काफी के कप ले आया और टेबुल पर रखकर चला गया।

एक कप अमर ने हेमा की तरफ सरका दिया और एक स्वयं ने लिया। दोनों मुस्कराते हुए काफी की चुस्कियाँ लेने लगे।

अमर की सिगरेट खत्म हो गई और इसके साथ उसके खयाल भी टूट गये। कल वाली घटना से उसने महसूस किया कि हेमा एक पहेली है जिसे समझना बड़ा मुश्किल है, परन्तु फिर भी दिल की है अच्छी। सिर्फ उसमें बचपन है। कल की घटना से वह बहुत खुश था।

खट-खट''''दरवाजे पर कोई बाहर धीरे से हाथ मार रहा था, अमर ने समझा होटल का बैरा ही होगा। कुर्सी से उठकर आगे बढ़ा

और दरवाजा खोल दिया, 'तुम·····'दरवाजा खुलते ही जब उसकी नजर आगन्तुक पर पड़ी तो वह देखता ही रह गया। तुम यहाँ पर कैसे आ गईं !

क्या मुझे आना नहीं चाहिये था।

नहीं नहीं, ऐसा नहीं मुझे तो बहुत खुशी हो रही है, परन्तु आँखों पर विश्वास नहीं आया कि तुम हमारे गरीबखाने पर पधार सकती हो। समझ में ही नहीं आता कि यह ख्वाब है या हकीकत।

क्यों अमर, दरवाजे से ही वापस भेजना चाहते हो ?

ओ हो—नहीं मैं तो बातों ही बातों में भूल गया। आइये अन्दर आइये, अमर आगन्तुक को अन्दर ले आया। देखिये तुम को देखकर जैसे होश-हवास ही खो गए। जिस बात की कल्पना तक न हो, अगर अचानक वह हो जाए तो चकरा जाना स्वाभाविक ही है। बैठिये, एक कुर्सी की और इशारा करते अमर बोला।

थैंक यू (बैठते हुए कहा)

अमर भी कुर्सी खींच कर सामने बैठ गया। कहिये आपकी क्या सेवा करें। कॉफी पीएगी या चाय।

दोनों में से एक भी नहीं।

ऐसे कैसे हो सकता है, कुछ तो तुम्हें पीना ही होगा। अगर तुम चाहो तो काफी मँगवा लूँ।

जी नहीं।

मैं समझता हूँ कि तुम शर्म कर रही हो।

अमर से ऐसा सुनकर हेमा खिलखिला कर हँस पड़ी और हँसते हुए बोली—अमर मैं भला तुमसे शर्म क्यों करने लगी। तुम्हारे साथ रहते इतने दिन हो गए और इन सभी दिनों में मैंने हमेशा तुम्हारे साथ खुल कर बातें की हैं, किसी भी बात में मैंने हिचक नहीं की।

तो फिर बताइये न, क्या मँगाऊँ ?

दो सिंगल पेग स्कॉच के।

हेमा के मुख से ऐसा सुनकर अमर जोरों से खिलखिला कर हँसने लगा और बोला - क्यों हेमा मुझे शरमिन्दा करने पर तुली हुई हो। हेमा भी हँस रही थी।

अमर ने घंटी बजाकर बैरे को बुलवाया और दो कप कॉफी लाने को कहा। बैरा आर्डर लेकर चला गया।

कहिये, आज का क्या प्रोग्राम है ?

अमर, कल सभी कॉलेजों की छात्राओं का स्केटिंग कन्टेस्ट है और मैंने उसमें भाग लेने के लिये सोच लिया है।

तो क्या तुम स्केटिग जानती हो ?

जानती तो नहीं हूँ, परन्तु मुझे कहा गया है कि मैं भी भाग लूँ।

क्या बात करती हो। जब तुम जानती ही नहीं तो फिर क्यों अपने ऊपर लोग हँसाती हो। तुम भाग मत लेना, नाम कटवा लो।

क्यों कटवा लूँ ? बच्चों की तरह जिद करते हुए उसने कहा।

हेमा, स्केटिंग करना कोई मामूली खेल नहीं। इसमें जान का भी खतरा रहता है।

मैं तो अवश्य भाग लूँगी और अगर तुमने साथ दिया तो अवश्य प्रथम भी रहूँगी।

इतने में बैरा टेबल पर काफी रख कर चला गया।

कॉफी की चुस्की लेते हुए अमर बोला—मैं भला तुम्हारे लिये क्या कर सकता हूँ ?

मुझे तुम्हारी मदद की जरूरत है।

तो फिर बताइये, मुझे क्या करना है ? हम तो आपके एक ही इशारे पर मर-मिटने के लिये हमेशा तत्पर रहते हैं। फरमाइये क्या हुक्म है ?

अमर....कैसे गंदे शब्दों का प्रयोग करते हो। मरें तुम्हारे दुश्मन—मुँह बिगाड़ते हेमा बोली। कसम खाओ कि आइन्दा कभी भी ऐसा नहीं कहोगे। मुझे जो जी में आए कह डालो, पर खुद के लिये नहीं।

अच्छा बाबा, कसम खाता हूँ कि ऐसा कभी भी नहीं कहूँगा। हेमा मुस्करा पड़ी और बोली—तुम्हें एक काम करना होगा।

फरमाइये, बन्दा हाजिर है—अपने सर को आगे की ओर झुकाते हुए कहा।

मैं चाहती हूँ कि हम दोनों इसी समय चल कर स्केटिंग की प्रेक्टिस करें।

बस, इतनी छोटी सी बात के लिये तुम घबरा रही हो। यह भी कोई मदद है। अगर चाहो तो आसमान से चाँद ले आऊँ-ऐसा कहकर हाथ ऊपर करके आकाश की ओर देखा।

अच्छा-अच्छा, रहने दो। खुद की बढ़ाई तो खूब करना जानते हो। चाँद तो तुम रात को लाना, अभी तो····। बीच में ही अमर बोल पड़ा अरे मैं भी कैसा बुद्धू हूँ। चाँद तो मेरे सामने ही खड़ा है, इस चाँद से रात के चाँद का क्या मुकाबला ! अपने बारे में अमर के मुख से प्रशंसा सुनकर हेमा मन ही मन में प्रसन्न हो रही थी और फिर वह शर्मा गई। लजाते हुए बोली—आप बड़े वो हैं।

वो हैं ? क्या मतलब ? आश्चर्य से आँखें फाड़ते हुए बोला।

अजीब लड़के हो। क्या तुम्हें हर बात का मतलब बताना पड़ेगा ? ऐसा कह कर हेमा हँस पड़ी और अमर के मुख से भी हँसी का फव्वारा छूठ पड़ा।

दोनों एक दूसरे का हाथ थामे बर्फ पर चल रहे थे। चढ़ाई चढ़ने से हेमा कभी-कभी फिसल पड़ती और अमर उसे थाम लेता। दोनों प्रसन्न थे—एक दूसरे का साथ पाकर। एक दूसरे का हाथ इस प्रकार थामे हुए थे कि जैसे कहीं कोई भाग न जाए। इस तरह हाथ थाम कर चलने से दोनों ने एक अजीब सा आनन्द महसूस किया। वे एक दूसरे से कुछ कहना चाहते थे पर दिल की बात दिल में ही रह जाती। अमर अपनी बात सोच रहा था कि आगे उसे कौन सा कदम उठाना पड़ेगा और हेमा अपना प्रोग्राम सोच रही थी कि अब उसे

क्या करना होगा। इस प्रकार दोनों अपने-अपने खयाल में उलझे बर्फ पर आगे बढ़ रहे थे।

अमर को मज़ाक सूझी, उसने जोर से हेमा का हाथ दबा दिया। अचानक दर्द होने के कारण उसके मुख से चीख निकल गई। अमर हँस पड़ा और अनजान बनते हुए पूछा—क्या हुआ ? यहाँ पर तो कोई ऐसी चीज़ नहीं जिसे देख कर घबरा गई।

हेमा ने अपना हाथ अमर के हाथ से छुड़ा लिया और हाथ को सहलाते हुए बोली—शरीर कहीं के, मेरे हाथ को इतनी जोर से क्यों दबाया ?

हेमा, बड़ी बुजदिल हो, थोड़ा सा दर्द भी नहीं सह सकतीं।

अमर, बुजदिली की बात मत करो वरना ऐसा दर्द दूंगी कि बस तड़पते रहोगे।

अच्छा तो तुम इतनी बहादुर हो ! वो भला कैसे ?

जाओ हम तुम से बात नहीं करते।

अमर ने फिर हेमा का हाथ पकड़ लिया। हेमा छुड़ाने की कोशिश करने लगी। अमर मेरा हाथ छोड़ दो वरना.........

वरना क्या कर लोगी ? बाँह को जकड़ते हुए वह बोला।

छोड़िये ना, वरना मैं रो पड़ूंगी।

ना बाबा ना, हमें रोना-धोना कतई पसन्द नहीं।

फिर आप को क्या पसन्द है ? मचलते हुए बोली।

अमर हेमा का हाथ छोड़ चुका था। आसमान की तरफ देखते हुए बोला हमें पसन्द है धरती का चाँद जो हमेशा हमारे सामने बैठा मुस्कराता रहे और हम चकोर की तरह उसे देखते-देखते सुध-बुध खो जाएँ, बाकी रोना-धोना हमें पसन्द नहीं। अगर रोने की इतनी चाह है तो अपनी ससुराल में गला फाड़-फाड़ कर चिल्ला-चिल्ला कर रोना।

यू नॉटी.........ऐसा कहकर हेमा बर्फ पर दौड़ पड़ी।

अमर हँसता जा रहा था। हँसी के मारे वह लोटपोट हो रहा था। उसकी हँसी तब बन्द हुई जब हेमा ने बर्फ का एक बड़ा सा

गेंद फेंक कर उसके सर पर दे मारा । हेमा धड़ाधड़ बर्फ के गेंद अमर की ओर फेंकती जा रही थी और यह अपने दोनों हाथों से उन आते हुए बर्फ के गोलों को रोकने का प्रयत्न करने लगा ।

हेमा, यह क्या कर रही हो ! प्लीज बन्द करो। परन्तु हेमा ने जैसे सुना ही नहीं । वह तो धड़ाधड़ बर्फ फेंकती जा रही थी । उसे मालूम ही नहीं हुआ कि अमर वहाँ से अब हट चुका है। अमर ने दौड़ते हुए आकर पीछे से हेमा को पकड़ लिया । अचानक किसी की पकड़ से डर के मारे हेमा के मुख से चीख निकल गई । उसने समझा कि अमर तो सामने है फिर यह दूसरा पीछे कौन हो सकता है ।

हेमा·······क्या पागल हो गई हो, चीखती क्यों हो, इतनी डरपोक हो तुम ! हेमा वाकई में डर गई थी । उसके हाथ-पाँव ठंडे पड़ गये । शिथिल हो कर वह अमर की बाँहों में झूल पड़ी—इसका खयाल भी डर के मारे उसे नहीं आया । उसे मालूम तब पड़ा जब उसने अपनी आँखें खोलीं और खुद को अमर की बाहों में पाया जो कि उसे एक-टक घूर-घूर कर देख रहा था । हेमा शरमा गई और शीघ्र ही हट कर अमर से अलग हो गई और अमर की ओर देखने लगी ।

हेमा, यह सब मैंने जान बूझकर नहीं किया । डर के मारे तुम गिरने वाली थीं कि मुझे ऐसा करना पड़ा ।

परन्तु हेमा तो जैसे स्वप्न-लोक में पहुँच चुकी थी । अमर की बाँहों में उसने एक अजीब आनन्द महसूस किया । किस प्रकार अमर उसे अपने बाहों में लिये हुए था···उसके गरम-गरम साँसों की महक में कितना सुख था । काश ! अमर अपनी बाँहों का सहारा जिन्दगी की आखिरी मंजिल तक दे सके ।

ऐसे विचार आते ही उसने एक ठण्डी आह भरी और जब उसकी नजार सामने पड़ी तो वह झेंप गई । अमर बर्फ के एक टीले पर बैठा घूर-घूर कर उसे देखे जा रहा था । इस प्रकार अमर को अपनी ओर घूरता हुआ देख कर बोली—ये आप घूर-घूर कर मेरी ओर क्या देख रहे हैं ?

कुछ नहीं, बस यूं ही खुदा की कारीगरी देख रहा था कि खुदा ने एक इन्सान को स्वर्ग की परी का रूप कैसे दे दिया जो कि भगवान के चाँद से किसी भी बात में कम नहीं है।

धत्! हेमा शरमा गई।

हेमा, सोचा करता हूँ कि तुम्हारा साथ, हमेशा रहेगा या काश्मीर तक ही सीमित है। अमर की बातें हेमा को बहुत अच्छी लग रही थीं, परन्तु फिर भी रौब दिखाने के लिये बोली, "अमर साहब आप बहक रहे हैं, चलिये चलें।"

अरे कहाँ चलोगी हमने अभी तक स्केटिंग की प्रेक्टिस ही कहां की है।

मैंने प्रेक्टिस करने का इरादा बदल लिया है।

फिर कल का क्या होगा तुम्हारा ?

कल को कौन पूछता है, देखा जाएगा।

जैसी तुम्हारी इच्छा, हम तो आप के हर इशारे पर चलने को तयार हैं, चलिये।

दोनों साथ-साथ चल रहे थे परन्तु इस तरह दूर हट-हट कर चलना अमर को अच्छा नहीं लगा। वह चाहता था कि हेमा का हाथ उसके हाथ में हो। ऐसा कहने के लिये बहुत सोचा, परन्तु दिल की बात जबान पर आकर रुक जाती। हेमा भी यही चाहती थी कि काश अमर उसका हाथ अपने हाथ में ले ले, परन्तु एक औरत के नाते वह कुछ भी नहीं कर सकती थी। हेमा मन ही मन में अमर को बुरा-भला कहने लगी—डरपोक तो खुद है और कहता है मुझे, बुजदिल कहीं का! एक खूबसूरत लड़की उसके साथ चल रही है जो कितना प्यार उससे करती है और वह ऐसा है कि बस खाली हाथ हिलता—यूं चल रहा है जैसे कि मार्च कर रहा हो।

उई……अचानक हेमा का पाँव फिसल गया और वह नीचे बर्फ पर ही बैठ गई।

क्या हुआ ? मुस्कराते हुए अमर ने पूछा।

कुछ भी हुआ हो, आपको उससे क्या !

अरे यह अचानक तुम्हें बार-बार क्या हो जाता है। इसमें मेरा तो कोई दोष नहीं।

देखिये न मेरे पैर में मोच आ गई है और आप अटेंशन की पोजीशन में खड़े हैं।

फिर भला मैं क्या कर सकता हूँ—अमर मुस्करा रहा था। सम्भल कर क्यों नहीं चलतीं, मैं तो एक बार भी नहीं फिसला। इतना कहकर जैसे ही अमर हेमा को उठाने के लिये आगे बढ़ा था कि उसका पैर भी फिसल गया और सीधे मुँह जाकर बर्फ पर गिरा।

अमर को फिसलता देखकर हेमा जोरों से खिल खिलाकर हँस पड़ी। वह तो हँसती जा रही थी और अमर उठने की कोशिश करने लगा। हेमा तो खड़ी हो गई, हँसी के मारे वह लोटपोट हो रही थी। हँसते-हँसते उसके पेट में जैसे बल पड़ गए, परन्तु उसकी हँसी कम नहीं हुई। वह दिल खोल कर अट्टहास करती जा रही थी। फिर हँसते हुए बोली—मिस्टर अमर क्या हुआ ? खुशी के मारे—बच्चों की तरह तालियाँ बजाते हुए बोली—अमर साहब, आज हँसने का दिन है। आज जैसी हँसी मैं कभी भी नहीं हँसी। आप इतने होशियार आदमी किस प्रकार फिसल पड़े।

अमर उठ कर खड़ा हो गया और मुस्कराते हुए बोला—शरीर कहीं की, तुम कितनी बार फिसल चुकी हो पर मैं एक बार भी नहीं हँसा, परन्तु मेरे सिर्फ एक बार फिसलने से तुम इतनी हँस रही हो।

हेमा अब भी हँस रही थी और हँसते हुए ही बोली—आपके चेहरे पर बर्फ""। ऐसा कह कर अपने मुँह पर हाथ रखे फिर वह जोरों से हँस पड़ी।

अमर समझ गया कि गिरने से बर्फ शायद मुँह पर लग गई है। अपने हाथ से मुँह साफ कर वह अपने कपड़े भी झाड़ने लगा। हेमा तो अपने आप गिरी थी, परन्तु अमर तो हकीकत में फिसल

गया था जिससे वह हँसती जा रही थी। उसकी हँसी जैसे बन्द ही नहीं हो रही थी।

मेम साहब, आप हँसती ही रहेंगी या चलेंगी भी।

हेमा की हँसी बन्द हो गई। वह अब सिर्फ मुस्करा रही थी।

हेमा, अब मैंने भी फिसलना शुरू कर दिया है। सोचता हूँ कि अगर किसी भी समय फिसलना पड़ा तो क्यों न दोनों साथ ही फिसलें। इसलिये तुम अपना हाथ मेरे हाथ में दे दो। ऐसा कह कर अमर ने अपना हाथ बढ़ा दिया। दोनों हाथ एक साथ ही बंद हुए। ऐसा लगता था जैसे दो बिछुड़े हुए साथी एक दूसरे से गले मिल रहे हों। दोनों के चेहरों पर मन्द मुस्कान फैल गई। दो दिलों की इच्छा पूर्ण हुई।

स्केटिंग रेस शुरू होने ही वाली थी। बहुत शोरगुल हो रहा था। लोगों की इतनी भीड़ थी, शौरगुल में कुछ भी सुनाई नहीं पड़ता। लाउड स्पीकर पर बेचारा चिल्ला-चिल्ला कर थक गया पर लोगों ने जैसे कुछ सुना ही नहीं। कॉलेजों के छात्र-छात्राएँ, टीचर सभी अपने-अपने खिलाड़ियों को उत्साह दिला रहे थे। अमर हेमा को ढूँढ रहा रहा था, परन्तु वह उसे दिखाई नहीं पड़ी। अमर ने सोचा कि हेमा स्केटिंग जानती नहीं इसलिये शायद भाग लेना नहीं चाहती, इस कारण नहीं आई है। फिर भी उसकी नजरें उसे खोज रही थीं। अचानक उसकी नजरें घूमकर एक जगह पर रुक गईं जहाँ पर हेमा भाग लेने वाली खिलाड़ियों के साथ हँस-हँस कर बातें कर रही थी। हेमा स्केटिंग ड्रेस पहने हुई थी। सर से लेकर गले तक गरम स्कार्फ, आँखों पर काला चश्मा, हाथों में ग्लोव जिनमें वह स्टिक पकड़े हुई थी, वह बार-बार स्टिक को घुमा रही थी। रेस शुरू होने से पहले अमर उससे मिलना चाहता था। वह उन सब लड़कियों से थोड़ा सा दूर जाकर खड़ा हो गया ताकि हेमा उसे देख सके। हेमा हँस-हँस कर बातें कर रही थी! जैसे ही हँसते हुए उसकी नजर मुड़ी वह

मुस्करा पड़ी—अमर को देख कर। लड़कियों से इजाजत लेकर वह आगे बढ़ी, जहां अमर खड़ा था।

हैलो, क्या मेमसाहब भी भाग ले रही हैं? दूर से ही मुस्कराते हुए अमर ने कहा। हेमा अमर के पास खड़ी कह रही थी—तुम कहाँ छिपे हुए थे? तुम्हें ढूँढते-ढूँढते मैं थक गई, फिर जाकर इन सब के साथ गप मारने लगी।

मैं अभी ही आया हूँ करीब दस मिनट पहिले। तुम्हें यहाँ देखा और चला आया। हेमा तुम्हें इस कन्टेस्ट में भाग नहीं लेना चाहिये।

वो भला क्यों?

तुम स्केटिंग जानती नहीं, मुझे डर लग रहा है, कहीं कुछ हो न जाए।

अमर से ऐसा सुनकर हेमा हँस पड़ी।

अरे तुम हँस रही हो, इसमें हँसने की क्या बात है? क्या मैंने कोई जोक किया?

जी हाँ, जोक ही तो है। तुम्हारे होते हुए मुझे कुछ हो जाए, यह असम्भव है। मुझे सिर्फ तुम्हारा आशीर्वाद चाहिये। ऐसा कह कर हेमा ने स्वयं का सर कुछ आगे की ओर झुकाया और स्वयं ही अमर का हाथ लेकर अपने सर पर रख दिया।

अरे अरे....ये क्या कर रही हो। मैं भला क्या कर सकता हूँ? क्या तुम मेरे आशीर्वाद से जीत जाओगी?

इतने में अनाउन्समेंट हुआ—जिन छात्राओं ने स्केटिंग रेस में भाग लिया है, महरबानी करके शीघ्र ही लाल झँडी के पास आजाएँ। अनाउन्समेंट समाप्त हो गया।

हेमा ने अमर का हाथ अपने हाथ में लेकर कहा—अच्छा। अमर अब, चलती हूँ।

विश यू गुडलक—हेमा का हाथ धीरे से दबाते हुए अमर बोला और हेमा मुस्करा पड़ी।

ग्यारह लड़कियाँ लाल झँडी के पास खड़ी थीं, उनमें एक हेमा भी थी। वह नम्बर दस पर खड़ी थी। इतने में विसिल बजी, विसिल की आवाज के साथ सभी लड़कियाँ बर्फ पर दौड़ पड़ीं। अमर सोच रहा था, कि हेमा हार तो जाएगी ही पर उसे कुछ हो न जाए। अमर ने अपनी आँखों पर बाइनाकूल लगा दिया। सभी लड़कियाँ एक ही लाइन में बर्फ पर फिसल रही थीं। फिर सभी लड़कियों ने अपनी-अपनी रफ्तार तेज कर दी, इस प्रकार तितर-बितर हो गईं। लड़कियाँ बड़ी तेज रफ्तार से आगे भागी जा रही थीं। अमर ने देखा, कि हेमा सबसे पीछे छूट रही है। अब ढलान आ रहा था। अमर की नजर तो हेमा पर ही लगी हुई थी। हेमा सबसे पीछे थी और सभी लड़कियाँ उससे बहुत आगे। अमर को कोई दु:ख नहीं हुआ, वह जानता था कि ऐसा होना ही था।

इतने में लोगों का शोर शुरू हो गया। वे कह रहे थे—देखो नम्बर दस जो सबसे पीछा था, अब आगे होने की कोशिश कर रहा है। अमर की तो नजर नम्बर दस यानी हेमा पर ही थी। अपना बैलेंस सम्भाल कर हेमा ने रफ्तार तेज कर दी। अमर देखता जा रहा था। हेमा अब सात लड़कियों को पीछे-छोड़ चुकी थी। वहाँ पर सब लोग चकरा गये, अमर तो आश्चर्य के मारे देखता ही जा रहा था। उसने अब महसूस किया कि हेमा अनजान नहीं, बल्कि एक निपुण खिलाड़ी है। मुझे सिर्फ डराने के लिये ही कह रही थी कि वह स्केटिंग जानती ही नहीं।

हेमा अब आठ लड़कियों के आगे थी, वह अपने हाथों में मजबूती से स्टिक को थामे बड़ी फुर्ती से बर्फ में धंसाती आगे बढ़ रही थी। अब चढ़ाई आ गई, चढ़ाई जैसे ही पार हुई कि ढलाव आया। हेमा ने स्वयं को सम्भाल कर ढलाव से जम्प मारा जिसे देखकर सभी लोग घबरा गये। हेमा अब सब से आगे थी। हेमा अब बड़ी तेज पर होशियारी से ढलान उतर रही थी, इस प्रकार फिर ऊँचाई, फिर

ढलाव, ये सब पार करती वह समतल पर आ गई । हेमा तेज रफ्तार से बर्फ पर फिसल रही थी, बाकी सब दस लड़कियाँ उसके पीछे थीं । हेमा ने अपनी रफ्तार कम कर दी जिसका फायदा नम्बर सात उठाने की कोशिश कर रहा था । अमर ने सोचा शायद हेमा थक गई है, परन्तु उसने तो स्वयं ही रफ्तार कम कर दी थी । हेमा ने थोड़ा सा पीछे मुड़कर देखा कि नम्बर सात उसके बराबर आने वाला है, उसने फिर रफ्तार तेज कर दी, पहिले से भी ज्यादा क्योंकि हेमा ने देखा कि नम्बर सात भी कुछ कम नहीं है, परन्तु वह भी तो उससे बढ़कर ही थी । सब लोग हेमा को देखने लगे । एक बार फिर लोगों में शोरगुल मच गया । हेमा की स्केटिंग देखकर अमर और सभी लोग दँग रह गए । हेमा अब वापस आ रही थी । दूर से ऐसा लग रहा था, जैसे बर्फ पर तैर रही हो । एक बार फिर वही फासला पार करती । हेमा वापस लाल झँडी के पास पहुँच गई । पूरा वातावरण तालियों की गड़गड़ाहट से गूँज उठा हेमा को प्रथम घोषित कर दिया गया । हेमा को सभी छात्र-छात्राओं और अध्यापकों ने मुबारकबाद दी, क्योंकि हेमा की जीत उन सबकी जीत थी । सब को हाथ जोड़ती वह आगे निकल गई जहाँ पर सामने अमर खड़ा हेमा की ओर मँद-मँद मुस्करा रहा था । बधाई हो हेमा, अमर ने हेमा के हाथ को अपने हाथ में लेकर कहा, मुझे मालूम ही नहीं था, कि तुम ब्लफ मास्टर भी हो । हेमा मुस्करा पड़ी । तुम इतनी स्केटिंग जानती हो, मैं सोच भी नहीं सकता था । झूँठी कहीं की—उसके नाक को पकड़ते हुए कहा । तुमने तो कहा था कि तुम जानती ही नहीं, परन्तु मैं अब दावे के साथ कह सकता हूँ, कि ऐसी स्केटिंग मैंने पहिले कभी भी नहीं देखी । हाँ, एक-बार देखी थी—आरजू पिक्चर में राजेन्द्र कुमार को करते हुए ।

अमर से ऐसा सुनकर हेमा हँस पड़ी और बोली—मैं अभी भी कहती हूँ, कि मैं स्केटिंग नहीं जानती । यह तो सब तुम्हारे आशीर्वाद

की कृपा है कि मैं जीत गई वरना फर्स्ट तो क्या लास्ट भी नहीं आ सकती।

हेमा, मैं तुम्हारे आगे अपनी हार मानता हूँ–अपने कानों को हाथों से पकड़ते हुए अमर बोला—तुम्हें समझना मेरे बस की बात नहीं। कभी गालियाँ देती हो और कभी उठाकर आसमान पर चढ़ा देती हो। तुम एक ऐसी पहेली हो जिसे मेरे जैसा बुद्धू नहीं सुलझा सकता।

बुद्धू कहीं का–ऐसा कहकर हेमा हँस पड़ी। अमर ने उसे पकड़ने के लिये हाथ बढ़ाया ही था, कि हेमा भाग खड़ी हुई। आगे हेमा थी और पीछे अमर। हेमा बुद्धु-बुद्धु कहती भाग रही थी और अमर उसे पकड़ने के लिये कोशिश कर रहा था। हेमा हँसती हुई दौड़ रही थी और अमर भी। इस प्रकार दौड़ते-दौड़ते एक चीख के साथ हेमा नीचे बैठ गई। उसके पाँव में मोच आ गई थी। अमर भी दौड़ता हुआ वहाँ पहुँच गया गया। दोनों हाँफ रहे थे।

क्या हुआ हेमा ?

पाँव में जरा सी मोच आ गई है।

देखूँ तो–ऐसा कह कर अमर ने उसके पाँव को थोड़ा सा दबाया।

उई······ हेमा ने पाँव पीछे खींच लिया।

क्या ज्यादा मोच आई है ? लो मैं तुम्हारे पाँव को धीरे-धीरे सहलाता हूँ। अमर ने जैसे ही अपना हाथ फिर बढ़ाया कि हेमा ने पीछे सरका दिया और पाँव के ऊपर खुद के दोनों हाथ रख कर छिपा दिया।

पाँव को छिपाती क्यों हो, आगे करो ना।

नहीं।

क्यों ?

तुम मेरे पाँव को कैसे हाथ लगा सकते हो।

अरे इसमें क्या है। दोनों साथ घूमते हैं, एक दूसरे के साथी हैं और अगर तुम्हें कुछ हुआ है तो मैं काम नहीं आऊँगा तो और कौन

आएगा। तकलीफ के वक्त दूसरे के काम आना तो हमारा कर्त्तव्य हो जाता है। आगे करो अपने पाँव को।

ऊँहूँ–नकारात्मकता से हेमा ने मुस्कराते हुए अपना सर हिलाया।

ऊहँ⋯⋯क्या, पैर को आगे करो।

नहीं ?

तुम पैर को आगे नहीं करोगी (आँखों की भौंहें चढ़ाते हुए कहा)

बिल्कुल नहीं (हेमा अब भी अपने हाथों से पाँव को ढके हुए थी)।

तो तुम ऐसे नहीं मानोगी। अमर ने झपट कर धीरे से उसके पाँव को पकड़ लिया। हेमा पाँव छुड़ाने लगी।

हेमा⋯⋯अगर तुम ऐसा करोगी तो मैं तुम्हें चाँटा रसीद कर दूँगा—चेहरे को गम्भीर करते हुए वह बोला।

अच्छा तो मारिये चाँटा। हेमा ने अपना चेहरा कुछ आगे की ओर झुकाया। अमर ने भी अपना हाथ यूँही मजाक में ऊपर उठाया। हेमा आँखें फाड़े उसे देखे जा रही थी। अमर का ऊपर उठा हुआ हाथ ऊपर ही रुक गया। उसने स्वयं को हेमा की आँखों में पाया। वह होश हवास खोकर हेमा की आँखों में देखने लगा। उसे ऐसा लगा जैसे कि एक लम्बी सी झील में तैर रहा हो। वह हेमा की झील-समान आँखों में समा जाना चाहता था। हेमा भी उसे घूरे जा रही थी। दोनों के दिलों की धड़कन बढ़ गई। स्वयं को एक दूसरे की आँखों में देखकर धड़कते हुए दिलों ने कहा—काश ! इन मदहोश आँखों में हमेशा के लिये समा जाऊँ, इन आँखों की पलकों को मूँद कर मुझे छिपालो ताकि न तुम किसी को देख सको और न मैं। एक दूसरे को साथ देकर जीवन की आखिरी मन्जिल पार कर जाएँ। जीएँ भी साथ तो मरे भी साथ। दोनों की साँसें बहुत तेज चली रही थीं। अमर होश हवाश खो चुका था। उसका चेहरा हेमा के चेहरे की ओर धीरे-धीरे झुकता गया। दोनों के चेहरे बिल्कुल करीब हो गए। गरम-गरम साँसों की महक और दिलों की धड़कन साफ सुनाई

पड़ रही थी। अमर का चेहरा आगे की ओर झुका ही था कि हेमा होश में आ गई। ओर उछल कर पीछे हट गई। अगर वह ऐसा नहीं करती तो अवश्य कुछ हो गया होता। अमर भी होश में आ गया। शर्म के मारे दोनों के सिर जैसे जमीन में गड़ते जा रहे थे। शर्म के मारे किसी के मुख से एक भी शब्द नहीं निकल रहा था, जैसेकि उनकी घिग्घी ही बँध गई हो। दोनों स्वयं को ही दोषी समझने लगे।

अमर ने अपनी रिस्टवाच में देखा, काफी समय हो चुका था। चलो हेमा चलें, ऐसा कहकर वह आगे बढ़ा। हेमा उसके पीछे-पीछे चलने लगी। मार्ग में किसी की भी हिम्मत नहीं हो रही थी कि कुछ कहे।

हेमा मन ही मन पछता रही थी कि उसे क्या हो गया था कि सुध-बुध खो बैठी। अगर वक्त पर न संभल जाती तो पता नहीं क्या हो जाता? ऐसे विचार आते ही वह शर्मा गई। वह जमीन की ओर देखती धीरे-धीरे चल रही थी। उसके पाँव का दर्द अब उतर चुका था।

काश हेमा पीछे नहीं हटी होती तो जो बात वह मुँह से नहीं कह सकता था वह अपने आप ही हो जाती। ऐसे विचारते हुए अमर रोमान्चित हो उठा।

अब दोनों के अलग होने का समय आ गया। हेमा को बांई ओर जाना था और अमर को और आगे। हर रोज घूमघामकर इस चौराहे पर खड़े होकर वे विदा होते थे और आज भी आकर उसी चौराहे पर रुक गये। दोनों चुपचाप खड़े थे।

हेमा!

हूँ..........नीचे जमीन की ओर देखते हुए उसने बहुत धीमे स्वर में उत्तर दिया।

मुझे तुमसे एक आवश्यक बात कहनी है।

कहिये! हेमा ने सर ऊपर कर लिया और अमर की ओर देखने लगी।

इस वक्त नहीं कल कहूँगा ।

कल क्यों, अभी ही कह दीजिये । हेमा जान गई कि अमर उससे क्या कहना चाहता है ।

नहीं, कल ही ठीक रहेगा । मैं तुम्हारा शालीमार गार्डन में इन्तजार करूँगा, आओगी ना ?

हाँ, आऊँगी ।

तो ठीक है, सुबह दस बजे पहुँच जाना । अच्छा, गुड बाई । हेमा ने भी उत्तर में यही शब्द दुहराए । दोनों अपने-अपने रास्ते पर चल पड़े ।

अमर अपने कमरे में बैठा सोच रहा था कि वह कल हेमा को अपने दिल की बात कह देगा । हेमा भी तो यही चाहती है, परन्तु कुछ कह नहीं सकती थी, लड़की जो ठहरी । दोनों एक साथ घूमते-फिरते हैं, परन्तु दिल की बात कह नहीं सकते । दिल तो बहुत कुछ चाहता है पर कहने की हिम्मत जो नहीं होती । कल ये सारी दूरियां दूर हो जाएगी, जब वह दिल खोलकर कहेगा—"हेमा मैं तुमसे प्यार करता हूँ, आज से नहीं बचपन से और जब उसे मालूम होगा कि मैं उससे प्यार करता हूँ, आज से नहीं बचपन से, मैं उसका बचपन का साथी अमर हूँ, तो वह खुशी के मारे पागल हो उठेगी, प्यार से उसे अपनी भील जैसी आँखों में समा लेगी और कहेगी—अमर तुम इतने दिन कहाँ छिपे हुए थे ! मेरे सामने क्यों नहीं आए ? यह तो बचपन का प्यार और भगवान की शक्ति है कि मैं तुम्हारी ओर खिच गई । अमर, आज मैं बहुत खुश हूँ, मेरा बचपन का प्यार मुझे वापस मिल गया, मेरी जिन्दगी की खुशी मुझे मिल गई, भगवान ने मेरी झोली में इतनी खुशियाँ भर दी है कि—कहीं मैं खुशी से पागल न हो जाऊँ । अमर, थाम लो मुझे अपनी बाहों में और तब मैं उसे अपनी बाहों में ले लूँगा और कहूँगा--हेमा मुझे अपनी जिन्दगी में तुम्हारे सिवा और कुछ भी नहीं चाहिये । तुम्हें पाकर ऐसा लगता है जैसे कि—संसार की सारी खुशियाँ मेरी बाहों में हैं । हेमा मुझे सिर्फ तुम्हारा साथ चाहिये, संसार में ऐसी कोई ताकत नहीं होगी जो तुम्हें

मुझ से अलग कर सके। मैं सारी दुनियाँ से टकराने की हिम्मत रखता हूँ। इस तरह सोचते-सोचते अमर कुर्सी पर ही सो गया।

अमर गार्डन में बैठा, हेमा की प्रतीक्षा कर रहा था। हेमा अब तक क्यों नहीं आई ? दस तो कब के बज गए। कहीं वह भूल तो नहीं गई या उसकी तबियत कुछ खराब तो नहीं हो गई। इतने में हेमा आ गई। उसने अमर को देख लिया था और अब उसकी ओर आ रही थी।

आई एम सौरी अमर, थोड़ी देर हो गई।

कोई बात नहीं, बैठ जाओ।

दोनों चुपचाप घास पर बैठ गए।

अमर हेमा को देख रहा था, आज उसने गजब का शृंगार कर रखा था। लाइट हरे रंग की साड़ी पर उसी रंग का ब्लाउज उसके संगमरमरी बदन पर बहुत जँच रहा था। होठों पर गुलाबी लिपिस्टिक और चेहरे पर पावडर की हल्की परत से चेहरे का रंग और भी खिल उठा था।

हेमा तो उसके सामने बैठी थी, पर उसे कुछ भी कहने की हिम्मत नहीं। वह सोच रहा था कि बात को कहाँ से शुरू करें।

हेमा, तुम जानती हो, मैंने तुम्हें यहाँ पर क्यों बुलाया है।

मुझे क्या मालूम, मैं कोई अन्तर्यामी तो नहीं कि किसी के मन की बात जान जाऊँ—वह मुस्कराती रही परन्तु अमर गंभीर था।

आप बताइये ना ऐसी कौन सी खास बात है कि आपने मुझे यहाँ पर बुलवाया है।

अमर तो असमंजस में पड़ गया कि अब वह क्या कहे। रात को जैसा उसने सोचा था, उसे फिर दुहराया। हेमा की बातों से उसे ऐसा लगा कि जो आग उसके दिल में है वही हेमा के दिल में भी है, फिर खामख्वाह क्यों घबरा रहा है। इस प्रकार हिम्मत करके उसने कह डाला—

हेमा, मैं तुमसे प्यार करता हूँ।

क्या·······मुझसे प्यार, हेमा उछल कर खड़ी हो गई और बोली—मिस्टर अमर, यह आप क्या कह रहे हैं। आपने कैसे सोच लिया कि मैं भी आपसे प्यार करती हूँ। आपको ऐसा नहीं कहना चाहिये था। हेमा कहती जा रही थी और अमर अपने टूटे हुए दिल को थामे सुनता जा रहा था। मैंने आपको अपना दोस्त बनाया, सोचा था आप बहुत शरीफ लड़के हैं आप जैसा साथी पूरे कश्मीर में ढूँढने पर नहीं मिलेगा। इसी कारण में आपके साथ घूमा-फिरा करती थी। अगर आपने घूमने-फिरने का अर्थ प्यार समझा है तो सरासर गलत है। मुझे समझ में नहीं आता कि आपने खुद का दिल देखकर कैसे समझा कि मैं आपसे प्यार करती हूँ।

हेमा का एक-एक शब्द अमर के सीने पर हथौड़े की तरह चोट कर रहा था।

हेमा कहती जा रही थी—आप इतने बुद्धिमान हो कर इस गलतफ़हमी के शिकार कैसे हो गए। मुझे भी ऐसा कहते हुए दुःख हो रहा है कि आप का दिल टूट गया। आप ने मुझसे प्यार किया है मैं आपके जज़्बात समझती हूँ, परन्तु आपको ऐसा सोचना शोभा नहीं देता। आप मुझसे तो पूछ लेते। प्यार कोई खेल तो नहीं। मेरी तो कब की सगाई भी हो चुकी है। आप मुझे क्षमा कर दें।

बन्द करो यह बकवास। तुम झूठ बोल रही हो—अमर चिल्ला उठा। वह आपे से बाहर जा रहा था, परन्तु उसने फिर खुद पर नियंत्रण कर लिया। वह हाँफ रहा था, आँखें अँगारों की तरह जल रही थीं। आई एम सौरी हेमा! इतना कहकर लम्बे-लम्बे डग भरता वह चल पड़ा।

अमर····अमर····अमर····ठहरो। रुक जाओ·······तुम्हें मेरी कसम····। परन्तु अमर ने जैसे कुछ सुना ही नहीं। वह चलता गया और हेमा उसे पुकारती रही। अन्त में वह थक कर खड़ी हो गई, अमर जा चुका था।

——

८

अमर, तुम्हें अब जीने का हक नहीं। जिसे तुमने देवी समझ कर पूजा, वह कभी की किसी ओर की हो चुकी है। हेमा अब तुम्हारी नहीं रही। माँ ""'"अब मैं क्या करूँ तुमने सच कहा था कि मुझे सोच-समझ कर कदम उठाना चाहिये। अमर अपने कमरे में बैठा था, उसके सामने टेबिल पर रखी शराब की एक बोतल उसके हलक के नीचे जा चुकी थी। अपनी माँ के कहे हुए शब्द उसे जैसे सुनाई पड़े—अमर""""हो सकता है हेमा की सगाई हो चुकी हो।

माँ! अब मैं कहीं का नहीं रहा—अमर चिल्ला पड़ा और खड़ा होकर शराब की बोतल को जमीन पर दे मारा। हे भगवान, किस जन्म का तुमने मुझसे बदला लिया है—उसने दोनों हाथों से अपने सिर को थाम लिया - जो इस टूटी हुई बोतल की तरह मेरे दिल के टुकड़े-टुकड़े कर दिये हैं। उसका सिर चकरा गया, शराब ने अपना असर दिखाया। नशे के कारण उसका सिर फट रहा था। अमर ने दीवार का सहारा लेना चाहा, परन्तु वह आगे नहीं बढ़ सका। पूरा कमरा उसे घूमता हुआ नजर आया, नशे के कारण उसकी टाँगें लड़खड़ा रही थीं। उसने स्वयं को संभालने की कोशिश की, पर असमर्थ रहा और धम्म से फर्श पर गिर पड़ा। अमर बेहोश हो चुका था।

\+ + +

हॉल में बहुत से लोग बैठे हुए थे। सब की निगाह सामने स्टेज पर थी। स्टेज पर कोई कह रहा था—आप सबको कई छात्रों ने अपनी-अपनी कला द्वारा मनोरंजित किया, अब आखिरी आइटम पेश किया जाता है। आपके समक्ष हमारे प्रिय छात्र श्री अमर कुमारजी एक दर्द भरी कविता पेश करेंगे। उनकी जादू भरी आवाज सुनकर

आप सबके दिलों में भी वही आवाज गूँज उठेगी। आइये अमर कुमारजी! ऐसा कहकर अनाउन्सर माइक से हट गया, उसकी जगह अमर ने ले ली।

अमर की आँखें रात की घटना के कारण सूजी हुई थीं। उसकी आँखों से दिल का छिपा हुआ दर्द बाहर निकलने की जैसे कोशिश कर रहा हो और वह उस दर्द को अपनी जिन्दगी का उपहार समझ कर पी रहा था। वह उस छिपे हुए दर्द को कविता के रूप में दुनिया वालों के समक्ष पेश करना चाहता था कि कुदरत ने किस प्रकार उसकी जिन्दगी के प्यार का मजाक उड़ाया है। उसकी बरसों की तपस्या को एक ही पल में भंग कर दिया। उपहार के बदले घुट-घुट कर मरने के लिये दर्द दिया। लोग उसकी जादुई आवाज में छिपे हुए दर्द को सुनकर बहुत प्रभावित हुए और एकाग्र मन से उसकी कविता सुनते रहे। अमर अपने दिल में छिपे हुए दर्द का बयान कर रहा था कि उसका संसार तो कब का लुट चुका था, परन्तु न मालूम होने के कारण वह आशाएँ रखे हुए था, खुद को दुनिया वालों से बढ़कर भाग्यवान समझता था कि जितनी खुशियाँ भगवान ने उसकी झोली में डाल दी हैं, काश! किसीऔर को दे सके। वह उन खुशियों को लेकर अपना जीवन सफल बनाना चाहता था, पर हाय री किस्मत! जिन्हें उसने खुशियाँ समझीं, वे सब हकीकत में वो न होकर दुःखों का एक बड़ा सा भंडार था जिन्हें वह अब सिर पर लाद कर दुनिया वालों के समक्ष चिल्ला रहा है। उसे ऐसा दर्द दे दिया गया है जिससे वह मर भी नहीं सकता। वह तो उसे धीरे-धीरे गला कर मिट्टी में मिला देगा। जिसे वह अमृत समझ कर चल रहा था वह हकीकत में जहर था। चाहता था कि अमृत को पीकर अमिट हो जाएगा, उसकी जिन्दगी खिल उठेगी। उस वक्त सिर्फ अमृत की खुशबू में खोया रहूँगा, क्यों न इसे अपने गले में उतार दूँ, परन्तु अमृत का सिर्फ धोखा था, फरेब था। वह तो विष था, पीने के बाद अब दिल छलनी हो गया है, नस-नस

शिथिल पड़ गई है। अब तो उसे सिर्फ उस दिन का इन्तजार है जब लोग इस चिता से उठाकर राम नाम की चिता पर रख देगें।

अमर की कविता समाप्त हो गई और इसके साथ पूरा हॉल तालियों की गड़गड़ाहट से गूँज गया। अमर की कविता से सब लोग अति प्रभावित हुए। उसकी कविता को सर्वश्रेष्ठ घोषित कर दिया गया। प्रथम पुरस्कार के अलावा और भी कई बड़े-बड़े महानुभाव उसे अपनी-अपनी ओर से उपहार देते जा रहे थे। परन्तु अमर की किसी भी चीज में दिलचस्पी नहीं रही थी। अमर के चारों ओर भीड़ इकट्ठी हो गई। हेमा उस भीड़ को चीरती हुई आगे बढ़ आई, उसके हाथ में लाल रंग का एक बन्डल था। उस बन्डल को आगे बढ़ाते हुए हेमा ने कहा—आप हमारी इस तुच्छ भेंट को स्वीकार कीजिए। अमर ने हेमा की आँखों में देखा, वह उससे आग्रह कर रही थी—'प्लीज अमर, ले लीजिये'। वह लेना तो नहीं चाहता था—पर सबके सम्मुख वह इनकार भी नहीं कर सका और चुपचाप ले लिया। लाल बन्डल अमर के हाथ में थमाकर हेमा एकदम वहाँ से चली गई। अमर कुर्सी पर बैठ गया फिर बारी-बारी से दूसरे छात्रों को भी पुरस्कार भेंट किये गये।

अमर अपने कमरे में बैठा उस टेबिल पर पड़े हुए पुरस्कारों को घूर-घूर कर देख रहा था। एकाएक पुरस्कार को उसने गौर से देखा। उसकी दृष्टि लाल बन्डल पर रुक गई, उसे देखते ही वह उदास हो गया। वह लाल बन्डल को अपने उदास नेत्रों से देख रहा था। अचानक उसे ऐसा लगा जैसे कि उस लाल बन्डल ने एक बड़ा सा अट्टहास किया हो, इसके साथ पूरा कमरा उस लाल बन्डल के अट्टहासों की आवज से गूँज उठा—हा हा हा हा हा हा··· ।

तुम क्यों हंस रहे हो ? डरते हुए उस लाल बन्डल की ओर देखते हुए अमर ने कहा।

हा हा हा हा एक बार फिर लाल बन्डल खिलखिलाकर हंस पड़ा और अब कमरे की चारों दीवारों से अट्टहासों की गूँज शुरू

हो गई और अमर पागलों की तरह चारों ओर देखे जा रहा था। उन दीवारों से आवज आई—अमर इस लाल बन्डल में तुम्हारी मुहब्बत का जनाजा है हा हा हा ···। जिसे तुमने जी जान से चाहा, जिसकी पूजा की, अपना दिल दिया और उसने ही तुम्हें तड़पने के लिये दर्द दे दिया है। तुम्हें जिन्दगी भर तड़पाने के लिये छोड़ दिया है··· हा हा हा हा····।

वह क्या कर सकती है····। उसका तो कोई दोष नहीं, उसकी मंगनी जो हो चुकी वरना····

वरना क्या ? तुम समझते हो कि वह तुम्हारे गले में माला पहनाती। नहीं, कभी नहीं। अगर ऐसा होता तो किसी की मंगेतर होकर तुम से रोमान्स नहीं करती। जितनी उसकी मीठी जुबान है उससे कई गुना बढ़कर उसमें विष भरा है। बाहर से जितनी खूब-सूरत हैं, अन्दर से उतनी ही काली है। प्यार जैसी चीज का उसके आगे कोई महत्व नहीं, किस सरलता से तुमसे पीछा छुड़ा गई। तुम तो बचपन से उसका नाम लेकर जी रहे हो, परन्तु वह तो कब की तुम्हें भूल चुकी थी, इस प्रकार बहुत से अमर उसकी जिन्दगी में आए होंगे और तुम्हारी ही तरह तड़पते रह गये होंगे। वह जलन और तड़पन के सिवाय किसी को और कुछ नहीं दे सकती।

नहीं, तुम मुझे बहकाना चाहते हो। चिल्लाते हुए अमर बोला—तुम कौन हो ,मैं अब जान गया हूँ। तुम्हारा यही तो काम है—किसी के दिल को बिगाड़ना, परन्तु मैं तुम्हारे चक्कर में नहीं आ सकता।

पागल, मैं तो तुम्हारी आत्मा हूँ। हेमा के प्यार में तुम पागल हो गये हो। हेमा को मालूम था कि तुम वही अमर हो, परन्तु फिर भी जान बूझकर तुम्हारे मासूम दिल से खेलती रही। क्यों खुद को धोखा दे रहे हो। हेमा ने सरासर तुम्हारे साथ अन्याय किया है। तुम्हारी खिली हुई जिन्दगी को वीरान बना दिया है, जहाँ पर आँसुओं के सिवाय तुम्हारे पास और कुछ भी नहीं, इस प्रकार

रो-रोकर दम तोड़ दोगे। तुम जैसे बेवकूफों का हाल इस बेवफा दुनिया में ऐसा ही होता है।

अमर पसीने से तर हो गया। घबराहट के मारे उसकी आंखें फट गई थी। अपने सर को दोनों हाथों से थामे वह चारों ओर घूम रहा था।

हा हा हा हा हा···

बन्द करो यह बकवास—अमर चिल्ला उठा।

क्यों दिल फटा जा रहा है, हकीकत सुन कर। सच्चाई हमेशा कड़वी ही लगती है। अमर, तुम्हें माँ का कहना मानना चाहिये था। अब बताओ उसका क्या हाल होगा, जब वह सुनेगी कि हेमा उसकी बहू नहीं हो सकती। उसका तो दिल ही फट जाएगा। तुझ में अगर हिम्मत नहीं थी तो फिर उसे क्यों झूठे ख्वाब दिखाए। तुमने कहीं यह भी सोचा है कि उस ममता की देवी का क्या हाल होगा—जिसने काँटों की सेज पर सो कर तुम्हें काबिल बनाया। तुम उसके लिये कुछ भी नहीं कर सके। धिक्कार है तुम्हें। डरपोक, बुजदिल, अगर तुम में कायरता थी तो फिर प्यार का यह झूठा नाटक क्यों खेला।

नहीं । मेरा प्यार झूठा नहीं था, मैं तो अपनी आत्मा से उसे चाहता था।

तो फिर उसके समक्ष क्यों नहीं गए। अगर यही बात तुम कुछ समय पहले करते तो ऐसी नौबत नहीं आती। अगर जिन्दा रहना चाहते हो तो छोड़दो अपना शहर, ले जाओ अपनी माँ को कहीं और जगह वरना तुम्हें तड़पता हुआ देखकर वह भी गलती रहेगी। सच है, तुम हेमा को भुला नहीं सकोगे। चले जाओ, चले जाओ, बसालो अपनी दुनिया कहीं और जा कर।

भगवान के लिये चुप हो जाओ—चीख कर अमर बोला—तुम समझते हो कि मैं उस बेशर्म बेवफा के बिना नहीं रह सकूँगा।

उसकी यादों को हमेशा के लिये अपने दिल से मिटा दूँगा। तुम मुझे कमजोर समझते हो ? ठीक है, मैं तुम्हें सिद्ध करके दिखाऊँगा कि मैं एक फौलाद का टुकड़ा हूँ, मेरे सीने में पत्थर से भी कहीं ज्यादा कठोर दिल है—ऐसा कह कर अमर चिल्लाता रहा। गुस्से के मारे उसका चेहरा तमतमा उठा—मुझे हेमा से नफरत है। मैं उसकी हर चीज से नफरत करता हूँ। वह गला फाड़-फाड़ कर चिल्ला रहा था—मैं बुजदिल नहीं, मैं जीऊँगा और उस बेवफा को दिखाऊँगा कि मुझे उसकी जरा भी परवाह नहीं। मैं उससे नफरत करता हूँ, मुझे उससे नफरत है। इस तरह चिल्लाते अमर के होश खो गए उसने लाल बन्डल को उठा कर जोर से फर्श पर फैंक दिया और गला फाड़-फाड़ कर हँसने लगा–हा हा हा हा··· । उसने अपनी आँखें बन्द करलीं और कानों पर हाथ रखकर दबाने लगा ताकि न तो खुद का ही चिल्लाना सुन सके और न ही आत्मा की भयानक आवाज़ें।

अमर करीब दस मिनट तक आँखें बन्द किये खड़ा रहा। कुछ समय पहले कमरे में जो भयानकता थी, वहाँ पर अब पूर्ण शान्ति छा गई। अमर अब पूरे होश में आ चुका था, परन्तु घबराहट अब भी उसके चेहरे पर थी। वह हांफ रहा था और धीरे-धीरे अपनी आंखें खोलने लगा। एक अनजान की तरह कमरे के चारों और देखने लगा, अब उसके सिवाय वहाँ पर और कोई नहीं था। शोरगुल, आती हुई भयानक और डरावनी आवाजें सब समाप्त हो चुकी थी। ऐसा लगता था, कि रण के मैदान में जैसे मूर्छना छा गई हो। उसकी आंखें किसी चीज को ढूँढ़ने के लिये पूरे कमरे का निरीक्षण कर रही थी। उसने अपने बोझिल नेत्रों से फर्श की और देखा। फर्श पर नजर पड़ते ही वह भौंचक्का रह गया। एक बार उसने स्वयं को संभाला कि वह होश में तो है, यह कैसे हो सकता है ? आश्चर्य से वह बुदबुदाया। जिस लाल बन्डल को उसने गुस्से के मारे नीचे फर्श पर फैंक दिया था, वह फर्श पर गिरने से खुल गया और जो चीज उस बन्डल से निकल कर फर्श पर आ गई थी, वह उसका ही एलबम था जिसे देखकर

वह चकरा गया कि यह हकीकत है या वहम। हेमा के पास एलबम कैसे आ गया? नीचे झुक कर अमर ने अपने काँपते हुए हाथों से एलबम को उठा लिया। एलबम अमर के हाथों में था। उसने जैसे ही एलबम का एक पेज बदला वैसे ही एक चीज उसमें से निकल कर फर्श पर गिर पड़ी। उसने उस चीज को उठा लिया। वह एक लिफाफा था। खोलने पर उस लिफाफे से उसे एक खत मिला। अमर ने खत को पढ़ना शुरू किया--

मेरे देवता,

इस दासी ने आपको बहुत दुःख पहुँचाए हैं। मुझे माफ करदो। मेरी अचानक माताजी से मुलाकात हो गई थी, मैं उनके साथ घर गई। माताजी ने मुझे सब कुछ बता दिया था। मैंने उनसे यह एलबम ले लिया मेरी गुस्ताखियों को आप माफ कर देंगे?

मैं आपका चाणक्य मन्दिर के पास इन्तजार कर रही हूँ, खत पढ़ते ही आ जाइये।

आपकी जन्म-जन्म की दासी
हेमा

अमर पूरा खत एक ही सांस में पढ़ गया। खुशी के मारे उसके हाथ कांपने लगे, उसकी खुशी का जैसे कोई पारावार ही न हो। उसने अपने सीने पर हाथ रख दिया कि कहीं खुशी के मारे फट न जाए। ज्यादा खुशी भी बर्दाश्त करना कभी-कभी मुशिकल हो जाता है। अमर ने खत को अपने होठों से चूम लिया, खुशी से वह पागल होता जा रहा था। उसने बड़े जोर से चिल्लाकर कहा या... खुदा... तेरा शुक्र! मैं आ रहा हूँ हेमा, तुम्हारे पुजारी को तुमसे कोई गिला नहीं। खत को अपनी जेब के हवाले करके कमरे को यूँ ही खुला छोड़कर वह दौड़ पड़ा चाणक्य मन्दिर की ओर। अमर के कदम बड़ी तेज रफ्तार से दौड़ रहे थे, परन्तु वह समझ रहा था कि आज यह फासला इतना क्यों? काश! उसके पंख होते तो उड़कर वह उसके पहलू में छिप जाता।

वह दौड़ता जा रहा था, मिलन की घड़ियां बढ़ती जा रही थीं। उसने रफ्तार और तेज कर दी।

हेमा एक छोटी सी चट्टान पर बैठी हुई उतावलेपन से अमर का इन्तजार कर रही थी। खत के पढ़ने के पश्चात् अवश्य अमर आजाएगा। वह अपना सर उसके कदमों में रखकर माफी मांग लेगी, कहेगी—मेरे मालिक, जो सजा देना चाहते हो दो। यह दासी उसे हँसते-हँसते स्वीकार कर लेगी। आपकी हर वस्तु के पीछे हम दीवाने हैं, चाहे जहर पिलाओ या अमृत। जहर को भी अपनी मुहब्बत का तौहफा समझ कर मीराँ बावली की तरह अमर हो जाऊँगी।

हेमा अपने ही ख्यालों में खोई ये सब सोच ही रही थी कि किसी ने पीछे से अचानक हाथ रखकर उसकी आँखें बन्द करली। अमर, तुम आ गए! तुमने मुझे माफ कर दिया? तुम्हारा यह एहसान कि तुमने अपने चरणों में जगह देदी, कभी नहीं भूल सकती। अमर चुप क्यों हो? कुछ तो बोलो। तुम्हारी यह चुप्पी हमारे कलेजे पर चोट कर रही है। अमर—तुम बोलते क्यों नहीं? तुम्हारी आवाज सुनने के लिये दिल बेताब हो रहा है। प्लीज अमर, इतना मत सताओ—और हँसते हुए हेमा ने स्वयं ही उन हाथों को अपनी आँखों से हटा दिया और पीछे मुड़कर देखा। 'तुम''''' घबराते हुए हेमा के मुख से चीख निकली, उसका चेहरा पीला पड़ गया और हटकर दूर खड़ी हो गई।

हाँ मैं हूँ तुम्हारा गुलाम, यह अमर कौन है? बड़ा जालिम लगता है, तुम्हारी ही तरह। जिस प्रकार तुम हमें तड़पा रही हो उसी तरह वह तुम्हें तड़पा रहा है। वाह! खूब रही सेर के ऊपर सवा सेर।

तुम यहाँ किसलिये आए हो? डरते हुए वह बोली—

यह भी कोई पूछने की बात है, मेरी जान, बड़ी नासमझ हो, हम तो उसी दिन मरमिटे जिस दिन तुम्हारी इन कातिल नजरों ने हमारे दिल पर हमला किया।

हेमा का चेहरा क्रोध के मारे तमतमा उठा और दांत पीसकर बोली—नीच, तुम्हें कॉलेज से तो रेस्टीकेट करा दिया और अब तुम्हारी इस नीच जिन्दगी से भी तुम्हें हमेशा के लिये रेस्टीकेट करा दूँगी।

वाह वाह ! क्या जुबान है तुम्हारी। ये गालियाँ ऐसी लग रही हैं जैसे तुम प्यार से हम पर फूल बरसा रही हो। हेमा, मदन बुरा नहीं, तुमने उसे पहचानने में गलती की है। कालेज से निकलते वक्त तुम्हें भुलाने का निश्चय कर लिया था, पर यह कम्बख्त दिल नहीं रह सका। इस दिल की धड़कन से हमने तुम्हारा ही नाम सुना, तुम्हें कहाँ-कहां ढूँढा है, बस पूछो ही नहीं। मैं तुम्हारे प्यार में पागल हो गया हूँ। आ जाओ रानी, इन फौलादी बाँहों में आकर राज्य करो—ऐसा कहकर मदन ने अपनी बाँहें फैलादी।

नीच, कमीने, तेरी ये जुर्रत ! मैं तेरी बोटी-बोटी कटवा कर चीलों का आहार बना दूँगी। मदन अभी तक बाहें फैलाए मुस्करा रहा था। तड़ाक-तड़ाक हेमा ने दो जोरदार चाँटे मदन के मुँह पर रसीद किये। मदन कदाचित हेमा की इस हरकत के लिये तैयार नहीं था। अचानक चाँटों के प्रहार से मदन बोखला गया और सोते हुए शेर की तरह गरज उठा। उसकी आँखों से क्रोध के मारे शोले बरसने लगे। नादान लड़की, तुम्हारी ऐसी जुर्रत ? तुम्हें शायद मेरी शक्ति का अन्दाज नहीं। मैं तुमसे बदला लेने के लिये कसम खा चुका हूँ। इन चाँटों का तुमसे पूरा-पूरा बदला लूँगा। इतना कह कर जैसे ही वह हेमा को पकड़ने के लिये आगे बढ़ा कि हेमा ने अपने लम्बे-लम्बे नाखूनों से उसका मुँह नोंच डाला और वह दर्द के मारे तिलमिला उठा। उसके चेहरे से रक्त बह निकला। मदन आग बबुला हो गया और उसने दौड़कर हेमा को पकड़ लिया। वह शैतान की तरह गरज कर बोला—नीच छोकरी, अब तुम कैसे बचकर निकलती हो ? मदन ने हेमा के बाजुओं को जोर से पकड़ लिया। तुम्हारी ऐसी दुर्दशा करूँगा कि किसी को मुँह दिखाने लायक भी नहीं रहोगी। वह हेमा को घसीटने लगा—उस ओर जहाँ पर वह

अपनी कार खड़ी कर आया था। हेमा ने छुड़ाने का बहुत प्रयत्न किया, पर एक अबला नारी कब तक एक शैतान दैत्य का मुकाबला कर सकती है। हेमा छटपटाती रही और मदन उसे घसीटता हुआ उस कार तक आ गया। उसने कार का दरवाजा खोल कर जैसे ही हेमा को धक्का देना चाहि कि किसी फौलादी हाथ ने उसकी गुद्दी पकड़ कर एक जोरदार घूँसा जबड़े पर रसीद किया। मदन सीधा जाकर कंकरीली जमीन पर गिरा।

अमर""तुम ! ऐसा कह कर वह अमर से लिपट गई और फूट-फूट कर रो पड़ी।

मुक्का बहुत भारी था, मदन के मुँह से रक्त बह निकला। इस आकस्मिक आक्रमण से मदन बोखला गया। वह सम्भल कर उठ खड़ा हुआ और अपनी जेब से रामपुरी चाकू निकाल कर आगे बढ़ा।

हेमा तो अमर से लिपट कर रो रही थी। अमर की पीठ के पीछे मदन हाथ में चाकू लेकर आगे बढ़ आया जिसे हेमा ने देख लिया। 'अमर बचो', हेमा ने चिल्लाकर कहा और अमर से अलग हो गई। अमर पल्टा खा गया और अब दोनों एक दूसरे के आमने-सामने थे, मदन शैतानी हँसी हँसता, हाथ में चाकू लिये आगे बढ़ रहा था। अमर बिल्कुल सतर्क था। मदन ने अपने हाथ को घुमाकर अमर पर वार कर दिया, परन्तु वह बड़ी फुर्ती से एक ओर हो गया। मदन ने सम्भल कर एक और वार किया और अब भी अमर दाईं ओर झुक गया। हेमा बेचारी घबराई हुई यह जिन्दगी और मौत का खेल देख रही थी। उसने समझा, मदन एक खूँखार गुण्डा है, कहीं कुछ अनर्थ न हो जाए। वह कांप रही थी।

अब मदन बार-बार अमर पर वार करता जा रहा था, पर अमर बड़ी फुर्ती से बचाता गया। मदन के सभी वार खाली जाने के के कारण वह तिलमिला उठा तथा आगे बढ़कर पूरी ताकत से अमर पर वार कर दिया। अमर को शायद मौका मिल गया। उसने

अपने दाहिने हाथ से मदन का चाकू वाला हाथ बड़ी मजबूती से पकड़ लिया। मदन चाकू वाला हाथ आगे को बढ़ाने लगा और अमर उसे दूर हटाने की कोशिश करता रहा। अमर ने अपनी टांग का घुटना मदन के पेट में दे मारा और उसके मुख से चीख निकल कर रह गई। अमर ने अब उसकी कलाई को मोड़ दिया। उसने और जोर लगाया है और एक चिरक की आवाज के साथ चाकू जमीन पर गिर पड़ा। मदन के मुख से एक भयानक चीख निकली! शायद उसकी कलाई की हड्डी टूट गई थीं। अमर ने गिरे हुए चाकू को पैर द्वारा दूर फैंक दिया। यह सब अमर ने बड़ी होशियारी से किया, अमर ने फिर एक जोरदार घूँसा उसकी कनपटी पर दे मारा, आगे बढ़कर एक और मुक्का उसके नाक पर मारा, और मदन के मुख से एक और चीख निकली। अमर क्रोधित हो चुका था, और गरज कर बोला—कमीने, अगर आइन्दा फिर हेमा पर आँख तक उठाई तो जिन्दा जमीन में गाड़ दूँगा। ऐसा कह कर अमर ने एक और घूँसा मदन के पेट में लगाया और मदन आगे की ओर झुका। अमर ने अपने दोनों हाथ बाँध कर उसकी गरदन पर मारा जिससे मदन उलटे मुँह जमीन पर जा गिरा। अमर, बस बहुत हो गया, अब इसे जाने दो—हेमा बोली। अमर की आंखें लाल हो गई थीं, वह हाँफ रहा था, बोला—चले जाओ कमीने यहाँ से वरना तुम्हारी चमड़ी उधेड़ दूँगा। मदन अब अधमरा सा उठकर धीरे-धीरे जाने लगा।

———

९

'अमर'—बड़ी सुरीली आवाज में हेमा ने पुकारा जो झील में तैरते हुए बतखों के जोड़े को देख रहा था।

'हूँ', अमर ने यह ऐसे कहा, जैसे कि गहरी नींद से जाग उठा हो।

तुम क्या कुछ सोच रहे हो ?

नहीं, ऐसा तो कुछ भी नहीं, सिर्फ इन बतखों के जोड़े को देख रहा था, कितना सुन्दर जोड़ा है। नर बतख जिस ओर जाता है, मादा बतख उसी ओर अपना रुख कर लेती है। देखो, कितने प्यार से एक ही रफ्तार में तैर रहे हैं। इतने में उन बतखों में से एक ने चोंच खोल कर आवाज की।

यह आवाज क्यों कर रहा है ? हेमा ने बच्चों की तरह इठलाते हुए पूछा।

यह आवाज नर बतख की थी। तुमने देखा नहीं वह बतख जो मादा बतख है (एक की ओर इशारा करते हुए कहा) वह दूसरी ओर जा रही थी, जहाँ पर खाने के लिये बहुत कुछ था, वह इतना सब कुछ देखकर बहक गई। तब नर बतख ने उससे कहा, मत जाओ वहां, मेरा साथ देकर चलो, मेरे साथ तुम्हें सच्चा सुख मिलेगा, वहाँ पर सिर्फ कुछ समय का आनन्द है, परन्तु वास्तविक आनन्द तुम्हें मेरे प्यार में मिलेगा।

अमर से ऐसा सुनकर हेमा खिलखिला कर हँस पड़ी, स्वयं का सर अमर के कँधे से लगाते हुए बोली—अमर, तुम कितने अच्छे हो। मुझ पर विश्वास करो, में हमेशा सँग रहूँगी, तुम्हारे सिवाय मैं किसी और की नहीं हो सकती, फिर चाहे मेरी जान तक चली

जाए। तुम्हारे लिये मैं सारी दुनिया को ठोकर मार दूँगी। मैं किसी भी कीमत पर नहीं बहक सकती। काश! तुमने मेरे दिल को जाना होता। अमर अगर चाहो तो मैं इसी वक्त तुमसे शादी करने के लिये तैयार हूँ। आओ मेरे साथ—अमर का हाथ पकड़ कर हेमा उठी, खड़ी हुई तथा आगे बढ़ने लगी। अरे रे यह क्या, मुझे कहाँ लिये जा रही हो—अमर बोला। अमर आओ तो सही—हेमा सीधी अमर को मन्दिर में ले आई।

दोनों ने पुजारी जी को प्रणाम किया।

हमेशा फूलो-फलो, भगवान तुम्हारी जोड़ी को सदा बनाए रखे। कहो बेटे, कैसे आना हुआ है।

अमर ने हेमा की ओर देखा, दोनों चुप थे। तब हेमा बोली—स्वामी जी, हम दोनों..........हम दोनों—हेमा हिचकिचा रही थी।

कहो बेटी, क्या बात है?

बेचारी हेमा कैसे कह सकती थी, उसने अमर को कुहनी मारी ताकि वही कह दे। तब अमर हो बोला—स्वामी जी हम आप से कुछ सहायता चाहते हैं।

बोलो बेटे, मैं तुम्हारे लिये क्या कर सकता हूँ?

दरअसल बात यह है कि हम दोनों विवाह करना चाहते हैं।

यह तो बहुत खुशी की बात है। अच्छा तुम दोनों भगवान की मूर्ती के पास बैठ जाओ, तब तक मैं मन्त्र आदि के लिये सामग्री एकत्रित करता हूँ।

स्वामी जी सारी सामग्री लेकर आ गए, दोनों को भगवान की मूर्ती के समक्ष बैठा कर अग्नि जलाई और पूरी विधि के साथ दोनों को उस पवित्र बन्धन में जोड़ दिया। दोनों ने भगवान के समक्ष एक दूसरे के होने की सौगन्ध खाई। स्वामी जी ने आशीर्वाद देकर उनको विदा किया।

हेमा।

हूँ..

मुझे डर लग रहा है, अगर कहीं मैं तुम्हारे माँ-बाप को पसन्द नहीं आया तो।

उनकी पसन्दी या नापसन्दी से मुझे कोई मतलब नहीं। अमर, हम दोनों को कुछ वक्त के लिये इन्तजार करना है। वक्त आने पर मैं सब कुछ घर वालों को बता दूँगी।

अगर वो नहीं माने तो।

ऐसा कैसे हो सकता है ? अमर के बालों में अँगुलियों से खेलते हुए बड़े प्यार से वह बोली--अगर उन्होंने नहीं माना तो फिर सच्ची हकीकत जो है, सब कुछ बता दूँगी। उनको मानना पड़ेगा। मेरे मां-बाप मुझ से बहुत प्यार करते हैं। आज तक मैंने उनसे कुछ नहीं माँगा। मैं उनसे यह माँगूगी कि वे भी मेरी खुशी में अपना हाथ बँटाएँ। मुझे पूरा भरोसा है कि मेरे माँ-बाप मुझे कुछ भी नहीं कहेंगे। मेरी पसन्द उनकी पसन्द है। वे चाहते हैं, कि मैं जिस बात में राजी रहूँ, वह कर सकती हूँ। अमर--अपना विवाह तो हो ही चुका है, अब कोई कुछ नहीं कर सकता। अगर ऐसी-वैसी बात हुई तो मैं अपना घर छोड़ दूँगी। एक न एक दिन तुम्हारे साथ तो रहना ही है। एक विवाहित बेटी का घर अपने माँ-बाप के यहाँ नहीं होता, चाहे वहाँ पर कितना भी सुख क्यों न हो। उसका घर तो अपने पति के यहाँ होता है। अमर तुम जरा भी चिन्ता मत करो। तुम्हें विश्वास दिलाने के लिये ही मैंने तुम से मन्दिर में विवाह किया है। मैंने तुम्हें बहुत दुःख दिये हैं। इतनी गिरी हुई तो नहीं, कि अपने देवता को और सताऊँ--हेमा गम्भीर हो गई—अमर, तुम्हें मेरी कसम, महरबानी करके चिन्ता वगैरह करना छोड़ दो। अगर तुम चाहो तो मैं सीधी तुम्हारे घर ही चलूँ।

नहीं हेमा, ऐसा नहीं, हमें जल्दबाजी नहीं करनी चाहिये। तुम्हारे घर वाले अगर खुशी से ही मान जाएं तो फिर इससे अच्छा और क्या हो सकता है। अभी हमें चुप रहना पड़ेगा। जैसी

परिस्थितियाँ होंगी, उसी के अनुसार कदम उठाएँगे। तुम्हें खामखाह गलतफहमी हो गई है कि मैं चिन्तित हूँ। तुम्हें पाकर तो मैं स्वयं को संसार के सभी लोगों से भाग्यवान और खुश समझता हूँ। तुम्हारा साथ है, फिर मुझे किस बात का डर।

हेमा ने स्वयं का सिर अमर के चौड़े सीने पर रख दिया—अमर तुम कितने अच्छे हो! अमर धीरे-धीरे हेमा के सर पर प्यार से हाथ फेरने लगा।

+ + +

आज स्टेशन पर बहुत भीड़ थी, कॉलेजों के जितने भी छात्र काश्मीर गए हुए थे, वापस अपने शहर में आ गए।

हेमा, तुम सीधी अपने घर जाओ। चिन्ता किसी बात की मत करना, जो होगा देखा जाएगा। आज छः बजे घर पर आ जाना, माताजी को मैं सब कुछ बता दूँगा। शाम की चाय साथ पियेंगे। अच्छा बाइ! अमर मुस्करा पड़ा और हेमा भी मुस्कराई।

पिताजी! हेमा जाकर अपने बाप से लिपट गई—मेरी बेटी, आ गई, कैसी है मेरी रानी बिटिया? बहुत अच्छी हूँ, माँ······हेमा अपनी माँ के गले में बाहें डाल कर झूल पड़ी। काश्मीर की यात्रा कैसी रही बेटी? सेठ दीनदयाल ने पूछा।

पिताजी पूछो ही नहीं, काश्मीर तो स्वर्ग है स्वर्ग, हर आइटम में प्रथम रही।

बहुत खूब! आखिरकार बेटी भी किस की हो—फक्र के साथ दीनदयाल बोले।

राकेश कहाँ है? दिखाई नहीं देता—इधर-उधर देखते हुए हेमा ने पूछा।

अपनी माँ से पूछो, कि अपने सपूत को कहाँ भेज दिया है—क्रोध दिखाते हुए, सेठ दीनदयाल बोले।

क्या वह यहाँ पर नहीं है, अचम्भा प्रकट करते हुए हेमा बोली—कहाँ गया है?

बेटी, तुमसे क्या छिपाऊँ, तुम्हारी माँ के इस लाड़-प्यार ने उसे बिगाड़ दिया है—धरती की ओर इशारे करते हुए कहा—जो

कि बहुत गम्भीर खड़ी थी। बेटी आज तीसरा दिन है, कमबख्त घर में नहीं आया है। पहले रोज अपनी माँ से ढाई हजार ले गया है और अब तक पता नहीं कहाँ है। पैसे पानी की तरह बहा रहा है। मैंने तिजोरी की चाबियाँ तुम्हारी माँ से वापस ले ली हैं। आज उसने ढाई हजार दिये हैं, कल वह दस हजार माँगेगा और यह उसे दे देगी। बेटी, तुमने तो अब तक कुछ भी नहीं माँगा। परन्तु वह कमीना पता नहीं इतना रुपया कैसे खर्च करता है।

पिताजी पैसे तो पैसे रह जाएँगे, क्या आपने ढूँढने की कोई कोशिश नहीं की—घबराते हुए हेमा बोली—पिताजी पैसों की चिन्ता नहीं, पर राकेश कहाँ है ? हे भगवान ! पिताजी, मेरा तो दिल काँप रहा है। तीन दिन वह कहाँ रहा होगा, आप कुछ तो करिये।

क्या खाक करूँ। मैं तो कभी भी उसे नहीं खोजता, परन्तु तुम्हारी माँ की अंधी ममता के कारण मुझे भी भटकना पड़ा। शहर का कोना-कोना छान मारा है पर उसका कहीं भी पता नहीं चला। अभी भी हमारे लोग उसके पीछे भटक रहे हैं। मुझे तो जरा भी दुःख नहीं, परन्तु तुम्हारी माँ ने तीन दिन से कुछ नहीं खाया है और न पीया है।

घबराहट के कारण हेमा के ललाट पर पसीने की बूँदें जम गईं, और वह अपनी माँ से लिपट कर फूट-फूट कर रो पड़ी।

हेमा, तुम उस नीच के लिये रो रही हो, परन्तु उस नादान को तुम में से किसी से भी प्यार नहीं। इतने में फोन की घंटी बज उठी। फोन हेमा ने उठाया यैस स्पीकिंग—हेमा, तुम कब आई ? दूसरी ओर से आवाज आई।

अभी ही आई हूँ—राकेश, तुम कहाँ गुम रहे, घर में तुम्हारे लिये सभी चिंतित हैं। हेमा से राकेश का नाम सुनकर दोनों पति-पत्नी फोन के करीब आए।

राकेश कह रहा था—हेमा, क्या करूँ, सब पैसे खर्च हो गए, मैं बहुत शर्मिंदा हूँ, पिताजी से डर लग रहा है, कैसे घर में आऊँ।

राकेश, तुम घबराओ नहीं, जो होना था सो हुआ, तुम अब घर आ जाओ, मैं पिताजी को समझा दूँगी।

अच्छा, मैं आ रहा हूँ—राकेश ने फोन क्रेडिल पर रख दिया।

पिताजी, राकेश अति शर्मिदा है, आपके डर से घर में नहीं आ रहा था, माफ कर दीजिये, आइन्दा वह ऐसा नहीं करेगा।

सेठ दीनदयाल की आंखों से क्रोध के मारे अँगारे बरसने लगे और बिना किसी से बोले वह वहाँ से चला गया।

+ + +

अमर ने अपनी रिस्ट वॉच में देखा, छः बजने में पाँच मिनट और थे। माँ, हेमा रास्ते में ही होगी। इतने में मोटर के हॉर्न की आवाज सुनाई पड़ी। माँ, शायद हेमा आ गई है—ऐसा कहकर वह बाहर की ओर लपका। सीता दरवाजे पर खड़ी रही। वह देख रही थी कि अमर ने कार का दरवाजा खोल दिया और हेमा बाहर आई। हेमा के कंधे पर हाथ रख कर अमर आ रहा था। हेमा ने लजाते हुए अपनी साड़ी का आँचल सर पर रख दिया और झुक कर सीता के पाँवों को छू लिया। सीता ने प्यार से उसे अपनी बाँहों में ले लिया। आओ बेटी—तीनों कमरे में प्रविष्ठ हुए। बेटी, शर्मा क्यों रही हो—उसकी ठोड़ी को ऊपर उठाते हुए सीता बोली—अब तो तुम ही इस घर की मालकिन हो। हेमा मुस्करा पड़ी, अच्छा तुम दोनों आपस में बातें करो तब तक मैं चाय बना कर लाती हूँ।

माँजी, ऐसा कैसे हो सकता हैं ? आप तो हमें शर्मिदा कर रही हैं। चाय मैं बनाती हूँ।

नहीं बेटी, नई दुल्हन को काम करना शोभा नहीं देता। चाय मैं बनाकर लाती हूँ, फिर तो हमेशा तुम्हें ही घर का काम-काज करना पड़ेगा।

हेमा शर्मा गई और बोली—माँजी, रहती तो अपने माँ-बाप के घर हूँ, पर असली घर तो मेरा यहाँ है, फिर अपने घर का काम करने में क्या हर्ज है।

हां मां, हेमा ठीक कह रही है। तुम भला चाय क्यों बनाओ—अब तुम्हारी बहू जो है। अब तक तुमने बहुत काम किये हैं। आज से तुम कोई काम नहीं करोगी। क्यों हेमा ? हेमा की ओर देखते हुए कहा।

अगर तुम दोनों ऐसा ही चाहते हो तो ठीक है।

हेमा ने चाय बनाई। कुछ नाश्ता वगैरह तैयार किया और सब एक टेबुल पर सजा कर रख दिया।

सीता उन दोनों को देख कर अति प्रसन्न हो रही थी।

अमर बोला—हेमा, कल तुम जल्दी ही आ जाना, खाना वगैरह तुम्हें ही पकाना है।

हाँ मैं आ जाऊँगी—मुस्करा कर हेमा ने उत्तर दिया।

मगर तुम्हारा दिमाग तो खराब नहीं हुआ है। ऐसा कैसे हो सकता है ?

इसमें हर्ज ही क्या है माँजी ?

नहीं बेटी, तुम घर का काम काज अभी नहीं करोगी। जब कायदे से दुल्हन बनकर आओगी तब की बात और है।

माँजी, काम करने में क्या है ? दूसरा यहाँ का काम-काज करने में मुझे आनन्द मिलता है।

ठीक है, कुछ वक्त के लिये मैं तुम्हें इस आनन्द से वंचित रखती हूँ।

हेमा और अमर दोनों हँस पड़े। हेमा ने अमर की ओर देखा। अच्छा हेमा, जैसा माँ कहे—ठीक है।

बेटी, तुम सिर्फ शाम की चाय आकर यहाँ बनाना, तुम चाय बहुत अच्छी बनाती हो।

माँजी, आप का हुक्म सर आँखों पर। हमारा तो कर्तव्य है आप की सेवा करना।

माँजी, अब मुझे जाना चाहिये। काफी समय हो गया है।

अमर, हेमा को घर तक पहुँचा आओ।

हेमा ने जाते समय एक बार फिर सीता के पाँवों को छुआ। सीता ने उसे अपनी बाँहों में लेकर उसके ललाट को चूम लिया। बेटी, जी तो नहीं चाहता कि तुम्हें जाने दूँ, पर क्या करूँ तुम्हें रोक भी तो नहीं सकती। हर बात कायदे से ही अच्छी लगती है। बेटी मुझ में अब दम नहीं रहा कि घर का काम-काज कर सकूँ, पर क्या किया जाए। समाज में रहते हैं तो उसके रीति-रिवाजों को भी मानना पड़ेगा। समाज के बन्धनों का उल्लंघन करना शोभा नहीं देता। अच्छा बेटी, अब तुम जाओ, बहुत समय हो गया है। अमर, हेमा बेटी को सीधा घर तक पहुँचा देना, घूमने-फिरने की कोई आवश्यकता नहीं।

दोनों मुस्करा कर चले गये।

सीता सीधी कमरे में चली गई और अपने पति की तस्वीर के सामने हाथ जोड़ कर कहने लगी—देखी आपने, बहू रानी कितनी सुन्दर है। आप दोनों को आशीर्वाद दीजिये। सीता ने तस्वीर को एक बार फिर प्रणाम किया और चली गई, रसोई घर में।

\+ + +

हेमा बेटी!

आई.........पिता जी। अपने जूड़े को बनाते हुए हेमा कमरे में आई जहाँ उसके माँ-बाप बैठे हुए थे।

चाय की एक चुस्की भरते हुए दीनदयाल बोले—बेटी मुझे तो मालूम नहीं, परन्तु तुम्हारी माँ कह रही है कि करीब एक माह हो गया है कि तुम शाम की चाय नहीं पिया करती हो (प्याले को टेबिल पर रख दिया)।

हां पिताजी, माँ सच कह रही हैं। बात दरअसल यह है कि मेरी एक सहेली है, बिचारी होस्टल में ही रहती है। हम एक दूसरे को बहुत चाहते हैं। मैं हमेशा उसके यहाँ शाम की चाय पिया करती हूँ।

हेमा झूठ बोल गई।

बेटी, अगर ऐसी बात है तो कभी अपनी सहेली को घर लेके आओ, हम भी तो देखें।

पिता जी, किसी दिन मैं उसे अवश्य ले आऊँगी। इम्तहान के दिन हैं, वह अब आ नहीं सकती। हम दोनों साथ-साथ चाय भी पीते हैं और परीक्षा की तैयारियां भी करते हैं।

देखा, मेरी बिटिया रानी को—धरती की ओर देखते कहा—लाखों में एक है।

अच्छा पिता जी मैं अब जाऊँ ?

हाँ-हाँ तुम जा सकती हो, बेटी घर में जल्दी आने की कोशिश करना। हेमा ने कोई उत्तर नहीं दिया तथा मुस्करा कर चली गई।

सुनिये, हेमा अब तो सयानी हो गई है।

मैं सिर्फ सुनता ही नहीं, देखता भी हूँ और सोचता भी हूँ।

अच्छा तो आपने क्या सोचा है ?

धरती तुमने जिस लड़के का जिक्र किया था, वह हमें बहुत पसन्द है। मैंने लड़के के पिताजी को लिख भी दिया है कि हम दो दिन के अन्दर उत्तर देंगे।

लड़का बड़ा होनहार है। विलायत का सारा करोबार वह स्वयं ही सम्भालता है। अपनी हेमा वहाँ पर राज करेगी।

धरती, लड़का अच्छा है या बुरा, मुझे उससे कोई मतलब नहीं। मैंने उन्हें लिख तो दिया है, पर फिर भी एक बार हेमा की राय लेना मुनासिब होगा। उसकी राय जानना अति आवश्यक है।

आप भी कैसी बातें करते हैं ! हेमा भला क्या राय देगी। लड़का अच्छा है, घराना बड़ा है फिर भला हेमा इन्कार कैसे कर सकती है। मैं तो चाहती हूँ कि आप यह रिश्ता तय कर ही लीजिये, ऐसे रिश्ते बार-बार नहीं आते।

शादी हेमा को करनी है और राय तुम दे रही हो। मैं तुम्हारी राय से सहमत नहीं। मैं कल ही इस की बाबत हेमा से पूछूँगा।

ठीक है, आप को जैसा ठीक लगे करिये, मैं कौन होती हूँ राय देने वाली।

अरे तुम तो नाराज़ हो गईं ।

आप क्या समझते हैं कि हेमा सिर्फ आप की ही बेटी है—मुँह बिगाड़ते हुए बोली । हेमा को मैंने जन्म दिया है आपने नहीं, माँ की ममता क्या होती है, आप क्या जानें ।

जन्म दिया है या नहीं—ऐसी बात मत करो । राकेश को तो तुमने जन्म नहीं दिया । फिर उसके लिये क्यों इतना तड़पा करती हो । सुनो धरती—मुस्कराते हुए दीनदयाल बोले—मैं तुम्हें पहले भी कह चुका हूँ कि हेमा मेरे हिस्से की है और राकेश तुम्हारे हिस्से का । तुम राकेश के ही विषय में सोचो, बाकी हम दोनों बाप-बेटी पर छोड़ दो । हम अपना बुरा-भला स्वयं ही देख लेंगे । इतना कह कर वे खिल-खिला कर हँस पड़ें । नाराज़ होकर जैसे ही धरती वहाँ से आने लगी कि दीनदयाल ने उसके बाजू को पकड़ लिया—क्यों रानी, बुरा मान गई ?

छोड़िये मेरी बाँह को, मैं जाती हूँ ।

हमने क्या कहा कि तुम बिगड़ गई ? सेठ दीनदयाल अब भी मुस्करा रहे थे ।

आप कभी तो सोच-समझ कर बात किया करें । जो जी में आता है कह डालते हैं ।

हमने कहा ही क्या है ?

इतना सब कह डाला, क्या अब भी कहने को कुछ रह गया है ? आप को राकेश के लिये बुरा नहीं कहना चाहिये । आप राकेश को खामखाह गलत समझ रहे हैं । पैसे खर्च करता है तो अपने घर के करता है, कहीं डाका तो नहीं मारता । राकेश में अभी तक बचपन है, उसके कन्धों पर जब बोझा पड़ेगा तो स्वयं ही ठीक हो जाएगा । मैं चाहती हूं कि राकेश की सगाई कर दी जाय, फिर वह सीधी राह पर आ जाएगा ।

सगाई कर दी जाए--मुंह को टेढ़ा करके सेठ दीनदयाल बोले—तुम चाहती हो कि किसी पराई लड़की का हाथ इस निखट्टू के हाथ सौंप दूं ? मैं ऐसा अत्याचार किसी की बेटी पर नहीं कर सकता, आखिरकार हम भी तो बेटीवाले हैं। तुम पागल हो पागल। जब तक वह सीधी राह पर नहीं आएगा तब तक ऐसा सोचना बेवकूफी के सिवाय और कुछ नहीं। तुम बेकार में खुद का भी दिमाग खराब करती हो और मेरा भी। मुझे ऐसी बेकार बातों में कोई दिलचस्पी नहीं। अब और वहाँ पर रुकना धरती को अच्छा नहीं लगा और वह उठकर चली गई।

तुम आ गई बेटी—हेमा को अपनी बाँहों में लेते हुए सीता बोली। बेटी, तुम्हारे हाथ की बनी हुई चाय पीने के लिये जबान मचलती रहती है। हेमा हँस पड़ी—अभी बनाकर लाती हूँ।

तीनों ने साथ-साथ चाय समाप्त की। मां, एक बात कहूँ ?

हाँ कहो !

बात यह है कि आज मैं और हेमा पिक्चर देखना चाहते हैं, अपनी गुद्दी को खुजलाते हुए अमर बोला।

यह सिर्फ तुम्हारी ही राय है या हेमा बेटी की भी—सीता ने हेमा की ओर देखा--क्या अमर सच कह रहा है ?

हां मांजी, मैंने ही उनसे कहा था—मुस्कराते हुए वह बोली।

तो ठीक है। ये लो अमर पैसे।

नहीं मांजी ! यह आप क्या कर रही हैं। मेरे पास पैसे हैं।

बेटी वो तुम्हारे नहीं, तुम्हारे घर वालों के हैं। तुम इस घर की बहू हो। तुम्हारा भी तो इस घर पर कुछ हक है। बेटी, सास मां के समान हुआ करती है। उसका कर्त्तव्य होता है कि अपनी बहू को सुखी रखे, परन्तु मैं तो बेटी तुम्हारे लिये कुछ भी नहीं कर सकी।

ऐसा मत कहिये मांजी ! आप को तो पाकर मैं स्वयं को अति भाग्यशालिनी समझती हूँ। शिकायत तो मुझे स्वयं से है कि मैं अभी तक आपकी सेवा करने का सौभाग्य नहीं प्राप्त कर सकी हूँ ?

अच्छा-अच्छा ! अब जाओ बेटी, चिन्ता मत किया करो। भगवान सब ठीक कर देगा । अमर, हेमा का ख्याल रखना ।

हेमा कार ड्राइव कर रही थी, अमर उसके पास ही बैठा था। हेमा, हम कब तक इस प्रकार चलेंगे ? कुछ तो सोचो !

क्या सोचूँ ? अमर, कुछ भी तो समझ में नहीं आता । किस प्रकार घरवालों से यह सब कहूँ ।

कल मां कह रही थी, कि वह तुम्हारे मां-बाप से मिले, परन्तु मैंने उसे मना कर दिया । मैं चाहता हूँ यह समस्या तुम ही सुलझाओ ।

अमर, वो तो ठीक है, परन्तु घर वालों को यह सब बताने की हिम्मत ही नहीं होती । हेमा ने गाड़ी को बाईं ओर मोड़ लिया । उसने बैक व्यू मिरर से देखा कि एक कार कब से उनके पीछे आ रही है । अमर, ऐसा लगता है कि हमारी कार का पीछा किया जा रहा है । अमर ने पीछे मुड़ कर देखा कि वास्तव में एक कार उनकी कार से कुछ ही फासले पर आ रही थी । कौन हो सकता है— अमर बुदबुदाया । क्या मालूम—हेमा ने कार तेज कर दी । मदन ने भी अपनी कार की रफ्तार और तेज कर दी और बोला—राकेश मुझ से जितना हो सका मैंने तुम्हारे लिये किया, अपनी दोस्ती निभाई, परन्तु मैं और कुछ अब नहीं कर सकता । आखिरकार मैं भी तो होटल का नौकर ही हूँ । बॉस को बहुत कुछ समझाया, परन्तु वे नहीं माने । अब तुम्हें दो कामों में से एक तो करना ही पड़ेगा । या तो तुम अस्सी हजार रुपये जो तुमने होटल से उधार लिये हैं वापस कर दो या फिर लिलि से शादी करो । इसके सिवाय और कोई चारा नहीं ।

मदन, सिर्फ मुझे पन्द्रह दिन की मुहलत चाहिये । मैं सोच-समझ कर जवाब दूंगा ।

नहीं राकेश ऐसा नहीं हो सकता । तुम बॉस के स्वभाव को नहीं जानते । अगर तुम्हें लिलि से शादी नहीं करनी थी तो फिर उसकी मासूम जिन्दगी से क्यों खेले ।

मदन………तुम उसे मासूम कहते हो ? वह तो एक नागिन है। कमबख्त मुझे तबाह करने पर तुली हुई है। मैं दावे के साथ कहता हूँ कि जो बच्चा उसके पेट में है, मालूम नहीं किसका है, क्योंकि मेरी ही तरह और कई उसके दोस्त हैं। फिर भला मैं उससे शादी कैसे कर सकता हूँ।

अच्छा ! मान लिया कि तुम्हारा कोई दोष नहीं, परन्तु कानून तो नहीं मानेगा। उसे तो सबूत चाहिये और लिलि के पास तुम्हारे ऐसे सबूत हैं कि तुम नहीं सिद्ध करसकोगे कि वह बच्चा तुम्हारा नहीं। राकेश अस्सी हजार हम लिली को उसका मुँह बन्द करने के लिये दे रहे हैं। अगर उसने मुँह खोल दिया तो हमारी होटल की बदनामी होगी और बॉस ऐसा नहीं चाहते। तुमने होटल से रुपये उधार लिये हैं, वो तो तुम्हें देने ही हैं और हम तुम्हारे रुपये लिली को दे देंगे, ताकि उसकी जबान बन्द रहे। तुम तो दोनों और से फायदे में ही हो।

मदन, वो तो सब ठीक ही है, पर सवाल यह है कि इतनी बड़ी रकम मैं कहाँ से ले आऊँ। प्लीज मदन, कुछ तो करो वरना मैं कहीं का नहीं रहूँगा।

\+ + +

हेमा देखो उस कार में तो मदन है ! अचम्भा प्रकट करते हुए अमर बोला।

मदन का नाम सुनकर हेमा काँप गई। उसने पीछे मुड़कर देखा, राकेश मदन के साथ बैठा हुआ था। अमर, अच्छी तरह देखो—मदन के साथ और कौन बैठा हुआ है ?

अरे यह तो राकेश है। तो क्या दोनों………

राकेश की मदन के साथ कैसी दोस्ती ?

राकेश का नाम सुनकर वह डर गई। उसका शक ठीक ही निकला।

हेमा गाड़ी की रफ्तार तेज कर दो। कहीं राकेश तुम्हें मेरे साथ न देख ले।

हेमा ने गाड़ी को फास्ट कर दिया, कुछ ही पल में मदन की कार काफी पीछे रह गई। हेमा की कार हवा से बातें करती भागी जा रही थी।

हेमा की गाड़ी को फास्ट दौड़ता हुआ देख कर मदन ने भी अपनी गाड़ी फास्ट कर दी, क्योंकि वह चाहता था कि राकेश, हेमा के साथ अमर को बैठा हुआ देख सके। राकेश, मैं मजबूर हूँ पन्द्रह दिन तो क्या एक दिन भी मुहलत नहीं दे सकता। कल तुम्हें अस्सी हजार देने ही होंगे।

मदन, दोस्ती के खातिर कुछ तो रिआयत करो, इसके बदले और कोई काम बताओ मैं अपनी जान तक लड़ा दूंगा।

मदन ने एक सिगरेट जलाई और एक लम्बा सा कश लेकर धुँआ राकेश के मुँह पर छोड़ दिया। राकेश, अगर तुम मेरा एक और काम कर दो तो मैं तुम्हें इन तमाम झंझटों से मुक्ति दिला सकता हूँ।

हाँ-हाँ कहो, क्या काम है, बड़े उतावले पन से राकेश बोला (उसे बचने के लिये जैसे कोई रोशनी नजर आई हो)।

काम तो अति सरल है, परन्तु मैं नहीं कर सकता। अगर तुम कोशिश करो तो अवश्य सफल हो जाओगे।

जल्दी कहो, क्या काम है? राकेश का उतावलापन बढ़ता जा रहा था।

तो सुनो, मैंने एक बार तुम से कॉलेज की एक लड़की का जिक्र किया था जिसका नाम हेमा है। मैं चाहता हूँ कि तुम सात दिन के अन्दर उसे मेरे यहाँ पहुँचा दो।

नहीं, ऐसा नहीं हो सकता—राकेश बीच में ही चिल्ला पड़ा—मदन, तुम हद से ज्यादा गिरते जा रहे हो। तुम मेरी मजबूरी का नाजायज फायदा उठाना चाहते हो।

राकेश, चिल्लाते काहे को हो। हेमा से तुम्हारी सहानुभूति क्यों ? क्या तुम उसे जानते हो ? ऐसा कह कर मदन राकेश के चेहरे की ओर देखने लगा।

राकेश पसीना-पसीना हो गया, वह क्या जवाब देता। बोला—मदन जब मैं उस लड़की को जानता ही नहीं तो मैं ऐसा कैसे कर सकता हूँ।

राकेश तुम्हारे लिये यह काम अति सरल है। तुम हेमा को नहीं जानते और मैं उसे अच्छी तरह जानता हूँ। मैं पहले उसे एक शरीफ लड़की समझता था, परन्तु बाद में पता चला कि वह शरीफ नहीं एक गिरी हुई लड़की है। मैं अगर अक्ल से काम लेता तो उसे पा सकता था, परन्तु मैं रहा बेवकूफ, भावुकता में बह गया और वह कमबख्त मुझ पर रौब जमा पाई।

तुम कैसे कह सकते हो कि वह गिरी हुई लड़की है ? अपने मुँह का पसीना पोंछते हुए राकेश ने पूछा।

वह चंडाल कई लड़कों को चकमा दे चुकी है। सबसे झूठा प्यार जता कर खुद तो साफ निकल जाती है, बुरी हालत होती है उस गरीब की जो प्यार में धोखा खाकर जीते जी जलता रहता है।

क्या बकते हो ! ऐसा नहीं हो सकता—राकेश हाँफ रहा था।

तुम मुझ पर विश्वास नहीं करोगे। अगर सबूत चाहते हो तो सामने उस जाती हुई कार में देखो, उसकी बगल में एक खूबसूरत लड़का बैठा हुआ है। अपनी वहशत मिटाने के लिये अब इस लड़के पर प्यार के झूठे डोरे डाल रही है। इसे भी बर्बाद करके छोड़ेगी। बेचारा··· ।

राकेश ने आँखें फाड़-फाड़ कर उस जाती हुई कार को देखा तो देखता ही रह गया। तो क्या हेमा इतनी गिरी हुई है। हकीकत को वह स्वयं अपनी आँखों से देख रहा है। हेमा की कार आगे निकल गई। मदन ने अपनी कार धीमी कर दी, उसका तीर ठीक निशाने पर पहुँचा। हेमा की कार राकेश की आँखों से ओझल हो गई।

हेमा अगर इतनी गिरी हुई है तो उसे ऐसी नीच बहन की कोई जरूरत नहीं। वह अब पिता जी को दिखा देगा कि जिसका वे हर रोज बखान करते रहते हैं, वह कहाँ तक ठीक है। उसे जिस दिन का इन्तजार था वह आ ही गया। अगर वह इतनी गिरी हुई है तो मैं क्यों चुप रहूँ। मैं उसे पिताजी की नजरों में गिराकर ही रहूँगा। पिताजी ऐसा देखकर उसे जान से ही मार डालेंगे या घर से निकाल देंगे। फिर तो वह स्वयं ही पूरी जायदाद का वारिस हो जाएगा—राकेश की घबराहट दूर हो चुकी थी।

मदन, मुझे तुम्हारी शर्त मन्जूर है।

खुश रहो! बरखुरदार, मुझे तुमसे यही आशा थी। बस राकेश, तुम अपने दोस्त का इतना सा काम कर दो, बाकी लिलि की बच्ची से मैं निपट लूँगा।

—

१०

बेटी, मैंने तुम्हें किसलिये बुलाया है, तुम्हें शायद मालूम नहीं। अगर चाहता तो मैं यह कार्य तुमसे बिना पूछे भी कर सकता था, परन्तु मैं उन पिताओं में से नहीं हूँ जो समाज के झूठे रीति-रिवाजों की आड़ लेकर अपने बच्चों को तबाह करने से नहीं चूकते। ऐसा करने वाले या तो खुदगर्ज हुआ करते हैं या डरपोक।

पिताजी, मैं आपका मतलब नहीं समझी।

बेटी, मैंने कहा ही क्या है कि तुम समझ जाओ; मैं तो सिर्फ बयान ही कर रहा था। अच्छा तो बेटी, मैं तुम से कुछ सवाल करूंगा और उनके उत्तर तुम्हें अपनी मर्जी के अनुसार ही देने होंगे। ऐसा मत सोचना कि तुम्हारे उत्तर से हम नाराज होंगे। इसलिये गलत उत्तर देकर हमें खुश करना चाहो—ऐसा भी मत करना। एक बार फिर कहता हूँ कि उत्तर तुम अपनी मर्जी से दोगी न कि हमारी मर्जी से। मुझे तुम पर पूरा भरोसा है कि जो तुम उत्तर दोगी, ठीक ही दोगी।

हाँ बेटी ! तुम जैसा चाहोगी हम वैसा ही करेंगे—धरती ने कहा।

बेटी, हम चाहते हैं कि यह परीक्षा देकर तुम आगे अध्ययन करना छोड़ दो।

पिताजी, मैं भी ऐसा ही चाहती हूँ।

धरती, सुना तुमने मेरी बेटी का उत्तर। हमें अपनी बिटिया पर बहुत नाज है। हेमा बेटी, हर बेटी पराया धन ही हुआ करती है। ऐसा बरसों से ही होता आ रहा है—जब से यह सृष्टि बनी है। हम चाहते हैं कि तुम्हारी सगाई कर दी जाय।

ऐसा सुन कर हेमा शर्मा गई।

बेटी, अपने माँ-बाप से शर्मा रही हो ? तुमसे हम नहीं पूछेंगे तो और कौन पूछेगा ?

हाँ-हाँ बेटी, जवाब दो। क्या तुम राजी हो कि तुम्हारी सगाई कर दी जाय ? हेमा के सर पर बड़े स्नेह से हाथ फेरते हुए धरती बोली।

हेमा ने सोचा, यही मौका है सब कुछ कहने का। इससे और अच्छा अवसर नहीं आ सकता, परन्तु वह घबरा रही थी कि माँ-बाप पर क्या असर पड़ेगा।

मां, आप मेरी सगाई करना चाहती हैं, इसका मतलब आपने लड़का भी देख लिया होगा, परन्तु मैं उस लड़के से शादी नहीं कर सकती।

क्यों बेटी, क्या तुम उसको जानती हो ?

नहीं पिताजी, मुझे तो मालूम ही नहीं कि आप किस लड़के के विषय में कहना चाहते हैं।

तो फिर क्या बात है ?

हाँ-हाँ, कहो बेटी—धरती बोली।

बात यह है कि ····बात यह है कि········इतना ही हेमा कह पाई। वह डर रही थी।

बेटी, घबराओ नहीं। जो कुछ कहना चाहती हो, बेधड़क कह डालो।

हेमा का साहस ही नहीं बँध रहा था कि हकीकत कह डाले।

बेटी, जवाब क्यों नहीं देती हो ? कुछ तो बोलो।

हेमा बेटी, मेरी ओर देखो। हेमा ने अपनी आँखें अपने पिताजी की आंखों से मिलाई। बेटी, मैं तुम्हारा बाप हूँ। तुम्हें नहीं मालूम कि मैं तुम्हें कितना चाहता हूँ। काश ! तुम महसूस कर सकतीं। बेटी, मैं कभी भी तुम्हें दुखी नहीं देख सकता। अगर आजमाना चाहो तो

आजमा कर देख लो कि मैं अपनी बेटी की खुशी के लिये अपनी जान भी दे सकता हूँ ।

अपने पिता से ऐसा सुनकर हेमा उनसे लिपट गई और फूट-फूट कर रो पड़ी । पिताजी, ऐसा मत कहिए । जान जाए आपके दुश्मनों की । इसमें रोने की क्या बात है ? मत रो बेटी—हेमा के सर पर प्यार से हाथ फेरते हुए पिता ने कहा । हेमा अभी भी रो रही थी । कहो बेटी, क्या कहना चाहती हो ? रो मत पगली । जब तक मैं जिन्दा हूँ, तुम्हें घबराने की कोई आवश्यकता नहीं । तुम पर उंगली उठाने वाले को मैं जीते जी जला डालूंगा । तुम जो कुछ कहना चाहती हो, बिना किसी संकोच के कह डालो । अपने होठों पर जीभ घुमाते हुए हेमा ने कहा पिताजी मैं शादी तो करना चाहती हूँ पर किसी ओर से । इतना कह कर हेमा नीचे फर्श की ओर देखने लगी ।

कौन है वह बेटी ? साफ-साफ कहो । मैं तुम्हारे साथ पूरा-पूरा न्याय करूंगा ।

हेमा से यह सुन कर धरती जैसे कांप ही गई । वह चुपचाप उन दोनों की ओर देखने लगी ।

पिताजी, एक लड़का है, जिसका नाम अमर है । मैं उससे प्यार करती हूँ ।

क्या वह भी तुमसे प्यार करता है ? दीनदयाल की भौंहे चढ़ गईं ।

हां पिताजी, आप मुझ पर भरोसा रखिए । मैं कभी भी ऐसा काम नहीं करूंगी जिससे हमारे खानदान का नाम खराब हो । यह सब मैंने सोच-समझ कर किया है । अमर बी. ए. फाइनल में पढ़ता है । उसकी सिर्फ माँ ही है । वे बहुत गरीब लोग हैं । बड़े खानदान से ताल्लुकात रखते हैं, परन्तु कुदरत को यही मंजूर था । उनके पास सब कुछ है जो एक इन्सान के पास होना चाहिये, एक ही कमी है जिसे दुनिया दौलत कहती है । उनके पास ऐसा खजाना है जो आज-कल शायद ही किसी के पास हो । वह है उनकी इन्सानियत, उनका कैरेक्टर उनका सरल स्वभाव ।

बस-बस बेटी, मैं समझ गया और मुझे तुम पर पूरा भरोसा है कि तुम ऐसा-वैसा लड़का नहीं चुन सकती। जो तुम्हारी पसन्द, वह मेरी पसन्द।

पिता जी····। ऐसा कहकर प्यार से हेमा अपने बाप से फिर लिपट गई। बेटी, अगर उसके पास दौलत नहीं है तो क्या हुआ। यह मेरी इतनी सारी दौलत किसकी है, तुम्हारी ही तो है। मुझे भी एक ऐसे दामाद की आवश्यकता थी।

× × ×

भाई साहब, कुछ तो खाइये।

नहीं बहन, मैं खा नहीं सकता। हमारे खानदान में यह प्रथा है कि अपनी बेटी के घर का जल तक नहीं लेते, परन्तु जब आप कहती हैं तो मुँह मीठा कर लेता हूँ—ऐसा कहकर सेठ दीनदयाल ने प्लेट से एक बर्फी का टुकड़ा उठाकर अपने मुँह में रख लिया। बहन, मैं आज अति प्रसन्न हूँ कि आप जैसे हमारे संबंधी हुए हैं। आज से हेमा आपकी हुई और अमर हमारा—क्यों बेटे ठीक है न? अमर के कंधे पर प्यार से हाथ रखते हुए सेठ दीनदयाल बोले—मुझे आप और आपके बेटे पर फख्र है।

भाई साहब, यह तो आपका बड़प्पन है वरना हम किस लायक हैं।

ऐसा मत कहिये बहन, दौलत से इन्सान बड़ा नहीं हो जाता। इन्सान का बड़प्पन होता है उसकी इन्सानियत से, उसकी अच्छाइयों से। दौलत तो एक धोखा है। हमें तो गर्व हो रहा है कि अमर जैसा होनहार दामाद हमें मिला है। हेमा की हमेशा मुझे चिन्ता रहा करती थी, परन्तु अब सुख की नींद सो सकूँगा। अब दुनिया की सारी चिन्ताओं से दूर हूँ। अच्छा, अब हम लोग आपसे इजाजत चाहते हैं, नमस्ते—दोनों पति-पत्नी ने हाथ जोड़ दिये।

बैठिये तो सही।

नहीं बहन, काफी समय हो चुका है। अब हमें चलना ही चाहिये।

दोनों माँ-बेटे उन्हें दरवाजे तक छोड़ने गये ।

× × ×

आज हेमा का जन्म दिन है । सभी आमन्त्रित लोग धीरे-धीरे आ रहे हैं । पिता जी, अमर अभी तक नहीं आया ? उतावलेपन से हेमा ने पूछा । आ जायगा बेटी, देखो वो आ गया ।

नमस्ते पिताजी, नमस्ते माता जी—ऐसा कहकर अमर धरती और सेठ दीनदयाल के पैरों पर झुक गया ।

जीते रहो बेटे । बहन नहीं आई बेटे ?

आज उनका पूजन है । माताजी इसलिये नहीं आ सकीं । आप सबको मुबारक बाद दी है । यह लो हेमा, एक तोहफा आगे बढ़ाते हुए अमर बोला ।

थैंक यू अमर ।

आओ, अमर बेटे ।

राकेश, इनसे मिलो । ये अमर हैं ।

'हैलो !' कहकर दोनों ने हाथ मिलाया । राकेश, क्या मुझे भूल गए ? हम दोनों बचपन के दोस्त हैं ।

ओ....अमर तुम ! वेरी ग्लैड टू मीट यू—कहो, कैसे हो ? राकेश बात तो अमर से कर रहा था, परन्तु घमंड से चूर वह इधर-उधर देख रहा था । अच्छा अमर, तुम बैठ जाओ । मैं बहुत बिजी हूँ—ऐसा कहकर वह चला गया ।

राकेश पहचान गया कि उस दिन हेमा के साथ अमर ही था । उल्लू का पट्ठा यहां तक पहुँच गया है ? वह दूर खड़ा अमर को हेमा के साथ हँस-हँस कर बातें करते देख रहा था । उसने पूछा —पिताजी, आप अमर को कैसे जानते हैं ?

बेटे, मैं तो उसे नहीं जानता था । कुछ समय पहले हेमा ने मुझे उससे मिलाया था । बड़ा होनहार लड़का है । आज किसी आवश्यक काम के लिये इसे यहां खास तौर से बुलाया गया है ।

अमर की तारीफ सुनकर राकेश मन ही मन जल रहा था। उसका बस चलता तो अमर को धक्के देकर बाहर निकाल देता।

लेडीज़ एण्ड जैन्टलमैन……। सबका ध्यान सेठ दीनदयाल की ओर गया। वे कह रहे थे—इस खुशी में एक और खुशी सम्मिलित है जिसे सुनकर आप सब उछल पड़ेंगे।

सेठजी, जल्दी ही सुनाइये उसे जानने के लिये हमारे दिल मचल रहे हैं—वहां पर उपस्थित कुछ लोगों ने एक ही स्वर में कहा।

साइलेन्स प्लीज़ साइलेन्स—सेठ दीनदयाल मुस्करा रहे थे। आप सबको सुनकर अति प्रसन्नता होगी कि आज से दो दिन पहले हम हेमा की सगाई कर चुके हैं।

हेमा की सगाई हो गई! सबने एक दूसरे.के चेहरे में देखते हुए बुदबुदाया।

हेमा की सगाई हो गई और मुझे पता भी नहीं—राकेश क्रोधित हो उठा—कौन हो सकता है, कमबख्त ने मौत को दावत दी है।

कौन है वह भाग्यवान—एक बार फिर कई आवाजें आईं।

आप सब लोग शान्ति रखिये, भाग्यवान तो हम हैं जिन्हें ऐसा गुणवान दामाद मिला है। बेटे, करीब आओ—ये हैं अमर कुमारजी, हेमा के होने वाले वर। अमर ने हाथ जोड़कर सबको प्रणाम किया।

सबने सेठजी और धरती को बधाई दी।

हेमा की सहेलियों ने उसे और अमर दोनों को घेर लिया।

एक-एक कर अमर सब से हाथ मिलाता गया।

अमर बेटे, इनसे मिलो। ये हैं श्री चौधरी, यहां के कमिश्नर और हमारे बड़े भाई। इनकी इजाजत के बिना हम कुछ भी नहीं कर सकते हैं। हेमा की सगाई की इजाजत भी हमें इनसे लेनी पड़ी थी।

नमस्ते अंकल! ऐसा कहकर अमर उनके पैरों पर झुक गया।

जीते रहो बेटे—चौधरी साहब ने अपनी एक बांह हेमा के गले में डाली और दूसरी अमर के गले में और बोले—हेमा बेटी, हम तुम्हारी पसन्द की दाद देते हैं। हेमा और अमर दोनों शर्मा गए। अमर बेटे,

हेमा है तो दीनदयाल की बेटी, परन्तु मैं उसे अपनी ही बेटी समझता हूँ। यह मेरी ही गोदी में खेल कर बड़ी हुई है। मेरा इसके प्रति मोह है, इसका खयाल रखना। दीन दयाल....

कहिये भाई साहब।

सुनो, हेमा की शादी मेरे घर पर ही होगी।' मैं अपने हाथों से रानी बिटिया को विदा करूँगा। शादी का सारा खर्चा मैं ही करूँगा।

तुमको जैसा ठीक लगे करो। हेमा तो तुम्हारी ही बेटी है। मैं कौन होता हूँ, तुम्हारी बात में दखल करने वाला।

——

११

दोनों गिलासों में बाकी शराब उडेलते हुए मदन बोला—राकी, तुमने सात दिन की मुहलत ली थी। उसमें से तीन दिन तो बीत गए, परन्तु तुमने अब तक कुछ भी नहीं किया है। ठीक है, चार दिन तक और इन्तजार कर लूँगा। मदन ने गिलास की पूरी शराब गले के अन्दर उतार दी—कमबख्त ने बहुतों को धोखा दिया है। तुमने भी तो उस दिन देखा था कि वह किसी और के साथ थी। समझ में नहीं आता, नीच ने कैसे सगाई करली। जरूर इसमें भी उसका कोई बड़ा सा मतलब होगा वरना इस प्रकार के बन्धनों से उसे कोई दिलचस्पी नहीं। राकी, मैं तुम्हारा दोस्त हूँ। एक दोस्त के नाते मैंने तुम्हारे साथ बहुत कुछ किया और अब तुम्हारी बारी है। अब तुम अपना वायदा निभाओ। अगर तुम वायदा निभाने में असमर्थ हो तो अभी ही जवाब दे दो ताकि मैं अपना काम शुरू कर दूँ। राकेश, मैं सीरियसली तुम्हें कहता हूँ—अगर तुम मेरा यह काम नहीं कर सके तो ठीक आठवें दिन तुम्हें अस्सी हजार रुपये देने होंगे। अगर यह भी नहीं कर सके तो फिर लिलि से शादी। ये तीनों बातें अपना-अपना मतलब रखती हैं। तीनों में नाकामयाबी एक बड़ा सा खतरा तुम्हारे लिये लाएगी। अंजाम क्या होगा— तुम स्वयं ही सोच सकते हो। मदन ने एक सिगरेट जलाई और लाइटर को अपनी जेब के हवाले करते हुए बोला – अबे ओ मुरदार, क्या सोच रहे हो ? मदन पूरे नशे में था।

मदन, मुझे तुम्हारा वायदा याद है। तुम खामखाह उतावले हो रहे हो। ठीक है, कल हेमा ग्रीन होटल में पहुँच जाएगी। वहाँ से ले जाना तुम्हारा काम।

थैंक यू माई डीयर; यह खुश खबरी पहले बताते तो यह कमबख्त जबान मुँह के अन्दर ही रहती। माफ करना, अगर कुछ बक दिया हो। राकेश ने कोई उत्तर नहीं दिया।

अपने कमरे की ओर जाते हुए पास वाले कमरे से राकेश ने कुछ सुना और वह छिपकर सुनने लगा। उसके मां-बाप किसी बात पर शायद बहस कर रहे थे। राकेश कान लगाकर खड़ा हो गया।

दीनदयाल चिल्ला रहे थे—धरती, तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है। तुम्हारी ये बेकार बातें मैं मानने से इन्कार करता हूँ। यह घर मेरा है, मेरी हेमा का है। इस सारी जायदाद, धन-दौलत की वारिस सिर्फ हेमा ही है, और कोई नहीं। मैं तुम्हारे नीच बेटे को एक कौड़ी तक नहीं दूँगा। ऐसे नीच, अहसान-फरामोश बेटे के साथ मेरा कोई रिश्ता नहीं। हेमा की परीक्षाएँ होने के बाद जल्दी ही हेमा की शादी हो जाएगी। सारे कारोबार का बोझ मैं अमर के कंधों पर डाल दूँगा। वह बड़ा होनहार लड़का है। तुम्हारा राकेश तो उसकी जूती के भी लायक नहीं।

अपने बारे में ऐसा सुनकर क्रोध के मारे राकेश की मुट्ठियां भिंच गईं। वह सतर्क होकर फिर सुनने लगा।

मेरा तो सौभाग्य है कि ऐसा होनहार दामाद मुझे मिला है। मुझे बहुत ही चिन्ता हुआ करती थी कि मेरा इतना बड़ा, करोड़ों का कारोबार कौन सँभाल सकेगा, परन्तु अमर ने मेरी सारी चिन्ताएँ दूर कर दी हैं।

आप कुछ सोचिये भी तो, क्या राकेश यह सब बरदाश्त कर सकेगा ? आपको ऐसा नहीं करना चाहिये। वह अब बच्चा तो नहीं रहा। क्या आप चाहते हैं कि वह हर बात के लिये अमर के सामने हाथ फैलाए।

हाथ फैलाना तो दूर रहा, उसे अमर के सामने नाक तक रगड़नी पड़ेगी।

राकेश से अब और सहन नहीं हो सका। वह सीधा अपने कमरे में चला गया। बूढ़ा चाहता है कि सारी जायदाद उसकी बेटी की रहे। मैं भी देखूँगा कि किस तरह अमर इस घर में आता है। न होगी बाँस और न बजेगी बाँसुरी। हेमा ही नहीं होगी तो वह फटीचर शादी किससे करेगा।

हेमा क्लास में बैठी तो थी, परन्तु सर में दर्द होने के कारण उससे बैठा नहीं जा रहा था। दर्द के मारे उसका सर फटा जा रहा था।

सर, मैं घर जाना चाहती हूँ सिर में बहुत दर्द है।

अच्छा, तुम जा सकती हो।

प्रोफेसर से छुट्टी लेकर हेमा घर को चल पड़ी। आज वह कार नहीं लाई थी। इसलिये रोड पर खड़ी होकर किसी टैक्सी का इन्तजार करने लगी।

राकेश ने रोड पर खड़ी हेमा को दूर से ही देख लिया और अपनी कार लाकर उसने हेमा के पास ही रोक दी।

हेमा—राकेश ने अन्दर बैठे हुए पुकारा।

राकेश, तुम कहाँ से आ रहे हो?

पहले तुम बताओ, यहाँ पर किसलिये खड़ी हो? कार का दरवाजा खोलते हुए राकेश बोला। हेमा राकेश की बगल में ही बैठ गई और बोली—सिर में दर्द था इसलिये कॉलेज से छुट्टी लेकर आ गई।

मैं भी कॉलेज से ही आ रहा हूँ। थोड़ा सा जुकाम हो गया है। ऐसा कहकर उसने एक बनावटी छींक मारी। चलो हेमा, किसी रेस्टोरेंट में चल कर चाय पीएँ, तबीयत कुछ ठीक हो जाएगी।

हाँ, ठीक रहेगा ......चलो चलें।

राकेश ने कार ग्रीन होटल की गेट पर ही रोक दी। दोनों भाई-बहन एक खाली टेबुल के आमने-सामने बैठ गए।

हेमा, क्या सिर में बहुत दर्द है?

हाँ, दर्द के मारे सर फटा जा रहा है—हेमा अपने सिर को दबाने लगी।

मेरे पास सिर दर्द की एक गोली है। तुम खालो—ऐसा कहकर राकेश ने जेब से एक गोली निकाल कर हेमा को दे दी।

क्या आप ही का नाम मिस्टर राकेश है? किसी ने आकर पूछा।

जी हां।

आप को कोई बाहर बुला रहा है।

हेमा, शायद किसी दोस्त ने मुझे यहां पर आते हुए देख लिया है और तुम्हारी वजह से वह शायद इधर नहीं आना चाहता। मैं अभी आ ही रहा हूँ। तब तक तुम गोली खा लेना कुछ आराम मिल जायगा। राकेश चला गया।

हेमा ने एक पानी का गिलास मंगाकर गोली ले ली।

\+ \+ \+

कॉलेज की छुट्टी हो गई। अमर घर जा रहा था कि रास्ते में किसी ने उसे पुकारा—अमर···अमर!!

अमर ने पीछे मुड़कर देखा। अरे! तुम फिरोज, यहाँ कैसे?

बस यूं ही, कहीं जा रहा था कि तुम्हें देख लिया।

कहो, कैसे हो फिरोज?

अच्छा हूँ।

भाभी कैसी है?

अच्छी ही हैं-- मुस्करा कर फिरोज ने उत्तर दिया।

वाह फिरोज, चुपके-चुपके शादी कर ली और हमें मिठाई तक नहीं खिलाई।

अमर, शादी में तुम्हें भी तो इन्वाइट किया था, परन्तु तुम नहीं आए। फिर भी मैं तुम्हें मिठाई अवश्य खिलाऊँगा। शादी की खुशी में नहीं, बेबी की खुशी में। चलो किसी पास वाली होटल में चल कर नाश्ता वगैरह करें।

वाह बेटे ! हम अंकल हो गए और हमें पता ही नहीं चला। बड़े खुशनसीब हो फिरोज कि एक सुन्दर बीवी तुम्हें मिल गई और एक नन्हीं सी गुड़िया भी।

फिरोज मुस्करा पड़ा और बोला—आओ अमर, चलें किसी पास वाली रेस्टोरेंट में।

फिरोज, भूख भी बहुत लग रही है। ग्रीन होटल का मसाला डोसा बड़ा स्वादिष्ट होता है। चलो, वहीं चलें।

दोनों ग्रीन होटल की ओर चल पड़े।

हेमा ने गोली तो खाली, परन्तु पाँच ही मिनट में उसका सिर चकराने लगा। उसे ऐसा लगा जैसे कि उसके हाथ-पाँव शिथिल होते जा रहे हैं। आंखों के सामने अंधेरा छाने लगा। उसका सर जैसे जोरों से फट रहा था। होटल में कई लोग बैठे हुए थे, परन्तु उसे सब धुंधला सा दिखाई पड़ रहा था। पूरा हॉल ही जैसे घूम रहा था। हेमा ने स्वयं को होश में लाने की कोशिश की, परन्तु दो ही पलों में उसका सिर बड़े जोरों से घूमने लगा। वह संभल ही नहीं पाई कि उसका सिर सामने पड़ी टेबुल पर लुढ़क कर गिर पड़ा और इसके साथ ही होटल में हो-हल्ला शुरू हो गया। सब के आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा, अचनाक यह इस लड़की को क्या हो गया ! सब लोग उस टेबुल के इर्द-गिर्द खड़े हो गए। इतने में तीन आदमियों ने वहाँ प्रवेश किया। वे भीड़ को हटा कर हेमा को उठाने लगे। उनमें से एक जो कि शक्ल-सूरत से शरीफ लगता था उस भीड़ की ओर देखते हुए बोला—अक्सर घर में भी इसे इस प्रकार चक्कर आया ही करते हैं। मैं किसी काम से थोड़ा बाहर चला गया था और इसे चक्कर आ गया। कोई पहचान नहीं सका कि वास्तव में हेमा के साथ कौन आया था, क्योंकि सभी अपने में ही व्यस्त थे। इस प्रकार की बड़ी होटलों में पता नहीं चलता कि कौन आता है और कौन जाता है।

यह आप की कौन लगती है ? मैनेजर ने उस अजनबी से सवाल किया।

मेरी बीवी है।

आई सी, तो क्या इन्हें कोई बीमारी है ?

जी हाँ, दुःख प्रकट करते हुए वह अजनबी बोला—इसे अक्सर दौरे पड़ते रहते हैं। इतने में अमर भी फिरोज के साथ वहाँ पर पहुँच गया। होटल में भीड़ देख कर उसने किसी से पूछा—क्या हुआ है ? यहाँ पर इतनी भीड़ कैसे हो गई है ?

एक औरत बैठे-बैठे बेहोश हो गई थी।

आओ फिरोज, देखें तो सही। भीड़ को हटाकर जैसे ही अमर की नजर पड़ी, वह बोल उठा—'हेमा'। ऐसा कहकर वह शीघ्र ही आगे बढ़ा और जो लोग हेमा को उठा रहे थे उन सब को दूर करके उसने हेमा को अपनी बाँहों का सहारा देकर संभाल लिया और घबराते हुए कहा—फिरोज यह हेमा है। पता नहीं, इसे क्या हो गया है ? ऐसा कह कर अमर ने हेमा को अपनी दोनों बाँहों में उठा लिया।

'ऐ मिस्टर' इसे कहाँ लिये जा रहे हो ? उस अजनबी ने चिल्ला कर कहा—शर्म नहीं आती किसी पराई औरत को यूं उठाते हुए। रख दो, वरना जान ले लूंगा।

भले आदमी, यह मेरी मंगेतर है—अमर आगे बढ़ने लगा।

वहाँ पर खड़े लोग ऐसा सुनकर चकित हो गये—कोई कहता है कि वह उसकी बीवी है और कोई कहता है उसकी औरत।

मैनेजर साहब, यह गुण्डा है। आप पुलिस को फोन कीजिये। यह तो मेरी बीवी है—झूठी बौखलाहट अपने चेहरे पर लाते हुए वह अजनबी बोला जो वास्तव में गुण्डा था। ये गुण्डे राकेश के कहने पर मदन ने ही भेजे थे।

यू ब्लडी रास्कल, ऐसा कहकर अमर ने एक लात उस गुण्डे के पेट में दे मारी। एक चीख के साथ वह लुढ़कता हुआ एक कुर्सी पर

जा गिरा। यह देखते हुए एक दूसरे गुण्डे ने अमर पर वार करना चाहा, परन्तु फिरोज ने उसका गला पकड़ कर एक जोरदार मुक्का मुँह पर रसीद किया। गिरते हुए उसका सर टेबिल पर रखे पानी से भरे जग से टकराया। जग टूट गया और उस गुण्डे के सर से खून बह निकला। पहले वाला गुण्डा संभल कर अमर की ओर बढ़ा। अमर ने हेमा को संभाल कर एक कुर्सी पर बिठा दिया और उस गुण्डे पर छलांग लगाई। इस प्रकार उन तीनों गुण्डों के साथ दोनों का घमासान युद्ध छिड़ गया। अमर और फिरोज फुर्ती से गुण्डों पर वार करते रहे। बेचारे लोग चीखते-चिल्लाते इधर-उधर भागने लगे। होटल का मैनेजर दुबक कर एक कोने में छिप गया। होटल का बहुत सा सामान नष्ट हो गया। एक व्यक्ति होटल में आया जिसे देख कर मैनेजर पहचान गया कि असल में उस औरत के साथ यही आदमी आया था। सब गुण्डे भाग खड़े हुए। अमर, यह अचानक क्या हो गया ? अनजान बनता हुआ राकेश बोला।

मैं यहाँ पर आया, तो देखा कि हेमा बेहोश पड़ी थी और वे गुण्डे इसे ले जाना चाहते थे। अच्छा हुआ कि मैं वक्त पर पहुँच गया, गुण्डे इन सब लोगों को बेवकूफ बना ही चुके थे।

हेमा, अब कैसी हो ? उसके ललाट पर हाथ रखते हुए अमर ने पूछा।

ठीक हूँ अमर, अगर तुम वक्त पर नहीं पहुँचे होते तो गुण्डे मुझे ले ही जाते। भगवान का लाख-लाख शुक्र है।

\+ + +

'अमर बेटे'—उस कमरे में प्रवेश करते हुए दीनदयाल बोले—आज मैं तुमसे बहुत खुश हूँ कि तुमने हमारी लाज बचा ली।

पिताजी, यह तो हम सब पर भगवान की कृपा है।

मैं जानता हूँ, राकेश एक बेबकूफ लड़का है—दीनदयाल बोले। तुम बेटी उस पागल के साथ क्यों गई ? ठीक है, जो हुआ सो हुआ, आइन्दा उसके साथ कहीं भी मत जाओ।

पिताजी, आप तो बेकार में मुझे ही कोस रहे हैं—राकेश भी अन्दर आ गया था।

तुम चुप करो, ईडियट कहीं के, अक्ल जरा भी नहीं।

राकेश मन ही मन लहू की घूंट पी गया।

पिताजी, राकेश का इसमें क्या दोष ? हेमा बोली।

तुम क्या जानो बेटी, इस कमबख्त के कई अवारा दोस्त हैं। जहाँ भी यह जाता हैं वे भी कुत्तों की तरह दुम हिलाते पहुँच जाते हैं। खुद तो कमाता नहीं, अपने बाप के पैसों से खुद भी मौज उड़ाता रहता है और इसके वे भाड़े के टट्टू भी।

ऐसा सुनकर हेमा और अमर के मुख से हँसी फूट पड़ी।

राकेश की क्रोध के मारे मुठ्ठियाँ भिच गईं। लम्बे-लम्बे डग भरता वह वहाँ से जाने लगा। राकेश को इस प्रकार जाता हुआ देखकर दीनदयाल भी खिलखिला कर हँस पड़े। राकेश दाँत पीसता चला गया।

× × ×

मदन, इसमें मेरा क्या दोष है। पता नहीं अमर वहाँ पर कैसे पहुँच गया। मैं खुद हेमा को रास्ते से हटाना चाहता हूँ। वह मेरे दरम्यान एक दीवार की तरह खड़ी है। जब तक वह है, तब तक मैं अस्सी हजार तो क्या, तुम्हें एक भी कौड़ी नहीं दे सकता। सिर्फ वह मेरे रास्ते से हट जाय, फिर मैं तुम्हें अस्सी हजार के बदले अस्सी लाख भी दे सकूंगा। पूरी जायदाद का मैं ही वारिस रहूँगा। समझ लो, तुम्हारी बात मान कर मैं लिलि से शादी कर लेता हूँ, तब पता है क्या होगा ? मेरा बाप मुझे धक्के मार कर नंगे पाँव घर से निकाल देगा। फिर न तो मुझे ही कुछ मिलेगा और न तुम्हें। मदन, मैं सब-कुछ समझता हूँ। तुम सब ने एक तोते की तरह मेरे पंख काट दिये हैं और जो जी में आता है कर लेते हो। खामख्वाह लिलि को बीच मैं लाकर तुमने मेरा दिमाग खराब कर दिया है। तुम खुद ही समझ सकने हो कि लिलि से शादी करके मुझे क्या मिलेगा ? वह तो ....वह तो पैसों से प्यार करती है, न कि मुझ से। मेरे पास पैसे ही नहीं

होंगे तो क्या वह मेरे साथ रहेगी ? नहीं, हरगिज नहीं। वह मुझे छोड़कर किसी और मालदार को फँसाएगी। मदन, तुम अगर चाहो तो लिलि को ठीक कर सकते हो, कुछ वक्त के लिये इन्तजार करो। मैं तुम्हें मालामाल कर दूँगा। तुमने दोस्ती निभाई है तो मैं भी निभा सकता हूँ।

राकी, तुमने जो कहा है सच ही कहा है, परन्तु मैं क्या कर सकता हूँ ? बॉस को क्या जवाब दूंगा। उन्हें तो रुपया चाहिये। मदन अब नई चाल चल रहा था। लिलि का हमने सिर्फ तुम्हें डर दिखाया था ताकि तुम रुपयों का जल्दी इन्तजाम कर सको। लिलि आज से तुम्हें तंग नहीं करेगी। हमने ही उसे ऐसा कहा था ताकि तुम डर से रुपये वापस कर सको। राकी, तुम ही सोचो, अस्सी हजार कोई छोटी रकम नहीं है। बॉस ने कहा है कि वे किसी भी हालत में एक हफ्ते के अन्दर तुमसे पैसे वसूल करके ही रहेंगे। तुम नहीं जानते हमारे बॉस जितने दयालु हैं उससे कई गुना कठोर भी हैं। अपने पैसों के खातिर वे पुलिस की शरण भी ले सकते हैं। किसी भी शरीफ आदमी की बेइज्जती करने से वे नहीं चूकते। कहते है कि उधार लेना कोई बड़ी बात नहीं बशर्ते कि पैसे समय पर वापस कर दिये जाएँ। तुम्हें तो बहुत समय हो गया है, इन्तजार अगर उन्होंने किया है तो मेरी वजह से। राकी, मैं तुम्हें एक महीने की और मुहलत देता हूँ।

मदन, तुम चिन्ता मत करो। इससे पहले ही मैं सूद सहित सब रुपये वापिस कर दूँगा।

———

मिस्टर शेख, आपने तो कहा था कि राकेश जल्दी ही फँस जाएगा—शराब की बोतल को खोलते हुए कामरेड बोले।

सर, आप फिक्र न करें। मदन आता ही होगा। वह सारी हकीकत आकर पेश करेगा। राकेश को फँसाने का काम मैंने मदन और लिलि पर छोड़ा रखा है। इतने में मदन आ गया।

बन्दा कामरेड और शेख के सामने सिर झुकाता है—ऐसा कह कर मदन ने झुक कर सिर झुकाया और सीधा खड़ा हो गया।

शेख बोला—मदन, रिपोर्ट पेश करो।

बॉस, आपके कहने के मुताबिक मैंने और लिलि ने राकेश को बनाया। राकेश तो स्वयं ही फँस रहा है। हमें अब कुछ कहने या करने की कोई आवश्यकता नहीं। उसका बाप उसे एक भी कौड़ी नहीं देना चाहता। वह अपनी पूरी जायदाद की वारिस अपनी बेटी हेमा को बनाना चाहता है। उसकी सगाई अमर से हो गई है। इससे राकेश और भी बौखला गया है, क्योंकि वह अमर का जानी दुश्मन है। राकेश हेमा को समाप्त करना चाहता है। बॉस, राकेश कम नहीं है—बड़ा खतरनाक है।

वेरी गुड—शेख बोला—सर, अब हमारा उद्देश्य शीघ्र पूरा हो जाएगा। जिस चीज की हमें आवश्यकता है अब उसके प्राप्त होने में कोई शक नहीं। हमें देखना है कि राकेश कौनसा कदम उठाता है। राकेश जितना खतरनाक है उससे कहीं बढ़कर बेवकूफ भी है।

मदन, तुम अब जा सकते हो। अगर ऐसी-वैसी कोई बात हो तो ट्रांसमीटर द्वारा सूचित कर देना। तुम्हारा सावधान रहना जरूरी है।

ओके बॉस ! मदन चला गया ।

मिस्टर शेख !

यस कामरेड !

आज हम चीन संदेश भेज रहे हैं कि पाकिस्तानी फौजी अफसरों के साथ ऑटोमैटिक राइफिलें भी भेज दी जाएं, सभी अफसर काफी ट्रेन्ड हो चुके हैं। हम समझते हैं कि अब वह दिन दूर नहीं जब सारे हिन्दुस्तान पर चीन और पाकिस्तान का राज्य होगा। हमारे पास अब इतनी ताकत है कि एक हिन्दुस्तान तो क्या, ऐसे दस हिन्दुस्तान भी हमारा मुकाबला नहीं कर सकते। हम दोनों देश मिलकर हिन्दुस्तान को जड़ से उखाड़ देंगे।

सर, उस दिन का हमें बेताबी से इन्तजार है जब दिल्ली के लाल किले पर चीन और पाकिस्तान का झंडा लहराएगा। हमारी शक्ति के आगे सभी देश सिर झुकाएंगे। दुनियाँ भर में हमारी शक्ति का लोहा माना जाएगा। अगर किसी ने हमसे टकराने की जुर्रत की तो उसे भी हिन्दुस्तान की तरह जड़ से उखाड़ कर फेंक देंगे।

मि० शेख, हिन्दुस्तान पर कई मुल्कों की नजर हैं। यही एक देश है जहाँ पर पूरे संसार का स्वर्ग है। सारी दुनिया में हिन्दुस्तान का नाम है। तवारीख बताती है कि इसे प्राप्त करने के लिये कई गैर मुल्कों ने बार-बार जी-तोड़ प्रयत्न किये हैं, पर सब को मुँह की खानी पड़ी। हमें अपनी बुद्धि, अपनी शक्ति पर गर्व है। हम इसे पाकर ही रहेंगे। समझ लो अगर हमारी पराजय हुई तो इसके पहले ही हम हिन्दुस्तान को आग की लपटों में सुला देंगे। न रहेगा यह स्वर्ग और न ही किसी को तमन्ना होगी इसे प्राप्त करने की। हमारे पास इतनी शक्ति है कि हम हिन्दुस्तान को खण्डहर बना देंगे—जहाँ पर इन्सान तो क्या जानवर भी रहने से कतराएंगे। अगर विजय हुई तो इस धरती के स्वर्ग को और भी चमका देंगे। हम चाहते हैं कि या तो हिन्दुस्तान हमारा बना रहे या फिर इसे बर्बाद कर दें, नाबूद कर दें, वरना हमारी नींदें हराम हो जाएँगी, हमारा सत्यानाश हो जाएगा।

चीन में क्या है ? कुछ नहीं---पाकिस्तान खाक से भरा पड़ा है। हमारे लोग सूई भर जमीन के लिये तलवारें उठाते हैं—एक दूसरे का गला काटने के लिये। हिन्दुस्तान और चीन की पहली ही लड़ाई में हमारी टाँगें टूट गईं। अब तक खड़े नहीं हो सके हैं। हमारे देश में इतने लोग हैं कि उनके रहने के लिये जमीन नहीं। हमारे पास सिर्फ शक्ति ही है जिसका उपयोग हम दोनों देश मिल कर हिन्दुस्तान को प्राप्त करने के लिये करेंगे। चीन से आते समय हम करांची में बड़े कप्तान शाहनबीज से मिले थे। उन्होंने वह दशा पाकिस्तान की बताई कि बस कलेजा मुँह को आ गया। क्रोध के मारे उनकी आँखों से शोले बरस रहे थे। उन्होंने मुझे विश्वास दिलाया कि हिन्दुस्तान पर हमारी ही विजय होगी। इतना कह कर शेख ने गिलास की बाकी शराब अपने गले के अन्दर उतार ली।

+ + +

राकेश अपने कमरे में एक पलंग पर लेटा हुआ सिगरेट पी रहा था। वह सोच रहा था कि काम इस प्रकार हो कि साँप भी मर जाए और लाठी भी नहीं टूटे। अब उसे अपने पिता का खयाल आया कि वे आज घर में नहीं हैं और शायद दो-तीन दिन तक आएं भी नहीं। राकेश ने अपनी रिस्ट वॉच में देखा—रात के दो बजे थे। उसका जी चाहा कि आज पिताजी के कमरे को देखा जाय। इसमें उसका कोई उद्देश्य तो नहीं था, परन्तु अपने नीच स्वभाव के वशीभूत होकर वह पलंग से उठ खड़ा हुआ। नीच इन्सान अपनी आदत से हमेशा मजबूर रहा करता है। इसीलिये कोई न कोई हरकत करता ही रहता है। उसने अपने साथ एक छोटी सी टॉर्च ले ली और कमरे के बाहर आ गया। राकेश ने झाँक कर हेमा और अपनी-माँ के कमरे में देखा। दोनों गहरी नींद में सोई हुई थीं। वह पंजों के सहारे धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगा। वह अपने बाप के कमरे के पास आकर रुक गया। कमरे के बाहर ताला लगा हुआ था। उसने धीरे से खिड़की पर हाथ रखकर दबाया कि खिड़की खुल गयी और बड़ी सावधानी से वह

खिड़की के ऊपर चढ़कर कमरे में प्रविष्ट हो गया। जेब से टॉर्च निकाली और बटन दबा दिया। टार्च की रोशनी में दबे पांव वह आगे बढ़ने लगा। वह कभी-कभी खुली हुई खिड़की की ओर देख लेता, वह घबरा रहा था। उसने अलमारी खोल दी और एक-एक चीज़ को देखने लगा। इस प्रकार उलटते-पुलटते हुए उसके हाथ में अपने बाप की डायरी आ गई। अच्छा हुआ, कुछ तो हाथ आया— राकेश बुदबुदाया। उसने टॉर्च की लाइट बुझा दी। और डायरी को अपनी जेब में रख लिया तथा उसी खिड़की से कूद कर वापस अपने कमरे में आ गया। राकेश ने अपने कमरे की तमाम बत्तियाँ बुझा दीं। सिर्फ टेबुल लैम्प ही जला लिया और कुर्सी पर बैठ कर डायरी पढ़ने लगा। टेबुल लैम्प की रोशनी सीधी उस डायरी पर पड़ रही थी। डायरी में कई बातें लिखी हुई थीं, परन्तु उसकी किसी में भी दिलचस्पी नहीं हो रही थी। उसने एक और पन्ना पलटा जिस पर बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा हुआ था—"मेरी धरती के साथ शादी"। यह पूरा टॉपिक राकेश पढ़ गया जो करीब दस पेजों में लिखा हुआ था। अब डायरी को पढ़ने में राकेश की दिलचस्पी बढ़ती गई। उसने एक और पन्ना पलटा जिस पर लिखा हुआ था, "राकेश कौन ?" यह हैडिंग देख कर राकेश ने जल्दी-जल्दी पढ़ना शुरू किया। राकेश पढ़ता गया और उसके साथ आश्चर्य के मारे उसकी आँखें फटती गईं। राकेश कौन है ? कैसे आया ? कहां से आया ? पूरी कहानी उसने पढ़ डाली। राकेश ने डायरी को बन्द कर दिया। तो क्या मैं उनका बेटा नहीं। मैं एक मुसलमान की औलाद हूँ। यह हकीकत जानकर उसे आश्चर्य तो बहुत हुआ, परन्तु अपने नीच स्वभाव के कारण उस पर जरा भी फर्क नहीं पड़ा। वह तो अब खुश ही था कि जिनके घर वह रहता है, वे उसके कुछ भी नहीं। तो क्या बूढ़ा इसी कारण मुझे सुखी नहीं रखना चाहता है और सारी जायदाद हेमा के नाम कर रहा है। तो ठीक है, मैं भी देख लूँगा कि बूढ़ा कैसे मेरे हाथों से बचकर निकलता है। मैं हेमा को हमेशा के लिये

खत्म कर दूँगा। अब मुझे उससे जरा भी मोह नहीं। वह मेरी बहन नहीं, वह तो अपने नीच बाप की बेटी है जो मेरी तबाही पर तुला हुआ है। हेमा के कारण ही अगर मेरी जिन्दगी बर्बाद होती है तो फिर क्यों न ऐसे दुश्मन को ठिकाने लगा दिया जाय। बूढ़ा इसीलिये मुझसे जला करता है। राकेश के दिल में दीनदयाल से बदला लेने के लिये आग भभक उठी। एक-एक से चुन-चुन कर बदला लूँगा। सारी जायदाद मेरी है। अगर किसी ने भी आँख उठाई तो उसकी आँख निकाल लूँगा। मैं मुसलमान, वो हिन्दू—मेरा उनसे क्या रिश्ता ? कमबख्त ने कितनी बार अमर के सामने मेरी बेइज्जती की है। ऐसे खयाल आते ही उसकी नसें खिच गईं, क्रोध के मारे दोनों हाथों की मुठ्ठियां भिचती गईं। उसका चेहरा तपे हुए तांबे की तरह लाल हो गया। मैं भी इनका गुरू निकलूंगा। कमीनों को ऐसा धोखा दूँगा कि बस हाथ मलते रह जाएंगे। अब मुझे इन सबके साथ झूठा प्यार जताना होगा ताकि मुझ पर उनका विश्वास हो जाए कि मैं बहुत अच्छा हूँ। यह ऐक्टिंग मुझे कल से ही शुरू करनी होगी।

\+ + +

मालकिन, मामला बड़ा संगीन हो गया है। अगर मालिक आज नहीं आए तो बहुत बुरा होगा। मुझे तो समझ में ही नहीं आता कि क्या करूँ। कल से ही कामगार हड़ताल शुरू कर देंगे।

दीनानाथ, कुछ तो करो—घबराती हुई धरती बोली।

मालकिन, एक मैनेजर की हैसीयत से मुझसे जो कुछ हो सका, किया। यहाँ तक कि मैंने हाथ जोड़कर सभी मजदूरों को शान्त रहने के लिये कहा, पर कोई भी नहीं मानता। मैंने अब पुलिस का प्रबन्ध कर दिया है कि कहीं दंगा-फसाद न हो जाय। मील में बहुत घाटा हो जाएगा, अगर हड़ताल लगातार चली। मालकिन, बरसों से आपका नमक खाता आ रहा हूँ। मैं अपनी जान की बाजी लगाकर भी एक बार फिर सब मजदूरों को समझाने की कोशिश करूँगा, परन्तु

जहाँ तक मैं समझता हूँ, वे नहीं मानेंगे। मुझे डर लग रहा है कि कहीं कुछ हो न जाए, क्योंकि कइयों ने मिल को आग लगाने तक की धमकी दी है। अब आप ही बताइये, मैं क्या करूँ ? मजदूरों को मालिक के सिवा और कोई शान्त नहीं करा सकता और मालिक इतनी जल्दी आ नहीं सकते।

राकेश जो कब से वहां बैठा हुआ था सोचने लगा—घरवालों पर अच्छा प्रभाव जमाने का इससे अच्छा और अवसर क्या हो सकता है। बोला— दीनानाथ, आप किसी भी बात का फिक्र न करें। मैं आपके साथ चलकर सबको समझाता हूँ।

दीनानाथ ने धरती की ओर देखा।

राकेश, अगर तुम इस घर को अपना ही घर समझ कर अच्छी तरह चलते तो ऐसी नौबत नहीं आती। एक बेटे का कर्तव्य होता है कि अपने माँ-बाप का हर दुख-सुख में साथ दे।

अपने चेहरे को उदास बनाते हुए राकेश बोला—माँ, मैंने आप सबको बहुत सताया है। अब ऐसा कभी नहीं होगा, आप मुझ पर यकीन करें।

हां मालकिन, छोटे मालिक ठीक ही कहते हैं। मुझे पूरा भरोसा है कि इनके चलने पर मामला शान्त हो सकता है।

मेरे लाल, तुम्हारे पिताजी पर तुम्हारा बहुत बुरा प्रभाव पड़ा हुआ है। तुम यह काम करके दिखाओ। फिर देखो तुम्हारे पिताजी तुम्हें कितना प्यार करते हैं। मैं चाहती हूँ कि सारा कारोबार वगैरह तुम ही सम्भाला करो, परन्तु उनका जो तुम पर भरोसा नहीं।

माँ, अब मैं सब कुछ समझ गया हूँ। पिताजी को अब मुझसे कोई गिला नहीं होगी, मैं उन्हें खुश रखने की पूरी कोशिश करूँगा ताकि उन्हें मुझे कुछ कहने का मौका ही नहीं मिले। मैं अभी ही मैनेजर के साथ जाता हूँ। भगवान ने चाहा तो सब ठीक हो जाएगा।

अच्छा, जाओ बेटे। खुद का खयाल रखना।

\+ \+ \+

आओ बेटे हमारे पास आकर बैठो।

राकेश चुपचाप अपने पिता के पास बैठ गया।

शाबाश बेटे, हम तुम से बहुत खुश हैं। जो काम और कोई नहीं कर सका वह तुमने कर दिखाया। तुम्हारे इस काम से मिल को बहुत लाभ हुआ है। अगर तुम ऐन वक्त पर मजदूरों को नहीं समझाते तो पता नहीं क्या होता।

पिताजी, मैंने कोई बहुत बड़ा काम तो नहीं किया है। अगर आपके अनुसार किया ही है, तो कौन सी बड़ी बात हो गई। अपने घर का काम करने में क्या विशेषता है। यह तो मेरा कर्तव्य है। पिताजी, मैं अपनी पहले की हरकतों से शर्मिंदा हूँ। आप मुझे माफ कर दीजिये। ऐसा कहकर राकेश चुपचाप फर्श की ओर देखने लगा। लगता था जैसे प्रायश्चित कर रहा हो।

बेटे, कोई बात नहीं—सुबह का भूला अगर शाम घर लौट आए तो वह भूला नहीं कहलाता। जवानी में अक्सर कदम डगमगा ही जाते हैं। अच्छा तुम अब जा सकते हो।

राकेश चला गया।

\+ + +

अमर अब जल्दी चलो, बहुत देर हो गई है। बिस्तर वगैरह भी तो तैयार करने हैं।

मेम साहब, गाड़ी तो रात के आठ बजे जाएगी और आपको इतनी जल्दी लगी है। आप भूल क्यों रही हैं कि शादी आपकी सहेली की हो रही है, आपकी नहीं। अमर ने ऐसा हेमा को चिढ़ाने के लिये कहा।

धत्.......... शरीर कहीं के—हेमा शर्मा गई—अरे! मैं भी कैसी हूँ, तुम्हारे संग इधर-उधर घूमने में भूल ही गई कि मुझे अपनी सहेली के लिये उपहार खरीदना है। तुम्हारे साथ रहने से सब कुछ भूल ही जाती हूँ। सारा समय यूँ ही बेकार चला गया।

अच्छा तो हमारे साथ घूमने में आपका समय बेकार जाता है ? बनावटी क्रोध दिखाते हुए वह बोला—अगर ऐसा है तो तुम मुझे बुलाने क्यों आई ?

अरे ! तुम तो नाराज हो गये। बच्चों की तरह जल्दी ही रूठ जाते हो तुम—हेमा खिलखिलाकर हँस पड़ी।

परन्तु अमर चुपचाप बाँहें थामे खड़ा था।

अजी सरकार, गुस्से को थूक दीजिये। इतनी छोटी सी बात के लिये बुरा मान गये !

बुरा मानने की तो बात ही थी।

अमर, तुम स्वयं सोच सकते हो कि मैं तुम्हारे पास क्यों आई थी। सिर्फ इसलिए कि तुम खरीदारी आदि में सलाह दे सको। तुम नहीं जानते, जिसकी शादी में मैं जा रही हूँ, वह मुझे अपनी बहन से भी बढ़कर है। हम दोनों साथ-साथ पढ़ा करते थे। अचानक उसके पिताजी का यहाँ से ट्रान्सफर हो गया, अब उसकी शादी हो रही है। उसने मुझे शादी पर इनवाइट किया है तो क्या मैं उसे कोई प्रेजेन्ट भी नहीं करूँ—हेमा यह सब एक ही साँस में बोल गई। अमर खिलखिला कर हँस पड़ा।

हाय ! हेमा ने एक ठंडी साँस भरी और बोली—सरकार को खुश करने के लिये हमें कितनी-कितनी बातें करनी पड़ती हैं। ऐसी उछल-कूद कोई अपने बच्चे के लिये भी नहीं करता होगा, जितनी मुझे तुम्हें खुश करने के लिये करनी पड़ती है। आओ चलें—ऐसा कहकर हेमा ने अमर का हाथ थामा। अमर ने हेमा की ओर देखा और दोनों खिलखिला कर हँस पड़े।

सब कुछ खरीद कर वे अपनी कार में बैठ गए। गाड़ी तेज चलाना—हेमा ने अपने ड्राइवर भोला से कहा।

बीबीजी, अभी तो सिर्फ पाँच ही बजे हैं और ट्रेन आठ बजे जाएगी।

तुम चुप करो और गाड़ी तेज चलाओ।

हेमा, भोला ठीक ही कहता है।

खाक ठीक कहता है, आप भी उसकी ही तरफदारी करने लगे। उसे तो अफीम खानी है इसलिये कहता है।

हेमा, हर काम धीरे-धीरे करो। जल्दबाजी से काम बिगड़ ही जाया करते हैं। अच्छा हेमा, वहां से लौटते समय मेरे लिये क्या लाओगी ?

आप जो कहें, फिर भी अपनी तरफ से शादी की मिठाई और पेड़े लाऊँगी। वहाँ के पेड़े स्वादिष्ट होते हैं। जो कोई वहाँ जाता है पेड़े ही लाता है।

तुमने पेड़ों की बात कही और मुँह में अभी से ही पानी आने लगा—अमर ने अपने होठों पर जीभ घुमाई और बोला—हेमा, अब तो तुम्हारा इन्तजार करना ही पड़ेगा कि कब पेड़े ला रही हो। मैं समझता हूँ पेड़े गोल-गोल ही होंगे, तुम्हारे गालों की तरह वह मुस्कराने लगा।

धत्...... बड़े बेशर्म हो गये हैं आप।

जी भर कर पेड़े खाऊँगा—अमर ने फिर कहा, हेमा को चिढ़ाने के लिये।

हेमा मुस्करा पड़ी और बोली—आप बड़े वो हैं। जो जी में आता है कह देते हो। सोचते नहीं कोई और भी बैठा हुआ है।

इस प्रकार बातों ही बातों में मकान आ गया।

१३

अचानक नसरीन की आँख खुल गई। दर्द के मारे उसका सिर फटा जा रहा था। उसने फिर सोने की कोशिश की पर नींद नहीं आई। वह पलंग पर उठ कर बैठ गई। पास वाले कमरे से उसने धीमी-धीमी आवाज सुनी। उसके पिताजी किसी से बात कर रहे थे।

पिताजी इस समय किससे बातें कर रहे हैं ? कौन हो सकता है ? उसने अपनी रिस्ट वॉच में देखा—शाम के साढ़े छः बजे थे। उसने एक स्टूल पलंग पर रख दिया और उस पर खड़ी होकर वैन्टीलेटर से अपने बाप को देखने लगी। देखते ही वह आश्चर्य में पड़ गई कि कबोड के पीछे ऐक ट्रांसमीटर फिट था और उसके पिताजी उसी द्वारा बात कर रहे थे। वह कान लगा कर अपने पिताजी की बातें सुनने लगी।

शेख कह रहे थे--वेरी गुड कामरेड, एक हजार गनें पहुँच गईं। अब हमारे पास इतने हथियार हैं कि एक हिन्दुस्तान तो क्या हम ऐसे दस हिन्दुस्तानों को ठिकाने लगाने की शक्ति रख सकते हैं। अब कोई शक नहीं कि सफलता हमारे कदम चूमे। मैं अभी ही क्रोको-डायल स्टेशन पहुँच रहा हूँ।

नसरीन को जैसे अपने कानों पर विश्वास ही नहीं हो रहा था कि उसका बाप देशद्रोही हो सकता है। अचानक स्टूल पलट गया, एक भारी आवाज के साथ वह पलंग पर गिरी और स्टूल नीचे फर्श पर। इतनी बड़ी आवाज सुनकर शेख घबराया हुआ नसरीन के कमरे में आया तो देखता ही रह गया।

उसकी बेटी उसे नफरत की निगाहों से देखे जा रही थी।

शेख सब समझ गया और पूछा—तुमने क्या देखा ?

सब कुछ देखा और सुना भी—नसरीन अभी भी शेख को घूरकर देख रही थी।

बेटी, तुम मुझे गलत मत समझो। मैं यह सब कुछ तुम्हारे लिये ही कर रहा हूँ।

पिताजी......पिताजी मैं आपको एक फरिश्ता समझती थी, परन्तु यह मेरी गलती थी। आप कहते हैं कि आप जो कुछ कर रहे हैं वह मेरे लिये है, तो मुझे ऐसा कुछ भी नहीं चाहिये। पिताजी, आप यह क्यों भूल रहे हैं कि भारत देश ही हमारे लिये सब कुछ है। हम उसकी औलाद हैं, जहाँ पर हमारे बड़ों ने जन्म लिया और इसकी ही पवित्र मिट्टी में मिल गये हैं। एक आप हैं कि अपने थोड़े से स्वार्थ के लिये अपने देश मातृभूमि से गद्दारी कर रहे हैं। सभी भारतवासी आप की कितनी इज्जत करते हैं, आप के लिये उन सब के दिलों में कितनी श्रद्धा है, आप पर कितना विश्वास रखते हैं। और एक आप हैं कि स्वार्थ के लिये गैर मुल्कों से मिलकर उन सबके साथ विश्वासघात करना चाहते हैं, नहीं पिताजी, आप को ऐसा करना शोभा नहीं देता, शर्म के मारे मेरा सिर जमीन में गड़ता जा रहा है। इसलिये कि मैं आपकी औलाद हूँ।

शेख से अब बर्दाश्त नहीं हो सका और चिल्ला कर वह बोला—बदतमीज, तुम अपनी इस छोटी सी जबान को रोको। अपने बाप के मुँह लगती हो ? मुझे सिखाती हो—शेख ने एक भरपूर हाथ नसरीन के गाल पर जमा दिया।

अब्बा जान, आप भी तो छोटे हैं फिर क्यों इतने बड़े भारत से मुकाबला करने की सोच रहे हैं। यह वही भारत है जिसके आगे कोई भी नहीं टिक सका। क्या उसके आगे आप जैसे देशद्रोही चन्द गद्दारों के साथ मिलकर मुकाबला करेंगे ? मैं आप को सलाह देती हूँ कि आप यह काम छोड़ दीजिये, वरना आप सब की तबाही आ जाएगी।

मैं कहता हूँ बन्द करो यह बकवास।

अब्बा जान, आप अपनी इस छोटी सी ताकत से मेरी जबान तो बन्द करा सकते हैं, मेरे सामने अपनी बहादुरी दिखा सकते हैं, परन्तु भारत की शक्ति के सामने आप एक पल भी नहीं रुक सकेंगे। आज से आप मेरे बाप नहीं। मुझे ऐसे गद्दारों से सख्त नफरत है।

शेख अब स्वयं को नहीं रोक सका तथा पूरी ताकत से एक और चाँटा नसरीन के मुँह पर जमा दिया। वह नीचे फर्श पर जा गिरी, उसके मुँह से खून निकल आया।

शेख की आँखों से अंगारे बरसने लगे। दाँत पीसते हुए बोला—नादान छोकरी, एक बार ऐसी ही बात पर तुम्हारी माँ को मैंने ऐसा सबक सिखाया कि आज तक उसका पता नहीं, जाने कहाँ मर गई। उसने भी तुम्हारी ही तरह एक दिन मुझे छिछले उपदेश देने शुरू किये थे। मेरे साथ उसने गद्दारी की मैंने उसे वह सबक सिखाया कि बस तड़पते-तड़पते दम तोड़ गई।

अपनी बाँह से मुँह का खून पोंछती हुई नसरीन बोली—नीच, पापी, गद्दार, तुमने मेरी माँ को मार डाला। जिस इन्सान को अपनी बीवी-बच्चों से प्यार नहीं, वह अपने देश से क्या मुहब्बत करेगा। तुम इन्सान नहीं जल्लाद हो, काफिर हो। मैं कसम खाती हूँ उस देश-भक्त माँ की जिसने अपने देश के लिये खुद की कुर्बानी कर दी कि मैं तुम्हें जीने नहीं दूँगी। अगर अपने देश के खातिर कुर्बान भी हो गई तो कोई गम नहीं। मैं तुम से फिर कहती हूँ कि तुम जैसे गद्दार, देशद्रोही कभी भी अपने उद्देश्य में सफल नहीं होंगे।

तड़ाक-तड़ाक-तड़ाक……उस मासूम के गाल पर कई फौलादी हाथ पड़े। शेख ने पकड़ कर नसरीन को एक कोठरी में बन्द कर दिया और बोला—तुम नहीं जानती कि मैं कितना कठोर इन्सान हूँ। वह माँ बनने वाली थी फिर भी मुझे उस पर जरा भी रहम नहीं आया। उसने मेरे किये पर पानी फेरने की कोशिश की थी, मेरे खिलाफ कदम उठाना चाहा था। जानती हो मैंने क्या किया? उसे भी पकड़

कर तुम्हारी तरह इसी कालकोठरी में डाल दिया था और वह इन दीवारों से सर टकरा-टकरा कर चिल्लाती रही, तड़पती रही, फिर भी मुझे उस पर रहम नहीं आया। एक दिन पता नहीं मुझे कैसे चकमा देकर वह भाग गई और अब तक उसका पता नहीं चला कि कहाँ वह खुद मर गई और कहाँ उसका बच्चा।

तुम नीच हो, हैवान हो। खुदा परवरदिगार तुम्हें ऐसी सजा देगा कि तुम भी तड़पते रह जाओगे। तुम अपने उद्देश्य में कभी भी सफल नहीं होगे। मैं तुम्हें बददुआ देती हूँ।

बाँके, इस पर कड़ी नजर रखना। कहीं भाग न जाए। मैं क्रोकोडायल स्टेशन जा रहा हूँ। उसके बाद मैं तुम्हें बताऊँगा कि क्या करना है—शेख चला गया।

नसरीन सोच रही थी कि किस प्रकार इस काल कोठरी से मुक्ति पाई जाय। वह एक खिड़की के पास आकर खड़ी हो गई और कुछ सोचने लगी। उसके ध्यान में एक युक्ति आई कि अगर साड़ी के पल्लू को खिड़की के कुण्डे में बाँधकर उतरा जाए तो यह हो सकता है। मरना तो वैसे भी है। फिर क्यों इन जल्लादों के हाथ मरा जाए। बहतर है कि ऐसे ही मर जाएँ।

खिड़की में साड़ी का पल्लू बाँधकर उसने उतरना शुरू किया। अल्लाह की मेहरबानी से वह उतर कर नीचे पहुँच गयी, परन्तु बाँके ने उसे देख लिया। नसरीन आगे भागती गई और बाँके उसके पीछे। नसरीन ने पूरी ताकत से भागना शुरू किया। वह कभी-कभी पीछे मुड़कर देख लेती कि बाँके अब भी उसके पीछे लगा हुआ था। नसरीन भागती गई...... भागती गई ...... भागती गई।

\+ \+ \+

बॉस, किसी ने बताया है कि हेमा किसी दूसरे शहर जा रही है और राकेश उसके पीछे लगा हुआ है। मैं चाहता हूँ कि राकेश का पीछा किया जाए कि वह क्या करना चाहता है।

ठीक है मदन, तुम तीनों राकेश का पीछा करो।

ड्राइवर भोला गाड़ी चला रहा था। हेमा और अमर पीछे बैठे हुए थे। हेमा, मेरे लिये गोल-गोल पेड़े लाना मत भूलना—मुस्कराते हुए अमर बोला।

हेमा भी मुस्करा पड़ी। अपना सिर अमर के कंधे पर रखते हुए बोली—अमर तीन दिन की जुदाई पता नहीं कब खत्म होगी। तीन दिन मैं तुम्हें नहीं देख सकूंगी, ऐसा सोचती हूँ तो पता नहीं दिल में क्या हो जाता है। अमर, मैं तुम्हारे बिना एक पल भी नहीं रह सकती, फिर ये तीन दिन का बिछोह कैसे गुजारूंगी।

हेमा, मुझे भी ऐसा लग रहा है, परन्तु दुनिया में अगर रहना है तो उसके बंधनों को भी मानना पड़ेगा। अब तो हमें बहुत सी जिम्मेदारियाँ निभानी पड़ेंगी। भोला ने कार दाईं ओर मोड़ ली।

राकेश की कार हेमा की कार से कुछ ही दूरी पर थी और उस की कार के पीछे थी मदन की कार। सबसे आगे थी हेमा की कार। उसके पीछे राकेश की कार और उसके पीछे मदन की। तीनों कारें एक ही सीध में एक दूसरे से कुछ ही फासले पर चल रही थीं। हेमा को पता नहीं था कि राकेश उसका पीछा कर रहा है और न ही राकेश को मालूम था कि मदन उसकी कार का पीछा करता आ रहा है।

स्टेशन आ गया। अमर और हेमा कार से उतरे। ट्रेन के छूटने में सिर्फ बीस मिनट ही थे। हेमा आकर फर्स्ट क्लास के डिब्बे में बैठ गई।

हेमा, माँ की तबीयत कुछ ठीक नहीं थी। उसके लिये बाजार से दवा वगैरह खरीदना है, इसलिये मैं जल्द ही जाना चाहता हूँ।

अमर, क्या कहते हो? माँजी की तबीयत ठीक नहीं और तुमने मुझे बताया भी नहीं। ठीक है, मैं नहीं जाती—ऐसा कहकर वह डिब्बे से नीचे उतरने लगी।

अरे-अरे क्या करती हो? हेमा को रोकते हुए अमर बोला—बस थोड़ा सा बुखार था। दवा लेंगी तो ठीक हो जाएँगी।

अमर, मुझे तुम्हारी ये आदतें बिल्कुल पसन्द नहीं--नाराज होते हुए हेमा बोली। तुम्हें पहले ही बताना चाहिये था। अब तो मेरा वहाँ पर मन ही नहीं लगेगा।

तुम खामख्वाह घबरा रही हो। कुछ नहीं होगा। तुम वहाँ पर खुश ही रहना। अच्छा अब मैं जाता हूँ—बाइ........।

अमर, माँजी का ख्याल रखना।

अमर बाबू, क्या आप जल्दी ही जा रहे हैं? ट्रेन तो अभी छूटी ही नहीं।

हां भोला, कोई आवश्यक काम याद आ गया, इसलिये जा रहा हूँ।

कार का दरवाजा खोलते हुए भोला बोला—आइये अमर बाबू!

नहीं भोला, तुम गाड़ी ले जाओ मैं पैदल ही चला जाऊँगा। मुझे और काम हैं।

अगर मालिक आपके बारे में पूछें तो क्या कहूँ?

कह देना कि मुझे कोई आवश्यक काम था इसलिये चला गया। अच्छा, तुम गाड़ी लेकर जाओ।

कार को स्टार्ट करने से पहले एक बार फिर भोला बोला—अच्छा तो मैं जाऊँ?

हाँ-हाँ, तुम जाओ।

भोला गाड़ी लेकर चला गया।

हेमा गाड़ी के डिब्बे में बैठी हुई खिड़की से झाँक कर यूँ ही कुछ देख रही थी कि सामने राकेश आता हुआ दिखाई दिया जिसके हाथ में एक फ्लास्क था जो वह लेना भूल गई थी।

हेमा ने दूर से ही राकेश को पुकारा।

हेमा, मैं तुम्हें ही ढूँढ रहा था। पास आकर राकेश बोला—यह लो तुम्हारी कॉफी का फ्लास्क। तुम भूल आई थीं।

तुमने क्यों तकलीफ की, किसी नौकर के साथ भेज देते।

हेमा, अगर मैं लाया तो क्या हो गया। तुम्हारी सेवा करने का

कभी-कभी तो मौका मिलता है। तुम क्या चाहती हो कि उसे गँवा दूँ। ऐसा नहीं हो सकता।

हेमा हँस पड़ी। इतने में गार्ड ने सीटी मारी और ट्रेन चलने लगी। राकेश ने एक दो बार हाथ हिलाया और वहाँ से हट गया।

हेमा से नजर बचाकर बड़ी फुर्ती से राकेश पीछे की ओर से एक डिब्बे में चढ़ गया। वह थर्ड क्लास में बैठा हुआ सोच रहा था कि अगला स्टेशन करीब एक घंटे के पश्चात् आएगा और तब तक हेमा कॉफी पी ही लेगी। गाड़ी बड़ी तेज गति से भागी जा रही थी। डिब्बे के सभी यात्री अपने-अपने खयालों में बैठे हुए थे, कुछ तो सो भी गए थे। राकेश के दिल में चैन नहीं था। उसने अपनी रिस्टवाच में देखा, गाड़ी को अभी आधा घंटा और चलना था। वह पैकिट से एक सिगरेट निकाल कर लम्बे-लम्बे कश लेने लगा। बाहर काफी अंधेरा हो चुका था और गाड़ी उस अँधेरे को चीरती हुई आगे बढ़ती रही। डिब्बे के सभी यात्री आपस में बातें करते-करते सो गए। राकेश सिगरेट पर सिगरेट फूंकता जा रहा था। उसने एक बार फिर घड़ी देखी, बीस मिनट और थे। ट्रेन खट-खट करती आगे बढ़ रही थी। राकेश ने सोए हुए यात्रियों पर नजर डाली। वे सभी दुनिया से बेखबर होकर सो रहे थे। उनकी तेज साँसों की आवाज उस शान्त वातावरण में साफ सुनाई पड़ रही थी। पूरे डिब्बे में पूर्ण शान्ति थी। राकेश ने एक और सिगरेट जलायी, परन्तु एक ही कश लेकर उसे खिड़की से बाहर फेंक दिया। जैसे-जैसे समय बीतता जाता, राकेश की बेचैनी भी बढ़ती गई। उसका दिल जोरों से धड़क रहा था। खिड़की से ठंडी हवा का एक झोंका आया और उसके सभी बाल बिखर गए। राकेश ने फेल्ट हैट पहन ली। खिड़की को बन्द करना चाहा पर कर नहीं सका। उसे ऐसा लगा कि अगर किसी ने उसे पकड़ने की कोशिश की तो वह इस खिड़की से कूद कर भाग जाएगा। वह तो एक कातिल है और हर कातिल को होशियार रहना चाहिये। फिर उसे खयाल आया कि क्या सबूत है कि मैंने ही हेमा

को कॉफी में जहर मिलाकर उसका खून किया है ? ऐसा करते हुए मुझे किसी ने भी नहीं देखा, फिर मुझ पर कैसे इल्जाम लगाया जा सकता है । सब समझते हैं कि हेमा मेरी बहन है । यह राज़ तो मैं ही जानता हूँ कि वह मेरी बहन नहीं, वह तो मेरी दुश्मन है और एक दुश्मन को खत्म कर देना वाजिब है । उसके कारण ही मेरी जिन्दगी बरबाद हो रही थी और मैंने उसे खत्म ही कर दिया । अब पूरी जायदाद का मालिक मैं हूँ । बूढ़े को भी इसी तरह खत्म कर दूँगा ! बाकी रही बुढ़िया—उसने मेरे साथ गद्दारी करनी चाही…तो उसका भी वही अंजाम होगा ।

किसी ने राकेश की टांग पर अपना हाथ रख दिया और राकेश इस प्रकार उछल पड़ा जैसे कि किसी ने हाथ नहीं एक जलता हुआ अंगारा उसकी टांग पर रख दिया हो । उसके मुख से चीख निकलते-निकलते रह गई । वह बहुत घबरा उठा, पर जल्दी ही समझ गया, क्योंकि वह हाथ किसी और का नहीं बल्कि उसके पास में बैठे हुए एक यात्री का था जो गहरी नींद में सो रहा था । राकेश एक ठंडी आह भर कर बैठ गया, पर उसका दिल अभी भी धड़क रहा था । इतनी ठंड में भी पसीने की बूँदें उसके चेहरे पर जम गईं । उसने अपनी हैट को ठीक करके एक सिगरेट जला ली । धुएँ को खिड़की से बाहर फेंकने के लिये जैसे ही उसने खिड़की से झांका कि उसकी सिगरेट अपनेआप ही हाथ से गिर गई । वह फिर घबरा गया, क्योंकि उसने अगले स्टेशन का सिगनल देख लिया था । इतने में गाड़ी ने एक जोरदार सीटी मारी और राकेश एक ओर लुढ़क पड़ा । वह बहुत भयभीत हो उठा । ट्रेन की सीटी उसे हेमा की चीख लगी । उसे ऐसा लगा जैसे हेमा ने अपनी जिन्दगी की आखरी चीख निकाली हो । राकेश ने खुद को वश में करने की कोशिश की, पर कर नहीं सका । उसे समझ में ही नहीं आ रहा था कि उसने हेमा की चीख सुनी या ट्रेन की सीटी । हेमा तो कब की मर चुकी होगी । अगर उसने आखिरी चीख भी मारी हो तो वह रेल के डिब्बे की दीवारों

से ही टकरा कर लुप्त हो गई होगी। अब थोड़ी सी आवाज से भी वह घबरा उठता। स्टेशन आ रहा था और ट्रेन ने रफ्तार कम कर दी। वह अब धीरे-धीरे रुकने लगी और इसके साथ ही राकेश का दिल बैठता गया। उसके हाथ पैरों से पसीना निकलने लगा। स्टेशन आ गया, ट्रेन रुक गई। राकेश प्लेटफार्म पर आ गया और उसने अपनी हैट को थोड़ा झुका लिया ताकि चेहरा छिपा रहे। वह प्लेट-फार्म पर चहल कदमी करता आकर हेमा के डिब्बे के सामने कुछ ही दूर खड़ा हो गया। हेमा के डिब्बे में पूर्ण अँधेरा था। अगर हेमा जिन्दा होती तो अवश्य जाग ही जाती। उसने एक सिगरेट को लाइटर से जलाकर जैसे ही लाइटर को जेब में रखा कि किसी ने आकर उसके कंधे पर हाथ रख दिया और राकेश चौंक पड़ा। उसके मुँह की सिगरेट नीचे गिर पड़ी। उसे ऐसा लगा जैसे कि किसी ने एक बिच्छू उसके कंधे पर रख दिया हो। वह किसी से भी बात करना नहीं चाहता था, परन्तु क्या करता। घबराहट में उसके मुँह से निकला—कौन ?

एक्सक्यूज मी प्लीज, क्या आपके पास माचिस है ?

राकेश ने उस आदमी पर एक नजर डाली और एक ठँडी आह भरते हुए अपने लाइटर का हाथ आगे बढ़ाया। उसके हाथ काँप रहे थे, लाइटर नीचे गिर पड़ा।

मैं समझता हूँ कि आप कुछ परेशान हैं—लाइटर को नीचे से उठाते हुए वह आदमी बोला—अचानक आप के कँधे पर हाथ रखने से आप घबरा गये, अक्सर ऐसा होता ही है।

राकेश ने कोई उत्तर नहीं दिया।

थैंक यू—उस आदमी ने लाइटर वापस कर दिया तथा लम्बे-लम्बे डग भरता राकेश की नजरों से लुप्त हो गया। इतने में गाड़ी भी चल पड़ी और राकेश दौड़कर हेमा के डिब्बे में प्रवेश कर गया।

डिब्बे में पूर्ण अँधेरा था। राकेश ने लाइटर जलाना चाहा, पर रुक गया। धीरे-धीरे वह हेमा की सीट की ओर बढ़ने लगा, जहाँ

पर वह बेसुध होकर हमेशा के लिए सो गई। राकेश को विश्वास हो गया कि हेमा जिन्दा नहीं है, वरना उसकी साँसों की आवाज़ ऐसे शान्त डिब्बे में अवश्य सुनाई पड़ती। फिर भी वह हेमा के करीब आकर रुक गया। एक बार फिर वह निश्चय करना चाहता था। उसने फ्लास्क खोल कर देखा, वह खाली था। उसे निश्चय हो गया कि हेमा अब इस दुनिया में नहीं, वह मर चुकी है। धीरे-धीरे हाथ बढ़ाकर उसने हेमा को बर्थ से नीचे गिरा दिया। उसमें जरा भी हरकत नहीं हुई। लाश तो लाश ही होती है। अब उसे पूरा विश्वास हो गया। जिस बिस्तर पर हेमा सोई हुई थी उसी बिस्तर में राकेश ने हेमा को लपेटना शुरू किया और बिस्तर को पूरा पैक करके रख दिया।

राकेश बर्थ पर बैठ गया, घबराहट दूर करने के लिए उसने सिगरेट पीनी चाही। तभी उस चलती हुई ट्रेन में दरवाजे को धक्का देकर तीन आदमी राकेश के डिब्बे में घुस आए जिनके हाथों में दो-दो पिस्तौलें थीं। उन सब को इस प्रकार देख कर राकेश काँप गया। उसके पैरों से जैसे फर्श खिसक रहा हो। वे तीनों आकर अपने-अपने हाथों में पिस्टल थामे राकेश के चारों ओर खड़े हो गए। उनमें से एक ने टॉर्च जलाई जिसकी रोशनी उसके दूसरे साथी के चेहरे पर पड़ रही थी। उसे देख कर राकेश कुछ पीछे हट गया। यह वही आदमी था जिसने उस स्टेशन पर उसके कँधे पर हाथ रख कर माचिस मांगी थी। तो क्या ये सभी मेरे पीछे लगे हुए थे! अब क्या होगा। इस प्रकार पीछा करने का इनका क्या उद्देश्य हो सकता है? ये मुझसे क्या चाहते होंगे? राकेश ने एक बार सब की ओर नजर घुमा कर गौर से देखा, फिर काँपते हुए स्वर में बोला आप क्या चाहते हैं मुझसे ?

सिर्फ दोस्ती—एक ने उत्तर दिया। मिस्टर राकेश, हमने वहाँ से ही तुम्हारा पीछा करना शुरू कर दिया था। तुमने क्या-क्या किया,

हम सब जानते हैं। हम यह भी जानते हैं कि इस बिस्तर में हेमा की लाश है।

ऐसा सुनकर राकेश जैसे उछल पड़ा। वह इतना डर गया कि अगर काटो तो खून तक नहीं निकले। वह पसीने से तर हो गया। इसमें कुछ भी है, आपका उससे क्या मतलब ?

पहले वाले ने उत्तर दिया—दोस्त, मतलब तो बहुत कुछ है, पर हमारा नहीं हमारे बॉस का। हम तो उनके इशारों पर चलने वाले कठपुतले हैं। हमारे बॉस आपसे दोस्ती रखना चाहते हैं। उन्हें आपकी सख्त जरूरत है। हम अगले स्टेशन पर उतर जाएँगे, आप भी हमारे साथ ही चलेंगे।

राकेश समझ गया कि वह बिल्कुल फँस गया है। फँसा भी ऐसा है कि यहाँ से बचकर निकलना शायद सम्भव नहीं।

करीब दस मिनट के पश्चात् गाड़ी आकर एक छोटे से स्टेशन पर रुक गई, जहाँ पर बिजली का कोई प्रबन्ध नहीं था। एक दो शमादान जल रहे थे, फिर भी अँधेरा था।

आइये मिस्टर राकेश।

श्याम, तुम इस बिस्तर को खोल कर हेमा की लाश को रेल की पटरियों पर रख दो—पहले ने अपने एक साथी से कहा और फिर राकेश की ओर देखा जो शान्त खड़ा था।

वे कुछ ही आगे चले थे, कि उन्हें एक कार मिली जो कि घनी झाड़ियों में खड़ी उनका इन्तजार कर रही थी। सब आकर उस कार में बैठ गये और वह चल पड़ी। मिस्टर राकेश, अब तो आप जान ही गए होंगे कि हम सब आपके दोस्त हैं। हम आप पर आँच तक नहीं आने देंगे। सुबह होते ही सब को यह मालूम हो जाएगा, कि हेमा गाड़ी के नीचे कटकर मर गई। तुम पर कोई शक नहीं कर सकेगा। राकेश समझ गया कि उसका पाला एक खतरनाक गैंग से पड़ा है।

+ + +

एक बड़े से हॉल में कई लोग बैठे हुए थे। राकेश के पास मदन बैठा हुआ था।

शेख कह रहा था —मि० राकेश, हम सब तुम्हारे दोस्त हैं। तुम हमें साथ लेकर चलो, फिर देखो तुम पर कोई उँगली तक नहीं उठा सकेगा। तुम बेफिक्र रहो। तुमने हेमा का कत्ल किया है—अगर पुलिस को यह मालूम हो जाय तो तुम्हें फाँसी हो जाएगी।

फाँसी का नाम सुनकर राकेश की नसें तक काँप उठीं।

अगर हमें पूरा-पूरा साथ दोगे तो तुम पर कोई भी शक नहीं करेगा। हम चाहते हैं कि तुम हमारे साथ मिलकर काम करो। तुम्हारी जिन्दगी चमक उठेगी। अगर हमें बेवकूफ बनाने की कोशिश की या ऐसी-वैसी कोई हरकत की तो अंजाम तुम स्वयं जानते ही हो कि एक कातिल की क्या सजा होती है। हमारे गिरोह का क्या उद्देश्य है—हम तुम्हें बता ही चुके हैं और तुम्हें क्या करना है वह भी बता चुके हैं।

राकेश, बॉस ने जिस काम के लिये तुम्हें नियुक्त किया है, तुम्हें वह करना ही चाहिये, वरना अंजाम भी तुम जानते ही हो—मदन बोला।

पर मैं यह काम कैसे कर सकता हूँ—डरते हुए राकेश बोला—ठीक है कमिश्नर के घर में जाता तो हूँ, पर उसके पर्सनल कमरे तक मैं तो क्या चींटी तक नहीं जा सकती।

राकेश, तुम घबराओ नहीं, यह भी हो जाएगा। हमने ऐसा प्लान बनाया है जिसके द्वारा यह काम तुम्हारे लिये सरल हो जाएगा—कामरेड बोला—हम तुम्हें मुँह माँगा इनाम देंगे। तुम अपने माँ-बाप को खत्म कर दो। पूरी जायदाद तुम्हारी ही होगी। वह फाइल लाकर हमें दे दो, हम तुम्हें बीस लाख रुपये देंगे। तुम्हारी जिन्दगी में बहार आ जाएगी। तुम करोड़ों के मालिक बन जाओगे। हम तुम्हारी हिफाजत की पूरी जिम्मेदारी लेते हैं, क्योंकि अगर तुम्हें कुछ हो गया तो हमें वह फाइल नहीं मिल सकेगी। तुम स्वयं ही

समझ सकते हो कि तुम्हारी जिन्दगी हमें अपनी जिन्दगी से कहीं ज्यादा प्यारी है। तुम्हें बचाने के लिये हम लाखों की जानें कुर्बान कर देंगे। तुम बेफिक्र रहो, जो जी में आए करो। जिसे खत्म करना चाहो कर दो। जितने खून करना चाहो, करो, सब तुम्हारे लिये माफ हैं। हमारी ताकत हमेशा तुम्हारे संग रहेगी। तुमने हमारी शक्ति तो देख ही ली है कि हम पूरे हिन्दुस्तान से टक्कर लेने की हिम्मत रखते हैं। बोलो, क्या चाहते हो ? कामरेड ने राकेश से सवाल किया।

राकेश ने गौर किया कि सच ही है, अगर मैंने इन को साथ दिया तो मैं हमेशा सुरक्षित रहूँगा। मुझ पर कोई उँगली भी नहीं उठा सकेगा।

बॉस, मुझे आपकी हर बात मंजूर है—राकेश बोला।

बहुत खूब, हमें तुमसे यही आशा थी। अब हमारे लोग तुम्हें तुम्हारे घर तक पहुँचा देते हैं। यह लो ट्रान्समीटर घड़ी। जब कभी भी जरूरत पड़े, इसके द्वारा कॉन्टेक्ट कर लेना। हमारी शक्ति हमेशा तुम्हारी रक्षा के लिये साये की तरह घूमती रहेगी। मदन, तुम राकेश को गेंग के पूरे कानूनों से वाकिफ कर दो। आज से यह हमारा प्यारा साथी है। वेरी गुड बॉय ! तुम अब इनके साथ जा सकते हो।

——

१४

डाइनिंग टेबिल के चारों ओर चार कुर्सियाँ पड़ी थीं। सामने की कुर्सी पर सेठ दीनदयाय बैठे हुए थे और साइड की दोनों कुर्सियों पर धरती और राकेश। एक कुर्सी खाली थी। अपने पति के प्याले में खीर डालते हुए धरती बोली—खीर देखकर हेमा की याद आ गई, उसे खीर बहुत पसन्द है।

हाँ धरती, तुम ठीक कह रही हो। इस खाली कुर्सी को देखकर कुछ सूना-सूना लग रहा है। खीर गले के नीचे जा ही नहीं सकेगी। हेमा के साथ घर की रौनक ही चली गई है। धरती मैं खीर नहीं खाऊँगा। जब हेमा आएगी तब दोनों बाप-बेटी मिलकर साथ-साथ खाएंगें, तुम दोनों खालो—सेठ दीनदयाल गम्भीर हो गये।

यह आप क्या कह रहे हें ! आज तो हेमा सिर्फ तीन दिन के लिये गई है। जब वह अपने ससुराल चली जाएगी तब आप क्या करेंगे ?

कौन कहता है कि हेमा यह घर छोड़ कर जाएगी—जोर देते हुए दीनदयाल बोले—इस घर का सब कुछ उसका ही तो है। शादी के बाद भी वह यहीं रहेगी। अमर और उसकी माँ को मैं यहाँ पर बुला लूंगा। अब तो अमर भी हमारा ही बेटा हुआ और मेरा सारा कारोबार उसे ही तो संभालना है।

आप भी पिताजी कैसे बातें करते हैं ! राकेश बोला—क्या हेमा को खीर की कमी है कि आप नहीं खाते और इतने चिंतित हो उठे हैं। वह तो वहाँ पर भी बहुत सी मिठाइयाँ खाती होगी। आखिरकार शादी में गई हुई है। शादी के अवसर पर तो खीर से भी कहीं ज्यादा अच्छी मिठाइयाँ बनती हैं, फिर भी जब हेमा वापस आएगी तब

फिर खीर बना लेंगे। अगर आप नहीं खाएंगे तो हम भी नहीं खाएंगे—ऐसा कह कर राकेश खिलखिला कर हंस पड़ा। सेठ दीन-दयाल और धरती भी हंस पड़े।

तीनों ने साथ-साथ खाना शुरू किया। तीनों हंसते हुए खा रहे थे। राकेश कह रहा था— पिताजी, हेमा की शादी बड़ी धूमधाम से करेंगे, बड़ा मजा आएगा। पिताजी ! अमर, हेमा और मैं तीनों बचपन में साथ-साथ पढ़ा करते थे। अमर बहुत अच्छा लड़का है, मुझे बेहद पसन्द है। बचपन में हम दोनों की खूब पटती थी।

तू घबराता क्यों है बेटे, हेमा की शादी हो जाए फिर तेरी भी सगाई करेंगे—यह धरती कह रही थी—तुम्हारे कॉलेज में तो कई लड़कियाँ पढ़ती हैं। क्या तुमने कोई लड़की पसन्द की है ? धरती हँस रही थी।

माँ, तुम भी कैसी बातें करती हो—शर्माते हुए राकेश बोला। मुझे ऐसी बातें पसन्द नहीं आतीं। मैं तो कॉलेज में किसी से बात तक नहीं करता—राकेश ही ही ही करके हँस पड़ा।

क्या बात है राकेश, आज हद से ज्याद शरीफ बन रहे हो—गिलास को एक ओर रखते हुए दीनदयाल बोले।

राकेश कुछ नहीं बोला चुपचाप खाता रहा। मन ही मन दीन-दयाल को वह गालियाँ देने लगा।

सुनिये, हेमा की शादी के बाद राकेश की बारी है। इसके लिये भी तो सोचना होगा।

धरती, मैं राकेश के लिये सब कुछ करने के लिये तैयार हूँ, पर इसके कारनामे देख कर कुछ भी नहीं कर सकता।

पिताजी, आप तो हमेशा मुझ से नाराज ही रहा करते हैं। कब की मैंने सारी बुराइयाँ छोड़ दीं। मैं तो पहले से ही शर्मिन्दा हूँ।

राकेश, मैं तुम पर भरोसा नहीं कर सकता। ठीक है, तुम सुधर गये हो, परन्तु क्या हमेशा ऐसे ही रहोगे ?

मैं आप से वायदा करता हूँ कि भविष्य में आप को मुझ से जरा भी शिकायत नहीं होगी। मैं स्वयं को अकेला महसूस करता था, परन्तु अमर के आने के वाद मैं बिलकुल ठीक हूँ। मुझे एक साथी की आवश्यकता रहा करती थी, वह अब पूरी हो गई। हेमा की शादी के बाद अमर भी अपने यहीं रहेगा। हम दोनों मिलकर काम करेंगे। मैं अमर को अपने बड़े भाई की तरह समझता हूँ। आपने स्वयं ही महसूस किया होगा कि मैं हेमा को कितना चाहता हूँ। है तो वह मुझ से छोटी, पर मैं उसे अपनी बड़ी बहन समझता हूँ। हेमा ने कभी भी मेरी आपसे शिकायत नहीं की। शिकायत तो सिर्फ आपको ही थी जो मुनासिब थी, परन्तु अब ऐसा नहीं होगा। मैं अपनी हरकतों के लिए शर्मिंदा हूँ। इतना कह कर राकेश चुप हो गया। धरती ध्यान देकर सुन रही थी।

राकेश की पीठ थपथपाते हुए दीनदयाल बोले—बेटे, जो कुछ तुम कह चुके हो, अगर ऐसा बनकर दिखाया तो मैं कभी भी तुम्हें कुछ भी नहीं कहूँगा। बेटे, मैं भी तो अब बूढ़ा हो चुका हूँ। अपने दो-दो बेटों के होते हुए भी मुझे मेहनत करनी पड़ती है। मैं चाहता हूँ कि तुम और अमर दोनों साथ-साथ मिलकर काम करो।

पिताजी, अब आप को चिंता करने की कोई आवश्यकता नहीं। सब ठीक हो जाएगा। हमें अब हेमा की शादी के बारे में सोचना है। हेमा मेरी एक ही तो बहन है। मैं चाहता हूँ कि हेमा की शादी ऐसी धूमधाम से करें कि लोग देखकर दंग रह जाएँ।

तुम ठीक कह रहे हो। सारा प्रबन्ध तुम स्वयं ही करना। जितना भी खर्चा हो फिक्र नहीं। मैं हेमा की शादी राजाओं की तरह धूमधाम से करूँगा। बेटे, मैं आज तुम से बेहद खुश हूँ। मुझे वही आदमी अच्छा लगता है जो हेमा की भलाई सोचता हो। इतने में टेलिफोन की घंटी बज उठी।

मालिक, आपका फोन है। नौकर ने फोन आगे खिसका दिया।

यैस·· दीनदयाल स्पीकिंग।

सेठ जी, मैं पुलिस इन्सपैक्टर शौकत बोल रहा हूँ—दूसरी ओर से आवाज आई।

फरमाइये इन्सपैक्टर साहब, आज सुबह-सुबह कैसे हमारी याद आ गई ?

सेठजी, बात यह है कि······। इतना कहकर इन्सपैक्टर रुक गये।

क्या बात है शौकत साहब कि आप कहने में घबरा रहे हैं।

धरती और राकेश, ध्यान देकर दीनदयाल की बातें सुनने लगे।

हेमा आप की बेटी है ना—इन्सपैक्टर फिर रुक गये।

हाँ हाँ ·· हेमा मेरी बेटी है। क्या बात हैं ? हेमा का नाम सुनकर दीनदयाल घबरा गये। आप हेमा के विषय में क्यों पूछ रहे हैं ? खैरियत तो है ? कैसी है मेरी हेमा ? प्लीज, जल्दी बताइये। मेरा दिल बैठता जा रहा है।

अपने पति को इस प्रकार घबराया हुआ देख कर बेचारी धरती काँप रही थी कि आखिरकार हेमा को क्या हो गया है।

सेठ जी बड़े दुःख के साथ कहना पड़ता है कि आज सुबह रेल की पटरियों पर हेमा की लाश पाई गई है।

नहीं ···· नहीं······दीनदयाल चिल्ला उठे। तुम झूठ बोलते हो। वह मेरी हेमा नहीं हो सकती।

सेठजी, काश ! ऐसा ही होता पर हकीकत से कैसे मुँह मोड़ सकते हैं।

तो क्या वह मेरी हेमा हे ? नहीं-नहीं·······एक भयानक चीख दीनदयाल के मुख से निकली। टेलीफोन उसके हाथ से छूट गया और वह स्वयं लड़खड़ाता हुआ नीचे गिर पड़ा।

हैलो·······हैलो·······हैलो·······इन्सपैक्टर कहते रहे, पर उन्हें कोई उत्तर नहीं मिला।

आपको यह अचानक क्या हो गया ? बताइये तो सही, बात क्या हैं ?

हाँ पिताजी, कुछ तो बोलिये, हम घबरा रहे हैं। पिताजी ! पिताजी ! देखिये माँ, ये बोलते ही नहीं।

दीनदयाल कुछ भी नहीं बोले। उनकी आँखें फट गईं। पूरा कमरा उन्हें घूमता हुआ लगा। वह सुध-बुध खोकर पता नहीं आँखें फाड़े कहाँ देख रहे थे।

आप सुनते हैं कि नहीं, क्या बात है ? बताइये तो सही। हे भगवान क्या हो गया है इन्हें कि होश-हवास खो बैठे हैं। मैं हाथ जोड़ती हूँ, मेहरबानी करके बोलिये। राकेश, देखो इन्हें क्या हो गया है।

पिताजी ...... पिताजी.......माँ ये तो कुछ बोलते ही नहीं।

दीनदयाल ऐसे पड़े थे जैसे एक बेजान पुतला हो। उनके जिस्म में जरा भी हरकत नहीं हो रही थी।

पुलिस इन्सपैक्टर ने बहुत बार रिंग लगाई, पर कोई जवाब नहीं। वे समझे कि हेमा की मत्यु की खबर सुनकर शायद सेठजी को कुछ हो गया है। मि० शौकत ने अपनी जीप ली और चल पड़े सेठ दीनदयाल के बंगले की ओर। हे.......मा एक भयानक चीख दीनदयाल के मुख से निकली जिससे पूरा कमरा जैसे दहल गया और फिर वे बेहोश हो गये।

राकेश जल्दी पानी लेकर आओ। हे प्रभु ! मेरी रक्षा करो। यह क्या हो रहा है।

राकेश, दौड़कर पानी ले आया और दीनदयाल पर छींटे मारने लगा। वे धीरे-धीरे होश में आने लगे उन्होंने और अपनी आँखें खोल दीं। पागलों की तरह आँखें घुमाकर वे कमरे का निरीक्षण करने लगे। अब उनकी नज़र धरती पर पड़ी जो उनके पास ही खड़ी थी। धरती, हम सब लुट गये, हमारी हेमा हमें छोड़कर चली गई हमेशा-हमेशा के लिये। फिर वे फूट-फूट कर रो पड़े।

यह आप क्या कह रहे हैं ? हे प्रभु ! ऐसा सुनने से पहले मेरे कान क्यों नहीं फट गये.......मैं मर जाती। हे भगवान ! किस जन्म का

बदला ले रहो हो। मेरी हेमा कहाँ है ? उसे वापस भेज दो। हे···· ···मा ···मेरी बच्ची, तुम कहाँ हो ? क्या अपनी माँ से रूठ गई हो ?

धरती, तुम्हारी आवाज हेमा तक नहीं पहुँचेगी, वह तो दूर, बहुत दूर चली गई है। दीनदयाल चिल्ला-चिल्ला कर रो रहे थे।

नहीं, आप झूठ बोल रहे है। मेरी हेमा को कुछ नहीं हुआ। बताइये, सच-सच बताइये—मेरी बच्ची कहाँहै ? अरे······मैं भी कितनी पागल हूँ, वह तो अपनी सहेली की शादी में गई हुई है। राकेश, सुना तुमने ? तुम्हारे पिताजी कहते है कि हेमा चली गई, हमें छोड़कर। अब वो भी झूठ बोलना सीख गये हैं। तुम ही बताओ, भला हेमा अपने माँ-बाप और अपने भाई को छोड़ कर कैसे जा सकती है। उसकी तो शादी होने वाली है, वह तो हमेशा यही पर रहेगी और वह कहीं नहीं जा सकती। आप चुप क्यों हैं ? जवाब दीजिये। आपने ही तो कहा था कि हेमा सदा हमारे पास इसी घर में रहेगी। फिर वह हमें छोड़कर कैसे जा सकती है ? आप झूठे है, बिल्कुल झूठे, ऐसा क्यों कहा आपने ? ऐसा कहकर धरती गला फाड़-फाड़ कर रोने लगी। मैं उसे वापस लेकर आऊँगी। मेरी बच्ची को मुझसे कोई अलग नहीं कर सकता। मैं उसकी माँ हूँ, मैं उसकी माँ हूँ, मैं उसकी माँ हूँ, धरती जैसे कि पागल हो गई। वह चिल्ला-चिल्ला कर चुप हो गई, एक दम चुप।

इतने में अमर भी रोता हुआ आ गया। उसके साथ पुलिस इन्सपैक्टर शौकत भी थे। वे हैमा का शव लेकर आये थे।

माँ-बाप दोनों हेमा के शव से लिपट कर चिल्ला-चिल्ला कर रो पड़े। हेमा का मुँह इस प्रकार कुचला हुआ था कि पहचानने में भी नहीं आ रहा था। अमर, देखो हेमा हम सबसे रूठ कर चली गई। यह साड़ी सदा उसे पसन्द थी। उस दिन जन्म-दिवस पर भी यह साड़ी उसने पहनी थी और आज भी वही साड़ी पहने हुई है। कैसा

मजाक भगवान ने हम से किया है। धरती हेमा के हाथों को चूमने लगी। उसकी उंगली में पहनी हुई अंगूठी जिस पर हेमा का नाम लिखा था उसे वह अपनी आँखों पर बार-बार रखने लगी उसे चूमती रही। धरती की ऐसी दशा हो गई थी कि ऐसा लगता था, वह पागल हो गई है। ऐसा होना स्वभाविक था। अगर किसी माँ की जवान लड़की उसे इस तरह छोड़ कर चली जाए तो उसके दिल पर गहरा सदमा पहुँचता है। बेचारे अमर के दिल पर इतनी ठेस पहुँची कि वह न तो रो सकता था और न चिल्ला ही सकता था। उसकी आँखों का जैसे पानी ही सूख गया। उसने शायद उन आँसुओं को अपने दिल में हेमा के प्यार का नजराना समझ कर रख लिया। इसे रख कर वह जीवन भर उसकी याद में तड़पता रहेगा।

यह सब कैसे हो गया इन्सपेक्टर साहब ? रोते हुए राकेश बोला—गाड़ी के नीचे कैसे आ गई मेरी बहन ?

मि० राकेश, यह काम किसी गुण्डे का ही लगता है।

क्या आप बता सकते हैं कि वह अपने साथ क्या-क्या लेकर निकली थी ?

दीनदयाल अब होश में आ चुके थे। वे सब शान्त खड़े थे।

मुझे तो कुछ मालूम नहीं। आप पिताजी से पूछिये।

सेठजी, मैं समझता हूँ कि इस वक्त आपके दिल पर क्या बीतती होगी, परन्तु यह कत्ल का मामला है, इसलिये पूछताछ करना आवश्यक हो जाता है। हमें सबसे पूछताछ करनी होगी ताकि कातिल का पता लगा सकें।

आप जो कुछ पूछना चाहते हैं, पूछिए—दीनदयाल पूरे होश में थे।

जाते वक्त हेमा अपने साथ क्या-क्या लेकर गई थी। मेरे कहने का मतलब है—पैसे, जवाहरात वगैरह ।

उसके पास दस हजार का कैश, दो हजार की घड़ी और करीब आठ हजार तक के जेवरात थे।

इसका मतलब यह सब छीन कर रेल की पटरियों पर फेंक दिया गया उसे । हम तो पहले पहचान ही नहीं सके कि यह हेमा है, क्योंकि चेहरा पूरा कुचला हुआ है। इसकी लाश से कुछ ही दूरी पर उसका पर्स मिला जिसमें आईडेन्टिटी कार्ड पड़ा था। ऐसा कहकक इन्सपेक्टर ने वह कार्ड अपनी जेब से निकाल कर सेठजी को दिखाया। उसकी उंगली में पहनी हुई अंगूठी पर भी उसका ही नाम लिखा था। सेठजी, हमें एक बात समझ में नहीं आती कि उस गुण्डे ने ज़ेवरात वगैरह कैसे छीने होंगे। मान लिया जाए कि छीने भी हो, या डर के मारे हेमा ने स्वयं ही उतार कर दे दिये हों तो फिर उस नीच को क्या जरूरत पड़ी कि इस प्रकार उसे रेल की पटरियों पर फैंक दे। ये सारी बातें कुछ उलझी हुई लगती हैं।

सेठजी आप रो रहे हैं ? जो होना था सो हो ही गया। जिसकी चीज थी उसने उसे वापस बुला लिया। भगवान के खेल ही कुछ ऐसे हैं कि किसी को भेजता है तो किसी को बुला लेता है। आप तो स्वयं समझदार हैं, अगर आप ही हिम्मत हार बैठेंगे तो दूसरों का क्या हाल होगा ? हमें भी बहुत दुःख हो रहा है। जिस नीच ने यह काम किया है मैं उसे पाताल से भी खोज निकालूंगा। उसे ऐसा दण्ड दिलाऊंगा कि देखने वाले की नस-नस कांप उठेगी। सेठजी आप के दिल में दुःख होगा। आप उनके पिताजी हैं। अपनी औलाद की ऐसी दशा देखकर मां-बाप पर क्या गुजरती होगी, हम सब समझते हैं, परन्तु मैं आप से विनती करूंगा कि आप हमें पूरा-पूरा साथ दें। जितना जल्दी हो सके हम कातिल को ढूंढ निकालेंगे। ऐसे नीच इन्सानों को दण्ड देना ही हमारा काम है। कानून के हाथ इतने लम्बे हैं कि उनसे कोई भी बच कर नहीं निकल सकता—कातिल चाहे कितना ही होशियार क्यों न हो। शव को हम पोस्टमार्टम के लिये भेज रहे हैं, रिपोर्ट आप को बताई जाएगी। अच्छा, अब हम चलते हैं।

अमर रोना चाहता था, पर रो नहीं सका। उसके गले की जैसे घिग्घी ही बन्द हो गई हो, उसकी आँखों का पानी सूख गया था।

वह एकान्त में जाकर खामोश बैठा रहा। न किसी से बोलता और न ही किसी की सुनता। उसे जैसे विश्वास ही नहीं हो रहा था कि जिसने जिन्दगी की आखिरी मंजिल तक साथ निभाने की कसम खाई थी वह इस प्रकार कैसे उसे छोड़ कर जा सकती है। उसकी बढ़ी हुई दाढ़ी और बालों में तेल नहीं, आंखें सूजी हुई सी। ऐसा लगता था जैसे वह एक इन्सान नहीं चलती-फिरती लाश हो। उसने न तो खाया और न ही पिया था। कोने में बैठकर मन ही मन आंसू बहाता रहा।

कमिश्नर चौधरी सेठजी से लिपट कर फूट-फूट कर रो पड़े। भाई साहब, हमारी नन्ही बिटिया हमसे रूठकर सदा-सदा के लिये चली गई। भगवान कैसे दुष्ट लोगों को इस धरती पर भेजता है जिनके दिल में कोई रहम नहीं। चांदी के चन्द टुकड़ों के लिये जान ले लेते हैं। क्या उनके लिये रुपये-पैसे एक इन्सान की जिन्दगी से बढ़कर है। भाई साहब, अब तक मैं शान्त ही बैठा था, पर अब ऐसा नहीं होगा। मैं अभी एक-एक गुण्डे को ढूंढकर उससे बड़ी बेरहमी से पेश आऊंगा। उन कमीनों की ऐसी हालत करूंगा कि भविष्य में कोई भी जुर्रत न कर सके। मैंने सभी हैडक्वार्टरों पर संदेश भेज दिया है कि पूरी-पूरी जांच की जाय। जिस कमीने ने मेरी रानी बिटिया का कत्ल किया है मैं उसे ढूंढकर ही रहूंगा। जीते जी उसकी खाल उधेड़ दूंगा ताकि भविष्य के लिये एक मिसाल बनकर रह जाए और कोई भी गुण्डा ऐसा काम करने से तो क्या सोचने से भी थरथराए। गुण्डा-गर्दी को मैं जड़ से उखाड़ दूंगा। यहाँ के आस-पास के सभी गुण्डों को गिरफ्तार करने का आदेश दे दिया है।

जिस घर में कुछ समय पहले इतनी खुशियाँ मनाई जा रही थी, वहाँ पर अब खामोशी, दुःख के सिवाय और कुछ भी नहीं था। पूरे घर में मातम छाया हुआ था नौकर-चाकर सभी रो रहे थे।

सेठजी, पोस्टमार्टम की रिपोर्ट आ गयी है।

इन्सपैक्टर साहब, हेमा को जाना था और वह चली गई। अब रिपोर्ट सुनकर क्या फर्क पड़ेगा।

सेठजी, आप ठीक कह रहे हैं कि अब तो कुछ नहीं हो सकता, परन्तु पोस्ट मार्टम की रिपोर्ट ने सोचने को मजबूर कर दिया है। रिपोर्ट से यह ज्ञात हुआ है कि हेमा को जहर देकर मारा गया है। इतना कहकर मि० शौकत सेठजी की ओर देखने लगे।

यह आप क्या कह रहे हैं ? दीनदयाल उछड़ पड़े। उसे तो गाड़ी के नीचे फैंका गया था।

हाँ, ठीक है। उसे फैंका गया था, क्योंकि हमें वह रेल की पटरियों पर मिली थी, परन्तु यह सब बाद में किया गया है। पोस्ट मार्टम की रिपोर्ट बताती है कि पहले उसे जहर देकर मारा गया है और बाद में रेल की पटरियों पर डाला गया है ताकि सब समझें कि वह ट्रेन के नीचे आकर मर गई। कातिल बड़ा होशियार मालूम पड़ता है। हेमा को कत्ल करने के लिये कातिल ने पहले प्रोग्राम तैयार किया है और उसके अनुसार वह अपने उद्देश्य में सफल हो गया।

ऐसा कैसे हो सकता है इन्सपैक्टर साहब ? दीनदयाल की आंखें आश्चर्य के मारे फट गई। उसे जैसे विश्वास ही नहीं हो रहा हो।

सेठजी, कातिल कोई अजनबी नहीं। वह अवश्य हेमा को जानता है और वह भी अच्छी तरह। उसे मालूम होगा कि हेमा कहीं जा रही है। इस प्रकार जहर उसे और कोई बाहरी आदमी नहीं दे सकता। कातिल के पहले से ही कत्ल करने का प्रोग्राम बना लिया होगा और जब उसने देखा कि वह कहीं जा रही है तो वह अपना काम कर गया। कातिल के लिये यह सबसे अच्छा मौका था। मैंने पूरी रिपोर्ट बना ली है।

इन्सपेक्टर, अगर कातिल हेमा को जानता है तो वह भी उसे जानती ही होगी, वर्ना वह इस प्रकार जहर नहीं दे सकता।

सेठजी, आप ठीक ही कह रहे हैं। किसी खाने की चीज में जहर मिलाकर उसे दिया गया है। जहर बहुत ही पावरफुल था। खाने के कुछ ही मिनट बाद वह खत्म हो गई। उसे सोचने का भी समय

नहीं मिला कि बचने के लिये कुछ कर सके। कातिल कोई मामूली आदमी नहीं, उसने सोच-समझ कर यह काम किया है, वरना वह इस प्रकार का जहर नहीं देता। उसने सोचा होगा कि वह एकदम ही मर जाय अगर जिन्दा रह गई तो वह अवश्य ही फँस जाएगा क्योंकि हेमा जानती होगी कि जो चीज उसने खाई है वह किसने उसे दी थी।

इन्सपैक्टर मुझे ऐसा कोई जाना-पहचाना आदमी नजर नहीं आता जिसने सिर्फ बीस हजार के खातिर यह नीच काम किया हो। यहाँ पर हमारा कोई रिश्तेदार नहीं। हम सब यहाँ पर अपने ही हैं।

सेठजी, आप मत भूलिये कि हेमा के पास कुल मिलाकर बीस हजार रुपये थे और यह कोई छोटी रकम नहीं। जिस आदमी को जरूरत होगी वह इससे भी कम रकम के लिये एक तो क्या कई कत्ल कर सकता है। इन पैसों से एक ऑर्डिनरी इन्सान की जिन्दगी बन सकती है। लालच बहुत बुरी चीज है। इससे इन्सान का ईमान डगमगा जाता है। आज के जमाने में सिर्फ कुछ ही रुपयों के लिये भाई-भाई को खत्म कर देता है। यह दुनिया बड़ी जालिम है। यहाँ के कुछ लोगों से सवाल करना चाहता हूँ कि जब हेमा यहाँ से जा रही थी, उस वक्त कौन-कौन मौजूद था और कौन-कौन उसके साथ स्टेशन गये।

इन्सपैक्टर साहब, यह सब बेकार ही होगा। इस प्रकार हम कातिल का पता नहीं लगा सकते।

सेठजी, यह पुलिस का मामला है, हमें पूरी-पूरी छानबीन करनी होगी। मैं आपसे प्रार्थना करूँगा कि आप उन सबके लिये बताएँ। मैं उन सबसे कुछ सवाल पूछूँगा। इसके अलावा हमें हेमा की सहेलियों से भी पूछताछ करनी होगी। यह तो मालूम हो ही गया है कि हेमा को जहर दे दिया गया है और वह भी किसी जाने पह-चाने द्वारा।

अगर आप पूछना चाहते हैं तो में बताता हूँ—दीनदयाल की साँस बड़ी तेज चल रही थी।

बताइये सेठजी—इन्सपेक्टर अपनी फाइल में लिखने के लिये तैयार हो गये।

मेरे और धरती के अलावा उस वक्त हेमा का मँगेतर अमर और राकेश मौजूद थे।

इन सबके नाम नोट करते हुए इन्सपैक्टर बोले—हेमा स्टेशन अकेली ही गई थी या और कोई उसके साथ गया था।

वह कार लेकर गई थी। उसके साथ अमर था।

कार अमर ने ड्राइव की थी या हेमा ने—आप इसके बारे में कुछ कह सकते हैं?

उन दोनों में से किसी ने भी कार नहीं चलाई, ड्राइवर भोला उनके साथ था।

अच्छा! तो भोला ड्राइवर भी उनके साथ था? परन्तु आपने तो उसका कोई जिक्र नहीं किया।

इसलिये कि मैंने यह जरूरी नहीं समझा।

ऐसा नहीं सेठजी, छोटी सी चीज भी कभी-कभी बड़ी से बड़ी समस्या हल करने में मदद करती है। इन्सपैक्टर ने भोला का नाम भी नोट करते हुए पूछा—और कोई?

जी नहीं, ये तीनों ही गये थे।

अच्छा सेठजी, अब हम चलते हैं। आप मि० अमर और भोला को मेरे यहाँ भेजने का कष्ट करें। उनसे कुछ पूछना है।

——

१५

छोटे सरकार, गाड़ी किस ओर ले चलूँ ? भोला ने पूछा।

सीधे ही चलो, बांईं ओर जो होटल है उसके पास ही रोक देना सिगरेट को बाहर खिड़की में फेंकते हुए राकेश बोला।

भोला ने गाड़ी होटल के पास ही रोक दी। राकेश स्वयं ही दरवाजा खोलकर बाहर आ गया।

छोटे मालिक, क्या आप जा रहे हैं ? अन्दर बैठे हुए ही भोला ने पूछा ?

हाँ, तुम भी आ जाओ, दोनों चलेंगे।

मैं आपके साथ कैसे चल सकता हूँ ? लजाते हुए भोला बोला।

अरे तुम तो लड़कियों की तरह शर्मा रहे हो, जल्दी बाहर आ जाओ।

भोला को जैसे विश्वास नहीं हो रहा था, कि राकेश अपने साथ चलने के लिये उसे कह रहा है।

अरे तुम अभी बैठे हुए हो ! आ जाओ, शरमाओ नहीं—ऐसा कहकर राकेश ने एक सिगरेट जलाई।

शर्माता हुआ भोला बाहर आ गया।

भोला, यह लो सिगरेट, तुम भी पीओ।

छोटे सरकार, मैं बीड़ी पीता हूँ।

अरे ले लो, आज हमारे साथ सिगरेट पीओ।

भोला ने सिगरेट ले ली, वह समझ नहीं सका कि किस कारण उसके छोटे मालिक आज उस पर इतने महरबान हो रहे हैं।

आओ मेरे साथ—राकेश आगे बढ़ने लगा। भोला धीरे-धीरे उसके पीछे जाने लगा।

तुम पीछे-पीछे इस तरह क्यों आ रहे हो ? हमारे संग-संग चलो ।

दोनों ने होटल के एक खाली केबिन में प्रवेश किया । यह केबिन अपने लिये राकेश ने रिजर्व करा रखी थी ।

साब, आपके लिए कुछ····? एक बेरे ने आकर अदब के साथ सिर झुकाए पूछा ।

दो डबल पेग स्कॉच और कुछ खाने का सामान वगैरह ले आओ ।

बैरा आर्डर लेकर चला गया ।

भोला, तुम नहीं जानते कि मैं यहाँ तुम्हें यहाँ क्यों लाया हूं ? मेरा तुमसे एक आवश्यक काम है ।

आपका मुझसे कौनसा आवश्यक काम हो सकता है ? मुस्कराते हुए भोला बोला ।

हाँ भोला, आवश्यक काम ही है । मैं तुमसे कुछ सवाल करूँगा और तुम्हें उनका सही-सही उत्तर देना होगा । मुझे तुम्हारी मदद की जरूरत है ।

छोटे मालिक मैं भला आपकी कैसी मदद कर सकता हूँ, परन्तु अगर कोई ऐसी-वैसी बात है तो मैं आपके लिए जान तक देने को तैयार हूँ । मालिक, कब से आपका नमक खा रहा हूँ । अगर मैं आपके किसी काम आ सकूँ तो यह मेरे लिये गर्व की बात है ।

शाबाश ! मुझे तुमसे यही आशा थी ।

इतने में बैरा आर्डर के मुताबिक सब कुछ लेकर आ गया और टेबुल पर रखकर जैसे ही जाने लगा कि राकेश बोला जब तक मैं बैल न बजाऊं तब तक कोई भी नहीं आए । समझे ?

जी सरकार, बैरा चला गया ।

अच्छा तो मैं कह रहा था अरे तुम ऐसे कैसे बैठे हो । अच्छी तरह बैठ जाओ, घबराओ नहीं । इस समय मैं तुम्हारा मालिक नहीं एक दोस्त की तरह हूँ ।

यह तो आपका बडप्पन है सरकार, नौकर तो नौकर ही होता है—अपने होठों पर जीभ घुमाते हुए भोला ने कहा । उसकी सीधी

नजर स्कॉच के दोनों पेगों पर थी। इतनी सारी खाने की चीजें देख कर वह मन ही मन में बल्लियों उछल रहा था।

यह लो एक गिलास भोला की ओर सरकाते हुए राकेश बोला।

छोटे मालिक, ये क्या (मन मैं तो वह खुश हो रहा था) ?

देखो भोला—तुम्हारे ये नखरे हमें पसन्द नहीं। दूसरा, तुम मुझे छोटे मालिक न कहकर सिर्फ राकेश ही कहा करो।

ऐसा कैसे हो सकता है? आप तो हमारे मालिक ही है मैं आपका नाम कैसे ले सकता हूँ।

फिर वही उटपटांग बातें, लो यह गिलास—पीलो।

भोला ने चुपचाप गिलास ले लिया और राकेश की ओर देखने लगा।

पी जाओ—शाबाश····

भोला ने पूरी की पूरी शराब गले के अन्दर उतार दी। वह भी शराब पीने का बहुत शौकीन था। हमेशा तो वह ठर्रा इत्यादि सस्ती शराब पीता था, परन्तु आज जो अंग्रेजी शराब पी तो जैसे कि आसमान की ओर उड़ने लगा। अपनी शराब पीकर वह अब राकेश की गिलास को ललचाई नजरों से देखने लगा।

राकेश ने अब तक अपनी शराब नहीं पी थी। उसने जब देखा कि भोला उसके गिलास की ओर देख रहा है तो समझ गया।

लो भोला, इसे भी पीलो अपनी गिलास उसकी ओर बढ़ाते हुए उसने कहा।

भोला यह गिलास भी लेना तो चाहता था, पर शर्म के मारे नहीं ले रहा था।

लेलो भोला, मैं दूसरी मंगवा लूंगा।

भोला ने राकेश के हाथ से गिलस ले लिया और गटागट उसे भी पी गया। खाली गिलास को टेबुल पर रखते हुए उसकी नजर खाने की चीजों पर पड़ी—एक बार फिर उसकी जीभ होठों पर घूम

गई तथा बिना राकेश से पूछे एक कोफता उठाकर मुँह में डाल दिया और राकेश खिल-खिलाकर हंस पड़ा।

भोला समझ गया, राकेश बाबू मैं ...

अरे कोई बात नहीं—राकेश बीच में ही बोल पड़ा,—तुम खाते रहो। यह सब मैंने तुम्हारे ही लिये तो मंगाए हैं।

भोला खाने पर इस प्रकार टूट पड़ा जैसे कोई भूखा शेर अपने शिकार पर टूट पड़ता है। वह फटाफट खाता गया। शराब धीरे-धीरे असर दिखाने लगी। खाते हुए वह झूम भी रहा था। कुछ ही समय में भोला ने सारी प्लेटें खाली कर दीं।

और कुछ मंगवाऊं भोला ?

नहीं राकेश बाबू, पेट भर गया है।

शर्माना मत, अगर चाहो तो अभी और मंगवालूँ ?

नहीं नहीं, अब जरूरत नहीं--झूमते हुए भोला ने उत्तर दिया।

राकेश ने बैल बजाई।

वही बैरा दरवाजा खोलते हुए आकर खड़ा हो गया।

यह सब ले जाओ—खाली प्लेटों और गिलासों की ओर इशारा करते हुए राकेश बोला।

बैरा सब उठाकर चला गया।

सुनो भोला, अब मैं तुमसे सवाल करूंगा। जवाब दोगे ना ?

जरूर दूँगा राकेश बाबू, आप पूछिये तो सही—झूमते हुए भोला ने कहा।

भोला हमारी हेमा चली गई। तुम तो जानते ही हो कि उसे जहर देकर मारा गया है, वो भी किसी जान-पहचान वाले आदमी द्वारा।

राकेश बाबू, आपने हेमा का नाम लिया और शराब का नशा जैसे जाने लगा। हेमा बिटिया बहुत अच्छी थी। पता नहीं किस नीच ने उसे मार डाला। अगर उस नीच का मुझे पता चल जाए तो मैं उसका गला घोंट दूँ, उसे जीते जी आग में डालकर जलादूँ।

भोला, हेमा को तुम और अमर स्टेशन तक छोड़ने गये थे न ?

हां, राकेश बाबू ।

तो क्या हेमा की गाड़ी छूटने के बाद अमर और तुम साथ-साथ वापस आए थे ?

नहीं राकेश बाबू, वे तो गाड़ी छूटने के दस मिनट पहिले ही चले गये। जाते समय मैंने उनसे पूछा--अमर बाबू, गाड़ी तो गई नहीं फिर आप जल्दी कहां जा रहे हैं ? तब वे बोले—मुझे कोई जरूरी काम याद आ गया है, इसलिये जा रहा हूँ। तब मैं बोला—आइये मैं आपको पहुँचा देता हूँ, तो वे बोले—नहीं मैं अपने आप चला जाऊँगा और फिर मुझे भी जाने को कहा।

और तुम चले गये ? सिगरेट के धुँए को छत की ओर फैंकते हुए राकेश ने पूछा।

हां राकेश बाबू ।

'बेवकूफ'—टेबल पर एक मुक्का मारते हुए बड़े जोर से राकेश बोला ।

अचानक राकेश में परिवर्तन देखकर भोला घबरा उठा और संभलते हुए बोला तो क्या मुझे जाना नहीं चाहिये था।

हां तुम्हें जाना नहीं चाहिये था। अचानक ऐसा कौन सा काम अमर को पड़ गया जो यूँ ही पैदल चला गया। जब अमर तुम्हें यह कह कर चला गया कि उसे कोई जरूरी काम याद आ गया है तो तुम्हें उसका पीछा करना चाहिये था।

राकेश बाबू, पीछा करने का क्या मतलब ? भोला अभी तक काँप रहा था।

भोला तुम वास्तव में भोले ही हो। स्वर में कुछ नर्माई लाते हुए राकेश ने कहा। अमर तुमसे झूठ बोल गया कि उसे आवश्यक काम है।

आपको कैसे मालूम हुआ कि अमर मुझसे झूठ बोल गया ?

पागल, ध्यान से सुनो—अमर तुमसे यह कहकर चला गया कि

उसे काम है और वह कहीं जा रहा है। तुम्हें तो मालूम नहीं कि वह कहां गया। हो सकता है वह तुमसे नजर बचाकर ट्रेन में ही बैठ गया हो।

हां, हो सकता है--भोला की आंखें आश्चर्य से फट गई।

और यह भी हो सकता है कि पहले से ही ऐसी कोई खाने की चीज में जहर मिलाकर हेमा को दे दी हो।

हां, यह भी हो सकता है।

अब तुम बताओ क्या समझे ? राकेश ने भोला की ओर देखा।

सब समझ गया राकेश बाबू—सब समझ गया। मुझे उसी समय कुछ अचम्भा तो हुआ था कि अमर जल्दी कैसे जा रहा है, परन्तु फिर मुझे कोई ध्यान नहीं आया। राकेश बाबू, अब मेरा अमर पर पूरा-पूरा शक हो गया है कि वही कातिल है। कमबख्त है किसी फटीचर की औलाद और जब उसने हेमा के पास इतने रुपये देखे होंगे तो उसके मन में बेईमानी जागी होगी। राकेश बाबू, यह मैं पहले ही बता देता पर किसी ने मुझसे पूछा ही नहीं।

अभी भी वक्त नहीं गया है, इन्स्पैक्टर ने तुम्हें बुलाया है। वे तुमसे कुछ सवाल करेंगे और तुम यह सारी हकीकत उन्हें बता देना।

राकेश बाबू, मैं इन्स्पैक्टर साहब को कह दूंगा कि अमर ही कातिल है, हेमा बिटिया का खून उसने ही किया है। आप उसे सजा दें।

ऐसे नहीं पागल, तुम तो अब जान गये कि हेमा का खून अमर ने ही किया है, परन्तु पिताजी और माताजी नहीं मानेंगे। पता नहीं उस नीच ने उन पर कैसा जादू कर दिया है। पुलिस भी नहीं मानेगी। उसे तो सबूत चाहिये। भोला, अगर तुम हमारे सच्चे नौकर हो और हेमा बहन को चाहते हो तो उसके कातिल को ढूंढ निकलवाओ वरना उसकी आत्मा तड़पती रहेगी—इतना कहकर राकेश रो पड़ा। उसकी आँखों से बनावटी आँसू बहने लगे।

राकेश बाबू, अब रोने से तो कुछ नहीं होगा। आप ही सलाह दीजिये कि अमर को कैसे दंड दिलाया जाय।

भोला, तुम अमर को सजा दिलवाओ। मैं तुम्हें पांच हजार रुपये दूंगा--ऐसा कहकर राकेश ने अपनी जेब से नोटों का एक बंडल निकाला और भोला की ओर बढ़ाते हुए कहा—ये लो ढाई हजार, बाकी बाद में दूंगा—जब अमर को हवालात में डाला जाएगा।

इतने सारे नोट देखकर भोला की आंखों में चमक आ गई। उसने इतने नोट कभी नहीं देखे थे। उसे तो हर महीने सौ रुपये मिलते हैं जो महीने से पहले ही खत्म हो जाते हैं। उसके हाथ की उंगलियां चलने लगीं, फिर भी बोला--राकेश बाबू यह आप क्या करते हैं? मुझे कुछ भी नहीं चाहिये। हेमा बिटिया के कातिल को फँसाना मेरा अब कर्तव्य हो गया है। आप सिर्फ यह बताइये कि मुझे पुलिस में क्या कहना है?

भोला, ये पैसे तो मैं तुम्हें यूं ही दे रहा हूँ। तुमने बरसों तक हमारी गाड़ी चलाई है, परन्तु पिताजी ने तनखा के अलावा तुम्हें और कुछ भी नहीं दिया है। तुम भी तो बाल-बच्चे वाले हो, रखलो ये पैसे, वक्त पर काम आएंगे। रखलो""रखलो।

राकेश बाबू, मैं लेना तो नहीं चाहता, परन्तु जब आप इतना आग्रह करते हैं तो ले ही लेता हूँ। राकेश से पैसे लेकर उसने अपनी जेब के हवाले कर दिये।

भोला, तुम पुलिस से यह कहना कि अमर ने हेमा को एक फ्लास्क दिया था जिसमें चाय थी। दूसरा यह सब बताना कि जब अमर तुमसे यह कहकर चले गये कि वह किसी आवश्यक काम से कहीं जा रहा है तब तुम वहीं पर ही खड़े थे और जब गाड़ी छूटी तो तुमने उसे उसी गाड़ी में चढ़ते देखा।

पुलिस तुमसे सवाल करेगी कि यह सब तुमने पहले क्यों नहीं बताया? तब तुम कहना—सरकार मैं रहा नौकर। बड़ों की बातों में भला दखल कैसे कर सकता हूँ। बड़े लोगों की बातें तो हमारी

समझ में ही नहीं आतीं। फिर न तो किसी ने मुझसे पूछा और न ही मुझे याद आया। आपने जब पूछा है तो बता रहा हूँ। सरकार, ये लोग क्या करते हैं, कहां जाते हैं, आते हैं—हमें तो कुछ भी समझ में नहीं आता। जो बात मैं जानता था वह आप को बता दी, और मैं कुछ नहीं जानता।

तो क्या राकेश बाबू, ऐसा कहने से अमर फँस जाएगा।

हाँ, फँस ही क्या जायगा, उसे ऐसी सजा मिलेगी कि कमबख्त जिन्दगी भर तड़पता ही रहेगा। तुम्हारी बात से यह सिद्ध होगा कि पहले अमर ने हेमा को चाय वाला फ्लास्क दिया। हो सकता है उसमें जहर मिलाकर दिया हो, दूसरा वह तुम से झूठ बोल गया कि वह कहीं जा रहा है और तुमने उसे चलती हुई गाड़ी में चढ़ते देखा। सब समझ गये ?

हाँ राकेश बाबू, बिल्कुल समझ गया। अब आप जरा भी चिन्ता न करें। जब तक अमर को मैंने सजा नहीं दिलाई तब तक मुझे चैन नहीं आएगा।

भोला, मुझे तुमसे यही आशा थी। मैं तुम्हारी वफादारी की कद्र करता हूँ। तुम हमारे नौकर नहीं घर के ही आदमी हो।

राकेश बाबू, यह तो आपका बड़प्पन है, वरना मैं नाचीज आपके किस काबिल।

आओ चलें।

——

१६

भोला तुम अब जा सकते हो और हाँ इस बात का जिक्र अमर से मत करना कि तुम पुलिस चौकी से आ रहे हो। अमर शायद तुम्हें रास्ते में ही मिल जाए।

अच्छा साहब, मैं जाऊँ ? हाथ जोड़कर भोला बोला।

हाँ, तुम जा सकते हो।

+ + +

सेठजी, भोला ने जो कुछ बताया है सच ही बताया। मेरा तो अब पूरा शक अमर पर ही है।

इन्स्पैक्टर साहब, शक ही क्यों, मेरे तो खयाल में यह नीच काम अमर ने ही किया है। वही कातिल है। मैं आपसे प्रार्थना करूँगा कि आप कोशिश करके इस दुष्ट को ऐसी सजा दिलाए कि जिन्दगी भर तड़पता रहे। जेल की सलाखों से सिर टकरा-टकरा कर अपनी जवानी गुजार दे। क्रोध से दीनदयाल की आँखों में शोले बरस रहे थे।

सेठजी, आप धीरज रखिये। कानून इन्साफ चाहता है। वह किसी पर भी रियायत नहीं करता। अगर अमर कातिल है तो अवश्य ही उसे दण्ड मिलेगा।

इन्स्पैक्टर, क्या आपको अभी भी विश्वास नहीं कि कातिल अमर ही है।

ऐसी बात नहीं, हमें तो पूरा विश्वास है कि खून अमर ने ही किया है। अमर अब आता ही होगा। उससे पूछने के बाद ही हकीकत मालूम की जा सकती है, फिर भी दंड देना अदालत का काम है।

वह जो फैसला करेगी वही होगा। कानून का उल्लंघन करने वाले को अदालत उचित दंड देगी।

इन्सपैक्टर, आप अमर से क्या पूछेंगे? वह तो स्वयं के बचाव के लिये झूठ ही बोलेगा।

सेठजी, मैंने बड़े-बड़े खतरनाक कातिलों के मुख से सच्चाई उगलवाई है। अमर तो एक मामूली आदमी है।

सर, अमर बाबू आए हैं—एक सिपाही ने अदब के साथ एड़ी बजाकर कहा।

उसे यहाँ अन्दर भेज दो।

सेठजी, तब तक आप दूसरे कमरे में चलकर बैठिये—एक दूसरा कमरा खोलते हुए मि० शौकत बोले।

गुड मार्निंग इन्सपैक्टर।

वैरी गुड मार्निंग मि० अमर, आइये बैठिये।

थेंक्यू—ऐसा कहकर अमर बैठ गया।

मि० अमर, यह कैसी हालत कर रखी है आपने, दाढ़ी बढ़ी हुई, बाल बिखरे हुए, सूजी हुई आँखें—शायद हेमा के दुःख में। अच्छा तो मि० अमर, क्या आप बता सकते हैं कि हेमा और आपकी मुलाकात कैसे हुई थी यहाँ तक कि दोनों की सगाई भी हो गई।

बुझे हुए स्वर में अमर बोला—इन्सपैक्टर, दुनिया की नजरों में वह मेरी मंगेतर थी, परन्तु हकीकत में हम दोनों ने कब की शादी करली थी।

शादी करली थी! पास वाले कमरे में बैठा हुआ सेठ दीनदयाल सब सुन रहा था और सोचता था—नीच अब झूठ बोलकर स्वयं को बचाने के लिये चाल चल रहा है। मैं कमीने तुम्हें नहीं छोड़ूंगा—ऐसा बुदबुदाकर वह फिर कान लगा कर सुनने लगा।

अच्छा तो आप दोनों ने घरवालों से चुपके-चुपके शादी करली, शादी कब और कहाँ की?

यह तो एक बड़ी लम्बी कहानी है। ऐसा कहकर बचपन की सारी

कहानी अमर ने इन्सपैक्टर को कह सुनाई और फिर बोला—अचानक हम दोनों की कश्मीर में मुलाकात हो गई। हम साथ-साथ घूमने जाया करते थे, जहाँ कहीं भी जाते साथ ही जाते। एक दिन दिल में छिपा हुआ प्यार जबान तक आ ही गया। एक दूसरे को पाकर हम दोनों बहुत खुश हुए, परन्तु मुझे डर लगने लगा कि मैं तो एक गरीब का बेटा हूँ, कहीं उसके माँ-बाप हमारे प्यार को ठुकरा नहीं दें। मैंने यह सब हेमा से कह दिया। हेमा मुझे बहुत प्यार करती थी। वह नहीं चाहती थी कि मैं ऐसा सोचकर दुःखी रहूँ। इसलिए वह मुझे एक मन्दिर में ले चली और वहां पर भगवान को साक्षी मानकर हम हमेशा-हमेशा के लिये एक दूसरे के हो गये, हमने शादी करली। हेमा ने मुझे विश्वास दिलाया कि उसके घर वाले मान जाएँगे, क्योंकि वे उसे बहुत चाहते हैं और भगवान की कृपा से हेमा की पसन्द को उन्होंने भी पसन्द कर लिया। उसके माँ-बाप दोनों भगवान के सच्चे फरिश्ते थे। मुझे देखते ही उन्होंने सगाई कर दी।

मि० अमर, यह तो आपने बताई प्रेम-कहानी। अब यह भी बताइये कि तुम भी उस दिन हेमा के साथ स्टेशन गये थे। क्या तुमने हेमा को कुछ दिया था ?

मैं आपका मतलब नहीं समझा, मैं भला उसे क्या देता।

मेरे कहने का मतलब है कि तुम्हारी माँ भी अपनी बहू को चाहती होगी, हो सकता है उसने कोई मिठाई वगैरह उसके लिये दी हो।

आप ऐसा क्यों पूछ रहे हैं ? फिर भी मेरी माँ ने कुछ भी नहीं दिया था।

आपको पूरा याद है।

इन्सपैक्टर इसमें याद का सवाल ही नहीं उठता। हाँ, मुझे याद है—कुछ भी नहीं दिया था। अमर पहिले से ही दुःखी था और इस के सवालों से वह बोर हो रहा था।

जिस गाड़ी के डिब्बे में हेमा थी उसमें और कोई था ?

और कोई भी नहीं था, वह अकेली ही थी।

हो सकता है कोई आदमी चलती ट्रेन से चढ़ गया हो। क्या आपने ऐसा कुछ देखा ?

इन्सपैक्टर, कई आदमी चलती गाड़ी में चढ़ जाते हैं और उतर भी जाते हैं। दूसरा मुझे मालूम नहीं क्योंकि मैं गाड़ी के छूटने से पहले ही चला गया था। मुझे कोई काम याद आ गया।

ऐसा कौनसा काम आपको याद आ गया कि गाड़ी छूटने के पहले ही चले गये ?

मेरी माँ बीमार थी। उसके लिये दवा वगैरह लेनी थी।

तो क्या आपने दवाई खरीद करली थी।

जी नहीं।

वो क्यों ? इन्सपैक्टर की भौंहें तन गईं।

उस दिन गुरुवार था। गुरुवार के दिन दवाओं की सभी दुकानें बन्द रहती हैं—यह मुझे बाद में याद आया, जब बाजार में आकर सभी दुकानें बन्द देखी।

शट अप्। कमीने, तुम झूठ बोल रहे हो। टेबुल पर रूल द्वारा आवाज करते हुए इन्सपैक्टर चिल्लाया।

अचानक इस तरह इन्सपैक्टर में परिवर्तन देखकर बेचारा अमर डर गया और बोला आप क्या कहते हैं, मैं समझा नहीं।

अमर, सच-सच बता दो कि हेमा का कत्ल किसने किया है ? वरना मैं जबान खुलवाने की दवा रखता हूँ।

मुझे क्या मालूम ? चिल्लाकर अमर बोला यह सब आप मुझसे क्यों पूछ रहे हैं ?

अमर तुम बड़े चालाक बन रहे हो, तुम तो क्या, मैंने बड़े-बड़े कातिलों को ठीक कर दिया।

तो······क्या·······आप समझते हैं कि मैंने ही हेमा का कत्ल किया। नहीं·······नहीं·······मैं भला उसका कैसे खून कर सकता हूँ। मैं तो उसे बहुत चाहता था, वह मेरी पत्नी थी।

चुप करो नीच, मैं तुम्हारी यह जबान खींच लूंगा—कमरे से चिल्लाते हुए दीनदयाल बाहर निकले।

पिताजी, यह आप क्या कह रहे हैं? सेठ दीनदयाल को इस प्रकार कमरे से निकलता देखकर अमर घबरा गया कि वह यहाँ कैसे।

सेठजी, आप शान्त रहिये। मैं इसके मुख से सच उगलवाकर ही रहूँगा।

बेचारा अमर घबरा रहा था कि ये लोग उसे ही हेमा का कातिल क्यों समझ रहे हैं।

अमर, तुम छिपाने की कोशिश मत करो। हम सब कुछ जानते हैं। खामखाह हमारा वक्त जाया कर रहे हो। जो सच है, कह ही दो वरना तुम्हारे लिये ही बुरा होगा।

मैं आपको कैसे विश्वास दिलाऊँ कि मैं कुछ नहीं जानता। आप मुझ पर ही शक क्यों कर रहे हैं। मैं जब कुछ जानता ही नहीं तो क्या बताऊँ।

मि० अमर, हमें शक ही नहीं बल्कि पूरे सबूत है कि तुमने ही हेमा का खून किया है।

प्लीज इन्सपैक्टर, आप ऐसा मत कहिये। आपको मालूम नहीं कि मैं हेमा से कितना प्यार करता हूँ। मैं तो अब उसके बिना जैसे रह भी नहीं सकूंगा। आप इतना बड़ा इल्जाम मुझ पर मत लगाइये, मत लगाइये······।

अमर, तुमने बड़ी होशियारी से मनगढ़न्त प्रेम-कहानी सुनाई। हेमा को बहका कर तुमने उससे प्यार किया। अमर, तुम बेवकूफ निकले। अगर तुम्हारी हेमा से शादी हो जाती तो तुम लाखों के मालिक हो जाते, परन्तु तुम बीस हजार रुपयों के ही लालच में आ गये। हेमा को कत्ल करके उसके पैसे ले लिये।

अमर से अब रहा नहीं गया और चिल्ला कर बोला—इन्सपैक्टर, आप होश में तो हैं। किसी निर्दोष पर आप इतना बड़ा इल्जाम नहीं लगा सकते। मुझे फँसाने के लिये साजिश बनाई गई है, परन्तु मैं

भी देख लूंगा कि किस प्रकार मुझे फँसाया जाता है। क्या सबूत है कि मैंने ही हेमा का खून किया है? आप मेरा कुछ भी नहीं कर सकते, मैं जा रहा हूँ।

इन्सपैक्टर भी अब जोश में आ गया तथा गरज कर बोला—अमर, अगर तुम जरा भी हिले तो तुम्हारे लिये बहुत बुरा होगा।

अमर के आगे बढ़ते हुए कदम वहीं रुक गये। वह पुलिस से उलझना नहीं चाहता था। वह घूर-घूर कर अपनी लाल-लाल आँखों से इन्सपैक्टर की ओर देखने लगा।

इन्सपैक्टर कह रहा था—सबूत हमारे पास है। तुमने जो हेमा को फ्लास्क दिया था, उसकी चाय में तुमने जहर मिला दिया था। तुम भोला से झूठ बोल कर गये कि तुम किसी आवश्यक काम से बाजार जा रहे हो। तुम भोला से आँख बचाकर चलती ट्रेन में चढ़ गये, परन्तु भोला ने तुम्हें देख ही लिया।

बन्द करो यह बकवास! यह सरासर झूठ है, साजिश है। मैंने हेमा को कोई फ्लास्क नहीं दिया और न ही मैं चलती हुई ट्रेन में चढ़ा। यह झूठ है झूठ।

नहीं ''यह सच है सच—इन्सपैक्टर चिल्लाया।

नहीं, यह झूठ है, सरासर झूठ। मुझे फँसाने के लिये साजिश बनाई गई है।

खामोश''''इन्सपेक्टर ने चिल्ला कर कहा। तिवारी इसे हवालात में बन्द कर दो। तीन-चार सिपाहियों ने पकड़ कर अमर को जेल के अन्दर बन्द कर दिया। वह अन्दर से भी चिल्लाता रहा, चीखता रहा, पर किसी के दिल में भी उस गरीब के लिये कोई सहानुभूति नहीं थी।

सेठजी, अब इसे रोटी-दाल का भाव मालूम पड़ेगा। बड़ा होशियार बन रहा था।

इन्सपैक्टर, हमने तो इसे एक शरीफ लड़का समझा था पर है यह आस्तीन का साँप।

अमर जेल की सलाखों के पीछे से चिल्ला-चिल्ला कर कह रहा

था—पिताजी, आपको क्या हो गया है, मैंने आपका क्या बिगाड़ा था जो इस प्रकार मेरे खिलाफ साजिश रचाई है। मुझे मेरी जिन्दगी की कोई परवाह नहीं। आप सिर्फ यह झूठा इल्जाम मुझ पर से हटा लें। अगर आप मुझे फांसी के तख्ते पर ही चढ़ाना चाहते हैं तो आप और कोई इल्जाम मुझ पर लगा सकते थे। मुझे हेमा का कातिल मत बनाओ। मैं आपको कैसे विश्वास दिलाऊँ कि मैं कितना उसे चाहता हूँ। उसके बिना मेरी जिन्दगी का महत्व नहीं रह जाता है।

आइये सेठजी, इन्सपेक्टर बोला।

दीनदयाल ने नफरत की निगाहों से एक बार अमर की ओर देखा और बाहर चला गया।

धरती बहन, आप मेरे अमर को नहीं जानतीं वह बहुत सीधा-सादा एक सच्चा लड़का है। वह कभी भी झूठ नहीं कहता। काश! आपने उसे जाना होता। ये जितने भी इल्जाम उस पर लगाये गये हैं, सब झूठे ही हैं। आप कुछ तो सोचिये यह एक अनर्थ है। अगर किसी निर्दोष को फांसी हो जाये, ऐसे अत्याचारों से भगवान का कलेजा भी रो उठेगा, उसका इन्सानों पर जो विश्वास है वह भी हट जाएगा। आप मेरे बच्चे को बचा लीजिये। मैं आपके हाथ जोड़ती हूँ—ऐसा कहकर सीता फूट-फूट कर रो पड़ी।

जिस दिन आप लोगों की मनहूस नजर हम पर पड़ी उसी दिन से हमारी तबाही शुरू हुई : सच कहते हैं—शराफत किसी के चेहरे पर नहीं लिखी होती। आपके नीच बेटे ने हमारी रानी जैसी बिटिया को मार डाला। ऐसा कहकर धरती दुःखी हो गई।

बहन, आप सबको गलत खबर मिली है। आप नहीं जानतीं—हम हेमा बेटी को कितना चाहते थे। यह सब आप जोश में कर रहे हैं। एक बार आप बैठकर अपने ठंडे दिमाग से सोचिये कि अगर एक निर्दोष को फाँसी हो गई तो अनर्थ हो जाएगा। इससे बढ़कर और बड़ा कोई पाप नहीं। मैं बरबाद हो जाऊँगी, अगर मेरे बच्चे को फाँसी हो गई।

मैं कहती हूँ यहां से चली जाओ। तुम दोनो माँ-बेटे ने मिल कर यह नीच काम किया है। अमर के विपक्ष में सब सबूत है। कानून कोई अंधा नहीं। तुम्हारा बेटा कातिल है। उसे सजा मिलनी ही चाहिये।

मैं आपके पांव पड़ती हूँ—ऐसा कहकर सीता उसके पाँवों से लिपट गई और रोते हुए बोली—मुझ पर दया करो, मेरे बच्चे को बचालो, मैं उम्र भर आपके घर की नौकरानी रहकर सेवा करूंगी।

ये क्या पागलपन है, छोड़िये मेरे पांवों को।

सीता ने पांव नहीं छोड़े। वह धरती के पाँवों से लिपट कर बिलख रही थी।

भोला, इसे बाहर ले जाओ। खामखाह हमारे जले हुए पर नमक छिड़क रही है।

'चलिए', भोला ने रौब से कहा।

मैं जा रही हूँ। मैं पागल थी कि आपके सामने बिलख-बिलख कर रोई, चिल्लाई, अपने बच्चे के प्राणों की भीख मांगी। आप सभी हत्यारे हैं। मैं जा रही हूँ, मुझे आप लोगों के सामने झोली फैलाने की अब कोई जरूरत नहीं पड़ेगी। मैं भगवान से न्याय मांगूंगी, जिसने यह सारी सृष्टि बनाई। किसी की जान लेना या देना उसका ही काम है। अगर उस सर्वशक्तिमान प्रभु की हमारे ऊपर दया दृष्टि है तब आप तो क्या अमर का सारी दुनिया भी कुछ नहीं कर सकती, कुछ नहीं कर सकती। मेरा बेटा बे कसूर है। आप सबका''''सीता ने वाक्य भी पूरा नहीं किया कि उसका सर घूम गया तथा लड़खड़ा कर, वह वहीं पर गिर पड़ी और बेहोश हो गयी।

\+ \+ \+

मदन, अमर का कैसा मिजाज है? शराब की एक घूँट पीते हुए शेख बोला।

बॉस, अमर को जेल में डाल दिया गया है। पुलिस को पूरा विश्वास हो गया कि हेमा का कातिल अमर ही है।

वैरी गुड—शेख ने खाली गिलास को टेबिल पर रख दिया।

बॉस, मैं आपको आज ऐसी खबर सुनाता हूँ कि जिसे सुनकर आप आश्चर्य में पड़ जायेंगे।

वाह ! ऐसी भी कौन सी खबर लाए हो ? जल्दी सुनाओ। हम जरूर सुनेंगे।

बॉस, राकेश दीनदयाल का असली बेटा नहीं।

क्या ? आश्चर्य से शेख की आँखें फट गईं। यह तुमसे किसने कहा कि वह सेठ दीनदयाल का बेटा नहीं।

राकेश ने खुद ही बताया। उसने यह बताया कि वह एक मुसलमान की औलाद है। सेठ दीनदयाल ने एक मुसलमान औरत को रास्ते में पाया था और वे उसे अपने घर में ले आए वहाँ पर ही राकेश को उस औरत ने जन्म दिया और उसी समय मर गई। उस औरत का नाम उसने सलमा बताया।

'सलमा' नाम सुनकर शेख कुरसी से उछल पड़ा।

क्या हुआ बॉस ?

कुछ नहीं, तुम जा सकते हो।

ओके बॉस—राकेश ने एक बार शेख के सामने सिर झुकाया और चला गया।

तो क्या राकेश उसका ही बेटा है। शेख को जैसे विश्वास ही नहीं हो रहा था कि राकेश उसका बेटा हो सकता है। ऐसा सोचते-सोचते वह अतीत की यादों में खो गया। बहुत साल पहिले एक दिन पुलिस की गोली का शिकार होकर उसने आकर एक छोटे से मकान में शरण ली थी। उस मकान में एक बीमार औरत अपनी जिन्दगी की आखिरी घड़ियाँ गिन कर अपनी बेटी सलमा के साथ रह रही थी। औरत बहुत गरीब थी। उसने उसे पुलिस से बचा लिया, उसके लिये सब कुछ किया। मरते वक्त वह औरत बोली—बेटे शेख, मैं तो खुदा के दरबार में जा रही हूँ। तुम मेरी सलमा का ख्याल रखना। औरत मर गई और उसने सलमा से शादी करली। दो

साल बाद सलमा ने एक सुन्दर बच्ची को जन्म दिया जिसका नाम नरसीन रखा गया। ठीक तीन साल बाद सलमा फिर माँ बनने वाली थी। अचानक एक दिन सलमा को मालूम हो गया कि शेख गैर मुलकों का साथी है। वह अति क्रोधित हो उठी, उसने शेख को डराया कि अगर वह गैर मुल्कों के साथ मिलकर काम करेगा तो वह उसका राज़ खोल देगी। शेख को अपनी जान की लगी और उसने सलमा को एक कोठरी में बन्द कर दिया। फिर पता नहीं वह कहाँ भाग गई। शेख का खयाल टूट गया तो क्या सलमा को सेठ दीनदयाल अपने घर ले गया और राकेश ने जन्म लिया ? राकेश उसका ही बेटा है—यह जानकर शेख खुशी के मारे वह जैसे पागल होता जा रहा था। जैसा बाप शेर, वैसा बेटा भी। अच्छा हुआ, जो उन दोनों माँ-बेटियों से पीछा छूट गया। अगर वे होतीं तो डर रहता। वे किसी न किसी दिन काम बिगाड़ ही देतीं। दोनों बाप-बेटे मिलकर काम करेंगे। अब तो राकेश को हर मुसीबत से छुड़ाना मेरी सबसे पहली जिम्मेदारी है।

आज अदालत में कई लोग उपस्थित थे। सबकी जबान पर अमर और हेमा का ही नाम था। बहुत से लोग उसके पक्ष में बोल रहे थे और बहुत से उसके विपक्ष में। दुनिया में सबके दोस्त भी होते हैं और दुश्मन भी। कोई किसी के पक्ष में है तो कोई विपक्ष में और इसके अलावा कुछ तमाशबीन लोग भी होते हैं जो कभी न तो किसी के पक्ष में जाते हैं और न ही विपक्ष में। वे तो सिर्फ तमाशा ही देखा करते हैं। उन्हें दूसरों के झमेलों से कोई लगाव नहीं होता। इतने में जज साहब आकर अपनी कुर्सी पर विराजित हुए।

सब की निगाह सीधी अमर पर थी जो एक कटघरे में सिर नीचे किये खड़ा था। उसकी ऐसी बुरी दशा देखकर कइयों के दिल करुणा से भर गये। अमर के पूरे कपड़े मैले हो गये थे। कबसे उसने शेव नहीं किया था। वह चुपचाप नीचे देखता जा रहा था।

भोला, गीता पर हाथ रखकर कहो कि जो कुछ कहूँगा सच कहूँगा और सच के सिवाय कुछ नहीं कहूँगा।

माई-बाप, मैं सदा सच ही बोलता हूँ, झूठ तो कभी नहीं बोलता।

तुम्हें जैसा कहा जाए, वैसा ही कहो—डाँटकर सरकारी वकील ने कहा।

अच्छा माई-बाप, मैं गीता की कसम खाकर कहता हूँ कि जो कुछ कहूँगा सच कहूँगा और सच के सिवा कुछ नहीं कहूँगा।

अच्छा, तुम यह बताओ कि हेमा को स्टेशन पर छोड़ने कौन-कौन गया था ?

माई-बाप, मैं और अमर बाबू।

तुमने गवाही दी है कि अमर ने ही हेमा का खून किया है क्या यह सच है ?

हाँ माई-बाप, सच है उसने ही हेमा बेटी का खून किया है।

यह इल्जाम तुम किस आधार पर अमर पर लगा रहे हो ?

माई-बाप, वह मुझ से झूठ बोल गया कि उसे कोई काम है इसलिये जा रहा है, परन्तु मैंने उसे चलती हुई ट्रेन में चढ़ते देखा।

नहीं यह झूठ है। मैं ट्रेन में नहीं चढ़ा—अमर चिल्ला उठा।

साइलैंस, साइलैंस—जज साहब ने हथौड़े से आवाज करते हुए कहा।

योर आनर, अमर ने झूठ बोला है कि उसे दवा वगैरह बाजार से खरीदनी थी, परन्तु ऐसी कोई भी चीज उसे नहीं खरीदनी थी। उसने तो हेमा को कत्ल करने का प्रोग्राम पहले से ही बना लिया था। वह भोला से झूठ बोल गया कि उसे कोई काम है, परन्तु जब गाड़ी चली तो वह भी चलती गाड़ी में चढ़ गया सौभाग्यवश भोला ने उसे इस प्रकार गाड़ी में चढ़ते देख लिया।

राकेश आंखें मूँदे चुपचाप नीचे सर करके सुनता रहा।

अमर ने हेमा को एक चाय का फ्लास्क दिया जिसमें जहर मिला हुआ था। वह बेचारी नहीं जानती थी कि जिसे वह अपना सब कुछ समझती है वही उसका जानी दुश्मन है। हेमा अनजान थी। वह अमर को बहुत चाहती थी। उसकी हर चीज उसे अच्छी लगती थी। अमर की चाय को आबेहयात समझकर पी गई। पीने के बाद उस मासूम को सोचने का भी अवसर नहीं मिला कि उसके प्राण पखेरू हो गये। जैसेकि अमर उस गाड़ी ही में था, वह अगले स्टेशन पर उतर कर हेमा के डिब्बे में गया, उसके गहने रुपये आदि लेकर उसकी लाश को रेल की पटरियों पर फेंक दिया ताकि दुनियां यह समझे कि वह ट्रेन के नीचे आकर मर गई।

योर ऑनर, मैं आपसे दरख़ास्त करूँगा कि ऐसे नीच इन्सान को सख्त से सख्त सजा दी जाय, ताकि भविष्य के लिए एक मिसाल बन जाए कि ऐसे दुष्टों का यही हाल होता है।

योर ऑनर, यह एक ऐसा दरिंदा है जिसने सिर्फ बीस हजार के खातिर पवित्र प्यार का गला घोंट दिया, प्यार पर कीचड़ उछाला। एक खूबसूरत मासूम जो कि उसकी सब कुछ थी, उसकी हमराज थी, उसे बड़ी निर्दयता से कत्ल कर दिया। योर ऑनर, एक बार फिर मैं आपसे प्रार्थना करूँगा कि ऐसे निर्दयी इन्सान को कड़ी से कड़ी सजा दी जाय। दैट्स आल सर।

आखिरी फैसला जूरियों की सलाह से पेश किया जाएगा तब तक के लिये केस मुवतल किया जाता है। ऐसा कहकर जज उठ खड़े हुए और चले गये।

अमर जेल के एक कौने में बैठा सोच रहा था कि उसके लिये फांसी का आर्डर दिया जाएगा। उसे फाँसी हो जाएगी। इस धरती से उसका आस्तित्व मिट जाएगा। अच्छा ही होगा। ऐसे नीच इन्सानों के साथ जीवन गुजारने से कहीं बहतर है मर जाना। यहाँ की सरकार अंधी है, उसका कानून अंधा है। जिधर भी देखो अजगर की तरह सभी मुँह खोले बैठे हैं—एक दूसरे को निगलने के

लिये। मैं भी अब जाकर अपनी हेमा से मिलूँगा और कहूँगा—हेमा, साथ-साथ जीने और साथ-साथ मरने की कसम खाई थी, वह पूरी हो गई। साथ-साथ जी तो नहीं सके पर मर कर एक दूसरे से मिल गये। अच्छा ही हुआ। ऐसी जलील जिन्दगी से जल्दी ही छुटकारा मिल गया। मुझे कोई दुःख नहीं कि मुझे फांसी हो जाएगी। दुःख तो सिर्फ इसका है कि मरते समय अपने सर पर हेमा के खून का कलंक लिये जा रहा हूँ। मैंने किसी का क्या बिगाड़ा कि साजिश बनाकर झूठे गवाह पेश करके इतने बड़े इल्जाम के साथ मुझे फँसाया गया है। उफ······एक दर्द भरी आह अमर के मुख से निकली।

— —

१७

अमर, तुम्हारी माँ बहुत बीमार है—जेलर ने आकर कहा—बार-बार बेहोश हो जाती है। अबकी बार वह बेहोश होकर एक पत्थर से टकराई और उसके सिर से खून बह निकला।

खून निकल आया ! हे भगवान, अब मैं क्या करूँ····कितना बदनसीब हूँ कि अपनी माँ की ऐसी हालत में भी सेवा नहीं कर सकता।

जेलर साहब, मैं आपके पांवों पड़ता हूँ, महरबानी करके आप सिर्फ पांच मिनट के लिये मुझे मेरे घर ले चलिये। मैं अपनी माँ को देखना चाहता हूँ। मरते दम तक आपका आभारी रहूँगा—अमर जेलर के पांवों पर गिरा पड़ा और गिड़गिड़ाने लगा।

उठो अमर, घबराओ मत। इसीलिये तो मैं तुम्हें बताने आया हूँ। तुम्हारी माँ अब होश में है, परन्तु चल नहीं सकती। उसने तुम्हें एक बार देखने के लिए रिकवेस्ट किया है और हम तुम्हें कुछ सिपाहियों के साथ भेज रहे हैं। आधे घंटे के अन्दर तुम्हें वापस आना होगा।

थैंक्यू जेलर साहब, थैंक्यू, कैसे आपका शुक्रिया अदा करूँ, पर एक कातिल क्या कर सकता है। अमर बहुत दुखी हो रहा था, परन्तु अपनी माँ से मिलने की खुशी में उसके लबों पर मुस्कान थी। जेलर साहब मर तो रहा ही हूँ आखिरी तमन्ना थी कि अपने घर जाकर अपनी माँ के चरणों को छू सकूँ। उसके गले मिलकर उसे प्यार करूँ। आप जेलर साहब, इन्सान नहीं एक फरिश्ते हैं। अमर अपनी माँ से मिलने की खुशी में जैसे पागल होता जा रहा था।

अमर, इसमें शुक्रिया की कोई बात नहीं। माँ-बेटे की ममता को

मैं समझता हूँ। अमर तुम मुझे नहीं जानते, परन्तु मैं तुम्हें अच्छी तरह जानता हूँ।

जेलर साहब, आप मुझे कैसे जानते हैं? आश्चर्य प्रकट करते हुए अमर बोला।

फिरोज को जानते हो।

हाँ, जानता हूँ। वह तो मेरा सबसे प्यारा साथी है।

फिरोज मेरा ही बेटा है—जेलर बोला।

जेलर साहब, आप फिरोज के पिताजी हैं! ओहो!! मुझे तो मालूम ही नहीं था। नमस्ते अंकल—अमर ने दोनों हाथ जोड़ दिये—आपसे मुलाकात हुई वो भी इस तरह। अमर फिर दुखी हो गया।

दुखी मत हो बेटे। फिरोज ने कल ही तुम्हारे बारे में मुझे बताया था। बेटे, मुझे तो विश्वास ही नहीं होता कि यह खून तुमने किया होगा। काश! मैं तुम्हारे लिये कुछ कर सकता। सुपरिन्टेन्डेन्ट साहब तो पहले तुम्हें छोड़ ही नहीं रहे थे, परन्तु मैंने उन्हें समझाया कि अमर को सजा तो हो ही जाएगी। उसकी माँ बहुत बीमार है, खाट से भी नहीं उठ सकती। बेचारी अमर को देखना चाहती है। मैंने उन्हें बहुत रिकवेस्ट किया तब कहीं जाकर माने।

अंकल आपका बहुत-बहुत धन्यवाद। कल आप फिरोज को मेरे यहाँ भेज दीजिए उससे मिले बहुत समय हो गया है।

बेटे, वह तुमसे मिलने के लिये बहुत तड़पता है, परन्तु इस हालत में तुम्हें नहीं देख सकेगा। सारा दिन अल्ला के दरबार में बैठकर दुआ करता रहता है कि तुम छूट जाओ। अमर, एक बात सुनो—धीरे से जेलर साहब बोले—यहाँ का कानून अंधा है, सारे सबूत तुम्हारे विपक्ष में है। अगर तुम निर्दोष हो तो जैसे भी हो सके यहाँ से बचने की पूरी-पूरी कोशिश करना। मैं हमेशा तुम्हारी मदद करूँगा। तुम मेरी बात का मतलब समझ गये होगे। अच्छा तुम अब जाओ बाहर जीप तुम्हारे इन्तजार में खड़ी है। जाओ बेटे, हिम्मत से काम लेना।

जीप आकर अमर के घर के पास रुक गई।

अमर, तुम अब अन्दर जा सकते हो—सूबेदार ने कहा। बाहर चार सिपाही अपनी बन्दूकें ताने खड़े हो गये।

अमर बौखलाया हुआ अन्दर दौड़ा तथा आकर चारपाई पर पड़ी सीता पर गिर पड़ा—माँ, मेरी अच्छी माँ तुम्हें क्या हो गया है? वह सीता से लिपट-लिपट कर रोने लगा।

बेटे, मेरे लाल, तुम आ गये? कैसी हालत हो गई तेरी—और फिर धीरे से बोली—अमर यह समय बातें करने का नहीं तुम उस कमरे में जाओ।

यह क्या कह रही हो मां, अन्दर किस लिये जाऊँ? मैं तो तुमसे ही मिलने आया हूँ।

बेटे, वक्त मत गंवाओ, तुम जाओ उस कमरे में कोई इन्तजार कर रहा है। जल्दी जाओ।

कौन है माँ? अमर तंग हो रहा था।

धीरे बोलो बेटे, मैं तुम्हें जैसा कहती हूँ वैसा ही करो। जाओ, जल्दी जाओ—ऐसा कहकर वह करहाई।

अमर समझ नहीं सका कि माँ उसे कमरे में क्यों भेज रही है। कौन हो सकता है? परन्तु फिर भी उसे अपनी मां का कहना मानना पड़ा। अमर खड़े क्यों हो, जाओ बेटे। ऐसा कहकर सीता ने थोड़ा सा इधर-उधर देखा और फिर पता नहीं क्या-क्या कहने लगी।

अमर उदास होकर धीरे-धीरे दूसरे कमरे की ओर बढ़ने लगा वह कमरे के दरवाजे तक पहुँच कर अन्दर झाँकने लगा और फिर भीतर चला गया, परन्तु एकदम ही उसके बढ़ते हुए कदम एक जगह रुक गये। किसी को कमरे में देखकर वह घबरा उठा। उसकी साँस रुक गई, डर के मारे उसकी टाँगें काँपने लगीं। वह कुछ कहना चाहता था, पर घबराहट के मारे उसकी घिग्घी जैसे बंध गई। वह आँख फाड़-फाड़ कर उसे देखने लगा। नहीं, ऐसा नहीं हो सकता, यह

नामुमकिन है। अमर पीछे की ओर मुड़ा और जैसे ही भागना चाहा— उसने उसे पुकारा—अमर, रुक जाओ।

अमर एक दम रुक गया, ऐसे कि जैसे कोई बिजली का खिलौना एकदम रुक जाता है। अमर ने फिर एक बार मुड़कर उसकी ओर देखा और वह धीरे-धीरे अमर की ओर बढ़ने लगी। जैसे-जैसे वह करीब होती गई वैसे-वैसे अमर का दिल बैठता गया, उसका पसीना छूटता गया। वह फिर भाग कर जाना चाहता था पर भाग नहीं सका। उसके पांवों में जैसे जान न हो। वह आँखें फाड़े उसकी ओर देखे जा रहा था।

अमर, तुम मुझे देखकर घबरा रहे हो। घबराने की तो बात ही है क्योंकि जिस इन्सान का कुछ दिन पहिले इस धरती से अस्तित्व ही मिट गया हो उसे जिन्दा देखकर घबरा जाना स्वाभाविक है। तुम सोचते होगे कि मैं तो मर गई थी फिर कैसे जिन्दा हो गई।

हेमा, तुम ? लड़खड़ाते हुए शब्दों में अमर बोला।

हाँ अमर, घबराओ नहीं।

क्या मैं हकीकत देख रहा हूँ।

अमर यह हकीकत ही है, मैं तुम्हारी ही हेमा हूँ। जिन्दगी भर तक तुमसे निभाने का वादा किया था, फिर इस प्रकार तुम्हें कैसे छोड़ सकती हूँ।

अमर अब स्वयं को रोक नहीं सका तथा दौड़ कर बेतहाशा हेमा से लिपट गया। मेरी हेमा तुम आ गई अब मुझे कोई डर नहीं। अगर मर भी गया तो कोई गम नहीं। हेमा ने अमर को दूर हटाते हुए कहा—यह क्या कहते हो अमर, अगर किसी ने देख लिया तो बहुत बुरा होगा। दुनिया की नजरों में मैं मर चुकी हूँ, पर तुम्हारे लिये जीवित हूँ। अमर यह समय बातों ही बातों में गंवाने का नहीं।

हेमा, यह सब क्या हो रहा है !

अमर, घबराओ नहीं यह खत लो इसमें सब कुछ लिखा हुआ

है—एक खत बढ़ाते हुए हेमा बोली—और यह एक पिस्टल लो इसमें छ गोलियाँ हैं—हेमा ने पिस्टल भी अमर के हाथ में थमा दिया।

पर हेमा, मैं इन सबका क्या करूँगा। मैं हकीकत जानना चाहता हूँ।

अमर, वक्त बहुत कम है हकीकत मैं तुम्हें नहीं बता सकती। इस खत में सब कुछ लिखा हुआ है। इसे पढ़ने के बाद तुम सब कुछ जान जाओगे। अमर ने चुपचाप पिस्टल को अपनी जेब में रख कर छिपा लिया और खत को हाथ में ही रखा।

अब तुम जाओ। प्लीज, तुम्हें मेरी कसम। अमर के पैर जैसे वापस मुड़ना ही नहीं चाहते थे। अमर खड़े क्यों हो ? जाओ, प्लीज मेरे खातिर। हेमा ने अमर के हाथ को उठाकर चूम लिया और बोली—'विश यू गुड लक।'

अमर कुछ भी नहीं समझ सका और वापस अपनी माँ के कमरे में आ गया। माँ यह सब क्या मामला है ? धीरे से अमर ने पूछा।

बेटे, हेमा ने तुम्हें खत दिया है। तुम जो कुछ जानना चाहते हो खत में लिखा हुआ है। इतने में सूबेदार ने पुकारा—अमर, अब तुम आ जाओ वक्त हो गया है।

अमर ने मायूस निगाहों से सीता की ओर देखा। उसकी आँखों से आँसू बह चले—वह रो रही थी। अपनी आँखों के आँसुओं को पोंछते हुए सीता बोली—जाओ बेटे, तुम्हें कुछ भी नहीं होगा। भगवान पर भरोसा रखो। मेरी दुआएँ तुम्हारे साथ हैं, हिम्मत से काम लेना, घबराना नहीं। मैं अब अकेली नहीं हूँ, हेमा मेरे साथ है। तुम अब जाओ, बाहर तुम्हें बुला रहे हैं।

क्या मैं एक खत पढ़ सकता हूँ ? अमर ने सूबेदार से पूछा।

हाँ हाँ, तुम पढ़ सकते हो।

अमर ने खत को खोलकर पढ़ना शुरू किया। जैसे-जैसे वह खत पढ़ता गया वैसे-वैसे उसके चेहरे के भाव भी बदलते गये। उसका दिमाग बड़े जोरों से काम काम करने लगा। एक तरफ तो वह बहुत

खुश हो रहा था, दूसरी तरफ क्रोध के मारे उसकी आँखों से जैसे चिनगारियाँ बरस रही थीं। अमर ने पूरा खत पढ़ कर वापस जेब में डाल दिया। उसने अपनी पेंट की जेब पर हाथ लगा कर देखा, पिस्टल मौजूद था। खत में लिखी हुई आखरी दो लाइनें उसके दिमाग में घूमने लगीं "अमर कैसे भी हो यहाँ से बच निकलो, मेरे लिये, अपने देश के लिये, चालीस करोड़ भारतवासियों के लिये, भाग जाओ अमर भाग जाओ......भाग जाओ।"

जीप बड़ी तेज रफ्तार से आगे बढ़ रही थी और इससे भी ज्यादा चल रहा था अमर का दिमाग। खत की आखरी दो लाइनें बार-बार उसे याद आ रही थीं। उसे ऐसा लग रहा था जैसे कि हेमा स्वयं ही उसके सामने खड़ी कह रही हो— अमर यहाँ से भाग निकलो, अपने देश की भलाई के खातिर, अपने देश को संकट से बचाने के लिये कूद जाओ आग की लपटों में, दे दो अपनी आहुति—अपने भारत-वासियों के लिये। इसके साथ ही जेलर साहब के कहे हुए शब्द उसे याद आए। अमर बेटे, अगर तुम निर्दोष हो तो यहाँ से किसी तरह भी बचने की कोशिश करना, यहाँ से बच निकलो। हिम्मत से काम लेना, मैं हमेशा तुम्हारे साथ हूँ। उसकी मुट्ठियाँ भिच गईं, बाजु फड़कने लगे और अपनेआप उसका हाथ पिस्टल पर चला गया।

जीप अब सुनसान सड़कों से गुजर रही थी। सड़कों पर पूर्ण शान्ति छाई हुई थी।

हैंड्स अप—अगर किसी ने हिलने की कोशिश की तो गोली सीने के पार हो जाएगी। अमर के पिस्टल का निशाना ठीक सूबेदार की ओर था। सबने अमर की ओर देखा तो उनकी आंखें आश्चर्य से फटी की फटी रह गईं। अपनी-अपनी राइफलें फैंक दो, जीप को रुकवाओ वरना....अमर ने चिल्ला कर रोब से कहा। अपनी ओर पिस्टल का निशाना देखकर बेचारे सूबेदार की बोलती ही बन्द हो गई। उसे तो अपने प्राणों की लगी कि कहीं अमर उसकी 'राम नाम सत' न कर दे। डर के मारे उसके हाथ-पैर काँप रहे थे, उसकी बन्दूक

उसके हाथ से अपने आप छूटकर गिर पड़ी। अचानक अमर को इस प्रकार देखकर सभी सिपाही चकरा गये। सबको अपनी-अपनी जान संकट में पड़ी नजर आई। सूबेदार ने डरते-डरते कहा—अमर यह क्या पागलपन है ! तुम्हें यह पिस्टल कहाँ से मिला ? अमर बीच में ही चिल्ला पड़ा—मैं कहता हूँ अगर तुम सबको अपनी जिन्दगी प्यारी है तो राइफिलें फैंक दो वरना सबकी धज्जियाँ उड़ा दूँगा—"धाँय"··· पूरा वातावरण पिस्टल की आवाज से काँप उठा और इसके साथ उन सब सिपाहियों के दिल थर्रा गये। सबने अपनी-अपनी बन्दूकें फैंक दीं। अमर ने एक हवाई फायर किया था जिससे सभी सिपाही डर गये। उनका पसीना छूट गया। सिपाहियों ने बन्दूकें फैंक कर अपने-अपने हाथ ऊपर कर लिये, परन्तु जीप अभी तक भागी जा रही थी।

सूबेदार साहब--अमर ने चिल्लाकर कहा--इस पिस्टल में छ गोलियाँ थीं। एक तो खतम हो गई बाकी पाँच रही हैं और आप लोग भी पाँच हैं--अगर जीना चाहते हो तो जीप को रुकवाओ, वरना सबको अभी खत्म करता हूँ। बेचारा सूबेदार तो पहिले से ही काँप रहा था और दूसरा अमर का जोशीला चेहरा देखकर वह और भी काँप गया तथा बोला--जीप रोक दो।

जीप एकदम रुक गई।

सब नीचे उतर जाओ। अमर के हाथ में पिस्टल देखकर सभी कठपुतलियों की तरह अमर के आदेश का पालन कर रहे थे। उन सबको ऐसा लग था जैसे कि उसके हाथ में पिस्टल न होकर उन सब की मौत का पैगाम हो।

अपने-अपने हाथ ऊपर करके एक ही लाइन में खड़े हो जाओ। और सभी खड़े हो गये। अमर अब मुस्करा रहा था। जम्प कर वह ड्राइवर की सीट पर बैठ गया और बोला—दोस्तों, मैं जा रहा हूँ, अगर कोई गुस्ताखी की हो तो माफ कर देना। अच्छा-भाई अमर ने अपना हाथ एक बार हिलाया और इसके साथ ही जीप हवा से बातें करती चली गयी।

—

१८

उस साइन्टिफिक कमरे में सामने की शानदार कुर्सी पर कामरेड बैठे हुए हैं। उनके आजू-बाजू दो चाइनीज बन्दूकें थामे खड़े हैं। मदन और राकेश के बीच बैठा हुआ शेख बड़े ध्यान से सुन रहा है।

मि० शेख, यह तो बहुत ही बुरी खबर है कि अमर जेल से भाग गया। हमें अब सावधान रहना होगा। अमर का इस प्रकार पुलिस का पहरा होते हुए भी भाग निकलना जरूर कोई खतरा लाकर ही छोड़ेगा। अमर के पास पिस्टल कैसे और कहां से आया? यह भी सोचने की बात है।

सर कामरेड, आप ठीक ही कह रहे हैं। इसमें कोई चाल नजर आती है वरना इस प्रकार पुलिस को बेवकूफ बनाकर भाग जाना कोई कम आश्चर्य की बात नहीं। अमर को अवश्य कोई मदद कर रहा है।

राकेश—बॉस, मुझे तो अब डर लग रहा है। अमर अवश्य कातिल को खोजने की कोशिश करेगा। कहीं वह मुझ तक न पहुँच जाये।

मि० शेख—राकेश की इस बात पर गौर करना हमारा सबसे पहला काम है। अमर अवश्य कातिल तक पहुँचने की कोशिश करेगा। हमें यह नहीं भूलना चाहिये कि अमर अकेला नहीं, उसके साथ अवश्य कोई शक्ति है जिसने उसे पिस्टल देकर भगाने में मदद की है। हमें होशियार रहना होगा, कहीं वह राकेश तक न पहुँच जाये। अगर वह राकेश तक पहुँच गया तो हमारे किये पर पानी फिर जाएगा। राकेश ही तो हमारा सबसे प्रमुख साथी है। उसकी जान

का जाना हम सब की मौत का पैगाम होगा। सबसे कहिये कि अमर को ढूँढने के लिये चप्पा-चप्पा छान मारे। अगर कहीं भी नजर आ जाये तो उसे वहीं पर खत्म करदे या फिर हमारे यहाँ या पुलिस के हवाले कर दे।

राकेश, तुम्हें घबराने की कोई आवश्यकता नहीं, अगर तुम्हारा कभी भी अमर से सामना हो जाये तो फौरन ही उसे खत्म कर देना, चाहे वह कहीं पर भी क्यों न हो। हम हमेशा तुम्हारी हिफाजत के लिये साये की तरह लगे रहेंगे। तुम आज ही रात को जहर देकर दीनदयाल को खत्म कर दो फिर तुम बड़ी सरलता से कमिश्नर के घर आ-जा सकोगे, क्योंकि वह धरती को अपनी भाभी मानता है, अमर तो भाग ही गया है फिर तुम पर शक तो क्या कोई सोच भी नहीं सकेगा, तुम्हारे लिए। सब अमर पर ही शक करेंगे, क्योंकि वह आज ही भाग निकला है। जहर उसे दवा में मिलाकर देना और पीने के बाद जब तुम्हें यकीन हो जाये कि वह मर गया है तब उसके छाती पर रिवाल्वर का फायर कर देना। इस रिवाल्वर की यह खासियत है कि फायर करने पर इससे कोई आवाज नहीं होगी। दूसरी यह कि इसके पेट में जो जहर होगा उसका असर खत्म हो जाएगा। सब यही समझेंगे कि अमर ने ही खून किया है। राकेश सारी बातें बड़े ध्यान से सुन रहा था। शेख ने फिर कहना शुरू किया—इसके पश्चात तिजोरी से करीब पचास हजार तक रकम निकाल लेना, तिजोरी को खुला ही छोड़ देना। पुलिस का फिर पूरा विश्वास अमर पर ही हो जाएगा। वह समझेगी कि अमर सेठ दीनदयाल का खून करके रुपये ले गया। दीनदयाल के कत्ल के बाद हो सकता है कि कमिश्नर तुम्हें और धरती को अपने ही बंगले में बिठाए क्योंकि उसे सदा डर लगा रहेगा कि कहीं अमर तुम दोनों को भी खत्म न करदे। उसके बंगले पर तो चौबीस घंटे पुलिस तैनात रहती है और वहाँ अमर पहुँच नहीं सकता। अगर तुम उसके बंगले पर रहने लगे तो फिर अपना काम करने में तुम्हें जरा भी दिक्कत

नहीं होगी। राकेश, तुम्हें हमेशा सावधान रहना चाहिये क्योंकि तुम्हारी थोड़ी सी भूल हम सबकी जिन्दगी का सवाल है। अगर तुम हमारे बताये हुए प्लान के मुताबिक काम करोगे तो तुम्हारी थोड़ी सी ही बुद्धि से हम अपने उद्देश्य में सफल हो जाएंगे। पुलिस तो पहले से ही अमर को ढूँढ रही है और जब सेठ दीनदयाल का खून हो जाएगा तो वह सचेत हो जाएगी और उसे गिरफ्तार करने की जोरदार कोशिश करेगी। तुम अब जा सकते हो। विश यू गुडलक—मदन, तुम राकेश का खयाल रखना। मैं चाहता हूँ कि तुम अपने साथ कुछ आदमी ले जाकर अमर की खोज करो। अगर हो सके तो उसे इस प्रकार खत्म करदो कि पुलिस तो क्या किसी को भी पता नहीं चले कि अमर खत्म हो गया। पुलिस तो अमर के पीछे ही लगी रहेगी और अगर हमने एक-दो को खत्म कर दिया व वह फाइल चुरा लिया तो भी पुलिस अमर पर ही शक करेगी क्योंकि पुलिस के ख्वाब में भी नहीं आ सकता कि अमर मर चुका है।

हेमा की मौत का सेठ दीनदयाल और धरती पर बहुत गहरा सदमा पहुँचा। सेठ दीनदयाल तो अपनी बेटी के दुख में बिस्तर में दाखिल हो गये। बेचारी धरती अपने ही कमरे में बैठी रोती रहती, सिसकती रहती है। उसकी तबियत भी बहुत बिगड़ गई थी, परन्तु अपने पति को ऐसी हालत में देखकर उसने अपने कलेजे पर पत्थर रख दिया था। वह मन ही मन में अपने भाग्य को कोसती, भगवान से शिकायत करती कि हे भगवान मुझ अभागी से ऐसा कौनसा पाप हो गया था जो इस प्रकार जलती चिता पर सुला दिया है। बेटी तो हमसे छीन ही ली, अब वे भी बिस्तर में दाखिल हो गये हैं। न तो चल सकते हैं और न बैठ ही सकते हैं। आज बहुत थक चुकने के कारण इस तरह सोचते-सोचते धरती की आँख लग गई। वह बहुत दिनों के बाद सोई थी और सोई भी ऐसे कि उसे खयाल तक नहीं रहा कि उसका पति पलंग पर लेटा हुआ दर्द के मारे करवटें बदल रहा है। इतने में दीवार पर टंगी क्लाक ने टन-टन की बारह

आवाज निकाली। इसके साथ ही दीनदयाल की नजर उस क्लाक पर गई और फिर वह बावलों की तरह इधर-उधर देखने लगा।

राकेश अपने बैड रूम में बैठा हुआ सिगरेट फूँकता जा रहा था। उसकी नजर बार-बार सामने पड़ी टेबिल पर जहर की शीशी पर पड़ जाती और वह अति गंभीर व भयभीत हो उठता। रात बहुत अंधेरी थी। बाहर हवा जू-जू करके इस प्रकार चल रही थी जैसे कि हजारों पवन चक्कियां चल रही हों राकेश अपने ही खयालों में खोया हुआ कुछ सोच रहा था कि बाहर हवा का इतना तेज भौंका लगा कि अचानक बंद खिड़की एक भटके के साथ एकदम खुल गई और राकेश ऐसे उछल पड़ा जैसे कि खिड़की को कोई तोड़कर घुस आया हो। खिड़की के खुलने से बाहर की ढेर सारी ठंडी हवा कमरे में घुस आई और राकेश के बदन से टकराई जिससे उसके बदन में सिरहन सी दौड़ पड़ी। शीत उसकी धमनियों में धंसता जा रहा था। सहसा राकेश कुरसी से उठ खड़ा हुआ और आगे बढ़ा—खिड़की को बन्द करने के लिये। खिड़की के दोनों खुले हुए पट हवा के भोंकों से खट-खट करते इधर-उधर चल रहे थे। खिड़की के दोनों पटों पर अपना हाथ रखकर जैसे ही उसने बन्द करना चाहा सहसा उसकी नजर नीचे की ओर गई और वह एकदम पीछे हट गया। डर के मारे उसके बदन में भुरभुरी सी दौड़ पड़ी। उसने सामने की भाड़ियों से एक सफेद साया आता हुआ देखा परन्तु फिर स्वयं पर नियंत्रण रखकर खिड़की से नीचे भांकने लगा। वह साया अब उन भाड़ियों के भुण्ड से निकल कर आगे बढ़ रहा था। साया उसे एक रूह के समान लगा जिससे वह भयभीत हो उठा। वह देख रहा था कि साया उसके ही बंगले की ओर बढ़ रहा है। जैसे-जैसे साया करीब आता गया वैसे-वैसे डर के मारे उसका दिल बैठता गया। साया अब उस अंधेरे से निकल कर रोशनी में आ गया तथा बंगले के नीचे लगे एक लेम्प पोस्ट के नीचे आकर रुक गया। पोस्ट लैम्प से निकलती रोशनी सीधी सफेद साये के चेहरे पर पड़ रही थी जिससे उसका चेहरा

साफ नजर आ रहा था। साया के चेहरे पर नजर पड़ते ही राकेश के बदन में सिरहन सी दौड़ पड़ी। उसका दिल जोरों से धड़कने लगा, इतना तेज कि उसके फटने की आशंका हो सकती थी। राकेश ने घबराहट के कारण सीने पर अपना हाथ रख दिया दिल की बढ़ती धड़कन वह अपने हाथ द्वारा साफ महसूस कर रहा था। नहीं, ऐसा नहीं हो सकता— नामुमकिन—हेमा को उसने अपने हाथों से मारा है, उसके ही सामने उसकी लाश को रेल की पटरियों पर डाला गया। पोस्टमार्टम की रिपोर्ट के पश्चात उसने स्वयं ही उसके शरीर को चिता पर सुलाकर जला डाला था''''तो फिर ऐसा कैसे हो सकता है यह हेमा नहीं हो सकती। एक बार फिर उसने उस सफेद साये की ओर आँखें फाड़-फाड़ कर देखा, परन्तु हकीकत से वह मुँह कैसे मोड़ सकता था। कहीं यह हेमा की रूह तो नहीं। यह कैसे हो सकता है''''। आज-कल के युग में ऐसा कहाँ''''तो फिर यह कौन हो सकती है। कहीं उसका वहम तो नहीं—ऐसा सोचकर बिना उस सफेद साये की ओर देखे फट से खिड़की को बन्द कर दिया तथा खिड़की की ओर पीठ करके खड़ा हो गया। उसने अपनी आँखें मूँद ली। उसकी साँस बड़ी जोरों से चल रही थी, उसको जैसे पसीना छूटता हो। इतनी ठण्डी हवा में भी उसके सिर पर पसीने की बूँदें जम गईं। करीब पाँच मिनट तक आँखें मूँदे इस प्रकार वह खड़ा रहा। राकेश अपने दिल में बढ़ते हुए इस वहम को मिटाना चाहता था। अपने हाथ में पिस्टल थामकर उसने फिर खिड़की को खोल दिया। जिस लैम्प पोस्ट के नीचे कुछ समय पहिले उसने हेमा को देखा था वहाँ पर अब एक गाय खड़ी थी जो अपना सिर इधर-उधर घुमा रही थी। गाय को देखकर राकेश के मुख से हँसी फूट पड़ी। उसने एक ठण्डी साँस ली और बुदबुदाया—मैं भी कितना बेवकूफ हूँ'''गाय को हेमा समझ बैठा। उसकी शंका को दूर हुई पर दिल अभी भी धड़क रहा था। मूड को ऑन करने के लिये किवाड़ खोल कर उसने एक विस्की की बोतल निकाली। उसका काक खोलकर यूँ ही मुँह तक ले गया और

तीन-चार घूँट में ही करीब चौथाई बोतल खत्म कर दी। बोतल को कबोड में रखकर वह वापस अपनी कुर्सी पर आकर बैठ गया। एक सिगरेट जलाकर लम्बे-लम्बे कश लेने लगा। कुछ वक्त पहले जो घबराहट उसमें थी वह अब खतम हो चुकी थी।

धरती-धरती--करहाते हुए सेठ दीनदयाल ने पुकारा।

पिताजी, माँ तो गहरी नींद में सोई हुई हैं। आप कहें तो जगादूँ।

नहीं बेटे, उसे सोने दो। बिचारी बहुत दिनों बाद सोई है। सारा दिन मेरी देखभाल करने में व्यस्त रहती है। उसकी भी तो तबियत ठीक नहीं रहती—उसे आराम करने दो।

पिताजी, शायद आपके दवा खाने का समय हो गया, इसीलिये माँ को बुला रहे थे।

हाँ बेटे, दवाई खतम हो गई है। यह चाबी लो, उस कमरे की अलमारी में दवा पड़ी है, लेके आओ।

अच्छा पिताजी— राकेश चला गया।

अलमारी से दवाई की बोतल निकाल कर वह अपने कमरे की ओर लपका। जहर वाली शीशी गायब थी। शीशी कहाँ गई ? कौन ले गया ? मेरे सिवा तो यहाँ पर कोई भी नहीं था। राकेश पागलों की तरह शीशी को इधर-उधर खोजने लगा। अचानक इस प्रकार शीशी का गायब हो जाना उसके लिए एक आश्चर्यजनक बात थी। मैंने तो इस टेबिल पर रखी थी....फिर गई कहाँ ? टेबिल तो निगल नहीं सकती, तो फिर गायब कैसे हो गई। राकेश इस प्रकार खुद से सवाल करता रहा। सहसा उसकी नजर सामने वाले खुले दरवाजे पर गई जिसे उसने तीन दिन से बन्द कर रखा था। दरवाजा किसने खोला ? कौन हो सकता है वह ? अपने हाथ में पिस्टल थाम कर वह उस खुले दरवाजे की ओर बोखलाया हुआ दौड़ा। दरवाजे तक पहुँचकर वह ठिठक गया। उसमें वही हेमा की छाया देखी जिसके

हाथ में वही जहरीली शीशी थी। हेमा की छाया धीरे-धीरे सीढ़ी उतरती जा रही थी। राकेश भय से आँखें फाड़े उस साये की ओर देख रहा था। उसके हाथ में पिस्टल होते हुए भी वह कुछ नहीं कर सका। डर के मारे उसके हाथ पाँव जैसे शिथिल पड़ गये थे। उसका सारा शरीर काँप रहा था। साया सीढ़ी उतर कर नीचे दालान में आ गया और आकर चुपचाप बन्द गेट के सामने रुक गया इसके साथ ही गेट चर-चर की आवाज़ करता अपने आप खुलता गया जिसे देखकर राकेश का पसीना छूट गया। साया बाहर चला गया और खट के साथ गेट फिर अपने आप बन्द हो गया। राकेश फिर उसी खिड़की की ओर लपका। वह अब देख रहा था कि साया वापस उन घनी झाड़ियों की ओर बढ़ रहा था और एकदम लुप्त हो गया। राकेश अब खड़ा नहीं रह सका तथा आकर धम से पलंग पर गिर पड़ा। उसे पूर्ण विश्वास हो गया कि हेमा की रूह भटक रही है और शायद अब उसे खत्म करके ही छोड़ेगी। परन्तु हेमा की रूह.... ऐसा कैसे हो सकता है। तो फिर शीशी कैसे गायब हो गई कौन ले जा सकता है ? रूह में बहुत शक्ति होती है। वह चाहे तो किसी भी रूप में बदल जाए जैसे पहिले वह गाय में बदल गई। ऐसे खयाल आते ही तन बदन में सिरहन सी दौड़ गई। हेमा की रूह भटक रही है और मुझसे बदला लेकर ही रहेगी। उसे अब अपने प्राण संकट में पड़े नजर आए। शेख उसे इन्सानों से तो बचा सकता है पर रूह से कैसे बचा सकेगा ? उसको तोपें, टैंक इतनी सारी शक्ति भी रूह के समक्ष कुछ नहीं कर सकती।

राकेश ने जैसे ही निशात के हाल में प्रवेश किया उसे मदन दिखाई पड़ा जो काउन्टर के पास खड़ा फोन कर रहा था। राकेश चुपचाप आकर उसके पास खड़ा हो गया। मदन ने बात समाप्त की, फोन को क्रेडिल पर रखकर बोला——राकेश तुम आ गये, आओ मेरे साथ, बॉस ने तुम्हें बुलाया है। दोनों साथ-साथ एक कमरे में प्रविष्ट हुए। दीवार पर लगे बटन को दबाते हुए मदन ने फिर कहा—

राकेश कल वाली तुम्हारी घटना पर किसी को भी विश्वास नहीं हो रहा है। बटन के दबते ही एक द्वार खुला और गली नजर आई। गली में प्रवेश करते हुए राकेश बोला—मदन मैंने आज तक तुमसे कुछ भी नहीं छिपाया जो सच्ची हकीकत थी मैंने तुम्हें कह सुनाई।

मदन कह रहा था—यह नामुमकिन है ऐसा नहीं हो सकता। तुम्हें आवश्य कोई वहम हुआ होगा। राकेश ने कोई उत्तर नहीं दिया। दोनों आकर एक द्वार के पास खड़े हो गये। मदन ने तीन बार पुकारा—चीनपा, चीनपा चीनपा—इसके साथ ही वह द्वार धड़-धड़ सा स्वर करता खुल गया और अन्दर से एक भारी भरकम शरीर वाला खूंखार मनुष्य निकला—बॉस, तुम दोनों का इन्तजार कर रहे हैं। ऐसा कहकर वह खूंखार आदमी एक ओर हट गया और दोनों प्रविष्ट हो गये। उस साइंटिफिक कमरे में कामरेड और शेख उपस्थित थे। दोनों सर झुका कर उनके सामने खड़े हो गये।

राकेश, तुमने दीनदयाल को खत्म करने का सुनहरा अवसर हाथ से गंवा दिया।

बॉस, मुझ पर यकीन करिये कि जो कुछ मैंने देखा वह हकी-कत था।

क्या बकते हो—बौखलाते हुए कामरेड बोला—यह सरासर वहम था और कुछ नहीं तुम बेकार में घबरा जाते हो।

कामरेड मान लिया जाये कि वह मेरा वहम था तो फिर शीशी कहाँ गुम हो गई, टेबिल तो निगल नहीं सकती। आप मुझ पर यकीन करिये। अगर वह मेरा वहम था तो फिर शीशी गायब नहीं होनी चाहिये। मैंने उसी शीशी को हेमा को हाथ में ले जाते हुए देखा।

राकेश, हो सकता है कि वह हेमा न होकर अमर हो। तुरन्त तुम घबराहट में उसे हेमा समझ बैठे।

नो सर, वह हेमा ही का साया था। वह सफेद साड़ी पहिने हुए थी। जहाँ-जहाँ वह पहुँचती वहाँ पर द्वार अपने आप ही खुलते गये।

कामरेड ने शेख की ओर देखा।

सर, मुझे तो कुछ भी समझ में नहीं आता। अगर मान लिया जाये कि वह राकेश का वहम था तो फिर शीशी कैसे गायब हो गई—इस तरह हम किसी भी नतीजे पर नहीं पहुँच सकते। शीशी का इस प्रकार गायब होना एक आश्चर्यजनक बात है।

——

१९

रात के करीब दो बजे थे। सभी सड़कें सुनसान पड़ी थीं। शहर के कुत्ते भौंक-भौंक कर थक गये और अब बीच सड़क पर ही पूंछ फैलाकर ऊंघने लगे। इस अंधेरी रात में पुलिस की नजरों से बचता हुआ अमर आकर एक बिल्डिंग के नीचे कोने में छिपकर खड़ा हो गया। उसने कुछ ही वक्त में उस बिल्डिंग का एक चक्कर लगा लिया—यह सोच कर कि कहीं अन्दर घुसने का कोई मार्ग नजर आ जाये, पर सभी द्वार बन्द थे। उसने फिर भी आशा नहीं छोड़ी। एक बार अपनी नजर गाड़ कर बिल्डिंग के चारों ओर देख लिया, उसकी निगाह एक पाइप पर पड़ी जो ऊपर की लाबी से निकलकर नीचे फर्श को छू रहा था। अमर ने एक बार पीछे मुड़कर इधर-उधर देखा फिर पाइप के द्वारा ऊपर चढ़ना शुरू किया। चढ़ते-चढ़ते कभी-कभी वह फिसल जाता, पर फिर स्वयं को संभाल लेता। पाइप आकर लाबी तक समाप्त हुआ। उसने अपने दोनों हाथ लाबी के डंडे से चिपका दिये और अपने पैरों को ऊपर उठा लिया। लाबी पर आकर वह धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगा कि कहीं अन्दर घुसने का मार्ग मिल जाए। थोड़ा सा आगे बढ़ा ही था कि एक खुली हुई खिड़की देख वह खिड़की पर चढ़ गया और कमरे का दृश्य देखने लगा। कमरे में दो पलंगों पर अलग-अलग दो पुरुष गहरी नींद सो रहे थे। अमर ने खिड़की से अन्दर कमरे में जम्प दे दिया और इसके साथ ही एक बड़ा थप का आवाज उस शांत कमरे में गूंजा। वे दोनों पुरुष हड़बड़ा कर खड़े हो गये—कौन है ? एक ने लाइट ओन कर दी—'अमर, तुम इस वक्त' दोनों के मुख से निकला। अमर ने कोई उत्तर नहीं दिया सिर्फ मुस्कराया।

आओ अमर—बैठ जाओ—खैरियत तो है—फिरोज ने पूछा ? वह घबरा रहा था ।

बेटे इस प्रकार आते हुए तुम्हें किसी ने देख तो नहीं लिया ? पुलिस कबसे तुम्हारे पीछे साये की तरह घूम रही है ।

नहीं अंकल, किसी ने नहीं देखा—अपने मुँह का पसीना पोंछते हुए अमर बोला ।

पिताजी अमर को कुछ समय आराम करना चाहिये । बहुत थक चुका होगा ।

हां बेटे, तुम अच्छी तरह बैठ जाओ—कुछ सुस्ता लो । इसे अपना ही घर समझो । फिरोज.... ।

जी पिताजी ।

तुम अपनी माँ को जगालो कि कुछ खाने के लिए.... ।

नहीं अंकल आप तकलीफ मत करिये । दूसरा मुझे भूख भी नहीं है ।

पागल कहीं का, भूख कैसे नहीं होगी । कुछ खा पी लो फिर आराम से पूरी कहानी बताना कि किस प्रकार हमको चकमा देकर भाग गये ? मिस्टर खान (जेलर) ने मुस्करा कर कहा ।

अमर भी मुस्करा पड़ा ।

फिरोज अपनी माँ को जगाकर आया ।

नमस्ते आंटीजी—अमर उसके पैरों पर झुक गया ।

जीते रहो बेटे, कैसे हो ?

अच्छा हूँ ।

"फातिमा"—देखो कुछ पड़ा है ? वरना कुछ बना लो । मि० खान ने अपनी बीवी से कहा ।

बहुत कुछ पड़ा है । मैं अभी लेकर आती हूँ ।

अमर पलंग पर लेट गया, वह बहुत थका हुआ था और भूखा भी था।

फातिमा खाने का सामान ले आई। वह एक चाय की केटली भी लाई थी।

अमर ने पेट भर कर भोजन किया, फिर चारों ने साथ मिलकर चाय पी। अमर की थकान अब दूर हो गई, वह स्वयं को फ्रेश महसूस करने लगा।

अच्छा बेटे, अब अपनी कहानी बताओ–एक सिगरेट सुलगाते हुए मि० खान बोले।

अमर ने हेमा वाला खत निकाल कर मि० खान की ओर बढ़ाया और बोला—अंकल इसे पढ़कर आप पूरी हकीकत जान जाएँगे।

मि० खान ने खत ले लिया और पढ़ना शुरू किया। जैसे-जैसे वह खत पढ़ता गया वैसे-वैसे आश्चर्य के मारे उसकी आँखें फटती गई। फातिमा ओर फिरोज उसके चेहरे के बदलते हुए भावों को देखने लगे कि ऐसी कौनसी बात खत में लिखी हुई है जो इस प्रकार उसका चेहरा तपे हुए ताँबे की तरह कभी लाल हो जाता है तो कभी पीला। पूरा खत पढ़कर उसने खत फिरोज के हवाले कर दिया और स्वयं ख्यालों के सागर में डूब गया। फातिमा ने भी फिरोज से खत लेकर पढ़ लिया। दोनों अचम्भे में पड़ गये। वे कभी मि० खान की ओर देख लेते जो कि पता नहीं किन विचारों में खोए हुए थे और कभी अमर की ओर देख लेते जो कि मि० खान की ओर एक टक देख रहा था जैसे उसे किसी उत्तर की प्रतिक्षा हो। पूरे कमरे में शान्ति छा गई। कोई किसी से नहीं बोल रहा था, वे सिर्फ कभी-कभी एक दूसरे की ओर देख लेते।

राकेश बेटे, तुम घबराओ नहीं। अब तुम अकेले नहीं, हम सब तुम्हारे साथ हैं। एक सच्चे देश भक्त की नजर से मेरा अब कर्तव्य हो जाता है कि स्वयं को संकट में डालकर देश की आन पर मर मिटूं। मैं तुम्हें हर मदद देने को तैयार हूँ। तुम सिर्फ हिम्मत से काम लेना। तुम्हें देश के गद्दारों का नाश करना होगा जो गैर मुल्कों से मिलकर भारत की शान्ति भंग करने पर तुले हुए हैं। तुम क्रोकोडायल स्टेशन का पता लगाओ,

शेख और राकेश से मैं निपट लूंगा। कुछ वक्त के लिये हमें शान्त रहना है, कहीं किसीको शक न हो जाए। अगर पुलिस ने कहीं तुम्हें देख भी लिया तो तुम्हें गिरफ्तार नहीं करेगी। हाँ, सिर्फ दिखाने के लिये तुम्हारे पीछे भागेगी जरूर। हमें ये सारी बातें तब तक गुप्त रखनी पड़ेंगी, जब तक क्रोकोडायल स्टेशन और उनके दूसरे अड्डों का पता न लग जाए। बड़े खेद की बात है कि देश गद्दारों से घिरा हुआ है और हमें मालूम तक नहीं। यह भी अच्छा ही हुआ कि ऐन वक्त पर हमें असलियत का पता चल गया, वरना शेख और उसके साथी गद्दारों ने तो हमें बेवकूफ बना ही लिया था। फिर क्या होता? कौन जानता है। बेटे, जिन गैर मुल्कों में चाँदी के चन्द टुकड़ों से जो ये गद्दार खरीद लिये हैं, उन सबके साथ उन्हें भी भोगना पड़ेगा। वे ये क्यों भूल रहे हैं कि भारत एक समृद्ध देश है उसके सामने वे एक पल भी नहीं टिक सकेंगे। हम में सिर्फ एक ही कमी है कि हम दूसरों पर विश्वास कर लेते हैं, उसके गले लिपट कर अपना भाई बना लेते हैं और आँखें मूंद कर बेफिक्र हो जाते हैं। हमारा वह भाई वक्त का फायदा उठाकर सोये हुए पर वार कर देता है। देश में क्या हो रहा है, किसी को भी फिक्र नहीं। सभी आँखें मूँदे सो रहे हैं। एक निर्दोष को फाँसी के तख्ते पर चढ़ाया जा रहा था और हम सब तमाशबीनों की तरह ताली पीटते जा रहे थे। बेटे, घबराओ नहीं, सब ठीक हो जाएगा। तुम अब आराम करो, दूसरी बातें सुबह होंगी।

अमर ने लाइट ऑफ कर दी और पलंग पर आंखें मूंद कर लेटते ही निद्रा देवी ने उसे अपने आगोश में ले लिया।

× × ×

बॉस, मैं अब क्या करूँ? कुछ भी समझ में नहीं आता, सारी रात जागना पड़ता है। जिधर भी देखता हूँ हेमा ही हेमा नजर आती है। उसकी रूह मेरे कमरे के इर्दगिर्द मँडराती रहती है। बहुत डर लगता है—यह सोचकर कि रूह मुझे शायद खत्म करके ही छोड़ेगी। बॉस, मुझे बचा लीजिये, कहीं मेरा हार्टफेल न हो जाय। कल कमिश्नर

के बंगले पर जा रहा था कि बीच रास्ते में वह खड़ी दिखाई पड़ी, वह घूर-घूर कर मेरी कार की ओर देख रही थी। डर के मारे कार को मैंने पीछे मोड़ लिया। हिम्मत साथ नहीं दे रही थी कि आगे बढ़ूं। वह अब एक दीवार के समान आकर रास्ते में खड़ी हो गई है। जहाँ भी जाता हूँ, वहीं दिखाई पड़ती है। कमिश्नर के बंगले पर जाना भी मुश्किल हो गया है।

राकेश, ठीक है। आज हम सब तुम्हारे साथ चल कर देखेंगे कि हकीकत क्या है! अब तक तुम्हारी ये सारी बातें वहम के सिवाय और कुछ भी नहीं लगतीं। ऐसी बातों पर विश्वास करना बेवकूफी है।

बॉस, अच्छा ही रहेगा। आप मुझ पर विश्वास नहीं करते हो, बहतर है कि अपनी आँखों से देख लें।

अंकल, जब से पिताजी ने सुना है कि अमर जेल से भाग गया है, उन्हें थोड़ी चिन्ता सी हो गई है।

हाँ बेटे, कल मैं तुम्हारे पिताजी से मिला था। उनकी बातों से मुझे भी कुछ ऐसा ही लगा। मैंने उन्हें समझा दिया है। सभी हैडक्वार्टरों पर मैंने संदेश भेज दिये हैं कि अमर को खोजने की पूरी कोशिश की जाय, अगर कहीं भी मिले तो फौरन गिरफ्तार कर लो।

देखिये अंकल पिताजी की तबीयत दिनोंदिन बिगड़ती जा रही है। माँ ऐसे चलती-फिरती है जैसे कोई बेजान पुतला हो। सारा दिन चिन्ताओं के सागर में डूबी रहती है। आप उन्हें कुछ समझाइये न, ऐसा कब तक चलेगा। उनकी ऐसी हालत देखकर मेरा कलेजा काँप उठता है। ईश्वर से हर रोज यही प्रार्थना करता रहता हूँ कि पिताजी व माताजी ठीक हो जाएँ—राकेश ने दुःखी होकर कहा।

बेटे, दीनदयाल मेरे लिए अपने भाई से भी बढ़कर हैं, मैंने उसे समझाने की बहुत कोशिश की है परन्तु उस पर ऐसा असर है, जैसे फर्श पर पानी की लकीर।

अच्छा अंकल, अब मैं चलता हूँ—आप आज घर पर आ तो रहे हैं ना।

हाँ हाँ, मैं जरूर आऊँगा। राकेश तुम रुक जाओ, आये हो तो भोजन यहीं पर कर लो।

नहीं अंकल, अब मैं चलूंगा, पिताजी के लिए दवा वगैर भी बाजार से खरीदनी है।

अच्छा बेटे, तुम भले ही जाओ, पिताजी से कह देना कि आज अंकल आ रहे हैं। और सुनो बेटे, मैं तुमसे कुछ कहना चाहता हूँ—अपने माँ-बाप का अच्छी तरह खयाल रखना, तुम्हारे सिवाय अब उनका है ही कौन, बेटे भी तुम हो तो बेटी भी तुम। एक अच्छे पुत्र की हैसियत से तुम्हारा पहला कर्तव्य है अपने माँ-बाप की सेवा करना।

अंकल आप पहले की बातों को भूल जाइये—मैं अब वह राकेश नहीं रहा, आपने स्वयं ही महसूस किया होगा—राकेश फिर दुःखी हो गया।

हाँ-हाँ बेटे, मैं समझता हूँ। यह तो मैंने यूं ही कह दिया है।

अंकल आप हमारे बड़े हैं, हमें आप ही नहीं समझाएंगे तो और कौन समझाएगा, फिर भी मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि भविष्य में आप को मुझसे कोई शिकायत नहीं होगी, मुझ पर भरोसा रखिये।

बेटे, मैं तुमसे बेहद खुश हूँ—राकेश की पीठ पर हाथ रखते हुए कमिश्नर बोले। मुझे तुम से अब कोई शिकायत नहीं।

थैंक-यू अंकल।

अच्छा तुम जाओ।

राकेश चला गया।

\+ \+ \+

मदन, जीप को उस पेड़ के नीचे खड़ी कर दो।

चारों जीप से बाहर आए। बॉस, हम यहीं पर छिप कर खड़े हो जाते हैं। हेमा की रुह यहाँ से गुजरेगी और आप अच्छी तरह देख सकेंगे।

किस समय वह यहाँ से गुजरेगी, बारह तो कब के बज गये हैं—सर कामरेड ने सवाल किया।

सर कामरेड, पता नहीं आज क्यों ऐसा हुआ है। वैसे हर रोज इन झाड़ियों से निकल कर हमारे मकान में प्रवेश कर जाती है और मेरे कमरे के चारों ओर चक्कर लगा कर वापस चली जाती है। मैं उसे काँच की बन्द खिड़कियों से देखता रहता हूँ। देखिये सर कामरेड वो सामने झाड़ियाँ हिल रही हैं—हड़बड़ाते हुए राकेश बोला—तीनों ने अपनी निगाह उन झाड़ियों पर लगा दीं। झाड़ियों से अब 'चिर-चिर, का स्वर भी सुनाई पड़ रहा था। ऐसा लगता था जैसे कि कोई अपने हाथों से झाड़ियों को हटाता आगे बढ़ रहा है।

हेमा का साया उन झाड़ियों से निकल कर बाहर आ गया और धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगा।

राकेश के अलावा बाकी तीनों आँखें फाड़-फाड़ कर जाते हुए साये की ओर देख रहे थे। सर कामरेड का तो जैसे पसीना छूटता हो—वह बड़बड़ाया—ओ माई गाड़! अब क्या होगा। मि० राकेश अब क्या होगा। रीयली स्ट्रेन्ज थिंग। हम को तो डर लगता है।

मदन, फायर करो—शेख बोला।

साया धीरे-धीरे जा रह था।

मदन ने बन्दूक सम्भाली, पर उसके हाथ काँप रहे थे बोला—बॉस, मैं बन्दूक नहीं चला सकूँगा मुझे बहुत डर लग रहा है।

नानसेंस, घबराओ नहीं हम सब जो तुम्हारे साथ हैं। वास्तव में शेख भी डर रहा था, परन्तु रौब जमाने के लिये ऐसा बोला।

मदन ने हिम्मत करके बन्दूक को अच्छी तरह सम्भाल कर सामने जाते हुए साये के पीछे निशाना बनाया। धाँय···आ···आ····आ···एक चीख के साथ मदन एक ओर लुढ़क पड़ा।

मदन, क्या हुआ तुम्हें? अरे तुम्हारी बाजू में से तो खून बह

रहा है। राकेश इसकी बाजू को थामो। मदन, यह सब कैसे हो गया।

बॉ····स·····मैं नि····शाना·····बना····ही रहा····था·····कि पता नहीं···किसने मुझ पर···फा····य····र कर दिया। आ····मदन दर्द से कराह उठा।

तो क्या यह जो फायर हुआ वह तुमने नहीं किया था ! आश्चर्य से शेख ने पूछा।

नो बॉ··स आ···आ

कमाल है ! शेख ने सर कामरेड की ओर देख कर कहा। तो फिर फायर किसने किया। मदन दर्द से कराह रहा था। तीनों उसके पास बौखलाये हुए बैठ गये और उसकी बाँह पर पट्टी बाँधने लगे ताकि खून बन्द हो जाए। गोली मदन के कँधे को चीर कर निकल गई थी। खून काफी बह रहा था, पर घाव नहीं था। (जैसे ही मदन ने साये पर फायर करना चाहा कि किसी ने उस पर ही फायर कर दिया)।

बॉस, मैंने आप को पहले ही कहा था कि हमें फायर नहीं करना चाहिये। ऐसा मैं भी कबका कर सकता था, परन्तु मैंने सोचा कि एक रूह पर फायर का क्या असर पड़ेगा, कहीं मुझे ही कुछ न हो जाए और अब ऐसा हो ही गया।

मि० शेख, उधर देखो—कांपती आवाज में सर कामरेड बोला—साया कहाँ गुम हो गया। सब ने आश्चर्य से उस ओर देखा, तो देखते ही रह गये। जहाँ पर कुछ समय पहले हेमा का साया जा रहा था, वहाँ पर अब एक सफेद गाय सर इधर-उधर घुमाती जा रही थी। यह देख कर सब के पैरों से जैसे जमीन खिसक रही हो।

बॉस, रूह में बहुत शक्ति होती है। उसी ने मदन पर फायर किया होगा और फिर गाय में बदल गई। उस दिन भी ऐसा ही हुआ था।

क्या बकते हो—काँपते स्वर में शेख बोला—ऐसा नहीं हो सकता।

बॉस, बाजू के कँगन को आईने की क्या जरूरत ! हकीकत तो आप स्वयं ही देख रहे हैं। ऐसा नहीं तो फिर आप इसे क्या कह सकते हैं।

हमें तो समझ में नहीं आता —ऐसा कैसे हो सकता है। जिस इन्सान का इस धरती से अस्तित्व ही मिट गया हो, फिर वह वापस कैसे आ सकता है। ऐसा होना असम्भव है। यह तो एक बड़ी समस्या बीच में खड़ी हो गई है। खैर कुछ भी हो—हमें अब फाइल शीघ्र ही प्राप्त करनी होगी। वरना हो सकता है कहीं राकेश को कुछ न हो जाय। हमें सावधान रहना है। कहीं इसकी वजह से हमारे कार्य में दखल न पड़े।

मि० शेख, अगर ऐसा हुआ तो हमें दूसरा कदम उठाना पड़ेगा। हमें देखना है कि फिर क्या होता है।

\+ \+ \+

देखो वह जो चौथे नम्बर पर काली कार खड़ी है वही कमिश्नर की कार है। मैं उस होटल में जाकर तुम दोनों का इन्तजार करता हूँ। सब समझ गये ना। यह सब राकेश ने धीरे से समझाते हुए कहा।

यैस ···समझ गये।

ओके—तुम अब जाओ।

वे दोनों चले गये।

राकेश ने कार पीछे मोड़ ली और आकर होटल के पास रोक दी। होटल के अन्दर आकर वह एक खाली टेबल के सामने कुर्सी पर बैठ गया। होटल में एक क्रिश्चन लड़की अँग्रेजी गाना गा रही थी। आर्केस्ट्रा से निकलती मधुर धुन में वहाँ पर बैठे हुए सभी लोग खोये हुये थे। सब की नजरें उस गाती हुई क्रिश्चयन लड़की पर थीं।

साहब, आप के लिये ? एक बैरे ने आकर बड़े अदब से राकेश से पूछा।

एक डबल पेग स्कॉच।

बैरा आर्डर ले कर चला गया।

राकेश ने एक सिगरेट जलाई। उसका पूरा ध्यान द्वार की ओर था। बैरा आर्डर के मुताबिक स्कॉच का एक प्याला टेबिल पर रख कर चला गया। राकेश धीरे-धीरे स्कॉच सिप करने लगा, परन्तु बार-बार वह द्वार की ओर देखता जा रहा था। इतने में दो पुरुषों ने होटल के हॉल में प्रवेश किया। उनकी नजरें एक बार हॉल का पूरा चक्कर काट गईं और फिर जाकर एक स्थान पर रुक गईं। वे दोनों उस ओर बढ़े।

तुम दोनों आ गये, काम हो गया ? धीरे से राकेश ने पूछा।

यस, हो गया। कार के पहिये में हमने काँच का छोटा पर तीखा टुकड़ा इस प्रकार लगा दिया है कि कार थोड़ा सा ही तेज भागेगी कि वह कांच का टुकड़ा टायर को चीर कर अन्दर घुस जाएगा और ट्यूब बर्स्ट हो जाएगा।

वेरी गुड, आओ मेरे साथ। चलकर देखते हैं।

राकेश ड्राइविंग सीट पर बैठ गया और बाकी वे दोनों पीछे की सीट के नीचे छिप कर बैठ गये।

दीवार पर टँगी क्लॉक ने सात घंटे बजाए और इसके साथ ही कमिश्नर चौधरी अपनी कुर्सी से हड़बड़ा कर उठ खड़े हुए। ओ हो ····शाम के सात बज गये और काम में पता ही नहीं चला। आज ८ बजे दीनदयाल के घर भी तो जाना है। ऐसा सोचकर उसने अपनी फ़ाइलें उठाईं और बाहर आकर अपनी कार में बैठ गया। राकेश ने कमिश्नर की कार को जाते हुए देख लिया—वह उसके पीछे लग गया और बोला – तुम दोनों सावधान रहना।

मि० राकेश आप जरा भी फिक्र न करें, हम बिल्कुल सतर्क हैं। दोनों ने जेबों से पिस्टल निकाल कर हाथों में थाम लिये।

मि० चौधरी की कार कुछ ही आगे बढ़ी थी कि एक बड़ा सा धमाका हुआ तथा चिर-चिर-चिर करती कार रुक गई। इस अकस्मात धमाके से मि० चौधरी का पूरा शरीर थर्रा गया। कार से बाहर आकर जब उसने देखा तो बेचारे का पसीना छूटने लगा। कार का पहिया बर्स्ट हो गया था। उफ अब क्या होगा। वे बड़-बड़ाये, फिर इधर-उधर देखने लगे ताकि कोई मदद मिल जाय। इस प्रकार उस सुनसान रास्ते में खड़ा रहना उसे अच्छा नहीं लग रहा था। क्योंकि उसके पास एक कन्फीडेन्शियल फाइल थी जो उसे अपनी जिन्दगी से भी कहीं ज्यादा प्यारी थी। इतने में उसने एक कार आती हुई देखी। मि० चौधरी ने अपना हाथ कोट की जेब में डाला जिसमें रिवाल्वर पड़ा था। उसे डर भी लग रहा था क्योंकि वह फाइल उसके लिये सब कुछ थी, उसकी हिफाजत करना उसका पहला कर्त्तव्य है। मि० चौधरी अब होशियार था। हर मुसीबत का मुकाबला करने के लिये वह तैयार हो गया । कार आकर उसके करीब रुक गई। अँकल "आप इस वक्त यहाँ ?

राकेश, अच्छा हुआ, तुम वक्त पर आ गये। मेरी कार का ह्वील बर्स्ट हो गया है।

आईये अँकल—कार का द्वार खोलते हुए वह बोला।

मि० चौधरी ने फाइलें उठाई और अपनी कार को वहीं छोड़ कर वह राकेश के साथ बैठ गया। कार चल पड़ी।

अँकल, ह्वील कैसे बर्स्ट हो गया—स्टीयरिंग को सम्भालते हुए राकेश ने पूछा ?

बेटा—पता नहीं कैसे हो गया। मैं तो घबरा ही गया था। अकेला होता तो कोई फिक्र नहीं थी, पर मेरे पास एक फाइल है जिसका महत्त्व मेरी जिन्दगी से भी बढ़कर है। इसकी वजह से मैं कुछ नरवस सा हो गया था, फिर सूनसान रास्ता है, डर जाना स्वाभाविक ही था। तुम्हारी कार आ रही थी तो मैं कुछ घबरा

गया यह सोचकर कि कहीं कोई दुश्मन वगैहर न हो। इसलिये हाथ में पिस्टल थाम लिया। ऐसा कहकर कमिश्नर खिलखिला कर हँस पड़े। राकेश चुपचाप कार चलाता रहा। कार साठ की स्पीड से भाग रही थी।

राकेश, कार को कहाँ लिये जा रहे हो ? हमें तो बाईं ओर चलना है। राकेश ने कोई उत्तर नहीं दिया उसने कार की स्पीड सत्तर कर दी। कार अब जंगल से गुजर रही थी। राकेश""कहाँ चल रहे हो—जंगल देख कर मि० चौधरी बौखला गया, राकेश"" राकेश""राकेश, चौधरी चिल्ला पड़ा परन्तु फिर भी राकेश ने कोई उत्तर नहीं दिया। कार की स्पीड और बढ़ा दी। रा " के""श, तुम बोलते क्यों नहीं। जवाब दो मुझे कहाँ लिये जा रहे हो। वह तैश में आ गये, राकेश ने जैसे सुना ही नहीं वह स्टीयरिंग थामे सामने रास्ते की ओर देख रहा था। रास्ता ऊबड़-खाबड़ और भयानक था।

मि० चौधरी को शक हुआ—अपनी जेब में हाथ डालकर पिस्टल को थाम लिया और फिर चिल्ला कर बोला—"राकेश ""मैं कहता हूँ कार को रोक दो, वरना"'। उसने वाक्य पूरा ही नहीं किया था कि दो पिस्टल उसकी दोनों कनपटियों से लग गये जिस बात के लिये वह सोच भी नहीं सकता था। यह देख कर वह बौखला गया और कनखियों से इधर-उधर देखने लगा—उसने फिर स्वयं को संभाल लिया और गरज कर बोला "राकेश तो यह बात है ! आखिरकार तुमने अपनी असली सूरत दिखा ही दी।" ये दोनों तुम्हारे ही साथी हैं। समझ गया तुमने ही कार के पहिये को बर्स्ट किया है। पर यह समझ में नहीं आता कि मुझे किस उद्देश्य के लिये इस प्रकार छल करके लिये जा रहे हो। मुझसे तुम्हें क्या हॉसिल हो सकता है ? फिर भी अच्छा ही हुआ तुम्हारी असलियत तो सामने आ गई। इस बार भी राकेश ने कोई उत्तर नहीं दिया। कार भागी जा रही थी।

कमिश्नर साहब आप चुपचाप चलिये—हकीकत आपको मालूम हो ही जाएगी—उन दोनों में से एक ने कहा ।

कमिश्नर होश में आया तो उसने स्वयं को एक कुर्सी से बंधे हुए पाया । उसने गौर से एक बार पूरे हॉल को देखा फिर उसकी निगाह सामने रुक गई जहाँ पर एक लम्बी और ऊँची कुर्सी पर सर कामरेड और उसके पास ही थोड़े नीचे शेख बैठा था । राकेश और मदन उसके आस-पास खड़े थे । वे सब अट्टहास करके हंस रहे थे ।

सरकामरेड ने जोर से चिल्ला कर कहा—मि० चौधरी, आप हमारे खास महमान हैं । आप जरा भी फिक्र न करें । हमें एक फाइल को बरसों से प्राप्त करने की जो तमन्ना थी, वह आपने पूरी कर दी । इसके लिये आप का बहुत-बहुत धन्यवाद । आपकी हर बात का पूरा-पूरा खयाल रखा जाएगा । आपने हमारी शक्ति तो देख ही ली कि हम हिन्दुस्तान को पल भर में ही मिटा सकते हैं । आप तब तक हमारे महमान रहेंगे जब तक हम हिन्दुस्तान पर कब्जा नहीं कर लेते । इसके बाद आप को बाइज्जत रिहा कर दिया जाएगा, क्योंकि यहाँ पर हमारा ही राज्य होगा और आप सब होंगे हमारे इशारों पर चलने वाले कठपुतले ।

हा हा····हा···हा मि० चौधरी ने एक बड़ा सा अट्टहास किया । उसकी आवाज पूरे हॉल में गूंज उठी और फिर वह चिल्ला कर बोला—"बन्द करो अपनी नीच जबान—तुम क्या समझते हो कि तुम चन्द लोग शेख, राकेश जैसे गद्दारों के साथ मिलकर हमारे भारत से टक्कर लोगे ! मैं अब भी तुम्हें सलाह देता हूँ कि वापस अपने मुल्क चले जाओ । क्यों अपनी बरबादी पर तुले हुए हो ? कहते हैं कि जब चींटी की शामत आती है, तो उसके पर निकल आते हैं ।

कमीने···· तुमने हमारी बच्ची को मार डाला । मैं तुम्हें इसकी पूरी-पूरी सजा दूंगा । जिस थाली में खाया, उसी में छेद किया । नमक हराम, पता नहीं किस नीच की औलाद है । जिन्होंने

तुम्हें शरण दी, तुम्हें इतना बड़ा किया, उसके साथ तुमने विश्वासघात किया है, काफिर की औलाद ! मैं तुम्हें जिन्दा जमीन में गड़वा कर कुत्तों से मरवा डालूंगा ।

तड़ाक ......एक भरपूर चाँटा शेख ने मि० चौधरी के गाल पर रसीद किया ।

अच्छा तो तुम हो—नफरत से मुस्कराते हुए चौधरी बोले—देश-द्रोही ! नमक हराम !! तुम क्या समझते हो कि हमसे गद्दारी करके तुम साफ बच निकलोगे ? नहीं, हरगिज नहीं । तुम्हारी ऐसी हालत की जाएगी कि देखने वाले का कलेजा काँप उठेगा । कमीने, यहाँ के लोग तुम्हें कितनी इज्जत देते हैं । तुम में विश्वास रखते हैं और इसके बदले तुम उनके साथ विश्वासघात कर रहे हो । अब वही लोग तुम पर थूकेंगे, तुम्हें जलील करेंगे । अब भी वक्त है, सम्भल जाओ वरना कुत्ते की मौत मारे जाओगे । मैं तुम्हें...कमिश्नर ने वाक्य पूरा ही नहीं किया कि एक मधुर आवाज सब के कानों में गूंज उठी, ऐसा लगा जैसे की लाखों घंटियाँ एक साथ बज उठी हों । वह मधुर गुनगुनाहट बढ़ती गई । सबके कान खड़े हो गये । आश्चर्य से सर-कामरेड ने शेख की ओर देखा । सब अचम्भे में पड़े उस मधुर गुन-गुनाहट को सुने जा रहे थे, यह कैसी आवाज । आवाज ऐसे आ रही थी जैसे कि कोई कुँए के अन्दर से गुनगुना रहा हो । जैसे-जैसे समय बीतता गया, वैसे-वैसे आवाज नज़दीक आती गई । सब के कान उस आवाज़ की ओर लगे हुए थे । जिस कमरे में कुछ समय पहिले जो इतना कोलाहल था वहाँ पर अब पूर्ण शान्ति छा गई थी । आवाज़ अब कई सुरों में बदल गयी । इस बार आवाज़ ऐसे सुनाई पड़ी जैसे सैकड़ों अप्सराएँ कमरे के इर्द-गिर्द गुनगुना रही हों । कमरे के चारों ओर से सैकड़ों स्वर आने शुरू हो गये ।

मि० शेख, ये कैसी आवाजें हैं ? कौन हो सकता है !

सरकामरेड, मैं भी यही सोच रहा हूँ कि जहाँ पर चिड़िया भी नहीं चहक सकती, वहाँ ऐसी आवाजें करने वाले कौन हो सकते हैं । आवाजें बढ़ती गई । आश्चर्य से सब एक दूसरे का मुँह ताकने लगे ।

चलो देखते हैं—राकेश, तुम और मदन, अपनी-अपनी बन्दूकें उठाओ। ये आवाज़ें सुनकर उनके और लोग भी घबराते हुए भागे आए—

बॉस, ये आवाज़ें एक आत्मा की हैं, हम देख कर आ रहे हैं—एक औरत सफेद वस्त्रों में जो कि इन्सान नहीं लगती उन घने पेड़ों से गुनगुनाती बाहर निकली—जैसे-जैसे वह साया आगे बढ़ता गई वैसे-वैसे आवाज़ें भी बढ़ती गई, वह है तो एक पर कई स्वर उसके मुख से निकल रहे हैं। डर के मारे हम सब भाग कर आए हैं। बॉस, यह कोई भटकती हुई आत्मा लगती है, जो कि यहाँ पर आ गई है। बाकी एक इन्सान का यहाँ तक पहुँचना असम्भव है। यह बात सुनकर राकेश का पसीना छूट गया। डर के मारे उसकी टाँगें काँपने लगीं। घबराई हुई आँखों से उसने शेख की ओर देखा। आवाजें धीरे-धीरे धीमी पड़ती गई। आओ, सब चल कर देखते हैं। कमिश्नर को वहाँ पर ही अकेला छोड़कर सब चले गये।

हवा के झोंकों से लहराते हुए खुले वह काले गेसुओं को सहलाती हुई आगे बढ़ रही थी। ऐसा लगता था जैसे क्षीर सागर में नहाकर आ रही हो। वह उस काले अंधकार में ऐसी प्रतीत हो रही थी मानो संगमरमर की मूर्ति हो। ओ माई गाड! यह यहाँ तक भी पहुँच गई—सरकामरेड बुदबुदाया। हेमा का साया घने पेड़ों के झुंड में घुस गया और वे लोग भी उसका पीछा करते-करते उन पेड़ों के झुंड में घुस गये। साये को खोजने लगे परन्तु वह उनको नजर नहीं आया। अब गुनगुनाहट बन्द हो गयी। वह अदृश्य हो गई थी। सबने बहुत खोज की पर कहीं नजर नहीं आई। उसका पीछा करते-करते वे काफी दूर निकल आए थे। आखिरकार थक कर वापिस अपने ही स्थान पर आ गये, जहाँ पर कमिश्नर को बाँध कर गये थे। उस कमरे में आकर जब देखा तो सबके आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा। सब मुँह फाड़े एक दूसरे का चेहरा ताकने लगे। मि० चौधरी (कमिश्नर) गायब थे। जिस कुर्सी से उसे बांध कर ये लोग गये थे वह दूसरी ओर उल्टी पड़ी थी।

——

२०

सरकामरेड के आगे सिर झुकाता हूँ। आपने मुझे याद फरमाया है!

हाँ राकेश, मुझे तुमसे आवश्यक बातें करनी हैं।

राकेश हाथ थामे सीधा खड़ा रहा।

राकेश, कमिश्नर कैसे भाग गया, कोई नहीं जानता है। उसे कोई ले गया या वह स्वयं ही भाग गया दोनों एक ही बात है, परन्तु हमें जरा भी फिक्र नहीं। यहाँ तक किसी का पहुँचना तो असम्भव है, अगर कोई पहुँच भी गया है तो फिर वह बच कर नहीं निकल सकता। यहाँ से भागकर कमिश्नर ने स्वयं ही अपनी मौत को पैगाम दिया है। हमारे लोग उसके पीछे लगे हुए हैं। अपनी मंजिल तक पहुँचने से पहले ही उसे जिन्दगी की आखिर मंजिल तक हमारे लोग पहुँचा देंगे। दूसरा यह कि वह यहाँ के खतरनाक रास्तों से अनभिज्ञ है, रास्ते में ही भटक कर भूख प्यास से मर जाएगा। कमिश्नर बचकर भी हमारा कुछ नहीं कर सकता। हमारी फौजें सतर्क खड़ी हैं। वे हर मुकाबले के लिये तैयार हैं। हम यह फाइल चीन भेज रहे हैं। वहाँ पर इसकी पूरी स्टडी की जाएगी। हमें वहाँ के आदेश का इन्तजार करना होगा और फिर उसके अनुसार ही कदम उठाना है। सिर्फ एक ही भय हमारे दिल में खटकता रहता है। डर सिर्फ यह है कि कहीं तुम्हें कुछ हो न जाए। कहीं तुम्हें कुछ हो गया तो हम कहीं के भी नहीं रहेंगे। तुम नहीं जानते कि हम तुम्हें कितना चाहते हैं। एक तरफ तो हमारी 'भारत-विजय' होगी और दूसरी ओर तुम्हें खोकर हमारी सबसे बड़ी हार। हम नहीं चाहते

कि तुम जैसा बहादुर साथी हमसे बिछुड़ जाय। तुमने जो-जो सेवाएँ की हैं उनके लिये हम तुम्हारी कद्र करते हैं। अपने सच्चे साथी को बचाने के लिये हम लाखों की जानें ले लेते हैं, परन्तु इस मुसीबत से बचना एक बड़ी समस्या है। हेमा की रूह तुम्हारे पीछे लगी हुई है। कभी भी वह तुम्हें खत्म कर सकती है। ऐसा सुनकर राकेश का पसीना छूट गया। डर के मारे उसके दोनों हाथ अपनी गर्दन तक चले गये। फिर उसे सहलाते हुए वह थूक निगल कर धीरे से बोला— सरकामरेड, आप मुझे इस मुसीबत से छुटकारा दिलाइये, मुझे बचा लीजिये। अब तो रूह हर जगह मेरे इर्दगिर्द मँडराती रहती है, जहाँ भी जाता हूँ वही नजर आती है। कल रात अपने कमरे में सो रहा था कि वह आकर मेरे सिर के पीछे खड़ी हो गई और फिर अपने दोनों हाथों का पंजा बनाकर मेरे गर्दन की ओर बढ़ाने लगी। इतने में मेरी आँख खुल गई। चीखना चाहता था पर डर के मारे मेरी आवाज ही बन्द हो गई। भय से आँखें फिर बन्द कर लीं, जागा तो सुबह हो चुकी थी। बॉस, अगर वह मुझे मारेगी नहीं तो भी डर के मारे मैं मर जाऊँगा, मेरा हार्ट फेल हो जाएगा। राकेश चुप हो गया उसकी सांसें तेज चल रही थी, वह हाँफ रहा था।

घबराते क्यों हो राकेश, तुम क्या समझते हो कि हम तुम्हारे लिये कुछ नहीं कर सकते। हमने तुम से प्रोमिस किया था कि फाइल के बदले तुम्हें बीस लाख रुपये दिये जाएंगे। 'ये लो' सरकामरेड ने एक छोटा सा बैग राकेश के हाथ में थमा दिया। बैग को खोल कर जब राकेश ने देखा तो उसकी आँखें चौंधिया गई। बैग में बीस लाख रुपये के करेन्सी नोट थे। बीस लाख— इतने रुपये —राकेश बुदबुदाया।

राकेश, यह तुम्हारा इनाम है। बाकी रही हेमा के रूह से बचने की समस्या वह भी हम हल कर देंगे।

आप मुझे हेमा से बचा लेंगे!! थैंक यू—सर कामरेड। ऐसा कहकर राकेश ने स्वयं का सिर आगे को झुकाया। वह सोचने लगा इतनी बड़ी रकम उसके पास है और फिर हेमा की रूह से भी उसे हमेशा

हमेशा के लिये छुटकारा मिल जाएगा। इसके सिवाय और उसे चाहिये ही क्या" । सर कामरेड क्या आप वास्तव में ही मुझे हेमा से बचा लेंगे।

हाँ राकेश, हम तुम से प्रोमिस करते हैं। हर हालत में हम अपने प्रोमिज को निभाएंगे।

राकेश की खुशी का जैसे ठिकाना ही नहीं रहा। खुशी से वह मन ही मन बलियों उच्छल रहा था। उसे पूरा विश्वास था कि सर कामरेड उसे इस मुसीबत से छुटकारा दिला देंगे। बोला—पर, कैसे सर कामरेड ?

हम तुम्हें अपने साथ चीन ले चलेंगे। वहाँ पर हेमा की रूह तो क्या, स्वयं यमदेव भी नहीं पहुँच सकते। वहाँ पर तुम ऐशआराम की लाइफ बसर करोगे। यहाँ की ज़लील लाइफ से तुम्हारा छुटकारा हो जाएगा।

राकेश को जैसे अपने कानों पर विश्वास ही नहीं हो रहा था। सोचा—तो क्या सरकामरेड उसे चीन ले चलेंगे।

राकेश तुम सोच रहे हो कि हम सच कह रहे हैं या झूठ ! हम सच ही कह रहे हैं। वहाँ ले जाकर हम तुम पर कोई एहसान नहीं कर रहे हैं। इसके बदले तुम्हें हमारा एक और काम करना पड़ेगा।

क्या, क्या काम करना पड़ेगा ? राकेश एक बार फिर घबरा गया।

राकेश, घबराओ नहीं, काम सरल है। हमारा एक दुश्मन दीवार की तरह हमारे सामने खड़ा है उसे हमेशा-हमेशा के लिये हटाना होगा। उसके होते हुए न तो तुम्हें ये बीस लाख रुपये मिल सकेंगे और न ही तुम चीन चल सकोगे, क्योंकि इसमें उसका भी हिस्सा है और वह नहीं चाहेगा कि उसके हिस्से को कोई और ले जाए। अब दो बातें तुम्हारे सामने हैं। या तो तुम उसे समाप्त करके स्वयं को हेमा की रूह से बचाओ और अपनी जिन्दगी में चार चाँद लगा दो, या फिर अपनी मौत का निमन्त्रण स्वीकार करो। तुम्हारी ज़िन्दगी तुम्हारे ही

हाथ में है। बताओ क्या चाहते हो—मौत या जिन्दगी ?

राकेश तो एक बार सोच में डूब गया। वह हेमा की रूह से बहुत घबराता था। जिन्दगी तो सब को प्यारी होती है। जीने की राह उसे नजर आई थी, फिर वह उसे अपनी आँखों से कैसे ओझल कर सकता था। बॉस, मैं यह काम भी कर दूँगा।

'शाबाश'....हमें तुमसे यही आशा थी। वह दुश्मन हकीकत में हमारा ही आदमी है, परन्तु कमबख्त के दिल में बेईमानी है। वह हम से गद्दारी करना चाहता हैं। हम उसे यूँही समाप्त नहीं कर सकते, क्योंकि उसके पास भी कुछ शक्ति है, हमें डर लगता है कि कहीं हम दोनों ही में झगड़ा न हो जाए। उसकी इतनी हिम्मत तो नहीं कि हमारी शक्ति से टक्कर ले सके, परन्तु राज खुल जाने का डर रहता है। कहीं राज खुल गया तो हिन्दुस्तान हम दोनों को यहाँ पर ही मौत के घाट उतार देगा और जिस उद्देश्य के लिये हम बरसों से यहाँ पर खाक छान रहे हैं वह पूरा नहीं होगा। बेकार में हम अपनी जानों से हाथ धो बैठेंगे। हमारी तबाही हो जाएगी। तुमने यह काम कर दिया तो फिर समझो कि हम दोनों की पाँचों उंगलियाँ घी में हैं। तुम्हारी जिन्दगी चमक उठेगी। मैं समझता हूँ अब तुम उसे जान गये होगे।

यस कामरेड—मैं जान गया, आप शेख के लिये ही कह रहे हैं न ?

वेरी क्लेवर बॉय। हम तुम्हारी अकल की दाद देते हैं। राकेश, तुम शेख को खत्म कर दो, फिर समझो कि तुम ही तुम हो। हम तुम्हें मुँह माँगा इनाम देंगे।

+ + +

राकेश, क्या हुआ गाड़ी क्यों रोक दी।

बॉस—शायद गाड़ी में कुछ खराबी हो गई है। देखता हूँ, क्या है? ऐसा कहकर वह गाड़ी से बाहर आ गया। राकेश गाड़ी को इधर-उधर देखने लगा शेख भी बाहर आ गया। राकेश झुक कर देख रहा था। शेख

आकर उसके पास ही खड़ा हो गया। धाँय····शेख के मुख से एक चीख निकली और लुढ़कता हुआ वह एक ओर गिर पड़ा। गोली उसकी दाँई पसली को छेद कर बाहर निकल गई। खून का जैसे फव्वारा छूट पड़ा। कुछ ही पल में वह खून से लथ-पथ हो गया। राकेश वहीं पर खड़ा रहा। स्वयं को सम्भालते हुए उसने खड़े होने की कोशिश की, पर वह असफल रहा। एक हाथ घाव पर रखा और दूसरा हाथ जमीन पर टिका कर वह झुक कर बैठ गया। शेख ने काफी हिम्मत दिखाई। दर्द के मारे प्राण निकल रहे थे।

बे····टे····तुम····ने····यह····क्या····क·· र····दिया। दर्द के मारे वह बोल नहीं पा रहा था। मे····रे····क···रीब····आओ···आ···दर्द से शेख कराह उठा। शेख सम्भल रहा था। वह कुछ होश में आ गया। बेटे उस नीच के कहने पर ऐसा किया है—काश यह पहले से ही पता चल जाता। जैसा मैंने किया वैसा ही भरा। अपने पापों का बदला मिल गया जो अपनी ही औलाद के हाथों से मर रहा हूँ।

शेख से ऐसा सुन कर राकेश का माथा ठनका। उसने प्रश्नवाचक दृष्टि से उसकी ओर देखा।

आओ, मेरे करीब आओ बेटे··· तुम मेरे ही बेटे हो। तुम्हारी माँ का नाम सलमा है। मैंने उस देवी के साथ बहुत अन्याय किया था, जिसका मुझे फल मिल गया कि आज अपने ही बेटे के हाथों से मर रहा हूँ।

राकेश गौर से सब सुन रहा था—तो क्या शेख ही उसका पिता है- उसके हाथ में पड़ा पिस्टल अपने आप ही गिर पड़ा। उसका पूरा बदन ढ़ीला पड़ता गया। कुछ समय पहले जो कठोरता उसके चेहरे पर थी वह लुप्त हो गई। ओ हो! यह मैंने क्या कर दिया। वह शेख के करीब आकर बैठ गया और हौले से बोला पिताजी···। उसकी आँखों से दर्द उमड़ पड़ा। वह शेख को अपने हाथों से सहारा देकर थामने लगा।

बेटे, इसमें तुम्हारा कोई दोष नहीं—एक पापी इन्सान को अपने किये का फल मिला है। उसके पास देर है अंधेर नहीं। बेटे···सर कामरेड पर विश्वास मत करना। उसके दिल में खोट है। वह तुम्हारे साथ भी ऐसा ही सलूक करेगा। नीच अजगर की तरह सबको निगलना चाहता है। तुम उसका साथ छोड़ दो। तुम्हें मरना तो है ही, फिर क्यों इन कमीनों के द्वारा मरो। अपने देश की खातिर कुछ कर जाओ। अपने प्राणों की बलि देकर पापों का प्रायश्चित करो। मुझे तो इसका भी अवसर नहीं मिला। बेटे, यह अच्छा ही हुआ कि वक्त पर आँखें तो खुल गईं। अपने देश से गद्दारी करने का फल मुझे मिल गया। अपने थोड़े से स्वार्थ के लिए चालीस करोड़ भारतवासियों की जान से खेल रहा था। पता नहीं भगवान के पास मुझे जगह मिलेगी, या नहीं। आ·· दर्द से शेख कराह उठा।

राकेश की आंखें नम हो गईं। उसके दिल में छिपा हुआ शैतान गुम हो गया। आज पहली बार उसे किसी के दर्द का अहसास हुआ।

बेटे···बरसों से एक राज़ अपने सीने में छिपाता आ रहा हूँ···· सुनो····मेरा नाम शेख नहीं शंकर है।

क्या···· ? आप मुसलमान नहीं ··· ? आश्चर्य से राकेश की आँखें फट गईं।

हाँ बेटे, मैं हिन्दू हूँ। तुम्हारे शरीर में एक नीच इन्सान और एक खुदा की फरिश्ती का खून मिला हुआ है—वे दोनों माँ-बेटी अपने देश के खातिर कुर्बान हो गईं और हम दोनों बाप-बेटे अपनी नीच हरकतों से बाज नहीं आए, जिसका फल आज भोग रहे हैं। शंकर की साँस बड़ी तेज चल रही थी, वह कुछ पल के लिये रुक गया,···पिताजी··· पिताजी····राकेश बावलों की तरह पुकारने लगा।

बेटे, मैं ऐसी सरल मौत नहीं मर सकता। शंकर राज़ बताने लगा—मैं एक बड़े सेठ श्री शम्भूनाथ का ड्राइवर था। उसका करोड़ों का कारोबार चलता था। एक दिन अपने साथ बीस लाख रुपये लेकर वह मेरे साथ सफर कर रहा था। मैं कार ड्राइव कर रहा था, सेठ के

पास इतने सारे रुपये देख कर मेरे मन में बेईमानी जागी जो कब से ऐसे मौके के इन्तजार में थी। मैंने कोई बहाना करके कार को जंगल में ही रोक दिया--तुम्हारी ही तरह जैसे तुमने अभी किया है। हम दोनों कार से बाहर आए। बाहर आते ही मैंने एक चाकू से उस पर हमला कर दिया। चाकू उसकी बाँई पसली में घुस गया। दर्द के मारे वह छटपटाने लगा और मरते वक्त मुझे शाप दे गया कि मेरी मौत भी इसी तरह होगी और आज ऐसा ही हो गया। तुमने भी बीस लाख के खातिर ऐसा किया। उस महात्मा का कहना सत्य निकला। उसे खत्म करके अपने साथ रुपये लेकर मैं भागा, परन्तु पुलिस ने मेरा जीना हराम कर दिया। पुलिस साये की तरह मेरे पीछे लगी रहती, मैं कहीं भी जा नहीं सकता, जहाँ भी जाता पुलिस मेरे पीछे होती। बीस लाख रुपये मुझे बिच्छुओं की तरह लगने लगे। उस धन के खातिर मेरा जीना हराम हो गया। मुझे गिरफ्तार करने के लिये पाँच हजार रुपयों का इनाम रखा गया। तब तो पुलिस के अलावा दूसरे लोग भी मेरा पीछा करने लगे। मैं कहीं भी जा नहीं सकता था। बिना खाए-पिये जंगल-जंगल भटकता रहता। भूख प्यास से मेरी ऐसी हालत हो गई कि मुझसे चला भी नहीं जा सकता था। कई दिन तक मैंने कुछ नहीं खाया-पीया। प्यास से मेरी जान निकलती जा रही थी। एक रात हिम्मत करके छिपता-छिपता शहर में घुसा। रुपयों का बैग मेरे साथ ही था। एक संकड़ी गली के बीच आकर जैसे ही नल से पानी पीने को झुका कि कई सीटियों की आवाज़ मेरे कानों में गूँज उठी, पीछे मुड़कर देखा तो पुलिस दौड़ती आ रही थी। बिना पानी पिये मैं वहाँ से भाग खड़ा हुआ। भागते-भागते एक मकान में घुस गया। उन लोगों ने मुझे शरण दी, मुझे खाना खिलाया। जब मैं होश में आया तो जाना कि वे लोग मुसलमान थे। उस घर में सिर्फ एक बूढ़ी औरत अपनी जवान लड़की जिसका नाम सलमा था, रहती थी। उन्होंने मुझ से अपना नाम पूछा। एक बार तो मैं सोच में डूब गया, सोचने लगा अगर असली नाम बता दिया तो कहीं फँस न जाऊँ।

पुलिस से बचने के लिये यही एक जगह थी जहाँ मैं सुरक्षित रह सकता था। मैंने अपना नाम शेख खाँ बता दिया। बस उसी दिन से मैं शेख खाँ बन गया। मेरे पास लाखों रुपये थे। मैं उनके साथ ही रहने लगा। मैंने अपनी दाढ़ी बढ़ा ली, और एक दिन वह शहर छोड़ कर उनके साथ यहाँ आ गया। अचानक बुढ़िया की तबीयत बिगड़ गई। वह मरते वक्त सलमा का हाथ मेरे हाथों में दे गई। मैंने सलमा से विवाह कर लिया। पता नहीं कैसे चीन के कुछ एजेंटों को मेरे राज का पता चल गया। उन्होंने मेरी मजबूरी का फायदा उठाना चाहा। उनके गिरोह में मैं फँस गया। एक तो पहले से ही मैं बौखलाया हुआ था और जब वे कमबख्त मेरे सामने आए तो अपनी जान बचाने के लिये मैं उनसे मिल गया। उन्होंने मुझे ऐसे-ऐसे ख्वाब दिखाए कि मैं बुरी तरह उनके चंगुल में फँस गया। सोचा था, अगर किसी भी दिन पुलिस को मालूम हो गया तो फांसी के फंदे के सिवाय मुझे और कुछ भी नहीं मिलेगा। हर वक्त फाँसी का फंदा मेरी आँखों के सामने झूलता रहता। मैं चीन से मिल ही गया था, उनके लिये मैंने सब कुछ किया वे कहते जैसा मैं करता। एक बार मुझे पाकिस्तान जाना पड़ा, क्योंकि चीन की तरह पाकिस्तान भी हिन्दुस्तान के पीछे लगा हुआ था। दोनों देशों ने मिलकर भारत के प्रति षड्यंत्र रचना शुरू कर दिया। मुझे पाकिस्तान की ओर से नियुक्त कर लिया गया। उसी दिन से दोनों मुल्क मिलकर काम कर रहे हैं। परन्तु हकीकत अब सामने आ गई, चीन पाकिस्तान को बेवकूफ बना रहा है। वह अजगर की तरह सब को निगलना चाहता है। बेटे, आज से तुम सच्चे देश-भक्त बन कर भारत की आन पर मर मिटोगे। हमारा भारत तो एक शक्तिशाली देश है। वह चीन से मुकाबला कर ही लेगा, बुरी दशा होगी पकिस्तान की⋯आ⋯ शंकर को खून की उल्टी आ गई। बेटे, अब मैं जा रहा हूँ⋯देखो यमदूत आ गये हैं। ⋯ओ ⋯हरि ओम⋯हरि ओम हरि ओम⋯⋯। शंकर का स्वर ढीला पड़ता गया, आँखें फट गई, उसे सब धुँधला-धुँधला दिखाई देने

लगा। बेटे आओ,····मेरे···ग····ले···लग····जाओ ··· । पिता ·· जी ···राकेश उसके गले से लिपट कर फूट-फूट कर रो पड़ा। बेटे···अब ····तुम्हारा सब कुछ भारत ही है। कसम खाओ कि तुम भारत के लिये मर-मिटोगे, उसकी आन के लिये अपने प्राणों को न्योछावर कर दोगे।

पिताजी, मैं कसम खाता हूँ····मेरे खून का एक-एक कतरा भारत के लिये बहेगा। भारत माता को यवनों से बचाने के लिये ईंट से ईंट बजा दूँगा। सर कामरेड से ऐसा बदला लूँगा कि बस फिर कभी चीन की हिम्मत नहीं होगी कि हमारे भारत की ओर आँख उठा कर भी देख सके। ····हा···आ···आ ···बेटे ·· अब मेरे जाने का वक्त हो गया है····अगर हो सके तो भाई दीनदयाल और बहन धरती से मेरी ओर से माफी माग लेना····जय····भारत···जय भारत··· ····ज····य····भार····त···हिच। एक हिचकी शंकर के गले से निकली और इसके साथ ही उसका सिर एक ओर लुढ़क गया।

——

२१

फिरोज ने अपनी मोटर साइकल को पेड़ों के घने झुंड में छिपा दी थी और बड़ी बेचैनी से उनके वापस आने का इन्तजार करने लगा। कभी-कभी इधर-उधर देख लेता, वह हर मुकाबिले के लिये सतर्क था। उसने अपनी रिस्टवॉच में देखा, अमर और हेमा को गये पूरा डेढ़ घंटा हो चुका था पर वे अभी तक नहीं लौटे थे। कहीं दुश्मनों द्वारा पकड़े तो नहीं गये, ऐसा सोच कर उसके बदन में सिरहन सी दौड़ पड़ी। वह बेचैन हो उठा। उसके दिमाग में कई शंकाएँ उत्पन्न होने लगीं, वह घबरा रहा था। ऐसा तो नहीं कि कहीं कमिश्नर साहब को बचाते-बचाते वे स्वयं ही फंस गये हों। वह बुदबुदाया—अगर दस मिनट के अन्दर वापिस नहीं आए तो वह स्वयं भी उनके पीछे हो जाएगा। फिरोज पेड़ों के झुंड से बाहर निकल आया और चारों ओर नजर दौड़ाने लगा! कुछ ही दूरी पर उसे तीन आकृतियां दिखाई दीं जो कि बड़ी फुर्ती से आ रही थीं। वह समझ गया कि अमर और हेमा कमिश्नर साहब को छुड़ा कर ला रहे हैं। इस कामयाबी पर वह अति प्रसन्न हो रहा था। कमिश्नर साहब आ गये, अब कोई चिन्ता नहीं। वह बड़ी बेसब्री से उनके पहुँचने की प्रतीक्षा करने लगा।

वे तीनों पहुँच गये और एक जगह पर बैठकर सुस्ताने लगे। इस प्रकार दौड़ने से तीनों हांफ रहे थे। हेमा तो बहुत थक चुकी थी अब और आगे बढ़ने की हिम्मत उसमें नहीं थी, तुम तीनों यहाँ तक पहुँचे कैसे ? कमिश्नर मि० चौधरी ने अमर से पूछा।

अंकल, हम तो हरदम राकेश के पीछे लगे रहते थे और अब की

बार भी हम उसका पीछा कर रहे थे। उसने अपने लोगों से कहा कि वे आपकी कार को बर्स्ट कर दें और स्वयं होटल में चला गया। मैंने फिरोज से कहा कि मैं राकेश की गाड़ी के पीछे डिगी में छिप जाता हूँ और वह हेमा को लेकर उसकी कार का पीछा करे। मैं छिपकर कार की डिगी में बैठ गया। 'अमर....देखो वो लोग आ रहे हैं'—कमिश्नर बोला।

अरे भाई अब क्या होगा—अंकल आप फिरोज के साथ चले जाइये।

क्या कह रहे हो अमर, मैं भला तुम दोनों को यहाँ पर छोड़कर कैसे जा सकता हूँ।

अंकल—अमर ठीक कह रहे हैं, आप हमारी फिक्र न करें। आपकी जान हमारी जान से कहीं ज्यादा महत्व रखती है। आप फिरोज भाई के साथ चले जाइये।

पर बेटे मैं इस प्रकार तुम्हें छोड़कर कैसे जा सकता हूँ।

सर कामरेड के लोग नजदीक होते गये।

अंकल, प्लीज आप देर मत करिये वो लोग पहुँच रहे हैं—आप जाइये।

मुझे तो कुछ भी समझ में नहीं आता—मैं कैसे चला जाऊँ—बौखलाते हुए वह बोला।

प्लीज अंकल, आप जाइये वरना आप भी हमारे साथ फँस जाएंगे। यहाँ से जाकर आप सब कुछ कर सकते हैं। सिर्फ आप बचकर निकल जाइये। फिरोज जल्दी करो, वे लोग पहुँच रहे हैं।

फिरोज मोटर साइकिल पर सवार हो गया और बोला अंकल आप जल्दी आइये। सबके फोर्स करने पर मि० चौधरी बैकसीट पर बैठ गये। इतने में वे लोग भी पहुँच गये। उन्होंने फिरोज और कमिश्नर को भी पकड़ना चाहा, परन्तु तब तक बहुत देरी हो चुकी थी—मोटर साइकिल हवा से बातें करती दौड़ पड़ी, जाती हुई मोटर

साइकिल पर कई फायर किये गये, परन्तु फिरोज एक निपुण चालक था—मोटर साइकिल ऐसे जा रही थी जैसे कि जमीन पर न होकर हवा में उड़ रही हो। उन्होंने कई फायर किये पर उनका बाल भी बांका नहीं हुआ। वह फर्राटे करती जा रही थी और फिर कुछ ही पल में सबकी आँखों से ओझल हो गई।

+ + +

अमर और हेमा दोनों को अलग-अलग जंजीरों द्वारा दो खम्भों से बांध दिया गया। सामने सर कामरेड ऊँची कुर्सी पर बैठा हुआ था। राकेश उसके पास ही अपने हाथों में गन लिये खड़ा था। इसके अलावा उनके और भी कई लोग मौजूद थे।

सर कामरेड बोला—अमर, तुम दोनों के मरने का वक्त आ गया है। बताओ दोनों में से पहले कौन मरना चाहता है। क्या एक दूसरे को अपनी आंखों के सामने दम तोड़ता देख सकोगे?

सर कामरेड के बच्चे तुम अपना काम करो। हमें मरना तो है ही फिर आगे या पीछे का सवाल नहीं उठता। हम मर जाएँगे, हमें इसकी जरा भी चिन्ता नहीं। तुम स्वयं को बचाने की फिक्र करो। शीघ्र ही तुम्हारे इस स्टेशन के साथ तुम्हें और तुम्हारे सभी साथियों को हमेशा-हमेशा के लिये खत्म कर दिया जाएगा, तुम्हारी बरबादी का समय आ गया है—तुम यहां से बचकर नहीं निकल सकोगे।

पागल—तुम क्या समझते हो कि हम तुम लोगों की तरह बेवकूफ हैं। जब तक तुम्हारी फौजें यहां तक पहुँचे, हम अपने साथ फाइल लेकर निकल चुके होंगे। जाने से पहले पूरे शहर को आग की लपटों में सुलाते जाएंगे। हमें फाइल की जरूरत थी वह हमें मिल गई। अब की बार जब हम आएँगे, तो हमेशा-हमेशा के लिये आएँगे! यहां पर आकर हुकूमत करेंगे। अगर हम चाहें तो पूरे हिन्दुस्तान को खण्डहर बनाकर जाएँ, परन्तु ऐसा हम नहीं कर सकते क्योंकि एक बार फिर हमें आना जो है। तब हमारी शक्ति के आगे कोई भी नहीं

रुक सकेगा। पूरे हिन्दुस्तान पर हमारी ताकत होगी, हमसे टकराने वाले को हम चींटी की तरह मसल कर फैंक देंगे।

आ हा''''हा''''हा अमर ने एक बड़ा सा ठहाका मारा इस आवाज़ से जैसे सारी दीवारें हिल गई हों और फिर मुस्करा कर बोला "अबे ओ शेख चिल्ली की औलाद, ये सारी अनहोनी बातें हैं। तुम्हारे ये झूठे सपने शीघ्र ही मिट जाएंगे और फिर उसके बाद भारत पर आँख उठाकर भी नहीं देख सकोगे। भारत अपने हर पड़ौसी देश को अपना भाई समझता है और तुम जैसे नीच उसका उल्टा फायदा उठाना चाहते हैं। भारत के साथ विश्वासघात करते हो, इसका तुम्हें पूरा-पूरा दण्ड मिलेगा। तुम लोगों की ऐसी दुर्दशा की जाएगी कि भविष्य में भारत के लिये ऐसा सोच भी नहीं सको। भारत ने तुम्हें गले लगाना चाहा और तुम उसका ही गला काटना चाहते हो, उसके अहसानों का यही बदला देते हो। जिस किसी भी देश ने भारत के साथ विश्वासघात करना चाहा, उसका परिणाम उल्टा ही निकला। उन्हें उसके पहले ही अपने किये का फल मिल गया और भारत वहीं का वहीं मुस्कराता रहा।

राकेश—सर कामरेड ने चिल्ला कर पुकारा—तुम इस नीच को इसी वक्त ठिकाने लगा दो ताकि अपने साथ ये झूठी तमन्नाएँ लिये, सदा के लिये खत्म हो जाए। इस पर इतने फायर करो कि जिस इसका सारा बदन गोलियों के छेदों से भर जाए। सर कामरेड की आँखों से क्रोध के मारे अंगारे बरसने लगे।

राकेश ने अपनी गन सम्भाली और उसका रुख अमर की ओर कर दिया। उसने तिरछी नजरों से हेमा की ओर देखा—हेमा ने नफरत से स्वयं का चेहरा मोड़ लिया। राकेश और अमर की आँखें आपस में टकराईं—राकेश गन थामे सीधा खड़ा रहा। सर कामरेड अट्टाहस करता हंस रहा था यह सोचकर कि अभी अमर खत्म हो जाएगा, उसने हँसते हुए हेमा की ओर देखा उसने स्वयं की आँखें मूँद ली थीं। 'हेमा''''तुमने आँखें क्यों बंद कर ली है, एक बार अपने

होने वाले पति को देख लो, फिर कभी भी देख नहीं सकोगी क्योंकि उस पर इतने फायर कर दिये जाएँगे कि तुम पहचान भी नहीं सकोगी कि यह अमर की लाश है या किसी कुत्ते की लाश। आ हा.... हा हा राकेश, क्या सोच रहे हो, दबा दो ट्रैगर कर दो अपने दुश्मन को छलनी।

राकेश ने एक बार अमर को घूर कर सर से पांव तक देखा और फिर ट्रैगर दबा दिया। धांय....धधध...धांय...धांय। राकेश ने कई फायर किये, बारुद के धुँए से एक बार पूरा हॉल घिर गया। गन की आवाजें हेमा के कलेजे को छेद कर निकल गयीं। उसने अपने होटों को दांतों से दबा दिया। हेमा के दिल में इतना दर्द हुआ कि जैसे फायर अमर पर न होकर उस पर ही किये गये हों। इतने में उसके कानों ने चिल्लाहट सुनी, राकेश चिल्लाकर कह रहा था "सर कामरेड अगर तुम जरा भी हिले तो गन की सारी गोलियाँ तुम्हारे शरीर में घुस जाएँगी। राकेश ने गन का रुख सर कामरेड की ओर कर दिया था। खबरदार अगर किसी ने भी हिलने की कोशिश की तो सर कामरेड की खैर नहीं। राकेश ने निशाना ठीक सर कामरेड पर कर रखा था। राकेश ने फायर करके अमर की सारी जंजीरें तोड़ दी थीं। वह मुक्त हो गया। राकेश ने एक पिस्टल फैंक कर अमर को थमा दिया। अमर ने हेमा की जंजीरे खोल दीं और सब खड़े देखते रहे, वे कुछ भी नहीं कर सके उन्हें भय था कहीं राकेश उनके सर कामरेड को न खत्म कर दें।

राकेश में अचानक इस प्रकार का परिवर्तन देखकर सर कामरेड चकरा गया वह काँप भी रहा था, परन्तु डरते-डरते बोला—"राकेश यह क्या पागलपन है, गन फैंक दो, यह अचानक तुम्हें क्या हो गया है।"

राकेश ने जैसे कुछ सुना ही नहीं—वह गरजकर बोला—इन सब को कह दो कि अपने-अपने हथियार फैंक दें वरना तुम्हें एक ही मिनट में भून डालूँगा।

अपने-अपने हथियार फैंक दो—वह घबरा रहा था, उसे डर था कहीं राकेश गोली न चला दे।

अब वह फाइल वापस करो।

सर कामरेड सीधा ही बैठा रहा वह घूर कर राकेश की ओर देखने लगा।

अमर और हेमा आकर राकेश के पास ही खड़े हो गये।

मैं कहता हूँ फाइल वापस करो वरना········ ···राकेश ने टैगर को दबाना ही चाहा कि सर कामरेड ने फाइल आगे बढ़ा दी। जैसे ही फाइल लेने के लिये राकेश ने हाथ बढ़ाया कि सर कामरेड ने एक लात राकेश के जबड़े पर जमा दी और वह लड़खड़ाता हुआ जाकर एक ओर गिरा, परन्तु फाइल सर कामरेड के हाथ से छूटकर ऊपर को उछली, अमर सतर्क खड़ा था, जब तक कोई लेने को आगे बढ़े जम्प लेकर अमर ने फाइल कैच कर ली। राकेश गिरा ही था कि किसी ने उस पर फायर कर दिया, परन्तु वह बड़ी फुर्ती से पल्टी खा गया, गन उसके हाथ में थी। उसने भी आग उगली धांय·······धांय········।

पकड़ लो, कोई भागने न पाए—सर कामरेड ने चिल्ला कर कहा।

सब लोग उनकी ओर बढ़े, परन्तु राकेश की गन धाँय-धाँय करती आग उगलती गई और उनके कई लोग ढेर हो गये। राकेश ने जोर से पुकारा—अमर हेमा को लेकर यहाँ आ जाओ। धधध धाँय···· धाँय कई लोग अमर और हेमा को पकड़ने के लिये आगे बढ़ते, परन्तु राकेश बीच में ही उन सब को ढ़ेर कर देता। उसकी गन धाँय-धाँय करती चारों ओर घूम रही थी। किसी ने पीछे से राकेश पर फायर करना चाहा, जिसे अमर ने दूर से ही देख लिया। अमर ने उस पर फायर कर दिया वह उछल कर नीचे गिरा और खत्म हो गया। अमर ने फाइल हेमा को दे दी और स्वयं पिस्टल से फायर करता हेमा के साथ राकेश की ओर बढ़ने लगा। उसने कइयों को मौत के

घाट उतार दिया। दोनों राकेश तक पहुँच गये। तीनों एक दीवार के पीछे छिपकर फायर करते गये। दोनों तरफ से गोलियों की बौछार हो रही थी। सर कामरेड के आदमी फायर पर फायर करते आगे बढ़ने लगे और वे तीनों उनके फायरों का जवाब देते पीछे सरकते गये। वे शीघ्र ही वहाँ से बचकर निकलना चाहते थे। राकेश और अमर सिर्फ दो जने ही लड़ने वाले थे और वे लोग इतने। दो आदमी इतने सारे लोगों से कब तक मुकाबला कर सकते थे। राकेश के गन की कारतूस समाप्त हो गई, अमर के पिस्टल की तो कब की खत्म हो चुकी थी। राकेश ने अपनी जेब से पिस्टल निकाल लिया और बोला—अमर तुम हेमा को लेकर यहाँ से बच निकलो, मैं इन सब को रोकने की कोशिश करता हूँ। अमर और हेमा की नजरें राकेश की नजरों से टकराई। राकेश अपनी आँखें हेमा की आँखों में डालकर देखने लगा। हेमा की मायूस, भोली आँखें देखकर राकेश का कलेजा चीख उठा। एक अजीब सा दर्द उसने अपने सीने में महसूस किया, उसकी आँखें नम हो गई और आँसू उसके आँखों से छलक कर गालों तक बह आए। अपने आँसूओं को पोंछते हुए राकेश ने अमर की ओर देख कर बोला——प्लीज अमर, तुम दोनों भाग जाओ कहीं·······धाँय ·······धाँय ··· धाँय ·· राकेश ने कई फायर कर दिये, क्योंकि बहुत से लोग उन तक बढ़ आए थे—राकेश ने उन सब को वहाँ पर ही ढेर कर दिया, परन्तु इस पिस्टल की गोलियाँ भी खत्म हो गईं। वे बेहथियार हो गये। राकेश का जैसे पसीना छूटता हो, उसे चिन्ता थी सिर्फ अमर और हेमा की, बाकी स्वयं के सिर पर अपने मौत का सेहरा तो उसने कब का बाँध लिया था। वह हेमा और अमर को जैसे भी हो, बचाना चाहता था— आओ अमर मेरे साथ, वे कुछ ही आगे थे कि आकाश में कई जबरदस्त धमाके हुए, ऐसा लगा जैसे कि आकाश फट पड़ा हो और इसके साथ ही कई वायुयानों के उड़ने की आवाजें सबके कानों में गूँज

उठीं। अचानक ऐसे धमाके सुनकर तीनों ठिठक कर एक बार रुक गये और फिर दौड़ पड़े। सर कामरेड को काटो तो खून नहीं। वह बहुत डरने लगा। वह समझ नहीं सका कि ये सब कैसी आवाजें हैं।

सर कामरेड भारत की फौजें पहुँच चुकी हैं उन्होंने वायुयानों से बम-वर्षा शुरू कर दी है। मदन से ऐसा सुनकर उसके पैरों से जैसे जमीन खिसकने लगी। उसका सिर चकराने लगा और स्वयं को संभाल कर बोला—आओ मेरे साथ। सर कामरेड ने अपनी फौजों को भी आर्डर दे दिया, इस प्रकार एक घमासान युद्ध छिड़ गया। चौधरी कमिश्नर अपने साथ फौजें लेकर पहुँच चुका था। क्रोकोडायल स्टेशन पर कोलाहल मच गया। एक ओर बन्दूकों और गनों की भयानक आवाजें तो दूसरी ओर लोगों के मरने की चीखें, धाँय-धाँय तोपों और बमों के धमाकों ने जैसे आकाश को दहला दिया था। सब लोग स्वयं को बचाने के लिये सिर पर पाँव रख कर भाग खड़े हुए। पूरा वातावरण शोरगुल से भर गया। उन्हें अपनी-अपनी जान की फिक्र होने लगी। इस प्रकार शोरगुल और भाग दौड़ में वे तीनों एक दूसरे से बिछड़ गये। राकेश उन दोनों को पागलों की तरह दौड़-दौड़ कर खोजने लगा। उसे डर था कहीं अमर और हेमा को कुछ हो न जाय। उसके हाथ में एक और गन आ गई थी, वह बड़ी बहादुरी से लड़ता हुआ आगे बढ़ता गया। उसकी गोलियों से कई चीनी शिकार हो गये, उसने कइयों को मौत के घाट उतार दिया था।

बिमानों ने आकर लैंड किया और इसक साथ ही कई जवान अपने हाथों में हथियार लिये भूखे शेरों की तरह चीनी फौजों पर टूट पड़े। मि० चौधरी कमिश्नर के साथ सेठ दीनदयाल और धरती के अलावा सीता देवी भी आईं थीं वे सब अमर और हेमा को खोजने लगे। जेलर मि० खान अपने बेटे फिरोज के साथ अपने हाथों

में राईफलों सहित आगे बढ़ रहे थे। उनके सामने जो भी आता वे उसे वहीं पर सुला देते।

सर कामरेड ने सोचा कि यहाँ पर और समय रुकना खतरे से खाली नहीं, अब तो उसे सिर्फ अपने ही प्राणों को बचाने की चिन्ता होने लगी। उसके कई लोग मारे गये। वह जान गया कि भारत के साथ मुकाबला करना अपनी मौत को दावत देना है। वह किसी तरह भी वहाँ से बचकर निकलना चाहता था। आओ मदन, यहाँ से भाग चलें वरना बेमौत मारे जाऐंगे। दोनों वहाँ से भाग खड़े हुए। हेमा अमर को खोजती उस ओर निकल गई। मदन ने जो हेमा को देखा तो दौड़कर उसे पकड़ लिया। मदन, इसे अपने साथ ले चलो। हेमा छटपटाने लगी—मदन और सर कामरेड ने मजबूती से उसे पकड़ लिया। मदन ड्राईविंग सीट पर बैठ गया और कामरेड उसके ही पास हेमा को पकड़ कर बैठा। हेमा जोर-जोर से चिल्लाने लगी जिसकी आवाज राकेश के कानों में पड़ी। हेमा शायद खतरे में है ऐसा सोचकर वह उस ओर दौड़ा। जब तक वह वहाँ पहुँचे मदन की जीप दौड़ पड़ी। राकेश ने उस पर कई फायर किये, एक गोली सर कामरेड के सिर से टकराई। एक चीख के साथ सर कामरेड उछल कर नीचे गिर पड़ा और समाप्त हो गया, परन्तु मदन हेमा को लेकर बच निकला। इतने में अमर भी वहाँ पर पहुँच गया, राकेश ··· क्या हुआ, हेमा कहाँ है ?···

मदन हेमा को लेकर भाग गया।

ओ माई गॉड ! अब क्या होगा ? अमर घबरा उठा।

अमर फिक्र मत करो, आओ मेरे साथ, मदन कहाँ गया है मैं जानता हूँ। राकेश आकर एक मोटर साइकिल पर बैठ गया और उसके पीछे अमर बैठा इसके साथ ही हवा से बातें करती मोटर साइकिल दौड़ पड़ी। आगे मदन, की जीप और पीछे राकेश की मोटर साईकिल।

मदन की जीप आकर एक द्वार के पास जो गुफा की तरह

लगती थी रुक गई। हेमा को घसीटते हुए वह अन्दर चला गया, देखो चाँगा मैं अन्दर जा रहा हूँ मेरे पीछे राकेश लगा हुआ है वह यहाँ आएगा तुम उसे रोक लेना—मदन हेमा को लेकर अन्दर चला गया और वह भारी भरकम शरीर वाला खूँखार चाँगा दीवार की तरह द्वार पर खड़ा हो गया।

राकेश ने भी मोटर साईकल उसी जगह रोक ली—दोनों अन्दर जाने को दौड़े, परन्तु वे दोनों थोड़ा सा ही आगे बढ़े थे कि राकेश की नजर चाँगा पर पड़ी और वह ठिठक कर रुक गया।

तुम रुक क्यों गये—अमर ने पूछा।

देखो वह खूँखार आदमी—यह चाँगा है। मदन हमें रोकने के लिये इसे खड़ा कर गया है। हमने जरा भी देरी की तो मदन यहाँ से भाग निकलने में कामयाब हो जाएगा। यहाँ से बचकर निकलने के कई रास्ते हैं पता नहीं वह किस रास्ते से भाग जाए।

राकेश तुम अन्दर जाओ मैं इससे निपट लूँगा।

अमर यह एक खतरनाक इन्सान है तुम इससे मुकाबला नहीं कर सकोगे।

राकेश, तुम मेरी फिक्र मत करो मैं मर गया तो कोई बात नहीं तुम किसी तरह भी हेमा को बचाओ।

अमर धीरे-धीरे चाँगा की ओर बढ़ने लगा। चाँगा भी शेर की तरह गरजता उसकी ओर बढ़ा। कुछ ही दूरी पर दोनों आकर आमने-सामने रुक गये। राकेश अन्दर घुस जाने के मौके में था। चाँगा ने शीघ्र ही अमर पर छलांग लगा दी, परन्तु अमर बड़ी फुर्ती से एक ओर हट गया और चाँगा अपने पूरे बोझ के साथ जाकर फर्श पर गिरा। राकेश को अन्दर जाने का अवसर मिल गया, वह दौड़ता हुआ अन्दर चला गया।

मदन ने अपने साथ करोड़ों रुपये उठाए और फिर हेमा को पकड़ कर जैसे ही वह आगे बढ़ा कि पीछे से राकेश ने उस पर एक लात जमा दी और वह सीधा जाकर मशीन से टकराया परन्तु शीघ्र

ही वह सम्भल कर उठ खड़ा हुआ, उसने जेब से पिस्टल निकाल लिया। इतने में राकेश ने उस पर छलांग लगा दी, दोनों लुढ़कते हुए गिर पड़े। मदन के हाथ से पिस्टल छूट गया। दोनों एक दूसरे से भिड़ गये।

चांगा सम्भल कर उठ खड़ा हुआ। उसके मुंह से खून बह निकला। क्रोध से उसकी आँखों से अंगारे बरसने लगे। इस चोट से वह क्रोधित हो उठा। उसने अमर पर एक मुक्के का वार किया। अमर नीचे को झुक गया, उसका मुक्का एक दीवार से टकराया और दीवार जैसे हिल गई। वह फिर पलट पड़ा और अमर पर छलांग लगा दी। इस बार भी वह बड़ी फुर्ती से एक ओर हट गया। वह लुढ़कता हुआ जाकर गिरा, उसका सिर एक लोहे की छड़ से टकराया और उसकी आँखों के सामने तारे नाचने लगे। इसके साथ ही एक भयानक चीख चांगा के मुख से निकली जिसे सुनकर अमर भी एक बार काँप गया। अमर ने एक लात उसके पेट में मारी—चाँगा के मुख से एक और चीख निकली। छड़ की चोट से उसका सिर फटकर लहूलुहान हो गया। उसने उठने की कोशिश की। अमर ने दूसरी लात उसके सिर पर जमा दी और उसकी बाजू को पकड़ कर एक जोरदार झटका दिया—यह उसकी आखरी चीख थी। वह छटपटाने लगा। करीब दो मिनट तक छटपटाता रहा और फिर ठंडा पड़ गया। चांगा को खत्म करके अमर अन्दर दौड़ा।

राकेश और मदन में जिन्दगी और मौत का युद्ध छिड़ गया था। दोनों अधमरे से हो चुके थे, अब दोनों उस गिरे हुए पिस्टल को प्राप्त करने की कोशिश करने लगे।

पिस्टल मदन के हाथ में आ गया, वह उठ खड़ा हुआ। इतने में अमर भी वहाँ पहुँच गया। अमर को देखकर मदन ने उस पर ही फायर कर दिया, परन्तु दौड़कर राकेश बीच में आ गया। गोली राकेश के कंधे को चीर कर निकल गई, वह लड़खड़ाता गिर पड़ा। अमर को बचाने के लिये राकेश उसके सामने आ गया ताकि अमर को गोली न

लगे। जब तक मदन दूसरा फायर करे फिरोज ने उस पर ही कई फायर कर दिये। मदन खत्म हो गया। फिरोज सबको अपने साथ लिये आ गया था। हेमा को देख कर सेठ दीनदयाल और धरती उससे लिपट गये। तीनों फूट-फूट कर रो पड़े।

राकेश लड़खड़ाता हुआ उठा––उसने फर्श से मदन वाला पिस्टल उठा लिया और अपनी कनपटी पर रखकर ट्रेगर दबा दिया। धांय···· एक धमाका हुआ और इसके साथ ही राकेश लुढकता जाकर धरती और हेमा के पैरों में गिर पड़ा। भैया····हेमा चिल्ला उठी पर उसका स्वर दीवारों से ही टकरा कर रह गया—राकेश मर चुका था। धरती भी राकेश के शव से लिपट कर फूट-फूट कर रो पड़ी।

राकेश कैसा भी था, परन्तु मरने से पहिले अपने देश के खातिर, अमर और हेमा को बचाने के लिये उसने जो काम किया वह कोई और नहीं कर सकता था। सबके हृदयों में उसके प्रति श्रद्धा हो उठी और उनके सिर इज्जत से एक बार झुक गये।

क्रोकोडायल स्टेशन के अलावा उनके और भी कई अड्डों पर कब्जा कर लिया गया था।

— · —

२२

राकेश की अर्थी बड़ी इज्जत के साथ उठाई गई। सेठ दीनदयाल ने स्वयं ही अपने हाथों से उसकी चिता को आग लगाई। चिता धू-धू करती जलती गई—आज पहली बार सेठ दीनदयाल की आँखों में आँसू लुढ़क पड़े। हेमा रो रही थी।

सबने हेमा से सवाल किया कि वह कैसे जीवित रही, जबकि उसके मृत शरीर का पोस्टमार्टम करने के पश्चात जलाया गया था। इसका उत्तर अमर ने दिया—अँकल यह खत आप सबको पढ़कर सुनाइये इसमें आपके सभी सवालों के जवाब लिखे हुए हैं। मि० चौधरी ने खत अमर के हाथ से ले लिया और पढ़ने लगा।

प्रिय अमर,

मैं जीवित हूँ। जिस लाश को आप सबने हेमा समझा है वह वास्तव में एक और लड़की थी, जिसका नाम नसरीन था। मैं अपने डिब्बे में अकेली ही थी, जब गाड़ी चली तो एक लड़की चलती गाड़ी में चढ़ आई। वह घबराई हुई थी, उसकी साँसें बड़ी जोरों से चलने के कारण वह हाँफ रही थी। मैं जान गई कि अवश्य वह लड़की खतरे में है क्योंकि इस प्रकार चलती गाड़ी में चलना उसकी निशानी थी। मैंने उसे अच्छी तरह बिठाया। मैंने उससे सवाल किया कि वह कौन है वह बोली—मेरा नाम नसरीन है, मेरे पिता का नाम शेख खाँ है जो एक गद्दार इन्सान है। वह गैर मुल्कों के साथ मिलकर काम करता है। इस प्रकार उसने सारी हकीकत मुझे सुनाई। प्यास से उसका गला सूख गया था, उसने मुझसे पानी माँगा। पानी तो मेरे पास था नहीं, मैंने उसे प्लास्क से चाय निकाल कर दे दी, जो कि राकेश ने मुझे दी थी। नसरीन चाय तो

पी गई, परन्तु कुछ ही पल में लुढ़क कर बर्थ पर गिर पड़ी। उसे अचानक इस प्रकार लुढ़कता देखकर मैं कुछ घबरा गई और जब उसके करीब आई तो मेरे मुख से एक चीख निकल गई, क्योंकि वह मर चुकी थी। मैंने थरमस खोल कर देखा तो काँप गई। उसका तला नीला था। मुझे शक हुआ कहीं राकेश ने मुझे मारने के लिये चाय में जहर तो नहीं डाला है। यह मेरा सिर्फ शक ही था, मुझे विश्वास नहीं हो रहा था कि राकेश मुझे मार सकता है। मैंने अपने कपड़े नसरीन को पहना दिये और उसके मैंने पहन लिये, अपनी अंगूठी भी उसे ही पहना दी। गाड़ी आकर अगले स्टेशन पर रुकी मैं छिपकर बर्थ के नीचे बैठ गई। इतने में राकेश ने मेरे डिब्बे में प्रवेश किया। अँधेरे में नसरीन को हेमा समझकर उसे एक बिस्तर में लपेट दिया। फिर कुछ गुण्डे उस चलती गाड़ी में मेरे डिब्बे में चढ़ आए। उन्होंने जो बातें की उससे मैं समझ गई कि वे गुन्डे शेख यानि नसरीन के पिता के ही थे। वे सब राकेश को लेकर अगले स्टेशन पर उतर गये। मैंने उनका पीछा करना शुरू किया। बाद में मुझे मालूम हुआ कि राकेश मेरा भाई नहीं, वह तो नसरीन का भाई था, यानि शेख का बेटा। नसरीन ने मुझे बताया था कि शेख एक देशद्रोही है, गद्दार है जो गैर मुल्कों से मिलकर भारत के खिलाफ काम कर रहा है। ऐसा सब कुछ मैंने अपनी आँखों से देखा है। अमर तुम एक सच्चे देशभक्त भारतीय हो और मुझे फिर से पाना चाहते हो तो देश को गद्दारों से बचा लो। दुश्मनों का नाश करके देश के खातिर बलिदान हो जाओ, अगर देश के खातिर तुम मर गये, तो मैं भी आकर तुम्हारे संग मिलूंगी। चालिस करोड़ भारतवासियों के खातिर, हम अपनी जानें कुरबान कर देंगे। तुम भाग जाओ, भाग जाओ—मेरे खातिर, देश के खातिर। कमिश्नर ने खत पढ़कर समाप्त कर दिया।

फिर हेमा कहने लगी—मैंने और अमर ने उन सबको बहुत छकाया। मैं हमेशा एक रूह की तरह उनके सामने जाती। हमने उनकी नाक में दम कर दिया था। वे मुझे भटकती आत्मा ही समझने लगे। मैं राकेश के कमरे में जाती तो अमर छिपकर सभी द्वार खोलता

जाता और राकेश समझता कि द्वार अपने आप ही खुलते जा रहे हैं। कभी-कभी मैं जाते-जाते कहीं छिप जाती और अमर उस जगह किसी सफेद गाय को खोल कर खड़ा कर देता और वे लोग समझते कि मैं बदल गई। हैमा रुक गई।

मि० चौधरी कहने लगे—शेख हकीकत में शेख नहीं उसका असली नाम शंकर है। इस प्रकार सारी हकीकत उन्होंने कह सुनाई।

ये सारी बातें सुनकर सबके आश्चर्य का ठिकाना ही नहीं रहा।

शंकर की पत्नी सलमा और बेटी नसरीन दोनों देश भक्त नारियाँ थीं उन्होंने अपने देश के खातिर अपने घर को त्याग दिया। यहाँ तक कि अपनी-अपनी जानें कुरबान कर दीं—अपने वतन की रक्षा के खातिर। पर वे दोनों बाप-बेटे अपनी हरकतों से बाज नहीं आए दोनों आस्तीन के साँप निकले, दूध के बदले डसकर जहर देना चाहते थे। जन्म लेते ही राकेश ने अपनी माँ सलमा की जान ले ली। बड़ा हुआ तो अपनी बहन को खत्म कर दिया, अपने बाप शेख का भी कतल कर दिया, यहाँ तक कि अन्त में स्वयं का भी खून कर गया। राकेश के खयालात बिल्कुल अपने बाप शेख की तरह थे। भले उसका पालन पोषण एक बड़े खानदान में हुआ, परन्तु उसकी रगों में खून तो शेख का ही था, जो बचपन से ही हरकतें करनी शुरू करदीं और बड़े होने पर उन्होंने भयानक रूप धारण कर लिया था। परिणाम यह निकला कि उसने अपने पूरे परिवार को मौत के घाट उतार दिया, स्वयं को भी नहीं छोड़ा। फिर भी मरने से पहले उसने जो बहादुरी दिखाई-जिसे देखकर उसके प्रति हमारे रोम-रोम में श्रद्धा हो उठती है—एक खतरनाक इन्सान होकर उसने देश के प्रति आखिर में जो काम किया है वह सराहनीय है। राकेश एक भूला हुआ राही था और जब वह अपनी सही राह पर आ गया तो मरने से पहले हम सब पर इतना बड़ा अहसान कर गया है कि जिसे हम कभी भी उतार नहीं सकते। हम सभी उसके

इस अहसान के नीचे दब गये हैं। ये सभी ऐसे इत्तफाक हैं, जिनका इस प्रकार शीघ्र ही सुलझ जाना अनहोनी बातें लगती हैं।

हमारे पड़ोसी देश, भारत पर आँखें गाड़े खड़े हैं। वे उसे हड़पना चाहते हैं, उस पर अपना अधिकार जमाना चाहते हैं। कमबख्त अपना देश छोड़कर कायरों की तरह छिपकर यहाँ खाक छानते रहते हैं—यह सोचकर कि कहीं कुछ उनके भी नसीब में पड़ जाए। वे बहुत से ख्वाब देखते हैं, पर ख्वाब तो ख्वाब ही होते हैं। ख्वाब में देखी चीज का मिल जाना एक अनहोनी बात के सिवा और कुछ भी नहीं।

राकेश की मौत का तीन दिन तक शोक मनाया गया। उसके ठीक चौथे दिन अमर और हेमा का धूमधाम से विवाह सम्पन्न हुआ। सेठ दीनदयाल ने अपनी सारी जायदाद हेमा और अमर के नाम करदी। विवाह के दूसरे दिन अमर और हेमा प्लेन द्वारा कश्मीर को रवाना हो गये।

———